वार्षिक रिपोर्ट 1999 – 2000

एन सी ई आर टी

वार्षिक रिपोर्ट 1999 - 2000

एन सी ई आर टी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन सी ई आर टी) डा. मुरली मनोहर जोशी, केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री और परिषद् के अध्यक्ष के प्रति उनके परामर्श और मार्गदर्शन के लिए आभारी है। परिषद् विद्यालयी शिक्षा के गुणात्मक सुधार के कार्यक्रमों में गहन रुचि लेने और समर्थन प्रदान करने के लिए अपने सामान्य निकाय, कार्यकारिणी समिति, कार्यक्रम सलाहकार समिति और अन्य कार्यक्रम कार्यविधि समितियों के विशिष्ट सदस्यों के प्रति कृतज्ञ है।

परिषद् उन विशेषज्ञों के प्रति धन्यवाद व्यक्त करती है, जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर इसकी विभिन्न समितियों में कार्य किया तथा अनेक प्रकार से सहायता प्रदान की है। वे सभी राज्य शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा संस्थान/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्/माध्यमिक शिक्षा बोर्ड और विश्वविद्यालय सहित सभी संगठन और संस्थान भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने शिक्षा में भागीदारी के उद्देश्य की भावना से परिषद् को सहयोग देकर उसके कार्यकलापों को कार्यान्वित करने में पूरी सहायता की है।

एन सी ई आर टी यूनेस्को, यूनिसेफ, यू एन डी पी, यू एन एफ पी ए, विश्व बैंक आदि के प्रति भी सम्मान व्यक्त करती है जिन्होंने अपने प्रायोजित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में सहयोग प्रदान किया। परिषद् अपने सभी स्तर के स्टाफ के सदस्यों के प्रति भी आभार प्रकट करती है, जिनके सहयोग और कर्त्तव्यनिष्ठा के बिना कार्यक्रम का कार्यान्वयन असंभव था। परिषद् उन हजारों अध्यापकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और ऐसे अनेक व्यक्तियों के प्रति धन्यवाद व्यक्त करती है जिन्होंने परिषद् के 1999-2000 के प्रकाशनों और कार्यक्रमों के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए परिषद् के विभिन्न संघटकों को पत्र भेजे और निरंतर बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरणा के सतत स्रोत बने।

इस रिपोर्ट का प्रारूप योजना, कार्यक्रम, अनुवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग के डा. जे.पी. मित्तल, रीडर ने संकाय सदस्यों और कार्यालय के स्टाफ की सहायता से तैयार किया है। इसका प्रकाशन कार्य प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संपन्न हुआ है। इन सभी के बहुमूल्य सहयोग से इस रिपोर्ट को यह स्वरूप प्राप्त हुआ है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

मोनोग्राम में परस्पर आवेष्टित हंस,
एन.सी.ई.आर.टी. के कार्य के तीनों पहलुओं
के एकीकरण के प्रतीक हैं
अर्थात् (i) अनुसंधान और विकास
(ii) प्रशिक्षण तथा (iii) विस्तार और प्रसार।
यह डिज़ाइन, कर्नाटक के रायचूर ज़िले
में मस्के के निकट हुई खुदाई से प्राप्त
ईसा पूर्व तीसरी सदी के अशोक युगीन भग्नावशेष
के आधार पर बनाया गया है।

'विद्ययाऽमृतमश्नुते' आदर्श वाक्य ईशावास्य
उपनिषद् से लिया गया है जिसका अर्थ है–
विद्या से अमरत्व मिलता है।

विषय सूची

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं । जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा । क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है ।

विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान की शीर्षस्थ राष्ट्रीय संस्था होने के नाते परिषद् अनुसंधान संबंधी कार्यकलापों और अनुसंधान के लिए सहायता तथा शैक्षिक अनुसंधान पद्धति संबंधी प्रशिक्षण देने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) के विभिन्न विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) और पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित अनुसंधान कार्य करते हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) विद्यालयी शिक्षा का शीर्षस्थ संसाधन संस्थान है। इसकी स्थापना भारत सरकार द्वारा विद्यालयी शिक्षा से संबंधित शैक्षिक मसलों पर केंद्र और राज्य सरकारों की सहायता और परामर्श देने के लिए की गई। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है।

परिषद् अपने निम्नलिखित घटकों के माध्यम से विद्यालयी शिक्षा में सुधार के लिए शैक्षिक और तकनीकी सहायता प्रदान करती है:

1. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.), नई दिल्ली
2. केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.), नई दिल्ली
3. पंडित सुन्दरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल
4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), अजमेर
5. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भोपाल
6. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भुवनेश्वर
7. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), मैसूर
8. उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर. आई.ई.), शिलांग
9. राज्यों में स्थित क्षेत्रीय सलाहकार कार्यालय।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.)

नई दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान अपने विभिन्न विभागों, प्रभागों के माध्यम से पाठ्यचर्या के विभिन्न पहलुओं से संबंधित शोध और विकास कार्य करता है, आद्य-पाठ्यचर्यात्मक और पूरक अनुदेशी सामग्री तैयार करता है, विद्यालयी शिक्षा से संबंधित आंकड़ा-आधार विकसित करता है तथा विद्यालय-पूर्व, प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास के लिए प्रायोगिक और नवाचारी कार्य करता है। एन.आई.ई. केंद्र द्वारा प्रायोजित विद्यालय सुधार योजनाओं के कार्यान्वयन से संबद्ध प्रमुख संसाधन व्यक्तियों और अध्यापक-शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण भी आयोजित करता है। एन.आई.ई. के विभागों के शैक्षिक कार्यक्षेत्र नीचे दिए गए हैं:

सी.आई.ई.टी.

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) भी नई दिल्ली में ही स्थित है। यह शैक्षिक माध्यमों से संबंधित अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, उत्पादन और विस्तार के कार्यक्रम करता है तथा राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थानों (एस.आई.ई.टीज़.) को अकादमिक तथा तकनीकी सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

वार्षिक महासभा की बैठक।

एन.आई.ई. के विभाग और उनके शैक्षिक कार्यक्षेत्र

विभाग/प्रभाग	*शैक्षिक कार्यक्षेत्र*
विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)	विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा संबंधी विषय और समस्याओं पर शोध कार्य और आदर्श शिक्षण-अधिगम सामग्री का विकास कार्य तथा ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) के एक भाग के रूप में अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग के साथ मिलकर राष्ट्रीय संसाधन समूह, अध्यापक-प्रशिक्षण, शिक्षण और पाठ्यचर्या संबंधी कार्य।
अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक विद्यालयी शिक्षण विभाग (डी.ई.एन.एफ.ए.एस.)	गैर नामांकित और विद्यालय-त्यागी बच्चों से संबंधित मुद्दों और समस्याओं सहित अनौपचारिक शिक्षा व वैकल्पिक शिक्षण के आद्य-मॉडलों के लिए अनुसंधान और उनका विकास, अनौ. शि., वैकल्पिक शिक्षण के लिए खुला विद्यालय संबंधी अध्ययन, अनुदेशी सामग्री और अनौ. शि. के कार्मिकों के प्रशिक्षण की कार्यनीतियों का निर्धारण।
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)	अनुसूचित जातियों/जनजातियों (अ.जा./अ.ज.जा.), अल्पसंख्यकों, विकलांगों और अन्य विशेष ज़रूरतमंद समूहों की शिक्षा से संबंधित मुद्दे और समस्याएँ।
महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)	बालिकाओं की शिक्षा से संबंधित मुद्दे और समस्याएँ तथा संबंधित अनुसंधान और विकास कार्यकलाप।
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)	विज्ञान और गणित शिक्षा के मुद्दे और समस्याएँ तथा आद्य-पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री पर अनुसंधान और विकास कार्य तथा विज्ञान उपकरणों के डिज़ाइन और विकास का कार्य।
अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)	राज्य/क्षेत्र के अध्यापक शिक्षा संस्थानों की क्षमता के विकास के कार्यक्रम और अध्यापक शिक्षा की केंद्र प्रायोजित योजना को शैक्षिक समर्थन, विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग के साथ संयुक्त रूप से प्रशिक्षण, शिक्षाशास्त्र और पाठ्यचर्या पर राष्ट्रीय संसाधन समूह का कार्य करना, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के साथ समन्वयन तथा विस्तार शिक्षा से संबंधित विषय।
सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)	सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा संबंधी मुद्दे और समस्याएँ, आद्य-पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री पर अनुसंधान और विकास कार्य, राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.) के एक भाग के रूप में जनसंख्या शिक्षा के कार्यक्रम।

शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)	शिक्षा के मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और दार्शनिक आधारों से संबंधित अध्ययन, तुलनात्मक शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा के लिए उनके निहितार्थ।
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.)	विद्यालयी शिक्षा से संबंधित मापन व मूल्यांकन, परीक्षा सुधार सहित संतत और सम्यक् शिक्षा पर अनुसंधान और विकास कार्यकलाप।
मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आंकड़ा प्रक्रियन विभाग (डी.ई.एस.डी.पी.)	आवधिक मूल विषयी शैक्षिक अध्ययन जिसमें अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण भी शामिल है।
शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग (डी.ई.आर.पी.पी.)	शिक्षा में नीतिगत अनुसंधान को बढ़ावा देना, 'विचार बैंक' को कारगर बनाने के लिए संबंधित कार्यकलाप आयोजित करना, विद्यालयी शिक्षा में अनुसंधान और नवाचारी अध्ययन शुरू करना, समन्वयन करना और प्रायोजित करना तथा एरिक सचिवालय का कार्य करना।
कंप्यूटर शिक्षा और तकनीकी सहायता विभाग (डी.सी.ई.टी.ए.)	कंप्यूटर शिक्षा संबंधी विषय और समस्याएँ तथा आधुनिक तकनीकी सहायता/बहुमाध्यम शिक्षा समर्थन में अनुसंधान और विकास तथा कंप्यूटर संसाधन केंद्र के कार्य।
योजना, प्रोग्रामिंग, अनुवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग (पी.पी.एम.ई.डी.)	एन.सी.ई.आर.टी. के घटकों को कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने में समन्वय करना, कार्यक्रम के कार्यान्वयन का अनुवीक्षण करना, लक्ष्य समूह द्वारा कार्यक्रमों की उपयोगिता का मूल्यांकन करना तथा कार्यक्रमों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)	अन्य देशों में शैक्षिक संस्थानों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का समन्वयन करना और राष्ट्रीय विकास समूह (एन.डी.जी.) के लिए शैक्षिक सचिवालय के रूप में कार्य करना।
प्रकाशन प्रभाग (पी.डी.)	विद्यालय स्तर की पाठ्यपुस्तकों, अनुदेशी और पूरक सामग्रियों, पत्रिकाओं और अनुसंधान मोनोग्राफों का प्रकाशन कार्य।
पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना प्रभाग (डी.एल.डी.आई.)	शैक्षिक सूचनाओं का प्रलेखन और पुस्तकालय सुविधाएँ प्रदान करना।

पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) भोपाल में स्थित है। यह संस्थान विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित अनुसंधान और विकास कार्य आयोजित करता है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ईज़.) अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित हैं। ये संस्थान राज्य और ज़िला स्तर के अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थानों को विद्यालयी शिक्षा संबंधी सेवाकालीन प्रशिक्षण में सहायता प्रदान करते

हैं। ये संस्थान एक सीमा तक विज्ञान और गणित तथा मानविकी के अध्यापन के लिए विद्यालय के अध्यापकों तथा प्रारंभिक अध्यापक-प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए अध्यापक-शिक्षकों को सेवापूर्व वृत्तिक प्रशिक्षण भी प्रदान करते हैं। आर.आई.ईज़ अपने अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत राज्यों और संघ शासित प्रदेशों की शैक्षिक आवश्यकताओं (सेवापूर्व और सेवाकालीन शिक्षा) को पूरा करते हैं। ये विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के लिए क्षेत्रीय संसाधन संस्थान के रूप में भूमिका निभाते हैं, राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की नीतियों के कार्यान्वयन में अपेक्षित सहायता देते हैं और केंद्र प्रायोजित योजनाओं के कार्यान्वयन, अनुवीक्षण और मूल्यांकन में सहायता करते हैं। अजमेर स्थित क्षे.शि.सं. दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों और संघ शासित राज्य चंडीगढ़ की अध्यापक शिक्षा और अन्य संबंधित शैक्षिक आवश्यकताओं का ध्यान रखता है। क्षे.शि.सं., भोपाल के अधिकार क्षेत्र में आने वाले राज्य हैं- गोवा, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और संघ शासित प्रदेश दादर और नगर हवेली तथा दमन और दीव। अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मिज़ोरम, मेघालय, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल राज्य और संघ शासित प्रदेश अंडमान निकोबार द्वीप समूह की व्यवस्था क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर द्वारा की जाती है। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु राज्य और संघ शासित प्रदेश लक्षद्वीप तथा पांडिचेरी क्षे.शि.सं., मैसूर में शामिल हैं। उत्तर-पूर्वी राज्यों जैसे असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिज़ोरम, मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिलांग में एक नया क्षे. शि.सं. (एन.ई.आर.आई.ई.) स्थापित किया गया। इन राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं और प्रचालन की प्रक्रिया में इस संस्थान को क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर के अंतर्गत शामिल रखना जारी है।

क्षेत्रीय कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. के अधिकतर क्षेत्रीय कार्यालय राज्यों की राजधानियों में स्थित हैं। ये राज्यों में विद्यालयी शिक्षा की समस्याओं और मुद्दों पर शिक्षा विभागों और अन्य संबद्ध संस्थाओं के साथ शैक्षिक संबंध स्थापित करते हैं तथा राज्यों को परिषदों की गतिविधियों और कार्यक्रमों की जानकारी देते हैं।

कार्यक्रम और गतिविधियाँ

एन.सी.ई.आर.टी. निम्नलिखित कार्यक्रमों एवं कार्यकलापों का संचालन करती है:

अनुसंधान

विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान की शीर्षस्थ राष्ट्रीय संस्था होने के नाते परिषद् अनुसंधान संबंधी कार्यकलापों और अनुसंधान के लिए सहायता तथा शैक्षिक अनुसंधान पद्धति संबंधी प्रशिक्षण देने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) के विभिन्न विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) और पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित अनुसंधान कार्य करते हैं।

परिषद् अपने घटकों में अनुसंधान कार्य करने के अतिरिक्त अन्य संस्थानों एवं संगठनों को वित्तीय सहायता तथा अकादमिक परामर्श के द्वारा उनके अनुसंधान कार्यक्रमों को सहायता प्रदान करती है। पीएच.डी. शोध प्रबंधों के प्रकाशन हेतु परिषद् द्वारा विद्वानों को सहायता प्रदान की जाती है। परिषद् विद्यालयी शिक्षा संबंधी अध्ययनों को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान अध्येतावृत्तियाँ भी प्रदान करती है, ताकि विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रमों के लिए शोध का मज़बूत आधार तैयार किया जा सके और सुदक्ष शोधकर्ताओं का कार्यदल विकसित हो सके।

परिषद् देश में शैक्षिक अनुसंधानों का आयोजन भी करती है। परिषद् में आंकड़ों के भंडारण, संसाधन एवं उन्हें पुन: प्राप्त करने के लिए कंप्यूटर सुविधाएँ हैं। यह अंतर्देशीय अनुसंधान परियोजना कार्यों में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के अभिकरणों से सहयोग करती है।

विकास

विद्यालयी शिक्षा के विकास संबंधी कार्यकलाप परिषद् के महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। परिषद् के विकास संबंधी

मुख्य कार्यों में शामिल हैं: विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए पाठ्यचर्या एवं अनुदेशी सामग्री तैयार करना और बच्चों तथा समाज की बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप उन्हें नवीन रूप देना। परिषद् के नवाचार संबंधी विकास के कार्यकलापों में विद्यालय-पूर्व शिक्षा, औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा, शिक्षा का व्यावसायीकरण और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालय शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री का विकास भी सम्मिलित है। इसके अलावा शैक्षिक प्रौद्योगिकी, जनसंख्या शिक्षा और विकलांगों तथा विशेष वर्गों की शिक्षा के विकास के लिए अपेक्षित कार्य किए जाते हैं।

प्रशिक्षण

परिषद् का एक प्रमुख कार्य पूर्व-प्राथमिक, प्रारंभिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर तथा व्यावसायिक शिक्षा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, मार्गदर्शन और परामर्श तथा विशेष शिक्षा के क्षेत्रों में भी अध्यापकों को सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करना है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ईज़.) के सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में विषयवस्तु और शिक्षण विधि का एकीकरण, वास्तविक कक्षा व्यवस्था में दीर्घकालीन प्रशिक्षु अध्यापक, और समुदाय कार्यों में छात्र/छात्राओं की प्रतिभागिता जैसी नवीन विशेषताओं को भी शामिल किया गया है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, राज्यों तथा राज्य स्तरीय संस्थाओं के प्रमुख कार्मिकों और अध्यापक शिक्षकों तथा सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण का कार्य भी करते हैं।

विस्तार

एन.सी.ई.आर.टी. व्यापक शैक्षिक विस्तार कार्यक्रम संचालित करती है। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान तथा राज्यों में स्थित क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यालय विभिन्न प्रकार से कार्यरत हैं। परिषद् राज्यों के विभिन्न संगठनों तथा संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य करती है और विभिन्न कार्मिक वर्गों, अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों, प्रश्न-पत्र तैयार करने वाले विशेषज्ञों, पाठ्यपुस्तक लेखकों आदि को सहायता प्रदान करने के लिए विस्तार सेवा विभागों, विद्यालयों और महाविद्यालयों के अध्यापक प्रशिक्षण केंद्रों के साथ व्यापक रूप से कार्य करती है।

विस्तार कार्यों के अंतर्गत नियमित रूप से सम्मेलन, संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ एवं प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि जहाँ विशेष समस्याएँ हैं तथा जिनके लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता है, वहाँ तक संबंधित शिक्षाकर्मी पहुँच सकें। परिषद् विकलांगों और समाज के सुविधावंचित वर्गों की शिक्षा के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित करती है। देश के सभी राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में विस्तार कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

प्रकाशन और प्रसार

परिषद् कक्षा 1 से 12 तक के विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित करती है। यह अभ्यास पुस्तिकाएँ, अध्यापक निर्देशिकाएँ, पूरक पाठमालाएँ, अनुसंधान रिपोर्ट आदि भी प्रकाशित करती है। इसके अतिरिक्त यह अध्यापक प्रशिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों तथा सेवारत अध्यापकों के लिए उपयोगी शिक्षा सामग्री भी प्रकाशित करती है। निरंतर शोध और विकास कार्य से तैयार अनुदेशी सामग्री राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों के विभिन्न संगठनों के लिए एक आदर्श सामग्री के रूप में होती है। यह सामग्री राज्य स्तरीय संगठनों को अपने यहाँ प्रयोग करने एवं/या अनुकूलन हेतु उपलब्ध कराई जाती है। ये पाठ्यपुस्तकें अंग्रेज़ी, हिंदी और उर्दू में प्रकाशित की जाती हैं।

शैक्षिक सूचनाओं के प्रचार-प्रसार के लिए परिषद् छह पत्रिकाएँ प्रकाशित करती है। *दि प्राइमरी टीचर* अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों में प्रकाशित की जाती है और इसका उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की कक्षा में सीधे उपयोग के लिए सार्थक एवं उपयुक्त सामग्री प्रदान करना है। *स्कूल साइंस* विज्ञान शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के लिए एक खुला मंच प्रदान करती है। *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन* समकालीन शैक्षिक विषयों पर चर्चा के माध्यम से शिक्षा में मौलिक और आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करती है। *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू* में शोध

लेख होते हैं और यह शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधानकर्ताओं को एक मंच प्रदान करती है। *भारतीय आधुनिक शिक्षा* हिंदी में प्रकाशित की जाती है तथा समकालीन विषयों पर शिक्षा में आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करने तथा शैक्षिक समस्याओं और व्यवहारों को प्रसारित करने के उद्देश्य से एक व्यापक मंच प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त परिषद् की समाचार-पत्रिका *एन.सी.ई.आर.टी. न्यूज़लैटर* हर मास अंग्रेज़ी और हिंदी में प्रकाशित की जाती है। इसका हिंदी संस्करण *शैक्षिक दर्पण* के नाम से निकलता है।

आदान-प्रदान कार्यक्रम

एन.सी.ई.आर.टी. विशिष्ट शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन तथा विकासशील देशों के कार्मिकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था करने के लिए यूनेस्को, यूनिसेफ, यू.एन.डी.पी., यू.एन.एफ.पी.ए. और विश्व बैंक जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर कार्य करती है। यह एपिड के सहयोगी केंद्रों में से एक है। यह शैक्षिक नवाचार के लिए राष्ट्रीय विकास दल (एन.डी.जी.) के सचिवालय के रूप में कार्य करती है। परिषद् विकासशील देशों के शैक्षिक कार्यकर्ताओं के लिए संबद्ध कार्यक्रमों तथा कार्यशालाओं में भागीदारी के माध्यम से प्रशिक्षण सुविधाएँ प्रदान करती है।

परिषद् विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार तथा अन्य राष्ट्रों के बीच निर्धारित द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए मुख्य अभिकरण के रूप में कार्य करती है। इस क्षेत्र में परिषद् भारतीय आवश्यकताओं से संबद्ध विशिष्ट शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करने के लिए अन्य देशों में अपने प्रतिनिधि मंडल भेजती है तथा अन्य देशों के विद्वानों के लिए प्रशिक्षण और अध्ययन दौरों की व्यवस्था करती है। अन्य देशों के साथ शैक्षिक सामग्री का आदान-प्रदान भी किया जाता है। इसके अलावा दूसरे देशों व संगठनों के अनुरोध पर परिषद् अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, बैठकों, परिसंवादों आदि में भाग लेने के लिए अपने संकाय सदस्यों को भेजती है।

सांगठनिक संरचना

केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री परिषद् के महानिकाय के अध्यक्ष हैं। सभी राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री इस निकाय के सदस्य होते हैं। इस निकाय के अन्य सदस्य हैं: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय में शिक्षा विभाग के सचिव, चार विश्वविद्यालयों के उपकुलपति (प्रत्येक क्षेत्र से एक), केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष, केंद्रीय विद्यालय संगठन के आयुक्त, केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो के निदेशक, श्रम मंत्रालय के प्रशिक्षण और रोज़गार निदेशालय के प्रशिक्षण निदेशक, योजना आयोग के शिक्षा प्रभाग का एक प्रतिनिधि, परिषद् की कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्य (जो उपर्युक्त में सम्मिलित नहीं हैं) तथा भारत सरकार द्वारा नामित अधिकतम 6 अन्य व्यक्ति (जिनमें कम से कम 4 सदस्य विद्यालयों के अध्यापक हों)। सचिव, एन.सी.ई. आर.टी. इस महानिकाय के संयोजक के रूप में कार्य करते हैं।

कार्यकारिणी समिति परिषद् का मुख्य शासी निकाय है। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री इसके अध्यक्ष (पदेन) और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उपमंत्री उपाध्यक्ष (पदेन) हैं। कार्यकारिणी समिति के अन्य सदस्य हैं: भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) के सचिव, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, विद्यालयी शिक्षा में रुचि रखने वाले चार शिक्षाशास्त्री (जिनमें दो विद्यालय अध्यापक हों), संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., परिषद् संकाय के तीन सदस्य (जिनमें से कम से कम दो प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष स्तर के होने चाहिए), मा.सं.वि.मं. का एक प्रतिनिधि और वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि (जो एन.सी.ई.आर.टी. का वित्तीय सलाहकार हो)। सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. कार्यकारिणी समिति का संयोजक होता है। कार्यकारी समिति के कार्यों में निम्नलिखित समितियाँ सहायता करती हैं:

1. वित्त समिति
2. स्थापना समिति
3. भवन एवं निर्माण समिति
4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की प्रबंध समितियाँ
5. केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का सलाहकार बोर्ड
6. पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान का सलाहकार बोर्ड

7. एन.आई.ई. की अकादमिक समिति
8. एन.आई.ई. के विभागों के सलाहकार बोर्ड
9. कार्यक्रम सलाहकार समिति
10. शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति

परिषद् मुख्यालय में निम्नलिखित शामिल हैं:

1. परिषद् सचिवालय
2. लेखा शाखा

परिषद् में पाँच वरिष्ठ पदाधिकारियों निदेशक, संयुक्त निदेशक (परिषद्), संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी., संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. और सचिव की नियुक्ति भारत सरकार द्वारा की जाती है। रिपोर्ट की अवधि के दौरान इन पदों को जिन अधिकारियों ने संभाला वे हैं:

एन.सी.ई.आर.टी. के वरिष्ठ पदाधिकारी

निदेशक	**प्रो. जे.एस. राजपूत (14.7.1999 से)** **प्रो. ए.के. शर्मा (30.6.1999 तक)**
संयुक्त निदेशक	**प्रो. ए.एन. माहेश्वरी (8.11.1999 तक)**
संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी.)	**प्रो. पी.के. भट्टाचार्य**
संयुक्त निदेशक (पी.एस.एस.सी. आई.वी.ई.)	**प्रो. एस. जेड. हैदर (3.3.2000 से)** **प्रो. ए.के. मिश्रा (1.6.1999 तक)**
सचिव	**श्रीमती सोनाली कुमार, आई.ए.एस. (24.11.1999 से)** **श्री बिमल जुल्का, आई.ए.एस. (23.11.1999 तक)**

अन्य कार्यों के साथ-साथ शैक्षिक कार्यों में निदेशक की सहायतार्थ तीन संकायाध्यक्ष हैं। रिपोर्ट की अवधि के दौरान निम्नलिखित ने यह पद संभाला :

एन.सी.ई.आर.टी. के संकायाध्यक्ष

डीन (अनुसंधान):	**प्रो. ए. एन. माहेश्वरी (8.11.1999 तक)**
डीन (अकादमिक):	**प्रो. ए.के. मिश्रा (2.6.1999 से)** **प्रो. अर्जुन देव (1.6.1999 तक)**
डीन (समन्वय):	**प्रो. एम.एस. खापर्डे**

डीन (अकादमिक) एन.आई.ई. के विभागों के कार्य का समन्वय करते हैं, डीन (अनुसंधान) अनुसंधान कार्यक्रमों का समन्वय करते हैं और शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) के कार्य को देखते हैं तथा डीन (समन्वय) विभागों, क्षेत्रीय कार्यालयों और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के सेवा/उत्पादन कार्यकलापों का समन्वय करते हैं।

कार्यक्रमों का नियोजन और अनुवीक्षण

एन.सी.ई.आर.टी. के घटक अपने कार्यक्रमों के निरूपण में अन्य बातों के साथ-साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई.) के प्रावधानों और राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की अपेक्षित सहायता को ध्यान में रखते हैं। राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान मुख्य रूप से राज्य समन्वय समिति (एस.सी.सी.) की कार्यप्रणाली के माध्यम से की जाती है। यह समिति एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय और राज्य शिक्षा विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच परस्पर अनुक्रिया के लिए एक मंच प्रदान करती है। इस समिति के अध्यक्ष शिक्षा सचिव होते हैं और सदस्य-संयोजक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ईज़.) के प्राचार्य होते हैं।

राज्यों की जिन शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान की जाती है उन पर आर.आई.ईज़. की प्रबंध समितियाँ (एम.सी.) विचार करती हैं। इनमें से अनेक शैक्षिक आवश्यकताओं को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अपने स्तर पर पूरा कर देते हैं। जिन शैक्षिक आवश्यकताओं के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के घटकों की सहायता अपेक्षित होती है उन्हें संबंधित घटकों को आवश्यक कार्रवाई के लिए भेज दिया जाता है। एन.आई.ई. के विभागों के शैक्षिक कार्यक्रमों का संसाधन संबंधित विभागों की विभागीय सलाहकार समितियाँ (डी.ए.बी.) करती हैं और उसके बाद एन.आई.ई. की अकादमिक समिति (ए.सी.) उस पर विचार करती है। सी.आई.ई.टी. के कार्यक्रम शिक्षा प्रणाली के अनुसार मीडिया पर आधारित हैं। इसके कार्यक्रमों का संसाधन संस्थान का सलाहकार बोर्ड (आई.ए.बी.) करता है। पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) के कार्यक्रमों का संसाधन उसके संस्थान का सलाहकार बोर्ड (आई.ए.बी.) करता है। एन.सी.ई.आर.टी. के घटकों और अन्य संस्थानों/

परिषद् के शैक्षिक सलाहकार राज्यों के शिक्षा अधिकारियों से परामर्श करके राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करते हैं जिनको राज्य समन्वय समितियों द्वारा संसाधित किया जाता है। इसके बाद इन संसाधित आवश्यकताओं को क्षेत्रीय समन्वय समितियाँ संसाधित करती हैं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की प्रबंध समितियाँ (एम.सी.) उनके अकादमिक कार्यक्रमों को संसाधित करती हैं।

परिषद् के घटकों तथा विश्वविद्यालयों के विभागों और स्वयंसेवी संगठनों सहित दूसरे संगठनों या संस्थानों द्वारा प्रस्तावित अनुसंधान कार्यक्रमों पर शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति विचार करती है।

परिषद् के स्तर पर राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं, राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं और अंतर्राष्ट्रीय विकासक्रमों को प्रतिबिंबित करते हुए शैक्षिक कार्यक्रमों के निरूपण, विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए कार्यक्रमों का कार्यान्वयन, कार्यक्रमों के कार्यान्वयन का अनुवीक्षण, अंतिम उत्पादों/परिणामों का मूल्यांकन तथा शिक्षा प्रणाली के सुधार में उनकी उपयोगिता से संबंधित कार्य प्रणाली को प्रदर्शित करने वाला चार्ट।

ए.सी., आई.ए.बी., एम.सी. और एरिक द्वारा भेजे गए कार्यक्रमों में पुनरावृत्ति व कमियों आदि की जांच के लिए कार्यक्रम सलाहकार समिति की एक उपसमिति कार्यक्रमों की छानबीन करती है।

कार्यक्रम सलाहकार समिति की उप-समिति की छानबीन के बाद परिषद् की कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) कार्यक्रमों पर विचार करती है।

पी.ए.सी. द्वारा अनुमोदित कार्यक्रमों को अंततः परिषद् की कार्यकारिणी समिति (ई.सी.) द्वारा स्वीकृति दी जाती है।

पी.ए.सी. और कार्यकारिणी समिति (ई.सी.) द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम परिषद् के घटकों द्वारा कार्यान्वित किए जाते हैं

कार्यक्रम के कार्यान्वियन की प्रगति का अनुवीक्षण प्रतिमाह घटक/ विभाग के अध्यक्ष द्वारा और निदेशक की अध्यक्षता में गठित अनुवीक्षण समिति द्वारा किया जाता है।

शिक्षा प्रणाली में विद्यालयी शिक्षा के गुणात्मक सुधार की दृष्टि से कार्यक्रमों के परिणामों के व्यापक प्रसार के लिए उनका मूल्यांकन घटक/ विभाग या पी.पी.एम.ई.डी. द्वारा किया जाता है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के परामर्श, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, राज्यों के शिक्षाधिकारियों के संपर्क, केंद्रीय शैक्षिक संगठनों (सी.ए.बी.ई., के.वी.एस., एन.वी.एस., सी.बी.एस.ई. आदि) द्वारा मांगी गई सहायता तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से प्राप्त ज्ञान के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के अकादमिक कार्यक्रमों को संसाधित किया जाता है और तदोपरांत संस्थान की शैक्षिक समिति (ए.सी.) इन पर विचार करती है।

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का सलाहकार बोर्ड (आई.ए.बी.) परिषद् के घटकों और एस.आई.ई.टीज. की आवश्यकताओं के आधार पर इस संस्थान के कार्यक्रमों को शिक्षा प्रणाली के लिए अपेक्षित संचार माध्यम सहायता संसाधित करता है।

केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (सी.आई.वी.ई.) के कार्यक्रम उस संस्था में सलाहकार बोर्ड द्वारा संसाधित किए जाते हैं।

संगठनों द्वारा प्रस्तावित अनुसंधान कार्यक्रमों पर शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) विचार करती है। शैक्षिक समितियों, संस्थान सलाहकार बोर्डों, आर.आई.ईज़. की प्रबंध समितियों और शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति द्वारा भेजे गए कार्यक्रमों की पुनरावृत्ति और कमियों आदि की जांच के लिए कार्यक्रम सलाहकार समिति की उप समिति उनकी छानबीन करती है।

विभिन्न कार्यक्रमों की समितियों द्वारा संसाधित और संस्तुत कार्यक्रमों पर अंतिम रूप से कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) विचार करती है। इसके साथ ही एन.सी.ई.आर.टी. की कार्यकारिणी समिति को पी.ए.सी. यह भी सिफारिश करती है कि किन विषयों पर अनुसंधान, प्रशिक्षण, विस्तार और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए तथा देश में विद्यालयी शिक्षा को उन्नत बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के सर्वोत्तम माध्यम कौन से होंगे। पी.ए.सी. मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्राप्त किए गए कार्यक्रमों पर भी विचार करती है।

वर्ष 1999-2000 के दौरान 22 मार्च 2000 को कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) की बैठक हुई और इसमें विभिन्न सलाहकार बोर्डों/समितियों की सिफारिशों पर विचार किया गया।

अनुवीक्षण और कार्यक्रम कार्यान्वयन

कार्यक्रम के कार्यान्वयन का अनुवीक्षण करने का दायित्व मुख्यत: एन.सी.ई.आर.टी. के प्रत्येक घटक/विभाग के अध्यक्ष पर ही होता है। एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक/संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. मुख्यालय स्थित घटकों/विभागों के कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा करते हैं।

परिषद् के विभिन्न घटकों के कार्यक्रमों के नियोजन, कार्यान्वयन, अनुवीक्षण और मूल्यांकन की पूरी प्रक्रिया परिषद् और राज्यों का एक सहयोगमूलक संयुक्त प्रयास है। एन.सी.ई.आर.टी. के लगभग सभी शैक्षिक कार्यक्रमों में राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के अकादमिक सदस्यों व शिक्षा कर्मियों तथा व्यावसायिकों को विभिन्न स्तरों पर शामिल किया जाता है अर्थात् कार्यक्रम की योजना से लेकर परिणामों के व्यापक संचरण तक में इनकी भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। इस संपूर्ण प्रक्रिया से एन.सी.ई.आर.टी. संकाय सदस्यों को राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के साथ घनिष्ठ सहयोग व प्रतिबद्धता से कार्य करने का अवसर मिलता है।

एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यक्रमों तथा कार्यकलापों के संबंध में सूचना एन.सी.ई.आर.टी. कार्यक्रम 'एन.सी.ई.आर.टी. के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का कैलेण्डर' तथा 'एन.सी.ई.आर.टी. की वार्षिक रिपोर्ट' आदि प्रलेखों के माध्यम से प्रचारित-प्रसारित की जाती है।

रिपोर्ट और विवरणिका

एन.सी.ई.आर.टी. विभिन्न प्रयोजनों से अपने कार्यक्रमों तथा गतिविधियों की आवधिक रिपोर्टें तथा विवरणिकाएं तैयार करती है। इस दौरान निम्नलिखित रिपोर्टें तथा विवरणिकाएं मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एम.एच.आर.डी.) को भेजी गईं:

- प्रमुख गतिविधियों और महत्वपूर्ण घटनाओं की मासिक रिपोर्ट
- प्रमुख गतिविधियों और महत्वपूर्ण घटनाओं का मासिक सारांश
- मंत्रिमंडल सचिवालय के लिए मुख्य घटनाओं की रिपोर्ट
- अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों की शिक्षा के संबंध में मासिक प्रगति रिपोर्ट
- राष्ट्रीय एकता परिषद् की संस्तुतियों के कार्यान्वयन के लिए की गई कार्रवाई की त्रैमासिक रिपोर्ट
- पी.ओ.ए.-92 के कार्यान्वयन पर की गई कार्रवाई की रिपोर्ट
- सांप्रदायिकता को समाप्त करने तथा अल्पसंख्यकों के कल्याण हेतु किए गए कार्यों की त्रैमासिक कार्रवाई रिपोर्ट
- शिक्षा विभाग (मा.सं.वि. मंत्रालय) के लिए वार्षिक रिपोर्ट हेतु मसौदा सामग्री
- बजट निष्पादन।

प्रशासन

31 मार्च, 2000 को एन.सी.ई.आर.टी. के संस्वीकृत स्टाफ की संवर्गवार स्थिति परिशिष्ट II में दी गई है।

वित्त

एन.सी.ई.आर.टी. की वर्ष 1999-2000 से संबंधित वार्षिक प्राप्ति और भुगतान लेखा संबंधी सूचना परिशिष्ट III में दी गई है।

विद्यालयी शिक्षा में एन सी ई आर टी के योगदान का सिंहावलोकन

शिक्षा की दूर-दूर तक पहुंच और विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार को साकार रूप प्रदान करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. अपने विभिन्न संघटकों के माध्यम से अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार तथा शैक्षिक सूचनाओं के प्रचार-प्रसार से संबंधित कार्यक्रम आयोजित करती है। वर्ष 1999-2000 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. ने विद्यालयी शिक्षा के राष्ट्रीय सरोकारों को ध्यान में रखते हुए अपने कार्यक्रमों को नया रूप दिया तथा उनकी प्राथमिकता के क्रम में परिवर्तन किया है।

एन सी ई आर टी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार की दिशा में वर्षों से प्रयासरत है। अपने उद्देश्यों को साकार रूप प्रदान करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. अपने विभिन्न संघटकों के माध्यम से अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार तथा शैक्षिक सूचनाओं के प्रचार-प्रसार से संबंधित कार्यक्रम आयोजित करती है। परिषद् के संघटकों में नई दिल्ली स्थित परिषद् मुख्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) के विभिन्न विभागों तथा केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) के अतिरिक्त भोपाल स्थित पंडित सुंदरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) तथा अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूर व शिलांग स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान एवं विभिन्न राज्यों/संघ शासित प्रदेशों में स्थित लगभग एक दर्जन क्षेत्रीय कार्यालय शामिल हैं।

वर्ष 1999-2000 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. ने विद्यालयी शिक्षा के राष्ट्रीय सरोकारों को ध्यान में रखते हुए अपने कार्यक्रमों को नया रूप दिया तथा उनकी प्राथमिकता के क्रम में परिवर्तन किया है। वर्ष के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रमों को आरम्भ/नियोजित किया गया:

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना
- यूनेस्को का विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (आई.सी.एस.एन.ई.) के लिए अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र
- राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा संसाधन केन्द्र
- अंतर्राष्ट्रीय मार्गदर्शन और परामर्श कार्यक्रम
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
- राष्ट्रीय कंप्यूटर विस्तार शिक्षा केन्द्र

विद्यालयी शिक्षा के अन्य क्षेत्रों में भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई.) पर आधारित कार्रवाई योजना (पी.ए.ओ.) के कार्यान्वयन की गति को त्वरित किया गया। ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) के कार्यान्वयन में शामिल राज्यों और ज़िला स्तर की एजेंसियों को शैक्षिक सहायता और परामर्शकारी सेवाएं प्रदान की गईं। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में विद्यालयी शिक्षा के विकास के लिए आवश्यक कदम उठाए गए। पाँचवां शैक्षिक अनुसंधान सर्वेक्षण खंड दो तथा छठा अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण जारी किए गए। रिपोर्ट के इस अध्याय में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ईज़.) द्वारा दिए गए राज्य स्तरीय योगदान सहित एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों/विभागों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों और कार्यकलापों का संक्षिप्त विवरण, विहंगावलोकन प्रस्तुत किया गया है। कार्यक्रमों और कार्यकलापों का विस्तृत विवरण विषय संबंधी विभिन्न अध्यायों में दिया गया है।

शैशवकालीन शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालय-पूर्व शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के संगत संसाधन सामग्री के विकास, प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों के संचालन, तथा अनुसंधान अध्ययन के माध्यम से शैशवकालीन शिक्षा (ई.सी.ई.) के क्षेत्र में शैक्षिक सहयोग व महत्वपूर्ण आगतें प्रदान कर रही है और राष्ट्रीय स्तर पर यूनिसेफ द्वारा सहायता प्राप्त परियोजनाओं का समन्वयन कर रही है। आई.सी.डी.एस. के विद्यालय-पूर्व शिक्षा घटकों और इसके प्रति समुदाय के दृष्टिकोण तथा इसकी उपयोगिता के विस्तार की अध्ययन रिपोर्ट प्रकाशित की गई। इस अध्ययन के प्राप्त निष्कर्षों के संकेत इस प्रकार मिलते हैं:

(1) अपर्याप्त सुविधाएं, (2) उपयुक्त पाठ्यचर्या का विकास नहीं हुआ, (3)विद्यालय-पूर्व तथा प्राथमिक विद्यालय के बीच संबंधों में कमी और (4) अभिभावकों का अत्यधिक सकारात्मक दृष्टिकोण। खिलौना निर्माण प्रतियोगिता की पुरस्कृत प्रविष्टियों पर आधारित एक पुस्तक 'इज़ी टु मेक ट्वाइज़ एंड गेम्स' शीर्षक से तैयार की गई। ई.सी.सी.ई. के कार्मिकों तथा अभिभावकों के लिए ई.सी.ई. बच्चों की प्रगति के लिए अनुवीक्षण दिशा-निर्देशों पर एक प्रलेख तथा ई.सी.ई. के क्षेत्र में अभिभावकों की जागृति के लिए छह पोस्टर तैयार किए गए। छह राज्यों के डाइटों/एस.सी.ई.आर.टीज़. के राज्य स्तरीय प्रमुख कार्मिकों के लिए ई.सी.ई. में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। विद्यालय-पूर्व शिक्षा में लद्दाख पहाड़ी परिषद् के 60 शैक्षिक अधिकारियों को अभिविन्यासित किया गया।

प्राथमिक शिक्षा

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई.) के संदर्भ में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की दिशा में प्रयास

किए गए। राष्ट्रीय प्रलेखन एकक में विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित अतिरिक्त सूचना को एकत्र करने, संकलित करने, प्रलेखबद्ध करने तथा इसका प्रचार-प्रसार करने का कार्य प्रगति पर है। विभिन्न राज्यों की पाठ्यपुस्तकों और रोचक अधिगम सामग्री को विश्लेषण के लिए एकत्र कर लिया गया है। 'ग्लिंप्सेज' और 'आभास' नामक त्रैमासिक पत्रिकाएं विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा में विकास पर अद्यतन सूचनाएँ प्रदान करती हैं।

अन्य त्रैमासिक पत्रिकाओं, अंग्रेज़ी में 'दि प्राइमरी टीचर' तथा हिंदी में 'प्राइमरी शिक्षक' का नियमित प्रकाशन, प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ा रहे शिक्षकों और अध्यापक प्रशिक्षकों को प्राथमिक शिक्षा के नवाचारों और विचारों तथा सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए मीडिया की ज़रूरतों को पूरा करता है। विभिन्न विषयों पर आरंभ किए गए निम्नलिखित अनुसंधान लगभग पूरे हो चुके हैं:

(1) कक्षा-प्रक्रिया का अध्ययन: प्राइमरी स्तर पर बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन से संबंधित शिक्षकों की अभिवृत्तियों/अपेक्षाओं पर केन्द्रित, (2) बच्चों की बोधात्मक अवस्थिति की तुलना में चयनित संकल्पनाओं/दक्षताओं के अर्जन का प्रयोगसिद्ध अध्ययन, (3) कामकाजी बच्चों को विद्यालयों की मुख्यधारा में लाने के लिए एम.वी.फाउंडेशन के अनुभवों का केस अध्ययन और (4) पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं में पाठ्यचर्या-बोझ का एक अध्ययन। विद्यालयी पाठ्यचर्या में अबोधात्मक घटकों को पढ़ाने के लिए कक्षा शिक्षण में रंगमंच/नाटक तकनीक को अपनाने के लिए एक विद्यालय-रंगमंच मुहिम आरंभ की गई। गणित के अधिगम में कठिनाइयों के निदान के लिए परीक्षण सामग्री का एक डाटा-बैंक विकसित किया गया और अध्यापकों के लिए निदानात्मक परीक्षण पर एक पुस्तिका तैयार की गई। बच्चों में अनुभवजन्य मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए 'आओ मिलकर गाएं' पुस्तक का संशोधित संस्करण निकाला गया और एस.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से शिक्षकों और बच्चों के लिए पाँच अंतर्राज्यीय शिविर लगाए गए। केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय बोर्डों के संसाधन व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया और तिब्बती विद्यालयों का अध्ययन किया गया। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्रीय योगदान इस प्रकार हैं:

कक्षा एक और दो के लिए क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पर अनुदेशी सामग्री का विकास, प्राथमिक विद्यालयों में छात्र-छात्राओं की उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन, अध्यायों और पाठ्य-कविताओं के रूप में 60 श्रव्य कार्यक्रमों का विकास। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों से संबद्ध प्रायोगिक स्कूलों ने कार्रवाई अनुसंधान प्रविधि के रूप में सक्षमता आधारित अध्यापन जारी रखे। अध्यापकों को बहुविध स्थितियों, क्रियाकलाप आधारित शिक्षण, स्वास्थ्य आदतों, शारीरिक शिक्षा और योग में प्रशिक्षित किया गया।

ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम को समर्थन

ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) का उद्देश्य उच्च कोटि की प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण है। आधार-रेखा और मध्यावधि मूल्यांकन सर्वेक्षण संचालित किया गया और 'स्टूडेन्ट्स अचीवमेन्ट अण्डर एम.ए.एस. अप्रेज़ल इन फेज़-II स्टेट्स' शीर्षक से एक दस्तावेज़ प्रकाशित किया गया। इस दस्तावेज़ में मध्यावधि सुधारों के संकेतक दिए गए हैं तथा डी.पी.ई.पी. के अंतर्गत कार्यक्रमों की भावी योजना बनाने के लिए सूचक दिए गए हैं। डी.पी.ई.पी. की समन्वय समिति द्वारा कार्यकलापों की प्रगति की समीक्षा की गई। अधिगम कठिनाइयों की पहचान के लिए प्राथमिक स्तर के गणित में निदानात्मक परीक्षण सामग्री का एक डाटा बैंक तैयार किया गया। कक्षा-प्रेक्षणों, अध्यापकों, अभिभावकों और प्रशिक्षणार्थियों के गहन साक्षात्कारों के द्वारा कक्षा-प्रक्रियाओं का अध्ययन किया गया। प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित निम्नलिखित विषयों पर चार अनुसंधान अध्ययन क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ईज़.) द्वारा पूरे किए जा रहे हैं:

(1) कक्षा प्रक्रियाएँ और भारतीय विद्यालय सुधारकों/महान शिक्षाविदों/भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परंपरा के शैक्षिक-दर्शन पर आधारित शिक्षण प्रदान करने वाले प्राथमिक विद्यालयों की संस्थानिक संरचना

(2) प्राथमिक अध्यापकों की मूल्यांकन प्रक्रिया पर सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण सामग्री की सार्थकता

(3) प्राथमिक शिक्षा पर ई.सी.सी.ई. का प्रभाव

(4) आंध्र प्रदेश के डी.पी.ई.पी. ज़िलों में प्रभावी और अप्रभावी विद्यालय शिक्षा समितियों और प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के नामांकन, अवधारण और उपलब्धि पर उनके प्रभाव का अध्ययन।

'प्राथमिक स्तर पर विद्यालयी प्रभावकारिता में अनुसंधान' विषय पर पाँचवीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 14 से 16 जुलाई 1999 तक आयोजित की गई। इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की पूर्व तैयारी के लिए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं। पाँचवीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट में प्रस्तुत किए गए पत्रों और संगोष्ठी की कार्रवाइयों का प्रलेखन भी शामिल किया। उत्तर प्रदेश और बिहार राज्यों में डी.पी.ई.पी. के अल्पसंख्यकों द्वारा चलाए जा रहे संस्थानों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पहचान की गई। उड़ीसा के गजपति ज़िले में जनजातीय बच्चों द्वारा गणित-अधिगम का एक केस अध्ययन भी किया गया।

अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण

इस क्षेत्र में निम्नलिखित अध्ययन पूरे किए गए : (1) भारत में उच्च प्राथमिक स्तर पर एन.एफ.ई. की स्थिति, (2) अनौपचारिक शिक्षा तथा वैकल्पिक शिक्षण के क्षेत्र में एस.सी.ई.आर.टी. की स्थिति, (3) प्राथमिक स्तर के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में हिन्दी के पठन-पाठन में आने वाली कठिनाइयाँ और (4) बिहार, हरियाणा, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश में एन.एफ.ई. कार्यक्रम की प्रभाविता तथा रिपोर्ट लेखन का कार्य प्रगति पर है। नौवीं पंचवर्षीय योजना की ज़रूरतों के विशेष संदर्भ में एस.सी.ई.आर.टी./एस.आर.सी. के अनौपचारिक शिक्षा संसाधन व्यक्तियों को अनौ. शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण के विविध पहलुओं की जानकारी दी गई। बिहार और दक्षिणी राज्यों की स्वयंसेवी संस्थाओं के अनौपचारिक शिक्षा के प्रमुख कार्यकर्ताओं के लिए विषयवस्तु आधारित दो अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न सरकारी और स्वैच्छिक संगठनों के लिए परामर्शकारी सेवा का विस्तार किया गया। अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए राज्यों के अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण संस्थानों के निदेशकों का वार्षिक सम्मेलन और नवाचारी और प्रायोगिक परियोजनाओं पर स्वयंसेवी संगठनों की राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। मा.सं. वि.मं. के अनुदान हेतु विभिन्न संगठनों द्वारा प्रस्तुत 40 परियोजनाओं का मूल्यांकन किया गया और कुछ गैर-सरकारी संगठनों के नवाचारी कार्यक्रमों के अध्ययन हेतु क्षेत्र अध्ययन आयोजित किए गए।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यक शिक्षा

उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों के विद्यालयों में पढ़ा रहे गैर-आदिवासी शिक्षकों के आदिवासी भाषा प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण सामग्री विकसित की गई। इस सामग्री का उद्देश्य कक्षा में पठन-पाठन प्रक्रिया और अध्यापक-छात्र सहभागिता को अर्थपूर्ण बनाना और एक आदिवासी भाषा में प्रवाह विकसित करना है। 'सरकार द्वारा पोषित मकतबों/मदरसों की वर्तमान पाठ्यचर्या का विश्लेषण' शीर्षक का अध्ययन पूरा हो चुका है और इसकी प्रारूप-रिपोर्ट तैयार की गई। अल्पसंख्यकों (मुसलमानों) के शैक्षिक विकास के उद्देश्य से चलाई गई केंद्र पोषित योजनाओं से उनके हितों का कितना विकास हुआ, इसके मूल्यांकन के लिए नमूना सर्वेक्षण किया गया।

अल्पसंख्यकों के लिए चलाए गए संस्थानों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करने, मदरसों का आधुनिकीकरण करने के लिए सुझाव आमन्त्रित करने और परियोजनाओं के लिए विज्ञान पुस्तकें और विज्ञान किट आदि के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए विभिन्न मदरसा बोर्डों की एक कार्यशाला आयोजित की गई।

विकलांग बच्चों की शिक्षा

बधिर बच्चों के भाषा-विकास के लिए पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षकों की सहायता हेतु एक पुस्तिका तैयार की गई। प्राथमिक स्तर पर एकीकृत पद्धति में बधिर बच्चों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु हिंदी भाषा की पाठ्यचर्या में अनुकूलन और समायोजन किया गया। आकलित आवश्यकताओं के आधार पर कमज़ोर दृष्टि वाले बच्चों को मुख्यधारा के परिवेश में एकीकृत करने के लिए प्राथमिक अध्यापकों हेतु संदर्शिका का हिंदी संस्करण तैयार किया गया। एकीकृत पद्धति में प्राथमिक विद्यालयों के दृष्टिहीन बच्चों के गणित पाठ्यचर्या के कार्यसंपादन हेतु एक पुस्तिका विकसित की जा रही है। विकलांग बच्चों का सामान्य

विद्यालयों में एकीकरण के क्षेत्र में डी.पी.ई.पी. राज्यों के आई.ई.डी. समन्वयकों, विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों, विद्यालयों और संस्थानों आदि को अकादमिक सहायता प्रदान की गई। भारत-आस्ट्रेलिया क्षमता निर्माण कार्यक्रम के अंतर्गत समावेशी शिक्षा के लिए अध्यापकों को तैयार करने हेतु संसाधन व्यक्ति प्रशिक्षित किए गए। भारत और एशिया-प्रशांत क्षेत्रों में समावेशी पद्धति में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रवेश को बढ़ावा देने के लिए यूनेस्को के सहयोग से 'अन्तर्राष्ट्रीय विशिष्ट शिक्षा केन्द्र' (आई.सी.एस.एन.ई.) स्थापित किया गया। आई.ई.डी.सी. के मूल्यांकन के लिए सामान्य शिक्षा पद्धति, अध्यापकों और बच्चों पर एकीकृत शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन प्रगति पर है।

बालिका शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. महिलाओं की शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र के रूप में सार्क के क्रियाकलापों के 'नोडल केन्द्र' के रूप में कार्य करती है तथा संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को परामर्शकारी सेवाएं प्रदान करती है। ग्रामीण बालिकाओं के नामांकन, प्रतिधारण और संप्राप्ति के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए 'माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं को प्रदान की जा रही भोजन व आवास की सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण' की केंद्रीय योजना का मूल्यांकन किया गया। इसका प्रभाव बहुत सकारात्मक पाया गया। म.प्र. प्राथमिक शिक्षा में बालिकाओं के नामांकन और प्रतिधारण पर प्रोत्साहन योजना से पता चला कि वितरित सामानों की गुणवत्ता और व्याप्ति में सुधार की आवश्यकता है। (1) दूरवर्ती क्षेत्रों में बालिका शिक्षा, (2) बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने में भोपाल की बेगमों की भूमिका, (3) बालिकाओं के लिए शारीरिक शिक्षा और खेलकूद का स्तर, (4) दिल्ली के स्कूलों में लैंगिक परिप्रेक्ष्य से विद्यालयी प्रयास आदि अध्ययन प्रगति पर हैं। महिलाओं की शिक्षा और विकास की पद्धति पर नवां छह-सप्ताही कार्यक्रम आयोजित किया गया और एक प्रशिक्षण संदर्शिका तैयार की गई। इस कार्यक्रम में बारह राज्यों से 27 संसाधन व्यक्तियों ने भाग लिया।

सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा

(1) कक्षा पाँच की समाप्ति पर अरुणाचल प्रदेश के विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी भाषा में ग्रहण की गई भाषिक दक्षता, (2) उच्चतर विद्यालयों के विद्यार्थियों में मानचित्र को समझने की क्षमता और उपयोग का सर्वेक्षण, (3) हिन्दी भाषी राज्यों में आधुनिक भारतीय भाषाओं (एस.आई.एल.) के शिक्षकों की नियुक्ति के लिए योजना के कार्यान्वयन की अवस्थिति से संबंधित अध्ययन पूरे कर लिये गए हैं और रिपोर्ट तैयार कर ली गई है। एन.सी.ई.आर.टी. की सामाजिक विज्ञान और भाषा की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के लिए एक परियोजना शुरू की गई। इस वर्ष तैयार की गई/संशोधित पाठ्यपुस्तकों में शामिल हैं–कक्षा आठ और दस के लिए भूगोल की नई/संशोधित पाठ्यपुस्तकें, कक्षा ग्यारह और बारह के लिए अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तकें, कक्षा दस के लिए राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक, कक्षा छह से आठ के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक का हिंदी संस्करण, उच्च प्राथमिक स्तर के लिए हिंदी व्याकरण और रचना, कक्षा दस के लिए हिंदी 'बी' कोर्स की पाठ्यपुस्तक और नई शृंखला में कक्षा एक के लिए अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक।

व्यापार-अध्ययन और लेखाशास्त्र के पाठ्यक्रमों को संशोधित किया गया। विद्यालयी विद्यार्थियों के लिए सचित्र हिंदी शब्दकोश और 'एन्सिएन्ट स्टोरीज़ रिटोल्ड' और 'वी आर वन' दो पूरक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए समाजशास्त्र की एक पाठ्यपुस्तक, 'उर्दू साहित्य का इतिहास', 'मानवाधिकार- एक स्रोत ग्रंथ' का उर्दू संस्करण और संस्कृत-विशेषज्ञ समूह द्वारा बनायी गई योजनाएं प्रारम्भ की गईं। 'इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इन्डिपेंडेंस : विजुअल्स एंड डॉक्यूमेंट्स' का हिंदी संस्करण छप रहा है। (1) आधुनिक भारत में उर्दू-शिक्षण- समस्याएँ और निदानात्मक मानदण्ड, (2) आज का सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य और कबीर और (3) संस्कृति शिक्षण के तरीकों का सुदृढ़ीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों ने अनेक प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए और प्रशिक्षण सामग्री तथा शिक्षण-कौशल में संदर्शिकाएँ विकसित कीं।

पाठ्यचर्या के पुनर्नवीकरण को प्राथमिकता देते हुए पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ पाठ्यचर्या के विविध पक्षों पर विद्यालयी पद्धति जिसमें अध्यापक, अध्यापक-प्रशिक्षक और प्रशासक भी शामिल हैं, से पाठ्यचर्या 'फीडबैक' इकट्ठा किया गया। प्रयोगशाला उन्मुख कार्यक्रमों के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी. ने कक्षा ग्यारह-बारह के लिए रसायन विज्ञान के प्रायोगिक पाठ्यक्रम के लिए वर्कशीट, +2 स्तर के लिए जीव विज्ञान की वर्कशीट, रसायन विज्ञान में सेमी-माइक्रो तकनीक को अपनाते हुए नवाचारी प्रयोगों और गणित प्रयोगशाला के लिए प्रयोगशाला-संदर्शिका तैयार की। (1) 'मोल कॉन्सेप्ट एण्ड केमिकल स्टोकियोमेट्री', (2) 'केमिकल काइनेटिक्स', (3) 'केमिकल थर्मोडा-इनेमिक्स और (4) 'सम बेसिक कान्सेप्ट्स इन इनओर्गेनिक कमेस्ट्री', ये चार माड्यूल प्रबुद्ध विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए तैयार किए गए। +2 स्तर के लिए गणित में एक 'प्राब्लम बुक' और जीव विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान के लिए 'परीक्षण सामग्री' (टेस्ट आइटम्स) भी विकसित की गईं। 'पढ़ें और सीखें' योजना के अंतर्गत विज्ञान के कई नए शीर्षकों पर नई पुस्तकों के लेखन का कार्य प्रारंभ किया गया। 'हमारा अद्भुत वायुमंडल अब मैला क्यों', 'सौर ऊर्जा', 'मौसम-क्या, क्यों और कैसा', 'ग्लिम्प्सेज़ ऑफ प्लान्ट्स लाइफ' भाग-1 तथा भाग-2, 'बालू बोले अपनी बात', पुस्तकें छपने हेतु भेजी गईं। इनमें से प्रथम तीन पुस्तकें प्रकाशित हो गई हैं और दो प्रकाशन के क्रम में हैं। छह अन्य पुस्तकें लिखी जा रही हैं। 'रसायन विज्ञान के कुछ रोचक विषय' परियोजना के अंतर्गत 'एलॉय' पर एक माड्यूल विकसित किया गया।

पर्यावरणीय शिक्षा में राज्य स्तरीय संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास किया गया। सिक्किम राज्य के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के लिए गणित में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। रसायन विज्ञान में शिक्षकों के अभिविन्यास के लिए सहकारी-अधिगम कार्यनीति का एक मॉडल विकसित किया गया और उसका सफलतापूर्वक प्रयोग किया गया। 27 नवम्बर से 3 दिसम्बर 1999 को राजकोट में गुजरात सरकार के सहयोग से विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण विषय पर बच्चों के लिए 26वीं जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी, 1999 आयोजित की गई। 'विज्ञान के मॉडल की संरचना और कार्य-व्यवहार' नामक एक पुस्तिका, प्रदर्श-सूची इत्यादि प्रकाशित और वितरित की गईं। राज्य स्तर के लिए विज्ञान प्रतियोगिता का केन्द्रीय विषय 'जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी' था। ये प्रदर्शनियाँ 30 राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों, केंद्रीय विद्यालय संगठन, नवोदय विद्यालय
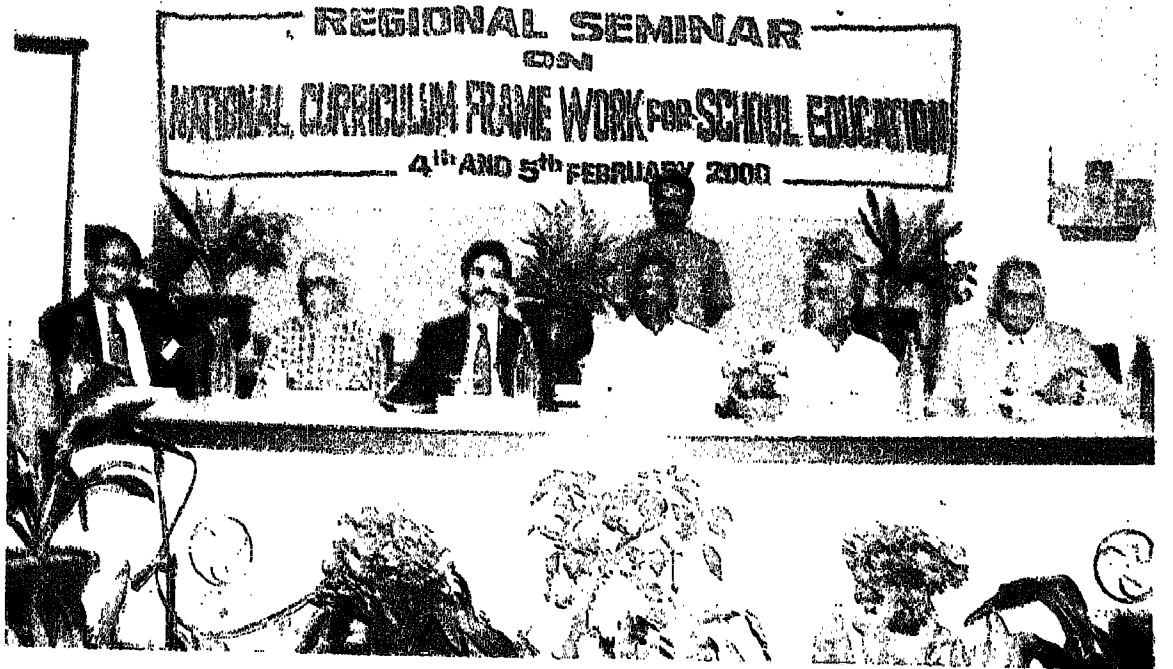
विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर आयोजित क्षेत्रीय संगोष्ठी।
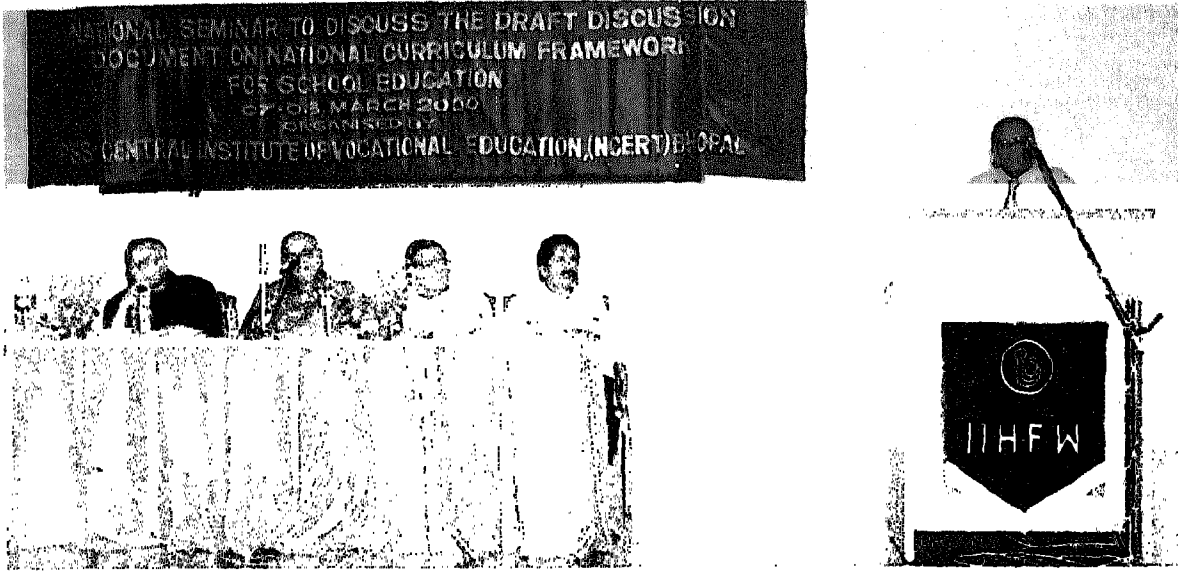
विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के परिचर्चा दस्तावेज़ के प्रारूप पर विचार-विमर्श हेतु आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी।

समिति और परमाणु ऊर्जा विद्यालयों द्वारा आयोजित की गईं। उनके संगठनों को सहायता के रूप में एन.सी.ई.आर.टी. ने 16 लाख रुपए प्रदान किए।

विज्ञान शिक्षा का स्तर-अध्ययन दो चरणों में पूरा हुआ। प्रथम चरण में भारत में विज्ञान शिक्षा के कार्यालयी स्तर की आधार सामग्री प्राप्त हुई जिसमें विद्यालयी ढाँचा, सुविधाओं और विभिन्न राज्यों के पाठ्यक्रमों की तुलना को शामिल किया गया। द्वितीय चरण में उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन किया गया। यह अध्ययन बताता है कि 80 प्रतिशत बल केवल ज्ञान पर दिया गया है।

शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों को विज्ञान तथा गणित के विभिन्न पक्षों से जुड़े उनके अवबोधनों, अनुभवों और नवाचारों को प्रचार-प्रसार करने हेतु मंच प्रदान करने के लिए 'स्कूल साइंस' नामक त्रैमासिक पत्रिका लगातार निकाली जा रही है।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

संकाय सदस्यों के परामर्श, प्रतिष्ठित वक्ताओं से परस्पर विचार-विमर्श और विभिन्न सैद्धान्तिक और शोध सामग्रियों के माध्यम से विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर एक परिचर्चा दस्तावेज़ तैयार किया गया। इस परिचर्चा दस्तावेज़ पर विचार-विमर्श करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. ने क्षेत्रीय संगोष्ठियाँ, व्यावसायिक क्षेत्रों पर राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नवोदय विद्यालय समिति, एन.ओ.एस., नीपा, इग्नू आदि केन्द्रीय संगठनों, स्वयंसेवी संस्थाओं जैसे- अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक (ए.आई.पी.टी.ई.), कला, संस्कृति और शिक्षा स्थायीकरण समाज, गाँधी शांति प्रतिष्ठान, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के सभी बोर्ड अध्यक्षों के सम्मेलन के लिए संगोष्ठियों की एक श्रृंखला आयोजित की और राष्ट्रीय व प्रदेश स्तर के अनेक संगठनों, प्रशिक्षित शिक्षाविदों और समाज के सभी वर्गों के विचार/सुझाव भी प्राप्त किए। प्राप्त पुनर्निवेशन के आधार पर दस्तावेज़ को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.) के चौथे चरण को एक नए नाम 'विद्यालयों में जनसंख्या और शिक्षा विकास' के अंतर्गत आरम्भ किया गया। इस परियोजना को केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.), 30 राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.), राष्ट्रीय मुक्त

पूर्व निदेशक प्रो ए.के. शर्मा जनसंख्या शिक्षा की पोस्टर प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरित करते हुए।

विद्यालय (एन.ओ.एस.), केन्द्रीय विद्यालय संगठन (के.वी.एस.) और नवोदय विद्यालय समिति (एन.वी.एस.) द्वारा भी क्रियान्वित किया जा रहा है। विद्यालयों में किशोरावस्था शिक्षण पर आधार सामग्री का एक पैकेज प्रकाशित किया गया। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने खुर्दा, बलसोर और कोरापत ज़िलों की मानव जनसंख्या का पी.क्यू.एल. के मानकों पर एक स्तर अध्ययन किया और अध्यापक-शिक्षकों के लिए पुर्नावधारण जनसंख्या शिक्षा पर एक सहक्रियात्मक संगोष्ठी आयोजित की।

13 राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के 21 परियोजना कार्मिकों और अन्य कार्यान्वयन अभिकरणों के लिए विद्यालयों में जनसंख्या और शिक्षा विकास पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। केरल राज्य में अन्तर्राज्यीय शैक्षिक दौरे पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

किशोर पुनरोत्पादक स्वास्थ्य पर एक आधार बिन्दु (बेन्चमार्क) सर्वेक्षण किया गया। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए पुर्नावधारण जनसंख्या शिक्षा और किशोर शिक्षा पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। परियोजना क्रियाकलाप के कार्यान्वयन का अनुवीक्षण पाँच अंतर्क्षेत्रीय समन्वय समिति की बैठकों द्वारा राज्य स्तर पर भी और मा.सं.वि.मं., एम.एच.ओ.एफ.डब्ल्यू. तथा यू.एन.एफ.पी.ए. में किया गया। प्रगति के पुनरीक्षण और कार्ययोजना तथा बजट अनुमान तैयार करने के लिए परियोजना प्रगति पुनरीक्षण बैठकें आयोजित की गईं।

अंतर्राष्ट्रीय पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन '21वीं सदी के लिए निर्णय : चयन और उत्तरदायित्व' विषय पर किया गया। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा 'जनसंख्या शिक्षा सप्ताह' और 'विश्व जनसंख्या दिवस' मनाया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। 'भारत में जनसंख्या स्थिरीकरण में महिलाओं का सशक्तीकरण ही सहायक होगा' विषय पर एक राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। जनसंख्या शिक्षा बुलेटिन के दो अंक प्रकाशित किए गए और उनका प्रचार-प्रसार किया गया। डी.एल.डी.आई. के जनसंख्या शिक्षा केन्द्र में जनसंख्या शिक्षा पर सामग्री इकट्ठा करने और उसके प्रचार-प्रसार का कार्य जारी रखा। साथ ही किशोर पुनरोत्पादक स्वास्थ्य और लैंगिक स्वास्थ्य पर एक मूल संदर्भ ग्रंथ सूची विकसित की और उसका प्रचार-प्रसार किया गया।

शैक्षिक मनोविज्ञान

(1) विज्ञान की प्रकृति, विज्ञान के प्रति दृष्टिकोण और दैनिक जीवन में इसकी प्रासंगिकता के संदर्भ में माध्यमिक विद्यालय स्तर की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण, (2) मीराम्बिका में शिक्षण : एक केस अध्ययन, (3) भारत में शैक्षिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान प्रवृत्तियां और मौलिकता, (4) स्थिति और विकास के निर्माण में परामर्शदाता (प्रथम चरण), (5) सामाजिक मानदण्डों के प्रति किशोरों के दृष्टिकोण का एक अध्ययन, (6) परामर्शदाता-प्रशिक्षण कार्यक्रम में कार्य निष्पादन और सेवा निष्पादन के लिए चुनाव प्रक्रिया की भावी संभावना, (7) भारत में मार्गदर्शन के क्षेत्र में अनुसंधान : एक गहन अध्ययन और (8) भारत में प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा की शैक्षिक मनोविज्ञान पाठ्यचर्या का आलोचनात्मक अध्ययन पर अध्ययन पूरे किए गए। 'कक्षा ग्यारह के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन' तथा परामर्शदाता निर्माण : स्थिति एवं विकास (द्वितीय चरण) पर अध्ययन प्रगति पर है। लोकप्रिय मनोविज्ञान शृंखला के अंतर्गत 14 पुस्तिकाओं, प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान में पाठ्यचर्या, परामर्श केस प्रबंधन पर प्रायोगिक संदर्शिका और कक्षा में

अध्यापकों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर संसाधन सामग्री, +2 स्तर पर मनोविज्ञान पाठ्यचर्या, डाइट कार्मिकों के लिए अध्यापन अधिगम मनोविज्ञान में संवर्द्धन पाठ्यक्रम के स्व अधिगम मॉड्यूलों को भी अन्तिम रूप दिया जा रहा है। मूल्य, मनोवृत्ति और रुचि मापन पर लगभग 60 भारतीय परीक्षणों की एक पुस्तिका प्रकाशन के लिए तैयार है।

मार्गदर्शन और परामर्श में नौ महीने के एक स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम में 13 राज्यों से 31 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। सी.बी.एस.ई. से संबद्ध विद्यालयों में +2 स्तर पर मनोविज्ञान पढ़ाने वाले विद्यालयी अध्यापकों के लिए मनोविज्ञान में एक संवर्द्धन पाठ्यक्रम और राज्य स्तरीय प्रशिक्षित मार्गदर्शन कर्मिकों के लिए पुनश्चर्या कार्यक्रम आयोजित किया गया। एन.आई.ई., सी.आई.ई.टी. और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में मूल्य शिक्षा पर विस्तृत ग्रंथ-सूची तैयार की जा रही है। मूल्य शिक्षा पर एक संसाधन केन्द्र स्थापित किया गया है जो मूल्यों की सामग्री के लिए राष्ट्रीय भण्डार सदन का कार्य करेगा। इस केन्द्र में मूल्य शिक्षा से संबंधित विभिन्न प्रकार का साहित्य शामिल किया गया है। मार्गदर्शन और परामर्श में एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम करने की योजना बनाई गई है। राष्ट्रीय शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षण पुस्तकालय में लगभग 25 भारतीय परीक्षण शामिल करके उसे समृद्ध किया गया। कैरियर सूचना केन्द्र तथा मार्गदर्शन प्रयोगशाला ने मार्गदर्शन और परामर्श के पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों तथा संकाय की आवश्यकताओं की पूर्ति की। शैक्षिक मनोविज्ञान और परामर्श के क्षेत्रों में विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी एजेंसियों को परामर्श सेवाएँ और अनुसंधान सहायता उपलब्ध कराई गई।

परीक्षा सुधार

पंजाब, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, गोवा, सी.बी.एस.ई., आई.सी.एस.सी.ई., पश्चिम बंगाल और नागालैण्ड बोर्डों के उच्च माध्यमिक परिणामों के विश्लेषण से पता चला कि छात्रों की तुलना में छात्राओं का प्रतिशत बेहतर रहा। विद्यार्थियों का उत्तीर्ण प्रतिशत अन्य बोर्डों की अपेक्षा आई.सी.एस.सी.ई. का, विज्ञान विषयों में अन्य बोर्डों की तुलना में गोवा बोर्ड का, अन्य विज्ञान विषयों की अपेक्षा जीव विज्ञान का उच्च था। आन्तरिक और बाह्य परीक्षा अंकों के अध्ययन से यह संकेत मिला कि बोर्ड-पूर्व परीक्षा और बोर्ड परीक्षा परिणामों के बीच एक सार्थक सह-संबंध था। उच्च माध्यमिक स्तर के लिए रसायन विज्ञान में प्रायोगिक कार्यपुस्तिका और रसायन प्रयोग कार्य के मूल्यांकन के लिए एक योजना विकसित की गई। कक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया को मज़बूत बनाने के लिए कक्षा चार के लिए पर्यावरणीय अध्ययन (सामाजिक अध्ययन) में परीक्षण सामग्री का एक 'पूल' तैयार किया गया। 'ग्रेडिंग के बारे में सब कुछ जानिए' को ध्यान में रखते हुए एक सुनिश्चित तरीके से 'विद्यालयों में ग्रेडिंग' शीर्षक से एक दस्तावेज़ विकसित किया गया और उसे विस्तृत रूप से प्रचारित किया गया। विभिन्न विद्यालयी विषयों में संतुलित प्रश्न-पत्र विकसित करने के लिए जम्मू-कश्मीर और कर्नाटक बोर्डों के प्रश्नकों/परीक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। गोवा के उच्च माध्यमिक शिक्षकों को उत्तम प्रश्न और एक 'आइटम बैंक' बनाने की तकनीकों से अवगत कराया गया। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के शिक्षकों को सतत् और व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा और तकनीक में अभिमुख किया गया। गुजरात और मेघालय से आइटम लेखकों को राज्य स्तरीय एन.टी.एस. परीक्षा के लिए मानसिक योग्यता परीक्षण (एम.ए.टी.) के लिए आइटम लेखन में अभिविन्यासित किया गया। विद्यालयी शिक्षा के राज्य बोर्डों के अध्यक्षों के सम्मेलन में अंकों के स्थान पर ग्रेड से जुड़े मुद्दों, विद्यालय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय मूल्यांकन रूपरेखा का विकास आदि पर विचार-विमर्श किया गया।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

इस योजना का उद्देश्य है- कक्षा दस की समाप्ति पर प्रतिभाशाली छात्रों की पहचान करना और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें वित्तीय सहायता देना ताकि वे आगे अपनी प्रतिभा का विकास कर सकें। 1999-2000 के दौरान 70 अनुसूचित जाति और जनजाति के अभ्यर्थियों सहित 750 छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं। पुरस्कार के लिए चयन दो स्तरों पर किया गया। प्रथम स्तर पर राज्यों द्वारा लिखित परीक्षाओं के आधार पर चयन किया गया। दूसरे स्तर पर चयन का कार्य एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा लिखित परीक्षा और साक्षात्कार के आधार पर किया गया।

1999-2000 के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत कुल 4710 पुरस्कार विजेताओं को छात्रवृत्ति के रूप में 1.25 करोड़ रुपया वितरित किया गया।

अध्यापक शिक्षा

निम्नलिखित पर अध्ययन किए गए– (1) प्राथमिक अध्यापकों की शैक्षणिक एवं व्यावसायिक योग्यता के संदर्भ में उनकी शिक्षण-प्रभाविता, (2) महाराष्ट्र में स्मार्ट-पी.टी. के अंतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण की गुणवत्ता का मूल्यांकन, (3) विज्ञान शिक्षण के सृजनात्मक उपागम, (4) उत्तर-पूर्व क्षेत्र में माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण का व्यावहारिक अध्ययन, (5) दिल्ली की स्वायत्तशासी एस.सी.ई.आर.टी. का केस अध्ययन, (6) डाइटों की योजनाओं का कार्यान्वयन और (7) एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. का स्तर। निम्नलिखित का विकास प्रगति पर है– (1) 'भारत में अध्यापक शिक्षा के पचास वर्ष' पर एक दस्तावेज़, (2) अध्यापक मूल्यांकन के लिए प्रतिभागितामूलक तथा डाटा-बेस व्यवस्था के लिए रूपरेखा, (3) भारतीय शिक्षा पर एक विश्वकोश। इग्नू के सहयोग से प्राथमिक शिक्षा में डिप्लोमा के लिए स्व-अधिगम सामग्री तैयार की गई है।

भारत सरकार के शिक्षा तथा दूरसंचार विभाग, यूनेस्को तथा अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आई.टी.यू.) की सहायता से मध्य प्रदेश तथा गुजरात राज्यों में, कंप्यूटर की सहायता से दो तरफा आडियो तथा दो तरफा वीडियो व्यवस्था का प्रयोग करते हुए, अनुक्रियात्मक दूरदर्शन के माध्यम से सेवाकालीन अध्यापकों के प्रशिक्षण (आई.पी.टी.टी.-आई. टी.वी.) के लिए एक मार्गदर्शी परियोजना का कार्यान्वयन किया जा रहा है। एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. के संकाय के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम तथा डाइट के संकाय के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। एस.सी.ई.आर.टीज़./एस.आई.ईज़. के निदेशकों का वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें भारतीय शिक्षा में अद्यतन विकास के संदर्भ में एस.सी.ई.आर.टी. की बदलती भूमिकाओं तथा आपसी हितों के सरोकारों को साझा करने पर विचार-विमर्श किया गया। अध्यापक शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा में नवाचारी अभ्यास और कार्य पद्धतियों की योजना के अंतर्गत 71 लेख प्राप्त हुए। इनमें से 27 लेख राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुने गए जिनमें 19 लेख प्राथमिक अध्यापक शिक्षा स्तर तथा 8 लेख माध्यमिक अध्यापक शिक्षा स्तर के थे। ये पुरस्कार एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रदान किए गए।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ईज़.) अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर तथा मैसूर ने चार-वर्षीय बी.एससी. बी.एड./बी.एससी.एड. समेकित पाठ्यक्रम जारी रखा। विज्ञान और मानविकी में एक दो-वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम विकसित किया गया और 1999-2000 सत्र से शुरू कर दिया गया है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों ने अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की पूर्व तैयारी के रूप में प्राथमिक स्तर पर विद्यालय प्रभाविता के संबंध में अनुसंधानों पर क्षेत्रीय संगोष्ठियाँ आयोजित कीं। नीपा/मा.सं.वि.मं. की ओर से क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (ओबी) योजना का राष्ट्रीय मूल्यांकन भी किया गया। 2000-2001 से आरंभ किए जाने वाले मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम की रूपरेखा भी तैयार की गई।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर ने विज्ञान में ब्लूप्रिंट रूपरेखा व प्रश्नपत्रों, हिंदी व व्यावसायिक लेखाशास्त्र पढ़ाने के लिए अध्यापक संदर्शिका, रसायनशास्त्र में विषयवस्तु संवर्द्धन सामग्री, गणित में प्रशिक्षण सामग्री, बीजगणित में कठिन क्षेत्रों की पहचान के लिए अंतरावर्तिता सामग्री और कक्षा 1 तथा 2 में हिंदी और गणित के लिए तथा व्यावसायिक लेखाशास्त्र और अर्थशास्त्र पढ़ाने के लिए कार्यकलाप आधारित अनुदेशी सामग्री का विकास किया। डाइट संकाय और एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. संकाय के लिए हिंदी, पर्यावरण 1 और 2 तथा गणित का कार्यकलाप आधारित शिक्षण, सेवाकालीन प्रशिक्षण के आयोजन, शैक्षिक सर्वेक्षणों के संचालन, सेवाकालीन कार्यक्रमों के मूल्यांकन और उच्च अनुदेशी विधियों तथा कार्यक्रम प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, सहकारी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, एस.आई.ई. संकाय, पर्यवेक्षण से जुड़े कर्मियों को शैक्षिक पर्यवेक्षण, योजना और मूल्यांकन आदि में प्रशिक्षित किया गया। प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के अध्यापकों को विद्यालयी विषयों

के शिक्षण, बहुश्रेणी स्थिति में स्व-अधिगम क्रियाकलापों के प्रयोग और विज्ञान किट के प्रयोग का भी सेवाकालीन प्रशिक्षण दिया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने (1) डाइट संकाय के लिए विशेष शिक्षा, (2) आदिवासी विद्यालय शिक्षकों के लिए लेखाशास्त्र शिक्षण, (3) अंग्रेज़ी अध्यापकों के लिए मौखिक परीक्षण और (4) उर्दू अध्यापकों के लिए उर्दू शिक्षण विधियों पर प्रशिक्षण सामग्री का निर्माण किया। अनुदेशी सामग्री के रूप में (1) ई.सी.ई. के लिए नमूना क्रियाकलाप योजना, (2) शैक्षिक प्रक्रिया से लैंगिक असमानता को समाप्त करने की कार्यनीतियां, (3) पर्यावरण पर आधारित नवाचारी सामग्री और (4) +2 स्तर पर इतिहास के मानक प्रश्नपत्र विकसित किए गए। डाइट संकाय और मुख्य संसाधन व्यक्तियों के लिए (1) माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, (2) जनसंख्या शिक्षा, (3) अंग्रेज़ी भाषा में नवाचारी शिक्षण विधियां, (4) विकलांगों की एकीकृत शिक्षा, (5) भूगोल की मूलभूत दक्षताएं और (6) कम्प्यूटर साक्षरता पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। नवोदय विद्यालयों में अर्थशास्त्र, भूगोल, रसायन विज्ञान व जीव विज्ञान और केंद्रीय विद्यालयों में इतिहास, भूगोल, हिंदी व गणित के स्नातकोत्तर अध्यापकों के लिए सेवाकालीन कार्यक्रम आयोजित किए गए। राष्ट्रभर में एक महीने तक 'वन्देमातरम्' नामक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने आदिवासी प्राथमिक विद्यालयों और कम विकृति के विकलांगों के लिए पाठ्यचर्या संपादन, पर्यावरणीय अध्ययनों (विज्ञान) में अधिगम क्रियाकलाप बैंक, कक्षा 3 और 4 के लिए बंगाली स्व-अधिगम सामग्री की समस्याओं के समाधान की कार्यनीतियों का विकास किया। इसी क्रम में संस्थान ने हिंदी और उड़िया में परीक्षण, परामर्श और मार्गदर्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा के लिए पाठ्यक्रम और 5 वर्षीय बी.ए.बी.एड./बी.एससी. बी.एड. पाठ्यक्रमों और अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए एम.एड. कार्यक्रम का पुन: प्रतिपादन किया। डाइट/एससीईआरटी संकाय और मुख्य संसाधन व्यक्तियों के लिए सतत् और व्यापक मूल्यांकन, हिंदी शिक्षण-अधिगम निष्कर्षों के मूल्यांकन की कार्यनीतियों, पाठ्यपुस्तक लेखन, आई.ई.डी.सी. शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। विभिन्न स्तरों पर विभिन्न विद्यालयी विषयों के अध्यापकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण दिया गया। इंटर्नशिप शिक्षण पर प्रधानाध्यापकों और सहकारी विद्यालयों के अध्यापकों का एक सम्मेलन भी आयोजित किया गया। उत्तर-पूर्वी राज्यों में पी.एम.ओ.एस.टी. के क्रियान्वयन हेतु संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास किया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र और जीव विज्ञान के प्रश्न बैंक, माध्यमिक स्तर पर गणित और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी के ब्रिज कोर्स पर माड्यूल्स विकसित किए। गणित की अध्यापक पुस्तिका, पर्यावरणीय अध्ययन-2 में क्रियाकलाप आधारित अनुदेशी सामग्री, अंग्रेज़ी, तमिल और तेलुगू शिक्षण के आडियो कैसेट भी विकसित किए गए। कम्प्यूटर अनुप्रयोग पर डाइट/एस.सी.ई.आर.टी. के मुख्य स्तर के व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। विषयगत और शिक्षाशास्त्री दक्षताओं के विकास के लिए स्नातकोत्तर शिक्षकों और इंटरमीडिएट कालेज के प्रवक्ताओं के सेवाकालीन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग ने (1) मिज़ोरम के पाठ्यपुस्तक लेखकों, (2) सतत और व्यापक मूल्यांकन के लिए असम के एस.सी.ई.आर.टी./डाइट संकाय सदस्यों और (3) सॉप्ट के संसाधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (सॉप्ट)

एन.सी.ई.आर.टी. ने विभिन्न राज्यों में सॉप्ट कार्यक्रमों को शैक्षिक सहयोग और अनुवीक्षण प्रदान करने की अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना जारी रखा। क्षेत्रीय शैक्षिक संस्थानों और क्षेत्र सलाहकारों ने सॉप्ट प्रशिक्षण कार्यक्रमों का पर्यवेक्षण किया और अपने-अपने क्षेत्रों में आवश्यक सहयोग तथा मार्गदर्शन प्रदान किया। इस वर्ष के दौरान इस योजना के अंतर्गत लगभग 2.80 लाख अध्यापक प्रशिक्षित किए गए। इस योजना के प्रारंभ 1993-94 से अब तक लगभग 12.5 लाख अध्यापक प्रशिक्षित हो चुके हैं।

शैक्षिक दूरदर्शन

एन.सी.ई.आर.टी. ने छोटे बच्चों के लिए आकाशवाणी के 195 स्टेशनों से प्रसारित होने वाले एक साप्ताहिक श्रव्य प्रसारण 'उमंग', प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए डी.डी.-1 पर उपलब्ध शैक्षिक दूरदर्शन सेवा के अंतर्गत 'तरंग' तथा शैक्षिक उपग्रह चैनल 'ज्ञान दर्शन' (26 जनवरी 2000) से विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक दूरदर्शन प्रसारण को प्रसारण-सामग्री प्रदान करनी जारी रखी। इसके अतिरिक्त 'एक्सप्लोरिंग दि यूनिवर्स', 'स्पेस साइंस एंड एक्सप्लोरिंग एक्सप्लोरेशन्स', 'दि लिविंग प्लेनेट-अर्थ' (सभी माध्यमिक स्तर), 'एनवायरनमेंट', 'क्रियेटिव मूवमेंट्स एंड म्यूज़िकल इन्स्ट्रूमेंट्स', 'वाटर एंड लाइफ' (प्राथमिक स्तर), 'वाटर मोशन', 'सेरीकल्चर एंड ड्रिप इरिगेशन', 'बिज़नेस एंड कॉमर्स', 'समाधान', 'परफोर्मिंग आर्ट्स', 'दिवास्वप्न' आदि विभिन्न शृंखलाओं के अन्तर्गत लगभग 85 शैक्षिक दूरदर्शन आलेखों की रूपरेखा भी तैयार की गई।

दृश्य कार्यक्रमों के लिए आरेखीय संपादन, नई गुणवत्ता वाले जनित्र का संचालन और व्यावहारिक चालन, स्टूडियो कैमरों-डी.एक्स.सी.-डी. 3 ओ.पी. का सिद्धान्त, व्यावहारिक संचालन व रख-रखाव और संपादन उपकरण डी.एफ.एस. 500 पी.वी.एफ. 500 पी.वी.डब्ल्यू 800 पी. में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। उत्तर-पूर्व राज्यों और उड़ीसा के डाइटों के शैक्षिक प्रौद्योगिकीय संकाय और एस.आई.ई.टी. कर्मियों को क्रमश: शैक्षिक प्रौद्योगिकी और बहु संचार में प्रशिक्षित किया गया। एस.सी.ई.आर.टी., मणिपुर के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी और इसके उपयोग में एक तीन-सप्ताही अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

विभिन्न विश्वविद्यालयों/विद्यालयों के संचार विभाग के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों और वीडियोग्राफी में स्नातक के विद्यार्थियों को औद्योगिक प्रशिक्षण से जोड़ा गया और राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान, अहमदाबाद के स्नातक विद्यार्थी इंटर्नशिप के लिए अपनी परियोजना के एक अंग के रूप में बहुसंचार पैकेज पर एनीमेशन से सम्बद्ध हैं। सी.आई.ई.टी. ने सात एस.आई.ई.टीज़. के क्रियाकलापों के संचालन में सहयोग और शैक्षिक तथा संचार-उत्पादन की गतिविधियों में मार्गदर्शन प्रदान करना जारी रखा। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय को भी परामर्श और सहयोग प्रदान किया गया।

संचार अनुसंधान और मूल्यांकन गतिविधियों में शामिल हैं- (1) बच्चों के पत्रों के विश्लेषण पर आधारित 'पत्रों के उत्तर' मासिक कार्यक्रम, (2) ग्रेड-4 स्तर पर मापन अवधारणा के शिक्षण के लिए अंतर्क्रियात्मक दृश्य कार्यक्रम का अध्ययन, (3) विभिन्न विषय क्षेत्रों में कम्प्यूटर सहायक अधिगम- एक बड़ा विश्लेषण और (4) 'शैक्षिक मीडिया की प्रभाविता- एक सर्वेक्षण' नामक एक मीडिया अनुसंधान समीक्षा। आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश के एस.आई.ई.टीज़. और राजस्थान के ई.टी. सेल के सहयोग से भारत सरकार की शैक्षिक तकनीकी योजना का एक प्रभाव अध्ययन प्रगति पर है। एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा-6 की विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों पर एक अंत:क्रियात्मक बहुसंचार-सी डी-आर. ओ.एम. (पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए) विकसित किया गया है।

सी.आई.ई.टी. ने जापान, यू.एस.ए. और जर्मनी में अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक दृश्य-श्रव्य उत्सवों में भाग लिया और अपने 'रोज़ बदलता कैसे चांद' (दि चेंजिंग मून) के लिए एन.एच.के. टोक्यो में 'दि मायडा' पुरस्कार जीता। कठपुतलियों द्वारा कहानी कहने पर आधारित एक दूसरा कार्यक्रम 'म्यूनिख', जर्मनी में वीडियो बार के लिए चयनित हुआ।

कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता

एन.सी.ई.आर.टी. में कंप्यूटर शिक्षा और संबंधित अनुसंधान तथा आधुनिक तकनीकी सहायता/मीडिया के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। एन.सी.ई.आर.टी. ने सूचना प्रौद्योगिकी के आत्मसातीकरण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण निवेश प्रदान किया। संघटक इकाइयों की हार्डवेयर प्रणाली, समुचित साफ्टवेयर और इंटरनेट सम्बद्धता प्रदान की गई। आई.टी. दक्षताओं में कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। एन.सी.ई.आर.टी. का वेबसाइट विद्यालयी शिक्षा के लिए समर्पित प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है। सेवाकालीन अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु बहुमाध्यम प्रयोगशाला विकसित की गई है। इसमें राष्ट्रीय कंप्यूटर - विस्तार शिक्षा केन्द्र में परिवर्धित प्रशिक्षण माड्यूल विकसित किए गए जिसमें आई.टी. आधारित अधिगम सामग्री का

विकासशील संग्रह है। सूचना प्रौद्योगिकी और विद्यालयी प्रक्रिया पर एक राष्ट्रीय गोष्ठी आयोजित की गई। एन.सी.ई.आर.टी. ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय हेतु स्मार्ट विद्यालयों के लिए ब्लू प्रिंट और एन.सी.ई.आर.टी. कर्मचारियों और अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए एक स्व-अधिगम माड्यूल विकसित किए। एन.सी.ई. आर.टी. ने कंप्यूटर के प्रयोग और बहुमाध्यम साफ्टवेयर के विकास पर स्टाफ के लिए अनेक, और केंद्रीय विद्यालय और दिल्ली के विद्यालय अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

एन.सी.ई.आर.टी. ने 1999-2000 के दौरान 100 प्राइमरी विज्ञान किट, 30 मिनी टूल किट व मिडिल विद्यालयों के लिए 265 एकीकृत विज्ञान किट बनाए और राज्यों के प्राथमिक विद्यालयों में 300 प्राइमरी विज्ञान किट व 72 मिनी टूल किट की आपूर्ति की। उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए धारा विद्युत हेतु लागत-प्रभावी प्रयोगशाला क्रियाकलापों के लिए लागत प्रभावी शिक्षण साधनों के एक सेट का परीक्षण दिल्ली के विद्यालयों में किया जा रहा है।

व्यावसायिक शिक्षा

कंप्यूटर सहायता प्राप्त आरेखन और पांडुलेखन (ड्राइंग और ड्राफ्टिंग), कम लागत की आवास-व्यवस्था और समुदाय आधारित पुनर्वास पर तीन नई दक्षता आधारित व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यचर्याओं का विकास किया गया और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए 6 पाठ्यचर्याओं का विकास किया गया। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए व्यावसायिक मार्गदर्शन और परामर्श पर एक पुस्तिका, स्वास्थ्य और पैरा-चिकित्सा, गृह विज्ञान के क्षेत्रों में व्यावसायिक पाठ्यचर्या के साथ पर्यावरणीय घटकों का एकीकृत परिशिष्ट और व्यावसायिक योग्यता प्रणाली के अंतर्गत बड़ी संख्या में उद्यान विज्ञान, कीट पालन और अभियांत्रिकी पर बड़ी संख्या में लघु माड्यूल विकसित किए गए। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की 15 अनुदेशी सामग्रियों की पांडुलिपि और 9 पूर्व व्यावसायिक माड्यूल विकसित किए गए हैं जो मुद्रणाधीन हैं।

अध्यापक प्रशिक्षण के बारह कार्यक्रम निम्नलिखित क्षेत्रों में आयोजित किए गए-क्रय और भंडारण, घरेलू बिजली उपकरणों की मरम्मत और रखरखाव, उत्पादन-सह-प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना (पी.टी.सी.), कंप्यूटर यूनिक्स प्रणाली प्रशासन, कम्प्यूटर तकनीक, व्यावसायिक मार्गदर्शन और परामर्श, उद्यमिता विकास, जिसमें आदिवासी, विकलांग, अनुसूचित जाति/जनजाति और अल्पसंख्यक संस्थानों में कार्यरत 285 अध्यापकों के लिए जेनेटिक व्यावसायिक पाठ्यक्रम पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मध्य प्रदेश, गोवा, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, दिल्ली और जम्मू-कश्मीर में व्यावसायिक शिक्षा का प्रतिनिधित्व करने वाले 10 संसाधन पदाधिकारियों को अल्पकालीन प्रशिक्षण दिया गया। नवसाक्षर आदिवासी/ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक समृद्धि के लिए एक 25-दिवसीय साधन व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। व्यावसायिक शिक्षा के क्रियान्वयन में अवधारणागत स्पष्टता लाने के बारे में राज्य कर्मचारियों के लिए आठ अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए। दुग्ध उत्पादन, मछली पालन, मुर्गी पालन और सुअर पालन, अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी व्यापार और वाणिज्य से जुड़े हुए व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के अलावा यात्रा और पर्यटन प्रबंधन व्यावसायिक पाठ्यक्रम को लोकप्रिय बनाने और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर विचार विमर्श करने तथा व्यावसायिक शिक्षा नीति के स्तर का मूल्यांकन करने के लिए छह राष्ट्रीय परिसंवादों/गोष्ठियों का आयोजन किया गया। 'शिक्षा का व्यावसायीकरण : नई सहस्राब्दि के लिए परिप्रेक्ष्य' विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन भी आयोजित किया गया।

सर्वोत्तम व्यावसायिक संस्थान, सर्वोत्तम व्यावसायिक अध्यापक और सर्वोत्तम विद्यालय-उद्योग संयोजन को व्यावसायिक शिक्षा उन्नयन के लिए पुरस्कार (प्रत्येक राज्य को एक) दिए गए। उच्चतर माध्यमिक परीक्षा के परिणाम के आधार पर प्रत्येक राज्य को दो सर्वोत्तम उपार्जितकर्ता पुरस्कार दिए गए। प्रकाशनों की दो प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं। इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन और क्वार्टर्ली बुलेटिन ऑफ वोकेशनल एजुकेशन प्रत्येक के दो संयुक्त अंक प्रकाशित किए गए और शेष अंक मुद्रणाधीन हैं। व्यावसायिक शिक्षा की शोध परियोजनाएँ जो प्रगति पर हैं, उनमें शामिल हैं- (1) निश्चित राज्यों में सामान्य आधार पाठ्यक्रमों के क्रियान्वयन का तुलनात्मक

अध्ययन, (2) राज्यों में व्यावसायिक मार्गदर्शन का बेंचमार्क सर्वेक्षण, (3) भारत में व्यापार और वाणिज्य आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के व्यावसायिक शिक्षा उत्तीर्ण उम्मीदवारों का स्तर अध्ययन, (4) शहरी और ग्रामीण समाजों में लड़कियों की जीविका आकांक्षा बनाम व्यावसायिक शिक्षा, (5) माध्यमिक व्यावसायिक विद्यालयों में विद्यालय-उद्योग के बीच संबंध की स्थापना-क्रियात्मक अनुसंधान, (6) चुने हुए राज्यों में व्यावसायिक पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री की गुणवत्ता और मानदंड का तुलनात्मक मूल्यांकन, (7) कृषि में व्यावसायिक पठन-पाठन की स्थिति और प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन, (8) महाराष्ट्र के कुछ व्यावसायिक संस्थानों के विद्यालय उद्योग संयोजन का केस अध्ययन, (9) पंजाब के व्यावसायिक विद्यार्थियों के कार्य निष्पादन पर कार्य प्रशिक्षण का प्रभाव, (10) महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण पर गृहविज्ञान व्यावसायिक पाठ्यक्रम की सार्थकता और (11) 10+2 स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक दक्षता के विकास में अध्यापक व्यवस्था की भूमिका। बिहार के गैर-सरकारी संगठनों के कार्यक्रम की क्षमता और कमज़ोरी के मूल्यांकन के लिए सी.ए.एस. के अंतर्गत व्यावसायिक शिक्षा नीति के क्रियान्वयन का अध्ययन किया जा रहा है।

विशेष व्यावसायिक विद्यालयों की स्थापना व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यक्रम और अनुदेशी सामग्री का सुधार और विकास के लिए मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश और असम राज्यों को परामर्श दिया जा रहा है।

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचारों को उन्नयन

अनेक संघटकों में अनुसंधान करने के अतिरिक्त एन.सी.ई.आर.टी. बाहरी संस्थाओं/संगठनों को प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अनुसंधान के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है। शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) द्वारा समर्थित 13 परियोजनाएँ पूरी की गईं। एरिक के अंतर्गत 56 अनुसंधान परियोजनाएँ प्रगति पर हैं। एरिक के सहयोग से एक पीएच.डी. का शोध प्रबंध प्रकाशित हुआ। वित्तीय सहायता के लिए प्राप्त अनुसंधान प्रस्तावों की स्वीकृति और नीतिगत मामालों के पुनरीक्षण के लिए एरिक की एक बैठक आयोजित की गई। विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान नवाचारों और अन्य विकासों का 'जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन', 'भारतीय आधुनिक शिक्षा', और 'इण्डियन एजुकेशनल रिव्यू' के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया।

1800 से अधिक सारांशों से युक्त और 38 क्षेत्रों में वर्गीकृत शैक्षिक अनुसंधान के पांचवें सर्वेक्षण के दूसरे खंड को अंतिम रूप दिया गया। शैक्षिक अनुसंधान के अगले सर्वेक्षण जिसकी अवधि 1993 से 1997 है, में सर्वेक्षण के अध्ययनों को पूरा होने और उनके व्यापक प्रचार-प्रसार के बीच समय के अंतराल को न्यूनतम करने के लिए नई प्रविधियाँ अपनाई जा रही हैं। 'इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्ट्स' (आई.ई.ए.) नामक छमाही अनुसंधान पत्रिका का प्रकाशन जारी रहा। आई.ई.ए. का एक संयुक्तांक (खण्ड 7 और 8), जिसमें 201 सार-संक्षेप हैं, को अंतिम रूप दिया गया। यह अंक मुद्रणाधीन है। डाइट और एस.सी.ई.आर.टी. संकाय के लिए अनुसंधान पद्धति पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। एन.आई.ई. व्याख्यान माला के अंतर्गत ख्यातिप्राप्त शिक्षाविदों के व्याख्यान आयोजित किए गए।

पी.ई.ओ. को आर्थिक सहायता

शिक्षा के उन्नयन के लिए स्वैच्छिक प्रयासों को बढ़ावा देने के क्रम में कुछ व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों (पी.ई.ओ.) को विस्तार क्रियाकलाप/पत्रिकाओं के प्रकाशन हेतु आर्थिक मदद दी गई।

शैक्षिक सर्वेक्षण

छठे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण की मुख्य रिपोर्ट मुद्रित रूप में आ चुकी है। इसमें निम्नलिखित अध्ययन पूरे किए गए हैं- (1) प्राथमिक स्तर पर एकल आयुवार नामांकन का अनुमान, (2) प्राथमिक स्तर पर शाला त्याग और गतिरोध : उ.प्र. के दो चयनित ज़िलों का नमूना अध्ययन, (3) विद्यालय शिक्षा की वृद्धि : एक ग्राफिकीय प्रस्तुतीकरण और (4) प्राथमिक विद्यालयों में लड़कियों के लिए प्रोत्साहन योजनाओं का मूल्यांकन और पुनरीक्षण। छठे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के आंकड़ों के प्रचार-प्रसार की कार्यनीतियों का विकास नामक परियोजना पूर्णता के स्तर पर है। परिमाणात्मक अनुसंधान पद्धति पर दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

क्षेत्रीय सेवाएँ

राज्यों में स्थित एन.सी.ई.आर.टी. के क्षेत्रीय सलाहकारों ने एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न संघटकों, मा.सं.वि. मंत्रालय और राज्य शिक्षा विभागों आदि के द्वारा किए गए कार्यक्रमों और कार्यकलापों के कार्यान्वयन के लिए निरंतर संपर्क जारी रखे। आर.आई.ई. के विस्तार शिक्षा विभागों ने राज्य समन्वय समितियों (एस.सी.सीज़.) के माध्यम से राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान की जिनके लिए एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों से सहायता अपेक्षित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के क्षेत्र सलाहकारों ने राज्य शिक्षा विभागों को राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए अध्यापकों के चयन, पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री के विकास, कार्मिकों के प्रशिक्षण और नीति निर्धारण आदि कार्यों में सहयोग दिया। मा.सं.वि.मं. को भी निम्नलिखित प्रसंगों में मदद की गई : (1) राज्यों में केंद्र प्रायोजित योजनाओं के क्रियान्वयन का अनुवीक्षण, (2) स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा जमा किए गए अनौपचारिक शिक्षा प्रस्तावों का स्वीकृति-पूर्व मूल्यांकन, (3) संयुक्त मूल्यांकन दल के माध्यम से स्वयंसेवी संगठनों के कार्यरत अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के कार्यों का मूल्यांकन और (5) नीपा, मा.सं.वि.मं. परियोजना ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड योजना का मूल्यांकन।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में एन.सी.ई.आर.टी. द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों (सी.ई.पी.) की एक प्रमुख एजेंसी के रूप में निरंतर कार्यरत रही है। वर्ष 1999-2000 में भारत सरकार द्वारा सीरिया, ग्रीस, कुवैत, कम्बोडिया और फ्रांस से द्विपक्षीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया गया। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त रिपोर्टों, सामग्री, प्रलेख आदि को एन.सी.ई.आर.टी. स्थित पुस्तकालय प्रलेखन व सूचना प्रभाग के अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा संसाधन केन्द्र में रखा गया। एन.सी.ई.आर.टी. के कई संकाय सदस्यों को अन्य देशों में उन देशों या अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु भेजा गया। एन.सी.ई.आर.टी. संकाय सदस्यों ने भारत में आए कई देशों के प्रतिनिधिमंडलों/शिक्षाविदों और अध्यापकों से विचार-विमर्श किया।

पुस्तकालय और प्रलेखन

एन.सी.ई.आर.टी. मुख्यालय में स्थित परिषद् का पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना प्रभाग एन.आई.ई. परिसर, नई दिल्ली में एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न घटकों के अनुसंधान और विकास के कार्यकलापों में सहायता देता है। एन.सी.ई.आर.टी. के दूसरे घटक भी अपने परिसर में पुस्तकालय बनाए हुए हैं। वर्षों से यहां शिक्षाशास्त्रियों, अध्यापक शिक्षकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों आदि के लिए शिक्षा और संबंधित विषयों पर पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का समृद्ध संग्रह है। यह पुस्तकालय कार्यदिवसों में लगातार सुबह 8 बजे से शाम 8 बजे तक और शनिवार तथा रविवार को 9 बजे से शाम 5.00 बजे तक खुला रहता है। राजपत्रित अवकाशों पर यह बंद रहता है। 31 मार्च 2000 को इस पुस्तकालय में कुल 30,160 पुस्तकें और पत्रिकाएँ थीं।

हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन

एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों के दिन-प्रतिदिन के कार्यों में हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग को बढ़ावा देने के क्रम में अनेक कदम उठाए गए हैं। मुख्यालय में अवर श्रेणी लिपिकों, उच्च श्रेणी लिपिकों और अनुभाग अधिकारियों के लिए तीन हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की गईं। राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति का ब्यौरा लेने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक हुई। 14 से 28 सितंबर 1999 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवधि में टिप्पण/प्रारूपण, निबंध लेखन, टंकण, अनुवाद, वाद-विवाद, कविता और आशुलिपि की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., सी.आई.ई.टी. और आर.आई.ईज़. ने भी हिंदी सप्ताह और हिंदी के प्रोत्साहन हेतु कई प्रतियोगिताएं और कार्यक्रम आयोजित किए। विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न घटकों के प्रशासनिक प्रलेखों और कागज़-पत्रों के हिंदी अनुवाद संबंधी सहायता हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा प्रदान की जाती रही।

कार्यक्रम नियोजन, अनुवीक्षण और मूल्यांकन

एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न संघटकों/विभागाध्यक्षों ने अपने-अपने विभाग के संकाय सदस्यों द्वारा किए जा रहे

कार्यक्रमों के कार्यान्वयन का अनुवीक्षण जारी रखा। संघटकों के कार्यक्रमों की समीक्षा परिषद् के निदेशक/संयुक्त निदेशक द्वारा, एन.सी.ई.आर.टी. के नियोजन, कार्यान्वयन, अनुवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग के माध्यम से की गई। परिषद् के विभिन्न संघटकों के कार्यक्रमों के नियोजन और कार्यान्वयन की समस्त प्रक्रिया एन.सी.ई.आर.टी. और राज्यों के सामूहिक प्रयास के अन्तर्गत चल रही है। एन.सी.ई.आर.टी. के रा.शि.सं. के विभागों के कार्यक्रमों को उसके विभागीय सलाहकार बोर्डों (डी.ए.बी.) और अकादमिक समितियों (ए.सी.), सी.आई.ई.टी. और पी.एस.एस.सी. आई.वी.ई. के कार्यक्रमों को अपने संस्थान सलाहकार बोर्डों (आई.ए.बी.) और आर.आई.ईज़. के कार्यक्रमों को अपनी प्रबन्धन समितियों (एम.सीज़.) की प्रक्रिया के दौर से गुज़रना पड़ा। कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) द्वारा कार्यक्रमों पर अनुमोदनार्थ विचार करने से पहले कार्यकारिणी समिति ने उन पर अन्तिम संस्तुति की। एन.सी.ई.आर.टी. कार्यक्रमों और क्रियाकलाप की प्रगति की आवधिक रिपोर्टों और विवरणों को मा.सं.वि.मं. को निरन्तर भेजती रही है।

प्रकाशन

एन.सी.ई.आर.टी. ने विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्यपुस्तकों, अभ्यास पुस्तिकाओं, अनुपूरक पुस्तकों, अध्यापक संदर्शिकाओं, व्यावसायिक शिक्षा में अनुकरणीय अनुदेशी सामग्री, अनुसंधान रिपोर्ट/प्रबंध और शैक्षिक पत्रिकाओं के प्रकाशन का कार्य निरंतर जारी रखा। इस वर्ष के दौरान 319 प्रकाशन सामने आए। पत्रिकाओं के प्रकाशन की स्थिति इस प्रकार है–

- इंडियन एजुकेशनल रिव्यू — 3 अंक
- जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन — 6 अंक
- स्कूल साइंस — 11 अंक
- दि प्राइमरी टीचर — 4 अंक
- प्राइमरी शिक्षक — 5 अंक
- भारतीय आधुनिक शिक्षा — 5 अंक
- इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्ट्स — 1 अंक

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशनों की बिक्री देश भर में फैले थोक एजेंटों के माध्यम से की गयी। उर्दू प्रकाशनों की बिक्री और वितरण का कार्य उर्दू अकादमी, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के माध्यम से किया गया। एन.सी.ई.आर.टी. का प्रकाशन प्रभाग सीधे विद्यालयों और व्यक्तियों को एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकों आदि की आपूर्ति करता रहा। इस वर्ष प्रकाशित अनेक पुस्तकें अनुमोदित डाक सूची के अनुसार डाक द्वारा भिजवाई गईं। प्रकाशनों की बिक्री से कुल 41.41 करोड़ रुपये की राशि प्राप्त हुई। बड़ी संख्या में संस्थानों और अनुसंधानकर्ताओं द्वारा भेजी गई मांगों के आधार पर एन.सी.ई.आर.टी. के मूल्यरहित प्रकाशनों की आपूर्ति की गई। परिषद् के प्रकाशन प्रभाग के क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केन्द्रों– सुखचर (पश्चिम बंगाल) और बेंगलूर ने परिषद् के प्रकाशनों की बिक्री और वितरण का कार्य अपने-अपने क्षेत्रों जैसे पूर्वी और दक्षिणी में अनवरत जारी रखा। उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्रों की मांगों की आपूर्ति एन.सी.ई.आर.टी. मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा की गई।

सूचनाओं के प्रचार-प्रसार से संबंधित कार्य के एक भाग के रूप में प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. ने निम्नलिखित प्रदर्शनियों/मेलों में भाग लिया:

1. दिल्ली पुस्तक मेला, अगस्त 1999
2. जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी राजकोट, नवंबर-दिसंबर 1999
3. हैदराबाद पुस्तक मेला, दिसंबर 1999
4. राष्ट्रीय पुस्तक मेला, भोपाल, नवंबर 1999
5. कलकत्ता पुस्तक मेला, जनवरी-फरवरी 2000
6. विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली, फरवरी 2000

कल्याण कार्यकलाप

कर्मचारियों की पात्रता और स्थिति के अनुसार विभिन्न वर्ग के क्वार्टरों का आबंटन किया गया। वर्ष 1999-2000 के दौरान 23 नए आबंटन और 16 परिवर्तन मांग पर आबंटित किए गए। पप्पन कलाँ में 135 से अधिक स्टाफ क्वार्टरों का निर्माण लगभग पूरा हो चुका है। एन.सी.ई.आर.टी. के सभी कर्मचारियों के लिए भारतीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बचत जीवन बीमा योजना लागू है। परिपक्वता/निकासी दावे के 86 मामलों और मृत्यु दावे के 16 मामलों को अंतिम व्यवस्थापन हेतु भारतीय

एन.सी.ई.आर.टी. का 39वां स्थापना दिवस।

जीवन बीमा निगम को भेजा गया। भारतीय जीवन बीमा निगम से कुछ दावों के अलावा सभी दावों का भुगतान प्राप्त हुआ और जी.एस.एल.आई.एस. के अंतर्गत पूर्व सदस्यों और दिवंगत सदस्यों के नामितियों को प्रदान किया गया। एक हज़ार दो सौ नियमित वेतनभोगी और दो सौ पचास पेंशनभोगी केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य सेवा सुविधा का लाभ ले रहे हैं। वे कर्मचारी जो केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य सेवा क्षेत्राधिकार से बाहर हैं वे ए.एम.ए. के माध्यम से चिकित्सा सुविधा प्राप्त कर रहे हैं। एन.सी.ई.आर.टी. के 40 सेवानिवृत्त कर्मचारियों को प्रतीक उपहार प्रदान किए गए। 1 सितम्बर 1999 को एन.सी.ई.आर.टी. के स्थापना-दिवस के अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. में स्वतंत्रता-दिवस और नव वर्ष दिवस मनाया गया तथा बच्चों को मिठाइयाँ और कर्मचारियों को चाय/नाश्ता दिया गया। कार्यालय समय के दौरान आपातकालीन चिकित्सा सुविधा भी प्रदान की गई। शारीरिक बीमारियों पर डा. एस.सी.एस. सेंगर, चेयरमैन, अन्तर्राष्ट्रीय ओषधिशास्त्री और परामर्शी चिकित्सक की पांच वार्ताएँ विभिन्न समूह के कर्मचारियों के लिए आयोजित की गईं। सफाईवालों और अन्य कर्मचारियों के लिए साक्षरता कक्षाएँ लगाई गईं।

3 शैशवकालीन शिक्षा

शैशवकालीन शिक्षा (ई.सी.ई.) के दोहरे लाभ–बच्चे के विकास पर पड़ने वाले इसके प्रत्यक्ष प्रभाव तथा प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई.) में इसके योगदान–को ध्यान में रखते हुए राज्य स्तरीय विशेषज्ञता का विकास करने तथा इस क्षेत्र में कार्यक्रमों को सुदृढ़ बनाने के साथ-साथ विद्यालय-पूर्व तथा प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए शैक्षिक और मनोरंजक मूल्यजन्य सस्ते व प्रभावकारी अनौपचारिक साधनों की खोज और विकास को ई.सी.ई. परियोजना में प्रमुख स्थान दिया जाता रहा है। विभिन्न स्तरों पर कार्मिकों को प्रशिक्षण देकर और बच्चों तथा अध्यापकों के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में समुचित अध्ययन–शिक्षण सामग्री तैयार करके क्षमता विकास का कार्य किया जा रहा है।

शैशवकालीन शिक्षा (ई.सी.ई.) के दोहरे लाभ–बच्चे के विकास पर पड़ने वाले इसके प्रत्यक्ष प्रभाव तथा प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई.) में इसके योगदान– को ध्यान में रखते हुए राज्य स्तरीय विशेषज्ञता का विकास करने तथा इस क्षेत्र में कार्यक्रमों को सुदृढ़ बनाने के साथ-साथ विद्यालय-पूर्व तथा प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए शैक्षिक और मनोरंजक मूल्यजन्य सस्ते व प्रभावकारी अनौपचारिक साधनों की खोज और विकास को ई.सी.ई. परियोजना में प्रमुख स्थान दिया जाता रहा है। विभिन्न स्तरों पर कार्मिकों को प्रशिक्षण देकर और बच्चों तथा अध्यापकों के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में समुचित अध्ययन शिक्षण सामग्री तैयार करके क्षमता विकास का कार्य किया जा रहा है। विद्यालय-पूर्व शिक्षा में गुणवत्ता में सुधार, संगत संसाधन सामग्री के विकास, प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों के आयोजन तथा अनुसंधान अध्ययन आदि के माध्यम से एन.सी.ई.आर.टी. महत्वपूर्ण समर्थनकारी व अकादमिक सहयोग प्रदान कर रही है और राष्ट्रीय स्तर पर यूनेस्को सहायताप्राप्त परियोजनाओं का समन्वयन कर रही है।

अनुसंधान

शैशवकालीन शिक्षा (ई.सी.ई.) परियोजना

पिछले पाँच वर्षों की यूनिसेफ सहायताप्राप्त ई.सी.ई. परियोजना, जिसमें 10 राज्यों को शामिल किया गया था, की एक समेकित रिपोर्ट तैयार की जा रही है। इसका प्रथम प्रारूप तैयार है। 12 राज्यों में, ई.सी.ई. परियोजनाओं के समन्वयकों की एक समीक्षा बैठक में विभिन्न राज्यों द्वारा की गई प्रागति की समीक्षा की गई।

विकास

खिलौना बनाने की प्रतियोगिता की विजेता प्रविष्टियों पर आधारित 'ईज़ी टु मेक टॉयज़ एंड गेम्स' नामक एक पुस्तक तैयार की गई जो प्रकाशनाधीन है।

प्रशिक्षण

राज्य स्तरीय प्रमुख कार्यकताओं हेतु शैशवकालीन शिक्षा के अन्तर्गत 6 राज्यों के डी.आई.ई.टीज़./एस.सी.ई.आर.टीज़. से 44 कार्मिकों के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।
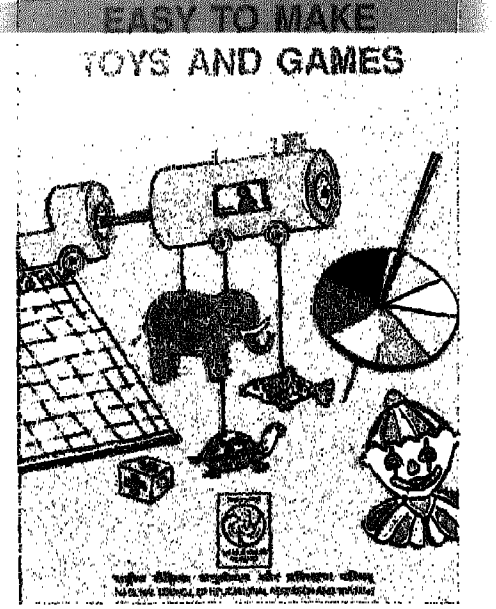
खेलों के विकास व खिलौनों के निर्माण पर प्रकाशित पुस्तक।

लद्दाख पर्वतीय परिषद् के शैक्षिक अधिकारियों के लिए वार्षिक अभिविन्यास/प्रशिक्षण के अन्तर्गत विद्यालयों में कार्यरत 60 व्यक्तियों, ब्लाक और ज़िला स्तर के शैक्षिक अधिकारियों को विद्यालय पूर्व शिक्षा में पूर्वाभिमुख किया गया।

विस्तार

ई.सी.ई. परियोजना समन्वयन के अंतगर्त बिहार, आन्ध्र प्रदेश और कर्नाटक में 2000-01 के लिए वार्षिक योजनाओं के विकास और बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान में ई.सी.ई. कार्मिकों के लिए योजना प्रशिक्षण में अकादमिक समर्थन प्रदान किया गया।

शैशवकालीन शिक्षा में क्षेत्रीय सहायता

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने शारीरिक और गतिकी (मोटर), सामाजिक और भावनात्मक, सर्जनात्मक, बोधात्मक भाषा और संज्ञानात्मक विकास में मध्य प्रदेश के एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के लिए शैशवकालीन शिक्षा हेतु प्रतिदर्शी कार्यकलाप योजना का विकास किया और उसे अन्तिम रूप दिया।

1999-2000 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- रिपोर्ट ऑन 'स्टडी ऑफ प्री-स्कूल एजुकेशन कंपोनेन्ट ऑफ आई.सी.डी.एस. एंड इट्स परसेप्शन एंड एक्सटेंट ऑफ यूटिलाइज़ेशन बाई दि कम्युनिटी' (अनुलिपि)।

4

प्राथमिक शिक्षा

भारत में विद्यालयी स्तर के लिए पाठ्यचर्या योजना में मूल्य शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। मूल्यों को सिखाया नहीं जा सकता। इसे विद्यालयी बच्चे तभी सीख सकते हैं, जब वे इकट्ठे रहें। इस विचार को ध्यान में रखते हुए, एन.सी.ई.आर.टी. ने बच्चों में अनुभवजन्य मूल्य शिक्षा को उन्नत करने के लिए एक कार्यक्रम बनाया। माननीय मा.सं.वि. मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी ने दिसंबर, 99 में इस कार्यक्रम का उद्घाटन 'आओ मिलकर गाएँ' पुस्तक के संशोधित संस्करण के विमोचन से किया।

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई.) की व्यापक रूपरेखा को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक शिक्षा से जुड़े मुद्दों और समस्याओं पर पर्याप्त बल दिया जा रहा है। पाठ्यचर्या समीक्षा, विभिन्न स्तरों पर क्षमता निर्माण, प्रासंगिक व महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन और अनुसंधान अध्ययनों व पत्रिकाओं आदि के द्वारा विचारों, अनुभवों और समाचारों के आदान-प्रदान के लिए मंच प्रदान करके प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

अनुसंधान

कक्षा-प्रक्रिया का अध्ययन : प्राथमिक स्तर पर बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन के संबंध में अध्यापकों की अभिवृत्ति/अपेक्षाओं पर केंद्रित

इस अध्ययन का उद्देश्य बच्चों की अपेक्षाओं के प्रति अध्यापकों की अभिवृत्ति का आकलन करना है। इसके संबंध में दिल्ली के प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों के प्रदर्शन के द्वारा सूचना प्राप्त करने की अपेक्षा की गई। इसके लिए गुणात्मक अनुसंधान कार्यप्रणाली को अपनाया गया जिसमें कक्षा-प्रक्रिया का विस्तृत प्रेक्षण तथा चुनिंदा केस अध्ययन विद्यालयों में निर्धारित कक्षाओं के अध्यापन-अधिगम से जुड़े अध्यापकों का अनिर्देशित साक्षात्कार किया गया। अपेक्षित क्षेत्रीय अध्ययन पूरा हो चुका है और विश्लेषण किया जा रहा है।

ग्रेड-3 के बच्चों की बोधात्मक अवस्थिति की तुलना में चयनित संकल्पनाओं/दक्षताओं के अर्जन का एक प्रयोगसिद्ध अध्ययन

पाठ्यचर्या के क्षेत्र में यह एक अन्वेषणात्मक अध्ययन है। अनुसंधान का प्रश्न है, क्या बच्चे के लिए कठिन सक्षमताओं को हासिल करना इसलिए कठिन है क्योंकि ये बच्चों की बोधात्मक अवस्थिति से ऊपर है या कोई अन्य कारण है जैसे परीक्षाओं की भाषा, कक्षा में अपर्याप्त प्रतिपादन। कठिन सक्षमताओं की पहचान करने के लिए एक प्रारंभिक अध्ययन के परिणामों हेतु एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा एक मार्गदर्शी अध्ययन किया गया जिसके अन्तर्गत वर्तमान अध्ययन में इन सक्षमताओं को हासिल करने पर बच्चों के टेस्ट हेतु एक मापदंड संदर्भ परीक्षण बनाया गया। यह टेस्ट लिखित और मौखिक प्रपत्र के रूप में था। बच्चे की बोधात्मक अवस्थिति की पहचान के लिए एक बोधात्मक कार्य के साथ-साथ ग्वालियर के चुनिंदा विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों का एक उपलब्धि टेस्ट भी लिया गया। आधार सामग्री का विश्लेषण किया जा रहा है।

कामकाजी बच्चों को मुख्यधारा के विद्यालयों में लाने में एम.वी. फाउंडेशन के अनुभवों का केस अध्ययन

प्रारंभिक शिक्षा में नवाचारी पद्धतियों के प्रलेख के अध्ययनों की एक श्रृंखला के अन्तर्गत, वर्ष 1999-2000 के लिए आन्ध्र प्रदेश के ज़िला रंगारेड्डी में एम.वी. फाउंडेशन के कार्यों को लिया गया। एम.वी. फाउंडेशन का उद्देश्य विद्यालय से बाहर के बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ना और उन्हें सामान्य विद्यालयों में बनाए रखना है। इस अध्ययन का उद्देश्य उनके लक्ष्यों को पूरा करने के लिए उनके प्रयासों और पुनरावृत्ति की प्रभावकारिता को प्रलेखित करना है। विद्यालय प्रेक्षणों और बच्चों, अध्यापकों व अभिभावकों के साक्षात्कारों पर आधारित एक प्रारूप रिपोर्ट तैयार हो चुकी है।

पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं में पाठ्यचर्या बोझ का एक अध्ययन

स्थिति के त्वरित मूल्यांकन के लिए पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम बोझ का एक अध्ययन किया गया। 25 विद्यालयों से सूचना एकत्र की गई जिसमें पाँच विद्यालय हरियाणा के और शेष दिल्ली के थे। नमूने में सभी प्रकार के विद्यालयी प्रबन्धनों के विद्यालयों को शामिल किया गया। इस अध्ययन के परिणामों को एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित पाठ्यचर्या रूपरेखा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल किया गया। इसकी विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

विकास

विद्यालय रंगमंच गतिविधि

इस कार्यक्रम का उद्देश्य कक्षा अधिगम विशेषकर विद्यालय पाठ्यचर्या के अबोधात्मक घटकों को पढ़ाने के लिए रंगमंच/नाटक प्रविधियों को अपनाना था। इस

कार्यक्रम को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के संकाय सदस्यों और शिक्षा समूह में रंगमंच से जुड़े कुछ व्यक्तियों के सहयोग से आरंभ किया गया। दिल्ली से विभिन्न प्रबन्धनों के अन्तर्गत पाँच विद्यालयों के अध्यापकों के एक समूह को एक कार्यगोष्ठी में आमंत्रित किया गया। इस कार्यगोष्ठी में प्रतिभागियों को कक्षा में नाटक के द्वारा पढ़ाने के लिए सुग्राही बनाया गया। विभिन्न विषयों के शिक्षण के संदर्भ में विद्यालय में इसकी गतिविधियों और कक्षा अध्यापक द्वारा इसके विकास का आदान-प्रदान किया गया।

प्राथमिक कक्षाओं के लिए गणित में निदानात्मक परीक्षण

इस कार्यक्रम में अधिगम कठिनाइयों के निदान के प्रयोगार्थ जाँच-विषयों का एक आधार आँकड़ा बैंक विकसित किया गया। तीन राज्यों में इसका परीक्षण किया गया और आधार-सामग्री का विश्लेषण बच्चों की सम्भावित अधिगम कठिनाइयों को समझने के लिए किया गया। अध्यापकों के प्रयोगार्थ अनुभव पर आधारित निदानात्मक जाँच सहित निदानात्मक परीक्षण की एक पुस्तिका तैयार की गई। आगे, व्यावहारिक निदानात्मक उपाय के प्रचार-प्रसार के प्रयास किए गए।

बच्चों में अनुभवजन्य मूल्य शिक्षा को उन्नत करना

भारत में विद्यालयी स्तर के लिए पाठ्यचर्या योजना में मूल्य शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। मूल्यों को सिखाया नहीं जा सकता। इसे विद्यालयी बच्चे तभी सीख सकते हैं, जब वे इकट्ठे रहें। इस विचार को ध्यान में रखते हुए, एन.सी.ई. आर.टी. ने बच्चों में अनुभवजन्य मूल्य शिक्षा को उन्नत करने के लिए एक कार्यक्रम बनाया। माननीय मा.सं.वि. मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी ने दिसंबर, 1999 में इस कार्यक्रम का उद्घाटन 'आओ मिलकर गाएँ' पुस्तक के संशोधित संस्करण के विमोचन से किया। इस परियोजना में बच्चों और अध्यापकों के लिए अन्तर्राज्यीय शिविर, सामुदायिक गायन व राष्ट्रीय एकता, मूल्य शिक्षा तथा अंतर-सांस्कृतिक अभिव्यक्तिकरण को उन्नत करने के लिए अध्यापक शिविरों का आयोजन किया गया। एस.सी.ई. आर.टीज़. के सहयोग से बच्चों के लिए अध्यापकों के साथ पाँच अन्तर्राज्यीय शिविर आयोजित किए गए।

प्रशिक्षण

केंद्रीय तिब्बती विद्यालय बोर्ड के अनुरोध पर संसाधन व्यक्तियों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। संकाय सदस्यों के एक दल ने इस प्रशिक्षण का अनुकरण उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में स्थित तिब्बती विद्यालय के अध्ययन में किया।

माननीय मा.सं. वि.मं. डा. मुरली मनोहर जोशी 'आओ मिलकर गाएँ' पुस्तक का विमोचन करते हुए।

विस्तार

पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा में आंकड़ा बैंक

पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय प्रलेखन एकक (एन.डी.यू.) के अन्तर्गत सामग्री सूचना का संकलन, वर्गीकरण नियमित रूप में किया गया और सरल आकलन के लिए कंप्यूटर में फीड किया गया। 1999-2000 में विश्लेषण के लिए विभिन्न राज्यों की पाठ्यपुस्तकें और रोचक अधिगम सामग्री एकत्र की गईं। एक विषय-सूची एवं विवरणिका निकाली जा रही है जिसमें एन.डी.यू. के संबंध में सूचना दी गई है।

समाचार पत्रिकाएँ–'ग्लिप्सेज़' और 'आभास'

दोनों समाचार पत्रिकाएँ (अंग्रेज़ी में 'ग्लिप्सेज़' और हिंदी में 'आभास') त्रैमासिक हैं और हर वर्ष जून, सितंबर, दिसंबर और मार्च में नियमित प्रकाशित होती हैं। समाचार पत्रिका 'ग्लिंप्सेज़' की लगभग 2000 प्रतियों और 'आभास' की 1000 प्रतियों का प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत संगठनों/व्यक्तियों में नियमित रूप से प्रचार-प्रसार किया गया। ग्लिंप्सेज़ समाचार पत्रिका का सितंबर, 1999 का अंक निकाला जा चुका है और इसका प्रचार-प्रसार संबंधित एजेंसियों को किया गया। दोनों समाचार पत्रिकाओं के दिसंबर 1999 अंक और 'आभास' का सितंबर 1999 अंक प्रकाशनाधीन है और मार्च अंक की पाण्डुलिपि तैयार की जा रही है।

पत्रिकाएँ

दो त्रैमासिक पत्रिकाएँ प्रकाशित करना– अंग्रेज़ी में 'दि प्राइमरी टीचर' और हिंदी में 'प्राइमरी शिक्षक' एन.सी.ई.आर.टी. के नियमित और निरंतर कार्यकलाप हैं। ये पत्रिकाएँ प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों के बारे में विचारों और समाचारों के आदान-प्रदान का एक खुला मंच प्रदान करती हैं और मुख्य रूप से प्राथमिक कक्षाओं में कार्यरत अध्यापकों तथा अध्यापक प्रशिक्षकों की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं।

'प्राइमरी शिक्षक' के तीन अंक अप्रैल 1999, जुलाई 1999 और अक्टूबर 1999 पहले प्रकाशित हो चुके हैं। चौथा अंक जनवरी 2000 मुद्रणाधीन है। 'प्राइमरी टीचर' के भी दो अंक (अप्रैल 1999 एवं जुलाई 1999) प्रकाशित हो चुके हैं, एवं बाकी के दो अंक मुद्रणाधीन हैं।

प्राथमिक शिक्षा में क्षेत्रीय निवेश

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर ने शिक्षण आधारित कार्यकलाप के अन्तर्गत हिन्दी और गणित में कक्षा 1 और 2 के लिए अनुदेशी सामग्री तैयार की और उत्तर प्रदेश के एक चुनिंदा ब्लाक के अध्यापकों को प्रशिक्षण भी दिया ताकि अधिगम-अध्यापक प्रक्रिया को रोचक और प्रभावी बनाया जाए। हरियाणा के बहुश्रेणी स्थिति के अध्यापकों को स्वत: अधिगम कार्यकलापों के प्रयोग में प्रशिक्षित किया और कक्षा के लिए अपेक्षित सामग्री प्रदान की।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने प्राइमरी विद्यालयों में छात्रों की उपलब्धि पर प्रभाव डालने वाले घटकों का अध्ययन किया और विज्ञान शिक्षण में एकीकृत उपागम के संबंध में एक मॉडल विकसित किया। प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों को स्वास्थ्य आदतों, शारीरिक शिक्षा और योग पर अभिमुख भी किया गया।

1999-2000 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- शिक्षा के पहले कदम : प्राथमिक शिक्षा की पाठ्यचर्या की ओर, भाग I
- 'प्राइमरी ईयर्स टुवर्ड्स करीकुलम फ्रेम वर्क पार्ट-2
- लैट अस सिंग टुगैदर (संगीत स्वरलिपि सहित, संगीत स्वरलिपि रहित)
- प्रमोटिंग एक्सपिरिएन्शल वेल्यू एजुकेशन (हिंदी और अंग्रेज़ी)
- पत्रिका 'दि प्राइमरी टीचर' - त्रैमासिक 1999-2000 के सभी अंक
- पत्रिका 'प्राइमरी शिक्षक' - त्रैमासिक 1999-2000 के सभी अंक
- त्रैमासिक समाचार पत्रिका 'ग्लिंप्सेज़' 1999-2000 के सभी अंक
- हिन्दी में त्रैमासिक समाचार पत्रिका - 'आभास' 1999-2000 के सभी अंक।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु मुख्यत: अनुभवों के आदान-प्रदान और कार्यप्रणालियाँ विकसित करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में 27-28 मार्च 2000 को अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण में राज्य संस्थानों के निदेशकों का एक वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया।

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण को पूरा करने के लिए एक कार्यनीति के रूप में अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में एन.सी.ई.आर.टी. संसाधनों के विकास, अध्यापन-अधिगम सामग्री के विकास और वैकल्पिक शिक्षण हेतु कार्यनीतियों की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। इसके लिए क्षेत्रीय विषयवस्तु आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से राज्य स्तरीय संगठनों और स्वयंसेवी संगठनों का एक मजबूत संसाधन आधार तैयार करने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है। अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण में स्थितिपरक अध्ययन के संबंध में शोधकार्य, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की प्रभावकारिता और नवाचारी परियोजना के मूल्यांकन को भी लिया गया है। एन.सी.ई.आर.टी. विभिन्न सरकारी और स्वयंसेवी संगठनों को परामर्श और संसाधन सहायता प्रदान करती है। वर्ष 1999-2000 में किए गए कार्यक्रमों के मुख्य बिन्दु निम्नलिखित हैं:

अनुसंधान

उच्च प्राथमिक स्तर पर अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की स्थिति

इस अध्ययन से यह प्रकट हुआ कि छह राज्यों/सं.शा. प्रदेश जैसे आन्ध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, मिज़ोरम, उड़ीसा और चंडीगढ़ तथा बहुत थोड़े से स्वयंसेवी संगठनों में उच्च प्राथमिक स्तर पर एन.एफ.ई. कार्यक्रम का कार्यान्वयन हुआ है। कार्यक्रम के कम कार्यान्वयन का मुख्य कारण योग्य और प्रशिक्षित अनुदेशकों की अनुपलब्धता, अभिभावक-असमर्थन और एन.एफ.ई. बच्चों के लिए पाठ्यक्रम की अनुपयुक्तता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर योजना के बेहतर कार्यान्वयन के लिए सुधारात्मक उपायों का सुझाव दिया गया। रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण के क्षेत्र में एस.सी.ई.आर.टीज़. की स्थिति

अध्ययन से ये संकेत मिले हैं कि केवल नौ राज्यों- आन्ध्र प्रदेश, दिल्ली, जम्मू और कश्मीर, मध्य प्रदेश, मिज़ोरम, उड़ीसा, राजस्थान, त्रिपुरा और उत्तर प्रदेश के राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्/राज्य शिक्षा संस्थान अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के लिए सामग्री विकास, प्रशिक्षण और अनुवीक्षण तथा मूल्यांकन में शामिल थे। रिपोर्ट तैयार हो चुकी है और राज्य एजेन्सियों और अन्य संगठनों को भेज दी गई है।

अनौपचारिक शिक्षा का एक परिदृश्य : आनंददायी अधिगम।

प्राथमिक स्तर के अनौपचारिक शिक्षा केंद्रों पर हिंदी के अध्यापन अधिगम के दौरान आने वाली कठिनाइयाँ

यह अध्ययन दिल्ली और हरियाणा में किया गया। प्राथमिक स्तर पर हिंदी के अध्यापन अधिगम में आने वाली कठिनाइयों की पहचान की गई और सुधारात्मक कार्यप्रणाली के सुझाव दिए गए। आंकड़ा आधार के विश्लेषण और रिपोर्ट का कार्य चल रहा है।

बिहार, हरियाणा और राजस्थान में अनौपचारिक शिक्षा की प्रभावकारिता

यह अध्ययन बिहार और राजस्थान के सरकारी और स्वयंसेवी संगठनों दोनों और हरियाणा में तीन गैर सरकारी संगठनों द्वारा एन.एफ.ई. कार्यक्रमों के कार्यान्वयन तक सीमित था। प्रभावकारिता के अध्ययन को अवसंरचना, प्रशिक्षण, पाठ्यचर्या, अनुवीक्षण और पर्यवेक्षण, कार्यक्रम मूल्यांकन और अध्येता उपलब्धि को ध्यान में रखकर किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण और रिपोर्ट लेखन का कार्य किया जा रहा है।

मूल्यांकन

एन.सी.ई.आर.टी. ने प्रयोगात्मक और नवाचारी कार्यक्रमों पर केंद्रीय प्रायोजित योजना के अन्तर्गत मा.सं.वि. मंत्रालय में अनुदान के लिए संगठनों द्वारा प्रेषित 40 परियोजनाओं का मूल्यांकन किया और कुछ गैर सरकारी संगठनों के नवाचारी कार्यक्रमों के अध्ययन के लिए कई क्षेत्र अध्ययन किए। मा.सं.वि. मंत्रालय से वित्तीय सहायता प्राप्त कुछ गैर सरकारी संगठनों द्वारा चलाई गई नवाचारी परियोजनाओं के अध्ययन के लिए क्षेत्रों के दौरे किए गए जैसे बिहार और उड़ीसा में 'फ्रेंड्स ऑफ ट्राइबल्स सोसायटी', मुंबई में विद्यालय से बाहर के बच्चों के लिए 'प्रथम', ऋषि घाटी शिक्षा केंद्र, मदनपाल्ले, आन्ध्र प्रदेश। ये दौरे उनके उपग्रह विद्यालयों में बहुश्रेणी और बहुस्तरीय अध्यापन की कार्यप्रणाली के अध्ययन हेतु किए गए। इन दौरों की रिपोर्टों को मा.सं.वि. मंत्रालय को भेजा गया।

प्रशिक्षण

स्वयंसेवी संगठनों के अनौपचारिक शिक्षा कार्यकर्ताओं का अभिविन्यास

दक्षिणी राज्यों के 26 और बिहार के स्वयंसेवी संगठनों के 35 वरिष्ठ अनौपचारिक शिक्षा कार्यकर्ताओं के लिए दो विषय-वस्तु आधारित पांच-दिवसीय क्षेत्रीय अभिविन्यास कार्यक्रम क्रमशः बैंगलूर और नीमडीह में आयोजित किए गए। प्रतिभागियों को अनौपचारिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं जिनमें एन.एफ.ई. केंद्रों का अनुवीक्षण और पर्यवेक्षण, न्यूनतम अधिगम स्तर, अध्यापन अधिगम कार्यप्रणालियां और अध्येताओं की उपलब्धि का मूल्यांकन आदि शामिल था, की जानकारी दी गई।

एस.सी.ई.आर.टीज़./एस.आई.ईज़./एस.आर.सीज़./डी.आई.ई.टीज़. के प्रमुख एन.एफ.ई. कार्यकर्ताओं का अभिविन्यास

पश्चिम बंगाल और उत्तर-पूर्वी राज्यों के एस.सी.ई.आर.टीज़./एस.आई.ईज़./एस.आर.सीज़./डी.आई.ई.टीज़. में डी.आर.यूज़. के 24 प्रमुख अनौपचारिक शिक्षाकर्मियों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम 21-25 फरवरी, 2000 को एस.सी.ई.आर.टी., कलकत्ता में आयोजित किया गया। इस अभिविन्यास कार्यक्रम में शामिल प्रमुख पहलू इस प्रकार थे: नौवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान राज्यों की भूमिका; विभिन्न सरकारी अभिकरणों में अनुभवों को साझा करना; ज़िला, ब्लाक और गाँव स्तर पर क्षमता निर्माण; शिक्षण कार्यप्रणाली, अध्यापन अधिगम सामग्री का विश्लेषण और छात्र उपलब्धि का मूल्यांकन।

विस्तार

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए मुख्यतः अनुभवों के आदान-प्रदान और कार्यप्रणालियां विकसित करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में 27-28 मार्च 2000 को अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण में राज्य संस्थानों के निदेशकों का एक वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया गया। 23-24 मार्च को एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में स्वयंसेवी संगठनों की नवाचारी और प्रयोगात्मक परियोजनाओं के अनुभवों को
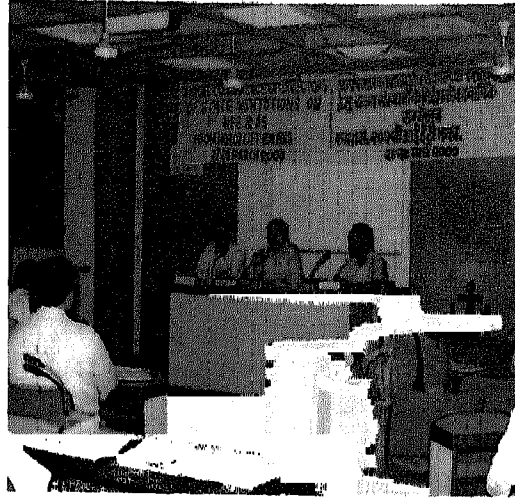
अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण के राज्य संस्थानों के निदेशकों के वार्षिक सम्मेलन में एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

साझा करने के लिए एक राष्ट्रीय कार्यगोष्ठी इन उद्देश्यों से आयोजित की गई– (क) एन.जी.ओ. द्वारा नवाचारों और प्रयोगों को प्रलेखित करना और (ख) विद्यालय प्रणाली में इन नवाचारों को मुख्यधारा में लाने के लिए कार्यान्वयन की कार्यप्रणाली विकसित करना है। इस कार्यगोष्ठी में पन्द्रह स्वयंसेवी संगठनों ने भाग लिया और नवाचार तथा प्रायोगिक परियोजनाओं पर अपने अनुभव प्रस्तुत किए। 'एन.एफ.ई. इन एक्शन' शीर्षक के अन्तर्गत एन.जी.ओ.– लोक सेवा आयतन, नीमडीह, बिहार द्वारा संचालित एन.एफ.ई. केंद्रों से एन.एफ.ई. अध्येताओं और अनुदेशकों ने 23 जून 1999 को एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में नृत्य/नाटक के ज़रिए पर्यावरण अध्ययन में संकल्पनाओं/शीर्षकों से अधिगम प्रक्रिया का प्रदर्शन किया। एन.सी.ई. आर.टी. में संगठनात्मक स्तरीय कार्यक्रमों और क्रियाकलापों के अतिरिक्त विभिन्न सरकारी और स्वयंसेवी संगठनों को परामर्श और संसाधन सहायता प्रदान की गई।

1999-2000 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- एस.सी.ई.आर.टी./एस.आर.सी. के अनौपचारिक शिक्षा के संकाय सदस्यों और अनौपचारिक शिक्षा व वैकल्पिक शिक्षण के संसाधन व्यक्तियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम पर एक रिपोर्ट (फोटोप्रति)।
- दक्षिणी राज्यों से गैर सरकारी संगठनों के वरिष्ठ एन.एफ.ई. कार्यकर्ताओं के लिए विषय-वस्तु आधारित क्षेत्रीय अभिविन्यास कार्यक्रम पर एक रिपोर्ट।

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों की शिक्षा

उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में आदिवासी भाषाओं को पढ़ाने वाले अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज विकसित करने का कार्यक्रम आदिवासी भाषा में धाराप्रवाहिता को विकसित करने और कक्षा में पढ़ाने तथा अध्यापक-छात्र अन्योन्यक्रिया को अर्थपूर्ण बनाने पर केंद्रित है। इस प्रशिक्षण पैकेज में मनोवृत्तिक बदलावों के लिए अपनाईं जाने वाली कार्यप्रणालियों और संप्रेषण की प्रासंगिकता व व्यावहारिक विषय क्षेत्रों के संदर्भ में मज़बूत सांस्कृतिक घटकों को सम्मिलित किया गया है। इसका उड़ीसा राज्य के डी.पी.ई.पी. ज़िलों में व्यापक रूप से प्रयोग किया गया है।

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई.) की प्रक्रिया में तेज़ी लाने के उद्देश्य से एन.सी.ई.आर.टी. विशेष आवश्यकताओं वाले समूहों, जैसे- अनुसूचित जातियों (एस.सी.), अनुसूचित जनजातियों (एस.टी.) और अल्पसंख्यकों की शिक्षा से संबंधित मामलों पर विशेष ध्यान दे रही है। इस क्षेत्र में वर्ष 1999-2000 में संचालित कार्यक्रमों के मुख्य बिंदु नीचे दिए गए हैं:

गैर-आदिवासी अध्यापकों के लिए आदिवासी भाषा का प्रशिक्षण पैकेज

उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में आदिवासी भाषाओं को पढ़ाने वाले अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज विकसित करने का कार्यक्रम आदिवासी भाषा में धाराप्रवाहिता को विकसित करने और कक्षा में पढ़ाने तथा अध्यापक-छात्र अन्योन्यक्रिया को अर्थपूर्ण बनाने पर केंद्रित है। इस प्रशिक्षण पैकेज में मनोवृत्तिक बदलावों के लिए अपनाई जाने वाली कार्यप्रणालियों और संप्रेषण की प्रासंगिकता व व्यावहारिक विषय क्षेत्रों के संदर्भ में मज़बूत सांस्कृतिक घटकों को सम्मिलित किया गया है। इसका उड़ीसा राज्य के डी.पी.ई.पी. ज़िलों में व्यापक रूप से प्रयोग किया गया है।

अल्पसंख्यकों की शिक्षा

मकतबों/मदरसों में मौजूदा पाठ्यचर्या का विश्लेषण

इस परियोजना का उद्देश्य सरकारी सहायताप्राप्त मकतबों/मदरसों की मौजूदा पाठ्यचर्या की विषय वस्तु का अध्ययन और विश्लेषण करना और अन्तरालों की पहचान करके उनकी पाठ्यचर्या को संशोधित करने का सुझाव देना है। इस अध्ययन में आंकड़े एकत्र करने के लिए तीन राज्यों- केरल, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश को शामिल किया गया है। इन राज्यों से विद्यार्थियों, अध्यापकों और अभिभावकों सहित विभिन्न प्रकार के उत्तर देने वालों से सूचना एकत्र करने के लिए एक प्रश्नावली बनाई गई। इस प्रकार से एकत्र किए गए आंकड़ों का कक्षा 5 तक पढ़ाए जाने वाले विषयों, वित्तीय सहायता के स्रोतों, संबंधों, अनुदेश के माध्यम, अध्यापकों की संख्या, विद्यार्थियों की संख्या, अध्यापकों की योग्यताओं और परीक्षा की शर्तों को ध्यान में रखकर विश्लेषण किया गया।

इसके अतिरिक्त, इन संस्थानों द्वारा किए जाने वाले विभिन्न कार्यकलापों के संबंध में सूचना के साथ-साथ अवसंरचनात्मक सुविधाओं पर भी सूचना एकत्र की गई। इस सूचना का विश्लेषण किया गया और रिपोर्ट का प्रारूप तैयार किया गया।

अल्पसंख्यकों (मुस्लिमों) के लिए केंद्र प्रायोजित योजनाओं से प्राप्त शैक्षिक लाभ

शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों के शैक्षिक विकास पर आधारित केंद्र प्रायोजित योजनाओं से अल्पसंख्यक (मुस्लिम) किस हद तक लाभान्वित हुए, इसका आकलन करने के लिए एक नमूना सर्वेक्षण किया गया। तीन राज्यों और शैक्षिक प्रबंधकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों से सूचना एकत्र करने के लिए चार साधनों को तैयार किया गया। समुदाय सदस्यों से सूचना और विचार एकत्र करने के लिए एक लघु साक्षात्कार-सारणी भी तैयार की गई। विस्तृत सूचना को एक कार्यशाला में अन्तिम रूप दिया गया जिसमें अल्पसंख्यकों, अनुसंधान कार्यप्रणाली और व्यावसायिक शिक्षा के विशेषज्ञों ने भाग लिया। तीन राज्यों बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल से ध्यानपूर्वक प्राप्त किए गए प्रतिनिधि नमूनों की पहचान की गई और उन्हें वर्तमान अध्ययन में शामिल किया जाएगा। इस अध्ययन की उपलब्धियाँ संभवत: अल्पसंख्यकों को शैक्षिक अधिकार देने के लिए विभिन्न केंद्र प्रायोजित योजनाओं की उपयोगिता की जानकारी प्रदान कर सकती हैं।

विस्तार

एन.सी.ई.आर.टी. उत्तर प्रदेश और बिहार में अल्पसंख्यकों के लिए चलाए गए संगठनों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान भी करती है और डी.पी.ई.पी. के अन्तर्गत परियोजनाओं के लिए मार्गदर्शन और विज्ञान की पुस्तकें तथा विज्ञान किट प्रदान करके मदरसों के आधुनिकीकरण के लिए सुझाव मांगती है।

मदरसों के आधुनिकीकरण पर आयोजित कार्यशाला।

राज्यों और स्वयंसेवी अभिकरणों में संसाधन विकास

2-3 फरवरी, 2000 को एक दो-दिवसीय कार्यगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागी राज्य शै.अ. और प्र. परिषदों को वर्ष 2000-2001 में लिए गए कार्यक्रमों को अन्तिम रूप देने में सहायता दी गई। राज्य शै.अ. और प्र.प. के संकाय सदस्यों में क्षमता निर्माण के लिए समसामयिक मुद्दों पर आधारित दो परियोजना लेखों के प्रस्तुतीकरण और प्रतिभागियों के साथ इन मुद्दों पर चर्चा की गई। राज्य स्तर पर कार्यरत इन संगठनों द्वारा लिए गए इस प्रकार के सभी कार्यक्रमों के लिए निर्धारित वर्ष के दौरान अकादमिक सहायता प्रदान की जाएगी।

मदरसों का आधुनिकीकरण

एन.सी.ई.आर.टी. ने राज्यों में स्थित विभिन्न मदरसों के बोर्ड के आधुनिकीकरण हेतु सुझाव आमन्त्रित करने और परियोजना के लिए उन्हें मार्गदर्शन तथा विज्ञान पुस्तकें और विज्ञान किट प्रदान करने के लिए 22-23 जून को एक कार्यगोष्ठी का आयोजन किया।

अनु.जा./अनु.ज.जा. और अल्पसंख्यकों में क्षेत्रीय सहायता

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर द्वारा 'अर्ली आइडेंटिफिकेशन एंड इंटरवेंशन ऑफ डेवलपमेन्ट डिसएबिलिटीज़-ए मल्टीडिसिप्लिनरी एप्रोच' पर एक कार्यगोष्ठी आयोजित की गई। क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर ने उड़ीसा के आदिवासी बच्चों के विज्ञान सीखने पर मनोसामाजिक घटकों की पहचान की। आदिवासी प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्यचर्या आदान-प्रदान से संबंधित समस्याओं का हल निकालने के लिए कार्यप्रणालियाँ विकसित की गईं और आदिवासी हाई स्कूलों के अध्यापकों का अंग्रेज़ी भाषा शिक्षा और विज्ञान में अभिविन्यास किया।

7 विकलांग बच्चों की शिक्षा

यूनेस्को की सहायता से एन.सी.ई.आर.टी. में भारत सरकार के तत्वावधान में 'विशेष आवश्यकताओं की शिक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र' स्थापित करने का प्रस्ताव है। इस केंद्र का मुख्य ध्येय होगा– भारत और एशिया प्रशांत क्षेत्र में एक समावेशित व्यवस्था में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों तक शिक्षा के अधिक से अधिक अवसरों को पहुंचाना। इसके लक्ष्यों, दृष्टिकोण, उद्देश्यों और कार्रवाई योजना पर दस्तावेज़ विकसित किया गया है जो आगामी कार्रवाई के लिए दिशानिर्देश प्रदान करेगा।

एन सी ई आर टी शारीरिक और बौद्धिक रूप से विकलांग बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनेक कार्यक्रम संचालित कर रही है। इस क्षेत्र के प्रमुख कार्यों में शामिल हैं: क्षमता विकास, विशेष समूहों की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, शिक्षा की सुलभता में सुधार और इस क्षेत्र में कार्यरत गैर-सरकारी संगठनों और दूसरे संस्थानों में नेटवर्क का विकास। एन.सी.ई.आर.टी. ने 'विकलांगता अधिनियम 1995' के कार्यान्वयन के लिए प्रयास किया और नियमित विद्यालयों में विकलांग बच्चों की एकीकृत शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक कार्यक्रम आरंभ किए। इस क्षेत्र में 1999-2000 के दौरान आयोजित कार्यक्रमों और गतिविधियों के मुख्य बिन्दु नीचे दिए गए हैं:

अनुसंधान

'विकलांग बच्चों की एकीकृत शिक्षा' योजना का मूल्यांकन

1974 में केंद्र प्रायोजित एक योजना के तहत सामान्य विद्यालयों में विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा (आई.ई.डी.सी.) आरंभ की गई। इस योजना को प्रत्येक पाँच वर्षों में संशोधित किया जाता है। आई.ई.डी.सी. योजना का मूल्यांकन-अध्ययन विकलांग बच्चों की शिक्षा पर एकीकृत शिक्षा के प्रभाव के अध्ययन का प्रयास है। क्षेत्र अन्वेषकों के लिए अनुसंधान साधनों (टूल्स) के प्रयोगार्थ प्रशिक्षण देने हेतु दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन अनुसंधान साधनों को अध्ययन के अन्तर्गत राज्यों के आई.ई.डी.सी. प्रकोष्ठ में अध्यापकों, अभिभावकों, बच्चों और कार्यरत व्यक्तियों के लिए नमूने के रूप में पहले विकसित किया गया था। राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और दिल्ली से आंकड़े एकत्र किए जा चुके हैं और इनका विश्लेषण किया जा रहा है।

विकास

श्रवण विकारयुक्त बच्चों का भाषा विकास : एक अध्यापक पुस्तिका

यह पुस्तिका पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्तर पर श्रवण विकारयुक्त बच्चों को शिक्षण देने वाले अध्यापकों के लिए बनाई गई। इस पुस्तिका में श्रवण विकारयुक्त बच्चों के कक्षा-1 में प्रवेश से पूर्व 'विद्यालय-पूर्व प्रारंभिक पाठ्यचर्या', दी गई है। अध्यापकों को मंद श्रवण विकारयुक्त बच्चों, अत्यधिक विकारयुक्त बच्चों, जिन्होंने 3-4 वर्ष के व्यवधान के बाद नियमित विद्यालयों में प्रवेश किया है और जिनके विद्यालय आने से पहले व्यवधान नहीं पड़ा है, की भाषा के विकास के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया। कक्षा 1 और 2 में भाषा शिक्षण में अनुकूलन और समायोजन पर शिक्षण कार्यप्रणालियों और मूल्यांकन प्रक्रिया आदि पर चर्चा भी की गई।

श्रवण विकारयुक्त बच्चों के लिए हिंदी भाषा पाठ्यचर्या

प्राथमिक स्तर पर एकीकृत व्यवस्था में श्रवण विकारयुक्त बच्चों की विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हिंदी भाषा पाठ्यचर्या में अनुकूलन और समायोजन इस उद्देश्य से किया गया ताकि श्रवण विकारयुक्त बच्चों को एकीकृत विद्यालयों में हिंदी भाषा को ग्रहण करने योग्य बनाया जाए। इस परियोजना का उद्देश्य शिक्षण कार्यप्रणालियों का संशोधन करके कक्षा 3, 4 और 5 में श्रवण विकारयुक्त बच्चों के लिए हिंदी में न्यूनतम सक्षमता स्तर की पहचान करना है। कक्षा 3, 4, 5 में श्रवण विकारयुक्त

एक शिक्षक - संदर्शिका।

बच्चों की उपलब्धियों के स्तर के संबंध में एकत्र आकड़ों पर चर्चा करने के लिए तीन कार्यशालाएं क्रमश: इन कक्षाओं के लिए आयोजित की गईं। अध्यापकों की कठिनाइयों पर भी चर्चा की गई। इन कक्षाओं में हिंदी शिक्षण में न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.) को अनुकूल बनाया गया और पाठ्यचर्या शिक्षण कार्यप्रणालियों में अनुकूलन और समायोजन के लिए दिशानिर्देश का प्रारूप बनाया गया तथा नमूना अध्यापन-अधिगम सामग्री तैयार की गई।

कमज़ोर दृष्टि वाले बच्चे : प्राथमिक-विद्यालय के अध्यापकों के लिए एक संदर्शिका

अंग्रेज़ी में पूर्व प्रकाशित इस संदर्शिका ने अध्यापकों को कमज़ोर दृष्टि वाले बच्चों की आवश्यकताओं और उपलब्ध सेवाओं के साथ काम चलाने के लिए अभिमुख किया। यह अध्यापकों को पढ़ने, लिखने, सुनने, मनो-सामाजिक विकास क्षेत्र आदि पर कमज़ोर दृष्टि वाले बच्चों के प्रभाव को समझने में मदद करती है। यह संदर्शिका कमज़ोर दृष्टि वाले बच्चों की उपलब्धि को बढ़ाने के अन्तिम लक्ष्य के साथ-साथ उनकी अध्यापन अधिगम प्रक्रिया की गुणवत्ता में सुधार करने में सहयोग प्रदान करेगी। इसका हिंदी रूपान्तर मुद्रणाधीन है।

एकीकृत व्यवस्था में प्राथमिक विद्यालय के दृष्टिहीन बच्चों के लिए गणित पाठ्यचर्या पढ़ाने के लिए पुस्तिका

इस परियोजना के अन्तर्गत उन क्षेत्रों की पहचान की गई जिन्हें दृष्टिहीन बच्चों के लिए गणित पाठ्यचर्या में अनुकूलन/संशोधन की आवश्यकता है। यह पुस्तिका पहचाने गए क्षेत्रों के साथ-साथ उपयुक्त अनुदेशी पद्धतियों के आधार पर तैयार की जाएगी। इसे कार्यशाला के आधार पर अंतिम रूप दिया जाएगा। इस पुस्तिका में प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए दिशानिर्देश होंगे कि दृष्टिहीन बच्चों को अन्य बच्चों के साथ एकीकृत करके एक अंतर्विष्ट कक्षा में कैसे पढ़ाया जा सकता है।

प्रशिक्षण

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की एकीकृत शिक्षा पर भारत-आस्ट्रेलिया क्षमता निर्माण कार्यक्रम

भारत-आस्ट्रेलिया प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम के तत्वावधान में एन.सी.ई.आर.टी. ने 19-21 मई, 1999 को उत्तरी क्षेत्र में स्थित राज्यों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यशाला इस दृष्टि से आयोजित की कि इन राज्यों में ऐसे संसाधन व्यक्ति तैयार किए जाएं जो अंतर्विष्ट शिक्षा के लिए अध्यापक तैयार कर सकें। कार्यशाला में हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, जम्मू और कश्मीर, गुजरात और केरल के नामितों ने भाग लिया।

इस कार्यशाला में शामिल संसाधन व्यक्ति एन.सी. ई.आर. टी. संकाय, मेलबोर्न विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया के संकाय सदस्य और वे संसाधन अध्यापक थे जिन्हें उन्होंने इस प्रयोजन के लिए विशेष रूपरेखा तैयार करके छह-सप्ताह के एक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत पहले प्रशिक्षित किया था।

विस्तार

विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा की केंद्र प्रायोजित योजना का पुनरीक्षण

विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा की केंद्र प्रायोजित योजना की एक पुनरीक्षण कार्यशाला, समाज की बदलती आवश्यकताओं और स्थिति के अनुसार योजना बनाने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के तत्वावधान में मा.सं.वि.मं. द्वारा आयोजित की गई। इस योजना को 1974 से आरम्भ किया गया और प्रत्येक पांच वर्ष में इसका पुनरीक्षण किया गया। राज्यों के सचिवों, एस.सी.ई.आर.टीज़. के निदेशकों और राज्य शिक्षा संस्थानों, आई.ई.डी. समन्वयकों और गैर-सरकारी संगठनों, जिन्हें समावेश और एकीकरण का सफल अभ्यास है, ने अपने अनुभवों को साझा किया और 'पी.डब्ल्यू. अधिनियम 1995' के अनुकूल बाधाओं और समाधानों की पहचान की। राज्यों ने योजना के कार्यान्वयन में आने वाली बाधाओं और समस्याओं को बताया और बाधाओं को दूर करने के लिए दिए गए सुझावों को अंतिम संस्तुतियों के लिए एकत्र किया जिन्हें क्षमता निर्माण के मुख्य विषयों और सेवा प्रदान करने और प्रशासनिक मुद्दों के रूप में प्रस्तुत किया गया। इससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक प्रभावशाली योजना को विकसित करने में योगदान मिलेगा।

समावेशित शिक्षा पर कार्यशाला

यूनेस्को के सहयोग से एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर पूर्व वचनबद्धताओं का समर्थन करने और आगे वास्तविक कार्यान्वयन हेतु देश की एक राजनीतिक इच्छाशक्ति को रूपान्तरित करने में सहायता करने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य मुक्त शिक्षा और जहां तक सम्भव हो सामान्य विद्यालयों में एकीकरण को सुलभ बनाने के लिए परिवर्तन के साथ-साथ लोगों को प्रत्येक बच्चे के अधिकार के संबंध में जानकारी देना है। इस कार्यशाला में आई.ई.डी. समन्वयकों और सामान्य विद्यालय में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों का शिक्षा-पोषण करने वाले गैर-सरकारी संगठनों ने भाग लिया। इसमें संकल्पनात्मक मुद्दे, शिक्षा की सुलभता, बाधाएं और कठिनाइयां, शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यालय व व्यवस्था से संबंधित सरोकार, पद्धति और क्षमता-निर्माण, नीतिगत योजना और प्रशासन जैसे विषयों पर चर्चा की गई। शिक्षा को उन्नत करने के लिए समावेशित शिक्षा पद्धति के लिए कार्यप्रणालियां और दिशानिर्देश बनाए गए। इससे प्रतिभागियों को अपने संस्थानों और राज्यों में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए शैक्षिक प्रयासों को कार्यान्वित करने हेतु कार्रवाई योजना की अभिकल्पना करने और कार्यान्वियन में मदद मिली।

अध्यापन-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) पर प्रदर्शनी एवं कार्यशाला

एन.सी.ई.आर.टी. के तत्वावधान में आर.सी.आई. द्वारा एक प्रदर्शनी एवं कार्यशाला का आयोजन अध्यापकों को अध्यापन-अधिगम सामग्री की पहचान कराने और उन्हें अच्छे साधनों, जिन्हें विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों पर प्रभावी रूप से प्रयोग किया जा सके, के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से किया गया। इस प्रदर्शनी में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा में कार्यरत विभिन्न राज्यों, विश्वविद्यालयों और गैर सरकारी संगठनों के प्रतिभागियों को उनके द्वारा बनाई गई सामग्री को प्रदर्शित करने के लिए आमन्त्रित किया गया। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने अपने दीर्घकालीन अनुभवों पर भी विचार-विमर्श किया। बच्चों का ध्यान केन्द्रित करने, बच्चों की समस्याओं को हल करने, सभी क्षेत्रों में उनके विकास को प्रेरित करने, कौशलों की प्राप्ति और स्वत: अनुवीक्षण के लिए बच्चों का उत्साह बढ़ा सकने वाली नवाचारी सामग्री के विकास के लिए दिशानिर्देश विकसित किए गए।

कार्यशाला के उपरान्त विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा अपनाई जा सकने वाली पत्रिकाओं की पहचान की गई। नवाचारी अध्यापकों के लिए उनकी रुचि को बढ़ाने और शिक्षण अधिगम सामग्री के विकास से जुड़ने के लिए उन्हें प्रोत्साहन देने के लिए दिशानिर्देश विकसित किए गए। प्रतिभागी संस्थानों में व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार हेतु सामग्री की पहचान की गई।

राज्यों और स्वयंसेवी अभिकरणों को संसाधन सहायता

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की समस्याओं को सुलझाने के लिए राज्यों और स्वयंसेवी संस्थानों हेतु संसाधन सहायता निर्मित करने के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई। बिहार, आन्ध्र प्रदेश, हरियाणा, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मिजोरम, उड़ीसा, राजस्थान, गंगटोक, असम, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और जम्मू एवं कश्मीर के प्रतिभागियों ने विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा के कार्यक्रम के निष्पादन, उपलब्धियों और कार्यान्वयन की समस्याओं को प्रस्तुत किया। इस कार्यशाला ने विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा में कार्यरत विभिन्न एस.सी.ई.आर.टीज़/एस.आई.ईज़. और स्वयंसेवी संगठनों में अनुभवों का आदान-प्रदान करने के लिए एक मंच प्रदान किया। सत्र आई.ई.डी. समन्वयकों को ज़िला/ब्लाक/समूह स्तर पर विकलांग बच्चों की एकीकृत शिक्षा के कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए उन्हें नियोजन, आयोजन, प्रबन्धन और अनुवीक्षण में सक्षम बनाने हेतु आयोजित किया गया।

विशेष आवश्यकताओं की शिक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र

यूनेस्को की सहायता से एन.सी.ई.आर.टी. में भारत सरकार के तत्वावधान में 'विशेष आवश्यकताओं की शिक्षा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय केंद्र' स्थापित करने का प्रस्ताव है। इस केंद्र का मुख्य ध्येय होगा – भारत और एशिया प्रशान्त क्षेत्र में एक समावेशित व्यवस्था में विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों तक शिक्षा

के अधिक से अधिक अवसरों को पहुंचाना है। यह केंद्र औपचारिक तथा अनौपचारिक विद्यालयों और शिक्षण के अन्य वैकल्पिक रूपों को जिन्हें नवाचारी, प्रायोगिक और क्रियात्मक अनुसंधान सूचित कर सकेगा तथा क्षमता-निर्माण एवं सहायता देकर सभी बच्चों के लिए गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करेगा। केंद्र, क्षेत्र में एकीकरण और परस्पर संबंधों को बढ़ावा देने के लिए कार्य करेगा। यह समावेशित शिक्षा के क्षेत्र में कार्य को सुलभ बनाने के लिए प्रबन्धन सूचना व्यवस्था (एम.आई.एस.) भी विकसित करेगा। यह सदस्य देशों और अन्य देशों को विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की शिक्षा गुणवत्ता के सुधार के लिए परामर्श प्रदान करेगा। इसके लक्ष्यों, दृष्टिकोण, उद्देश्यों और कार्रवाई योजना पर दस्तावेज़ विकसित किया गया है जो आगामी कार्रवाई के लिए दिशानिर्देश प्रदान करेगा।

परामर्श

सार्क क्षेत्र के राज्य-विभागों, गैर-सरकारी संगठनों, संस्थानों, विद्यालयों और व्यक्तियों को विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए शिक्षण कार्यनीतियों की आवश्यकताओं और विकास के संबंध में परामर्श प्रदान किया गया। विकलांग बच्चों की एकीकृत शिक्षा और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अनुदेशी प्रणालियों के नियोजन और प्रबन्धन के लिए अध्यापक-सहायता प्रदान की गई।

विकलांग बच्चों के लिए क्षेत्रीय निवेश

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने आई.ई.डी.सी. के क्षेत्र में राज्यों के एस.सी.ई.आर.टीज़. और एस.आई.ईज़. को मज़बूत बनाने के लिए विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा के क्षेत्र में पश्चिम क्षेत्र के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए एक पाँच-दिवसीय शिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया और डी.आई.ई.टीज़. के अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज भी विकसित किया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने मामूली विकलांग बच्चों की शैक्षिक बाधाओं की पहचान और उनके निदान के लिए एक कार्यनीति विकसित की। आई.ई.डी.सी. में राज्य स्तरीय संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास किया गया

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ने 'अर्ली आइडेन्टीफिकेशन एण्ड इन्टरवेन्शन ऑफ डेवलपमेन्ट डिसएबिलिटीज़-ए मल्टीडिसिप्लीनरी एप्रोच' पर एक कार्यशाला आयोजित की।

1999-2000 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- समावेशित शिक्षा पर यूनेस्को-एन.सी.ई.आर.टी. कार्यशाला रिपोर्ट (फोटोप्रति)
- श्रवण विकारयुक्त बच्चों का भाषा विकास।

बालिका शिक्षा

एन सी ई आर टी नीति निर्माण, पाठ्यचर्या संपादन और अध्यापक शिक्षा के माध्यम से बालिका शिक्षा और महिला सशक्तीकरण की उन्नति के लिए प्रतिबद्ध है। इसके कार्यक्षेत्र में एक समर्थ आंकड़ा आधार, लैंगिक भेदभाव को दूर करके पाठ्यचर्याओं की पुनर्संरचना, सभी शैक्षिक कार्मिकों का लैंगिक सुग्राहीकरण, अध्यापक और अध्यापक-प्रशिक्षकों हेतु पुस्तिका विकास, पीढ़ी जागरूकता, बालिका शिक्षा और विकास का समर्थन, अभिभावकों और समुदायों में अभिवृत्तिक परिवर्तन और इन सबसे ऊपर विद्यालयों में बालिकाओं के प्रति मैत्रीपूर्ण वातावरण शामिल हैं।

एन सी ई आर टी नीति निर्माण, पाठ्यचर्या संपादन और अध्यापक शिक्षा के माध्यम से बालिका शिक्षा और महिला सशक्तीकरण की उन्नति के लिए प्रतिबद्ध है। इसके कार्यक्षेत्र में एक समर्थ आंकड़ा आधार, लैंगिक भेदभाव को दूर करके पाठ्यचर्याओं की पुनर्संरचना, सभी शैक्षिक कार्मिकों का लैंगिक सुग्राहीकरण, अध्यापक और अध्यापक-प्रशिक्षकों हेतु पुस्तिका विकास, पीढ़ी जागरूकता, बालिका शिक्षा और विकास का समर्थन, अभिभावकों और समुदायों में अभिवृत्तिक परिवर्तन और इन सबसे ऊपर विद्यालयों में बालिकाओं के प्रति मैत्रीपूर्ण वातावरण शामिल हैं। इस क्षेत्र में 1999-2000 के दौरान आयोजित कार्यक्रम और कार्यकलाप निम्नलिखित हैं:

अनुसंधान

माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं के लिए आवास और छात्रावास की सुविधाओं को सुदृढ़ बनाने की केंद्रीय योजना का मूल्यांकन

इस अध्ययन में 12 राज्यों में गैर-सरकारी संगठनों द्वारा संचालित 50 छात्रावासों को सम्मिलित किया गया। यह अध्ययन मूलत: गुणवत्ता पर आधारित है और इसके अन्तर्गत व्यक्तिगत साक्षात्कार सूचियों, एक प्रेक्षण जाँच-सूची और छात्रावास सहवासियों के साथ परस्पर व्यक्तिगत बातचीत और चर्चा के द्वारा छात्रावास सुविधाओं का मूल्यांकन किया गया। इस मूल्यांकन को प्रभावकारी बनाने के लिए योजना आगतों, प्रक्रियाओं और परिणामों की पहचान और विश्लेषण करते समय स्थिति, विद्यार्थियों की सामाजिक पृष्ठभूमि के प्रासंगिक घटकों का अध्ययन किया गया।

यह जानकर संतोष हुआ कि कुछ अपेक्षाओं के साथ छात्रावास ग्रामीण और दूरगामी क्षेत्रों तथा अन्य सुविधाहीन वर्गों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गों से संबंधित बालिकाओं को लाभ पहुँचा रहे थे। योजना में बालिका नामांकन, प्रतिधारण और संप्राप्ति, प्रतिरूप, आत्मविश्वास, नेतृत्व योग्यता और संप्रेषण कुशलता वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया। यह योजना माध्यमिकोत्तर शिक्षा प्राप्त करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब समूहों और पिछड़े समुदायों के अभिभावकों को प्रेरित करने और बालिकाओं को आकर्षित करने में लाभदायक है। छात्रावास सहवासियों की शैक्षिक और व्यावसायिक महत्वाकांक्षाएं उच्च थीं। प्रबंधकगणों, वार्डन और बालिका छात्रावासियों की लैंगिक भूमिका परिप्रेक्ष्य बहुत समतावादी पाया गया।

प्राथमिक विद्यालय में बालिकाओं के नामांकन और प्रतिधारण पर प्रोत्साहन के प्रभाव का मूल्यांकन

यह अध्ययन मध्य प्रदेश के दो विकास खंडों-अनुसूचित जनजाति जनसंख्या प्रधान धार ज़िले के धार खंड और अनुसूचित जाति जनसंख्या केंद्रिक राजगढ़ ज़िले के राजगढ़ खंड में किया गया। इस अध्ययन की मुख्य उपलब्धि यह है कि प्रोत्साहनों का नामांकन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है किन्तु इसका सकारात्मक प्रभाव उपस्थिति और संप्राप्ति पर नहीं है। दोनों चुने गए विकास खंडों में यूनिफार्म और पाठ्यपुस्तकें पर्याप्त मात्रा में नहीं पाई गईं। सिले-सिलाए यूनिफार्म और पाठ्यपुस्तकों की आपूर्ति घटिया किस्म की थी। अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि वितरित माल की गुणवत्ता में सुधार करने की गुंजाइश है और जहाँ तक पाठ्यपुस्तकों और लेखन सामग्री का संबंध है, उन्हें व्यापक रूप से सम्मिलित करने की आवश्यकता है।

दूरस्थ क्षेत्रों, द्वीप-समूहों, रेगिस्तानों, पर्वतीय क्षेत्रों और वन क्षेत्रों में बालिका शिक्षा, बालिका शिक्षा को उन्नत करने में भोपाल की बेगमों की भूमिका, बालिकाओं की खेलों और शारीरिक शिक्षा की अवस्थिति और दिल्ली के विद्यालयों में लैंगिक परिप्रेक्ष्य से विद्यालय पद्धतियाँ आदि अध्ययन प्रगति पर हैं।

प्रशिक्षण

'महिला शिक्षा की प्रणाली और विकास' पर छह-सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम एक विशेष वार्षिक गतिविधि है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की कार्यप्रणाली उच्च सहभागिता और अन्योन्यक्रिया पर आधारित है। इसमें सभी प्रतिभागियों से एक स्थिति-लेख लाना अपेक्षित है जिसकी रूपरेखा पहले दी जाती है। आगे वे संकाय पर्यवेक्षण के अन्तर्गत कार्य करते हैं और उनकी अवस्थिति रिपोर्ट संवर्धित और अलंकृत करके एन.सी.ई.आर.टी. और नीपा और अन्य संसाधन केंद्रों में प्रयोग की जाती है। महिला शिक्षा पर विकास कार्यप्रणाली पर नौवां प्रशिक्षण पाठ्यक्रम 10 जनवरी से

20 फरवरी तक आयोजित किया गया जिसमें 12 राज्यों से 27 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में राज्य शिक्षा विभाग, एस.सी.ई.आर.टीज़., एस.आई.ईज़., डी.आई.ई.टीज़., विश्वविद्यालय और एन.सी.ई.आर.टी. के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ईज़.) सम्मिलित हुए।

पाठ्यक्रम की संरचना और शीर्षकों की विस्तृत रूपरेखा और विषयवस्तु को विस्तारपूर्वक बताने के लिए एक प्रशिक्षण संदर्शिका तैयार की गई। यह कार्यक्रम शीर्ष स्तर के कार्मिकों को महिला शिक्षा और विकास की कार्यप्रणाली में प्रशिक्षक के रूप में कार्य करने हेतु तैयार करने के लिए बनाया गया। इस कार्यक्रम में उन्हें इन विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया : (क) महिला अध्ययनों और अन्य सामाजिक विज्ञानों के परिप्रेक्ष्यों के ज़रिए महिलाओं से संबंधित विषयों की समझ (ख) तुलनात्मक परिप्रेक्ष्यों में महिलाओं की शिक्षा और अवस्थिति की जानकारी (ग) बालिका शिक्षा और विकास के मनो–सामाजिक आयामों की समझ, एकत्रीकरण के कौशल, आँकड़ों की जाँच और विश्लेषण तथा इस क्षेत्र में अनुसंधान कार्रवाई परियोजनाओं का निरूपण।

विस्तार

बालिका और सह शिक्षा पर उपलब्ध अद्यतन आंकड़े सामाजिक और जनसांख्यिकी संकेतकों को मिलाकर विश्लेषित किए गए और बालिका शिक्षा पर एक तथ्य लेख (एक ग्राफिक प्रस्तुतीकरण) प्रकाशित किया गया। 'सबके लिए शिक्षा' की रूपरेखा में जोमटियन अवधि के उपरान्त प्रगति की समीक्षा के क्रम में मानव संसाधन विकास मंत्रालय को बालिका शिक्षा पर एक अनुसंधान आधारित पेपर प्रस्तुत किया गया। नीपा में आयोजित राष्ट्रीय शिक्षा नीति समीक्षा बैठक में एन.सी.ई.आर.टी. के अनुसंधान विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यकलापों के माध्यम से महिला समानता के लिए शिक्षा पर कृतसंकल्प एन.पी.ई. के कार्यान्वयन में वास्तविक भूमिका पर प्रस्तुतीकरण किया गया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग और महिला और बाल विकास विभाग द्वारा राज्यों को संसाधन सहायता प्रदान की गई।

बालिका शिक्षा के क्षेत्र में क्षेत्रीय निवेश

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने मध्य प्रदेश में 'शैक्षिक प्रक्रियाओं में लैंगिक भेदभाव को दूर करने की कार्यपद्धतियों का विकास' पर एक चार-दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में महिलाओं के प्रति भेदभाव और उन्हें अधिकारवंचित करने के मुख्य कारणों की पहचान की गई और लैंगिक असमानता को दूर करने के लिए दिशानिर्देश प्रस्तुत किए गए।

1999-2000 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- इवेल्यूएशन स्कीम फॉर स्ट्रेंग्थनिंग ऑफ बोर्डिंग एण्ड होस्टल फेसिलिटीज़ फॉर गर्ल स्टूडेंट्स ऑफ सेकेण्डरी एंड हायर सेकेंडरी स्कूल्स (फोटोप्रति)
- शिक्षा लहर, यूनेस्को इन्नोवेटिव पायलट प्रोजेक्ट ऑन प्रोमोशन ऑफ प्राइमरी एजुकेशन ऑफ गर्ल्स एंड डिसएडवांटेज्ड ग्रुप्स इन रूरल हरियाणा (1992–98)
- एजुकेशन ऑफ गर्ल्स इन इंडिया–ए फेक्टशीट
- ट्वन्टी फाइव इयर्स ऑफ गर्ल्स एजुकेशन एट दि एन.सी.ई.आर.टी. (1974–1999) (फोटो प्रति)
- एजुकेशन ऑफ गर्ल्स इन इंडिया : एन असेसमेंट (मुद्रणाधीन)
- बालिका शिक्षा में ग्राम शिक्षा समिति का सहयोग एक दिशा (फोटोप्रति)
- नाइन्थ ट्रेनिंग कोर्स ऑन मैथडोलोजी ऑफ वुमेन्स एजुकेशन एंड डेवलपमेंट (जनवरी 10 से 20 फरवरी 2000)

1. इन्फोरमेशन ब्रॉशर (फोटोप्रति)
2. रिसोर्स मैनुअल (फोटोप्रति)
3. रिपोर्ट (फोटोप्रति)।

७ विज्ञान और गणित शिक्षा

एनसी ई आर टी अपने अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, मूल्यांकन और विस्तार संबंधी कार्यकलापों के द्वारा विज्ञान और गणित की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए निरंतर और पोषणीय प्रयास कर रही है। इसके विकासात्मक मुख्य कार्यकलापों में छात्रों और अध्यापकों के लिए गणित और विज्ञान शिक्षा में आदर्श पाठ्यचर्या सामग्री, विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों के लिए विज्ञान व गणित में पाठ्यचर्या और गणित व विज्ञान के विभिन्न विषयों में मूल पाठ्यसामग्री और अनुदेशी सामग्री का विकास करना समाहित है।

एन सी ई आर टी अपने अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, मूल्यांकन और विस्तार संबंधी कार्यकलापों के द्वारा विज्ञान और गणित की शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए निरंतर और पोषणीय प्रयास कर रही है। इस क्षेत्र में विकास के प्रमुख कार्यकलाप इस प्रकार हैं- (1) छात्रों और अध्यापकों के लिए गणित और विज्ञान शिक्षा में आदर्श पाठ्यचर्या सामग्री का विकास करना, (2) विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों के लिए विज्ञान और गणित में पाठ्यचर्या का विकास करना और (3) गणित और विज्ञान के विभिन्न विषयों में मूल पाठ्यसामग्री और अनुदेशी सामग्री का विकास करना। समस्त पाठ्यचर्या में पर्यावरण शिक्षा के तत्व शामिल किए जाते हैं।

नई विधियों और प्रौद्योगिकी के साथ अध्यापन अधिगम की कार्यनीतियों के प्रयोग संचालित किए जाते हैं। विज्ञान और गणित की संकल्पनाओं के प्रभावी अध्यापन अधिगम के लिए कार्यकलाप उन्मुख तीन विमितीय (थ्री डाईमेंशनल मॉडलों) और प्रयोगशाला कौशलों की रूपरेखा बनाई जाती है और उनका विकास किया जाता है। प्रतिभाशाली छात्रों के प्रतिभा पोषण के लिए अपेक्षित कदम उठाए जाते हैं। प्रतिभा पोषण कार्यक्रमों के संचालन के लिए विभिन्न विषयों में विकसित अध्ययन संदर्शिकाओं और चुनौतीपूर्ण समस्याओं का प्रयोग किया जा रहा है। मंदगति के विद्यार्थियों के लिए निदानात्मक परीक्षण और उपचारी सामग्री विकसित की जाती है। गणित और विज्ञान शिक्षा के अन्य महत्वपूर्ण कार्यकलापों में शामिल हैं – रुचिकर पठन सामग्री, पूरक पुस्तकों के विकास द्वारा विज्ञान को लोकप्रिय बनाना, विद्यालयेत्तर गतिविधियों को बढ़ावा देते हुए विज्ञान प्रदर्शनी और त्रैमासिक पत्रिका 'स्कूल साइंस' के ज़रिए वैज्ञानिक नवाचारों की संकल्पनाओं आदि का प्रचार-प्रसार करना। विभिन्न स्तरों के संसाधन व्यक्तियों को इस क्षेत्र के नए और नवाचारी विकास के बारे में सरल और सुबोध तरीके से अभिमुख किया जाता है। 1999-2000 में इस क्षेत्र में किए गए कार्यक्रमों और कार्यकलापों का महत्वपूर्ण विवरण इस प्रकार है:

अनुसंधान

विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए पाठ्यचर्या का नवीकरण

विद्यालयी शिक्षा के समग्र ढाँचे की प्रासंगिकता की दृष्टि से एन.सी.ई.आर.टी. ने पाठ्यचर्या नवीकरण के कार्य को वरीयता दी। प्रश्नावली, विद्यार्थियों और अध्यापकों के वैयक्तिक संपर्क, कक्षा शिक्षण के माध्यम से पाठ्यचर्या के विभिन्न पक्षों पर विद्यालय-प्रणाली (अध्यापक, शिक्षक प्रशिक्षकों और प्रशासकों) से फीडबैक इकट्ठा किया गया। फीडबैक पर अन्तिम निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए वर्तमान में प्रश्नावलियों का विश्लेषण किया जा रहा है।

भारत में विज्ञान शिक्षा की स्थिति

अध्ययन के प्रथम चरण में विद्यालयी ढाँचा, विज्ञान प्रयोगशाला, अध्यापक की योग्यता, सेवाकालीन प्रशिक्षण, पाठ्यपुस्तकें और अन्य पाठ्यचर्यात्मक सामग्री जैसी विज्ञान शिक्षण की सुविधाओं के साथ भारत विज्ञान शिक्षा के कार्यालयी स्तर का मूल्यांकन किया गया। इसने विभिन्न राज्यों के पाठ्यक्रमों की तुलना भी प्रदान की।

अध्ययन के दूसरे चरण में इकाइयों की संकल्पना आलोचनात्मक सोच का विकास, प्रक्रिया कौशल का विकास और विज्ञान की सामाजिक प्रासंगिकता की प्राप्ति आदि को दृष्टि में रखते हुए विभिन्न राज्यों के उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन किया गया। यह पाया गया कि सभी पुस्तकों में 80 प्रतिशत से अधिक बल केवल ज्ञान पर ही दिया गया।

विकास

विज्ञान और गणित में मूल्यांकन सामग्री

शिक्षकों को पाठ्यपुस्तक की हर इकाई में विद्यार्थियों की संप्राप्ति का मूल्यांकन करने योग्य बनाने के लिए वरिष्ठ माध्यमिक स्तर की कक्षाओं की जीव विज्ञान और भौतिक विज्ञान के लिए परीक्षण-सामग्री का विकास किया गया। ये सामग्री विद्यार्थियों के आत्म-मूल्यांकन, उनकी उपलब्धियों में सुधार और समस्या समाधान की योग्यता में भी सहायक होंगी।

सभी तरह की समस्याओं को समाहित करते हुए +2 स्तर पर कक्षा ग्यारह के लिए गणित में एक निर्मेय-पुस्तक विकसित की गई। इस निर्मेय-पुस्तक में विस्तृत और लघु उत्तरीय प्रश्नों के साथ वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न भी हैं जो कि पाठ्यपुस्तकों में नहीं हैं। इसमें चुनौतीपूर्ण प्रश्न भी हैं जिन्हें हल करने के लिए मेधावी विद्यार्थी अभ्यास कर सकते हैं।

रसायन विज्ञान की अवधारणाओं के विकास के लिए मॉड्यूलों का विकास

एन.सी.ई.आर.टी. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर मेधावी छात्रों और अध्यापकों के लिए रसायन विज्ञान के उन क्षेत्रों में, मॉड्यूल संसाधन सामग्री विकसित कर रही है जो या तो अमूर्त और कठिन है, या अवधारणागत/विषयगत रूप में मेधावी छात्रों के लिए बोधगम्य नहीं है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत तीन मॉड्यूल पहले ही विकसित किए जा चुके हैं और इस वर्ष 'मोल कॉन्सेप्ट एण्ड केमिकल स्टोइकियोमेट्री', 'केमिकल काइनेटिक्स', 'केमिकल थर्मोडाइनामिक्स' तथा 'सम बेसिक कान्सेप्ट्स इन इनआर्गेनिक केमिस्ट्री' पर चार मॉड्यूल विकसित किए गए। इन माड्यूलों में न केवल रासायनिक अवधारणाओं को ही व्यापक रूप से शामिल किया गया है बल्कि इन क्षेत्रों में अधिगम अध्यापन में उचित उपागम और अद्यतन प्रवृत्तियाँ भी दी गई हैं। इन माड्यूलों में आवश्यकतानुसार प्रासंगिक प्रश्न भी दिए गए हैं। एक अन्य कार्यक्रम 'सम इन्टरेस्टिंग टॉपिक्स इन केमेस्ट्री' में पर्यावरण से संबंधित कुछ मॉड्यल पहले से ही विकसित हैं और इस वर्ष इस शृंखला में 'एलॉय' पर एक माड्यूल शामिल किया गया।

विज्ञान और गणित को लोकप्रिय बनाना

एन.सी.ई.आर.टी. ने अपनी परियोजना 'पढ़ें और सीखें' के अंतर्गत विज्ञान और गणित के नए और व्यावहारिक क्षेत्रों से विद्यार्थियों को अवगत कराने के लिए विज्ञान में 35 से अधिक पुस्तकों का विकास किया। इनमें से अधिकतर पुस्तकें देश के नामी वैज्ञानिकों के सहयोग से मूलरूप से हिंदी में लिखी गई हैं। 1999-2000 के दौरान ये तीन पुस्तकें मुद्रित हुईं-

(1) हमारा अद्भुत वायुमंडल अब मैला क्यों?

(2) सौर ऊर्जा

(3) मौसम-क्या, क्यों और कैसा?

बालू बोले अपनी बात और ग्लिम्पसेज़ ऑफ प्लान्ट लाइफ पार्ट-1 और 2 (अंग्रेज़ी) प्रेस में हैं और छह पुस्तकें लिखी जा रही हैं-

(1) साहा एण्ड हिज फार्मूला
(2) रिमोट सेन्सिंग
(3) पेट्रोकेमिकल्स
(4) प्लान्ट्स-ए नेचुरल लैबोरेटरी फॉर सिन्थेसिस ऑफ केमिकल कम्पाउंड्स
(5) अर्थक्वेक्स, और
(6) फिंगर प्रिंटिंग

प्रयोगशाला अभिमुख कार्यक्रम

रसायन विज्ञान में कक्षा ग्यारह और बारह के लिए कार्य पत्रक को अन्तिम रूप दिया गया और ये विद्यालयों में परीक्षण हेतु तैयार हैं। यह अपेक्षा की जाती है कि ये कार्य पत्रक विद्यार्थियों का अन्वेषण में मार्गदर्शन करेंगे, प्रायोगिक नोटबुक का कार्य करेंगे और प्रायोगिक कार्यकलापों के विविध पक्षों के प्रति समझ के मूल्यांकन में सहायक होंगे।

+2 स्तर पर विद्यार्थियों में रुचि उत्पन्न करने और उन्हें स्वतंत्र प्रयोग करने के योग्य बनाने के लिए जीवविज्ञान में कार्य पत्रक विकसित किए गए। ये कार्य पत्रक विद्यार्थियों की उपलब्धियों के मूल्यांकन में भी सहायक होंगे। वर्तमान परिस्थिति में यदि आवश्यक हुआ तो विद्यार्थियों के मार्गदर्शन और निदानात्मक कार्यक्रमों की व्यवस्था में अध्यापक अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति में होगा।

सेमीमाइक्रो तकनीक को अपनाकर विभिन्न नवाचारी अभ्यासों का निर्माण और प्रदर्शन रसायन प्रयोगों में समाहित करने के उद्देश्य से किया गया। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

(अ) एस्टीमेटिंग हार्डनेस ऑफ वाटर क्वान्टिटेटिवली

(ब) स्टडी ऑफ फूड एडल्ट्रेशन

इन प्रयोगों को आगे विद्यालयों में प्रयोग किया जाएगा और यदि उपयुक्त पाए गए तो उच्च माध्यमिक स्तर के

रासायनिक प्रयोगों में उन्हें सम्मिलित किया जाएगा।

एन.सी.ई.आर.टी. ने गणित प्रयोगशाला के लिए एक पुस्तिका विकसित की जिसमें उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम पर आधारित गतिविधियाँ निहित हैं। नियम पुस्तिका में शामिल गतिविधियाँ/मॉडल्स विद्यार्थियों को गणित के कठिन और गूढ़ प्रत्ययों को समझने में सहायता करेंगे। एक अध्यापक अपने स्कूल में ऐसे ही मॉडल्स/गतिविधियों का निर्माण और विकास कर सकता है और गणित के अध्यापन में इन गतिविधियों का उपयोग कर सकता है।

प्रशिक्षण

रसायन विज्ञान के स्नातकोत्तर अध्यापकों के लिए सहकारी अधिगम कार्यनीति

रसायन विज्ञान के सेवाकालीन स्नातकोत्तर अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए एक सहकारी अधिगम कार्यनीति विकसित की गई और सफलतापूर्वक क्रियान्वित की गई। इसमें निम्नलिखित विशेषताएँ शामिल थीं– (1) प्रत्येक मॉड्यूल के लिए निर्धारित कुल समय का 25-35 प्रतिशत का व्याख्यान, (2) स्वाध्याय, (3) समकक्ष-समूहों के साथ विचार-विमर्श, (4) उच्च संज्ञानात्मक योग्यताओं की समस्याओं की रूपरेखा बनाना और (5) अन्ततः दो उप-समूहों में विचार विमर्श। इस कार्यनीति में सहकारिक और प्रतिस्पर्द्धात्मक दोनों स्थितियाँ प्रदान की गईं। अध्यापकों ने स्वाध्याय में सहकारिक और प्रतिस्पर्द्धात्मकता के साथ सक्रिय रूप से भाग लिया और अन्तिम विचार-विमर्श सत्र में समकक्ष समूहों के साथ विचार-विमर्श किया। सहकारी अधिगम के लिए विकसित मॉड्यूलों को शिक्षकों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर परिष्कृत किया गया।

पर्यावरणीय शिक्षा में राज्यों के संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास

राज्यों के संसाधन व्यक्तियों को पर्यावरणीय शिक्षा के विकास और तरीकों तथा उसकी अवधारणाओं के अन्य विषयों से एकीकरण से अवगत कराने के लिए पर्यावरणीय शिक्षा में एक पाँच-दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के दौरान कुछ क्रियाकलापों का विकास किया।

सिक्किम राज्य के गणित अध्यापकों का प्रशिक्षण

सिक्किम राज्य के माध्यमिक शिक्षकों के लिए गंगटोक में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान गणित के कठिन और गूढ़ क्षेत्रों की पहचान की गई और अध्यापकों का ध्यान मुख्य रूप से इन्हीं से संबंधित समस्याओं के समाधान पर केंद्रित किया गया। अध्यापकों को माध्यमिक स्तर की पाठ्यचर्या पर आधारित गणित के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित संसाधन सामग्री भी प्रदान की गई।

विस्तार

बच्चों के लिए जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी

एन.सी.ई.आर.टी. और गुजरात सरकार के सहयोग से 27 नवंबर से 3 दिसंबर 1999 तक राजकोट (गुजरात) में बच्चों के लिए 26वीं जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी 1999 आयोजित की गयी। 'विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण' प्रदर्शनी की केंद्रीय विषयवस्तु थी। प्रदर्शित वस्तुओं को 6 उपविषयों 'खाद्य पदार्थ, स्वास्थ्य और पौष्टिकता', 'ऊर्जा', 'प्रौद्योगिकी और पर्यावरण', 'उद्योग और पर्यावरण सुरक्षा', 'यातायात और संचार' और 'प्रौद्योगिकीय सामग्री' के समूह में बांटा गया था। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों सहित देश के विभिन्न भागों के प्रदर्श (राज्य स्तर पर चयनित) प्रदर्शनी में सम्मिलित किए गए थे। इस विज्ञान प्रदर्शनी में 67 ग्रामीण विद्यालयों सहित लगभग 160 विद्यालय और 400 अध्यापक तथा छात्र सम्मिलित हुए। गुजरात सरकार के लगभग 40 विद्यालयों (राष्ट्रीय स्तर पर चुने गए विद्यालयों के अलावा) ने भी इस प्रदर्शनी में भाग लिया। एन.सी.ई.आर.टी. ने भी अपना स्टॉल लगाया था। प्रदर्शनी के मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डालने के लिए फोल्डर (अंग्रेज़ी/हिंदी/गुजराती) छापे गए थे। इनमें विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित करने के उद्देश्यों और प्रयोजनों के साथ-साथ प्रदर्शों की सूची भी दी गयी थी। दर्शकों, अध्यापकों, विद्यार्थियों और सहभागियों में मुफ्त वितरण के लिए 'प्रदर्शों की सूची' (अंग्रेज़ी/हिंदी दोनों में) और 'विज्ञान मॉडलों का ढाँचा और कार्यविधि' भी प्रकाशित किए गए।
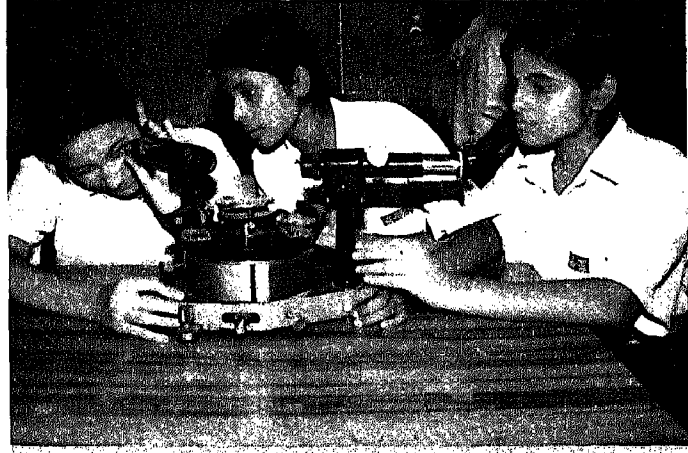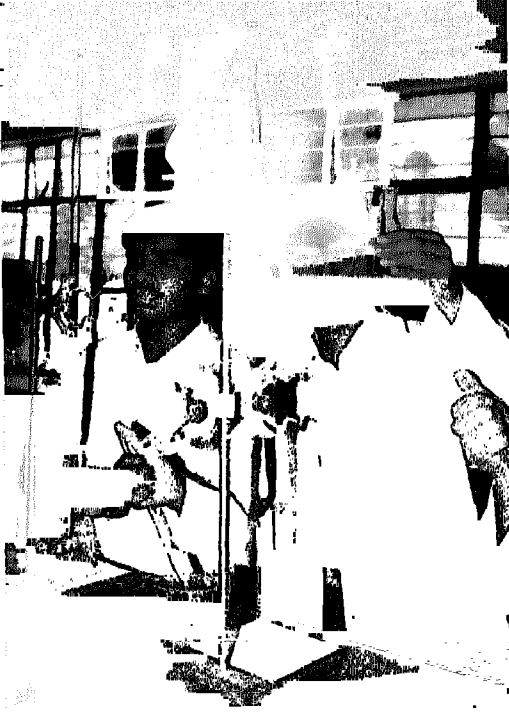
राजकोट में आयोजित बच्चों के लिए जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी 1999 में कार्यरत प्रतिभागी विद्यार्थी।

राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनियाँ

राज्य स्तर की विज्ञान प्रदर्शनियाँ राज्य और संघीय क्षेत्रों में ज़िला और क्षेत्रीय स्तर की विज्ञान प्रदर्शनियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन हैं। बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विज्ञान प्रतियोगिता 1999-2000 का केंद्रीय विषय था- 'जीवन की चुनौतियाँ : विज्ञान और प्रौद्योगिकी'। इसी तरह उप-विषय थे- (1) खाद्य पदार्थ, स्वास्थ्य और पोषण, (2) उद्योग, (3) यातायात और संचार, (4) ऊर्जा और (5) पर्यावरण। केंद्रीय विषय और उपविषयों पर मॉडल तैयार करने और उनके मूल्यांकन के मानदंड निर्धारित करने के लिए एन.सी. ई.आर.टी. ने राज्यों को अपेक्षित शैक्षिक मार्गदर्शन प्रदान किया। बच्चों के लिए 27वीं जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी 2000 में सहभागिता के निर्धारण हेतु विभिन्न राज्यों/संघ शासित प्रदेशों से प्राप्त सर्वोत्तम प्रदर्शों के आलेखों की अंतिम छानबीन की गयी। 30 राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों और केंद्रीय विद्यालय संगठन, नवोदय विद्यालय समिति और परमाणु ऊर्जा विद्यालयों में 1999-2000 के दौरान बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं। इन राज्य स्तरीय प्रदर्शनियों के आयोजन हेतु परिषद् ने रु. 16.60 लाख की सहायता प्रदान की।

विद्यालय विज्ञान पत्रिका

विज्ञान और गणित शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अवगमों, अनुभवों, नवाचारों और शोध निष्कर्षों के प्रचार-प्रसार के लिए अध्यापकों, शोधकर्ताओं, पाठ्यचर्या निर्माताओं, शिक्षकों और विद्यार्थियों को भी 'स्कूल साइंस' नामक त्रैमासिक पत्रिका एक मंच प्रदान करती है। विज्ञान और गणित शिक्षण में अद्यतन विकास, वस्तुगत समृद्धि और नवाचारी अभ्यासों से संबंधित विविध प्रकार की पठन सामग्रियां इस पत्रिका में समाहित हैं। 'विज्ञान समाचार' और 'पुस्तक समीक्षा' इस पत्रिका का अनिवार्य वैशिष्ट्य है। पत्रिका के सदस्य के रूप में ख्यात वैज्ञानिकों के एक 'सम्पादकीय सलाहकार समिति' द्वारा पत्रिका के संपूर्ण विकास और वितरण के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

संसाधन सहायता

सी.बी.एस.ई., एस.सी.ई.आर.टी., डाइट, डी.ए.वी. विद्यालय प्रबंधन/सी.टी.एस.ए. और कुछ पब्लिक स्कूलों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों और विद्यालय शिक्षकों (सरकारी विद्यालयों, पब्लिक स्कूलों,

केंद्रीय विद्यालयों, दिल्ली प्रशासन) के चयन में संसाधन सहायता प्रदान की गई।

विज्ञान और गणित में क्षेत्रीय सहायता

माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तरों पर जम्मू-कश्मीर के शिक्षकों को गणित शिक्षण और दिल्ली के संसाधन व्यक्तियों को उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान किट के प्रयोग के लिए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर ने एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। जम्मू और कश्मीर के लिए माध्यमिक स्तर पर गणित में प्रशिक्षण सामग्री, राजस्थान के लिए उच्च माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान के चुने हुए शीर्षकों पर मॉड्यूलर रूप में विषयवस्तु संवर्द्धित सामग्री तथा हरियाणा के लिए उच्च प्राथमिक स्तर पर बीजगणित के चिह्नित कठिन क्षेत्र पर अंतरावर्तीय-सामग्री विकसित की गई।

कक्षा एक के लिए 'कॉम्पीटेंसी बेस्ड मैथेमेटिक्स' शीर्षक से एक पुस्तक निर्मित, मुद्रित और वितरित की गई। इसका परीक्षण किया जा रहा है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने माध्यमिक स्तर के सेवाकालीन अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए अवधारणा केंद्रित-अधिगम और भौतिक विज्ञान तथा रसायन विज्ञान में प्रयोगों पर विज्ञान शिक्षण में विषयवस्तु संवर्धन-कार्यक्रम आयोजित किया। जनजातीय हाई-स्कूलों में विज्ञान में शिक्षकों के अभिविन्यास कम सुविधाप्राप्त उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के तरीके और माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के गणित-शिक्षण पर विषयवस्तु-संवर्धन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ने 'आन्ध्र प्रदेश सोशल वेल्फेयर रेज़िडेन्सियल इन्स्टीट्यूशन्स सोसाइटी' के अनुरोध पर विषयवस्तु और शिक्षाशास्त्रीय सामर्थ्य विकसित करने के लिए इंटरमीडिएट विद्यालयों में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित के क्षेत्रों में प्राध्यापकों के लिए सेवाकालीन कार्यक्रमों का आयोजन किया। इसने उच्च माध्यमिक स्तर पर भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के लिए प्रश्न बैंक, माध्यमिक स्तर पर विज्ञान प्रक्रिया की दक्षताओं के मूल्यांकन के लिए प्रारूप पद्धति और माध्यमिक के लिए गणित तथा उच्च माध्यमिक के लिए अंग्रेज़ी में आधार पाठ्यक्रम पर एक मॉड्यूल विकसित किया।

इसने प्राथमिक शिक्षा के लिए पर्यावरणीय अध्ययनों (विज्ञान) में एक अधिगम गतिविधि बैंक और कक्षा तीन तथा चार के लिए बांग्ला भाषा में स्वाधिगम सामग्री तैयार की।

1999-2000 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- ए मॉडल नरचरेन्स प्रोग्राम इन फिज़िक्स फॉर दि टैलेन्टेड स्टूडेन्ट्स (अनुलिपि)
- लेबोरेटरी मैनुअल इन मैथेमेटिक्स फॉर अपर प्राइमरी, सेकेण्डरी एण्ड सीनियर सेकेण्डरी स्टेज-II (अनुलिपि)
- एनालिसिस ऑफ मैथेमेटिक्स सिलेबाय फॉर सेकेण्डरी स्टेज ऑफ डिफरेन्ट स्टेट्स (अनुलिपि)
- डेवलपमेन्ट ऑफ डायगनॉस्टिक टेस्ट एण्ड रेमिडियल मेटीरियल्स ऑन ए बेसिक कॉन्सेप्ट ऑफ ज्योमेट्री (कान्ग्रुएन्ट फिगर्स) फॉर स्लो लर्नर्स ऑफ अपर प्राइमरी स्टेज एण्ड टु स्टडी दि इफेक्टिवनेस ऑफ दि रेमेडियल मेटीरियल्स (अनुलिपि)
- सम बेसिक कॉन्सेप्ट ऑफ ऑर्गेनिक केमेस्ट्री – ए मॉड्यूल ऑफ रिएक्शन मैकेनिज्म (अनुलिपि)
- चैलेन्जिंग प्राबलम्स इन केमेस्ट्री फॉर क्लासेज़ XI और XII (अनुलिपि)
- डेवलपमेन्ट ऑफ ए मॉडल कोऑपरेटिव लर्निंग स्ट्रेटजी फॉर टीचर ओरिएंटेशन इन केमेस्ट्री (अनुलिपि)
- स्टेटस ऑफ साइंस एजुकेशन इन इण्डिया (अनुलिपि)
- 'एलॉज़' अण्डर दि प्रोजेक्ट 'सम इन्टरेस्टिंग टॉपिक्स इन केमिस्ट्री: डेवलपमेन्ट ऑफ मॉड्यूल्स (अनुलिपि)
- हमारा अद्‌भुत वायुमण्डल अब मैला क्यों?
- मौसम-क्या, क्यों और कैसा
- सौर ऊर्जा

लिस्ट ऑफ एक्ज़ीबिट्स ऑफ 26th जवाहरलाल नेहरू साइंस एक्जीबिशन फॉर चिल्ड्रेन

- स्ट्रक्चर एण्ड वर्किंग ऑफ साइंस मॉड्यूल्स
- स्कूल साइंस क्वार्टरली जर्नल
- वर्कशीट इन केमेस्ट्री फॉर प्रेक्टिकल कोर्स–क्लास XI और XII (अनुलिपि)
- डिज़ाइन एंड ट्राइआउट ऑफ इन्नोवेटिव एक्सरसाइजेज़ फॉर देयर इन्क्ल्यूजन इन केमेस्ट्री प्रेक्टिकल्स: ए रिपोर्ट (अनुलिपि)
- प्रॉबलम बुक इन मैथेमेटिक्स फॉर क्लास XI (टंकित)
- ए सप्लीमेन्ट टू मैथमेटिक्स फॉर क्लास XI
- कक्षा XI की जीव विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भाग II
- कम्यूनिकेटिंग साइन्स थ्रू ग्राफ्स (अनुलिपि)।

सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा

एन सी ई आर टी के सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा के कार्यक्रम पाठ्यचर्या, सेवारत अध्यापकों व अध्यापक प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यों और राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों को विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए अनुसंधान, विकास, अनुदेशी सामग्री और प्रशिक्षण से संबंधित कार्यक्रमों में परामर्शकारी/शैक्षिक सहायता प्रदान करने पर केंद्रित रहे हैं।

एन सी ई आर टी के सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा के कार्यक्रम पाठ्यचर्या, सेवारत अध्यापकों व अध्यापक प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यों और राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के शिक्षा विभागों को विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए अनुसंधान, विकास, अनुदेशी सामग्री और प्रशिक्षण से संबंधित कार्यक्रमों में परामर्शकारी/शैक्षिक सहायता प्रदान करने पर केंद्रित रहे हैं। इनमें निम्नलिखित विषय सम्मिलित हैं: (1) भाषा (हिंदी, उर्दू, संस्कृत और अंग्रेज़ी), (2) सामाजिक विज्ञान (भूगोल, अर्थशास्त्र, इतिहास, नागरिकशास्त्र, राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र), (3) वाणिज्य, (4) कला शिक्षा और (5) जनसंख्या शिक्षा। इसके अलावा एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन, मानवाधिकार शिक्षा और उपभोक्ता शिक्षा के क्षेत्र में भी सक्रिय रूप से संलग्न रही है।

अनुसंधान

अरुणाचल प्रदेश में कक्षा 5 की शिक्षा समाप्ति के बाद छात्रों द्वारा अर्जित हिंदी भाषा क्षमता और माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में मानचित्र कौशलों की समझ के सर्वेक्षण पर परियोजनाओं की रिपोर्ट तैयार हो चुकी है। मा.सं.वि. मंत्रालय के लिए हिन्दी भाषी राज्यों/संघ शासित प्रदेशों में आधुनिक भारतीय भाषाओं के अध्यापकों की नियुक्ति के लिए योजना के कार्यान्वयन की अवस्थिति पर एक रिपोर्ट तैयार की गई। एन.सी.ई.आर.टी. की सामाजिक विज्ञान और भाषा पाठ्यपुस्तकों में लिंग, धर्म और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति से संबंधित विषयों को बिंबित करने के तरीकों के अध्ययन के मूल्यांकन के लिए एक परियोजना शुरू की गई।

विकास

एन.सी.ई.आर.टी. ने पाठ्यचर्या के क्षेत्र में अपना कार्य जारी रखा और छात्रों तथा अध्यापकों से प्राप्त पुनर्निवेशन और मूल्यांकन के आधार पर पाठ्यपुस्तकों के नए/ संशोधित संस्करण तैयार किए। सामाजिक विज्ञान में कक्षा 8 और 10 की भूगोल की पाठ्यपुस्तकें, कक्षा 9 और 11 के लिए अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तकें, कक्षा 11 के लिए राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें, कक्षा 5 से 8 तक के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के हिंदी रूपान्तरण के नए/संशोधित संस्करण निकाले गए। भाषा में उच्च प्राथमिक स्तर के लिए 'हिंदी व्याकरण और रचना', कक्षा 10 के लिए हिंदी 'बी' पाठ्यक्रम की पाठ्यपुस्तकें और अंग्रेज़ी भाषा पाठ्यपुस्तकों की नई शृंखला के लिए कक्षा 1 की अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तक तैयार की गई। वाणिज्य में, व्यापार अध्ययन और लेखाशास्त्र में पाठ्य विवरणों को व्यापार और उद्योग, लेखा प्रक्रिया और सूचना प्रौद्योगिकी में हाल में हुए विकासों को ध्यान में रखकर संशोधित किया गया। उच्चतर माध्यमिक के लिए समाजशास्त्र में नई पाठ्यपुस्तकों की तैयारी आरंभ की गई है।

नए सिरे से उर्दू साहित्य का इतिहास तैयार करने के लिए परियोजना प्रारंभ की गयी। संस्कृत में विशेषज्ञ समूह की एक बैठक में नए कार्यक्रमों और योजनाओं का निरूपण किया गया जो आरंभ हो चुकी हैं। इसमें संस्कृत साहित्य में प्रतिबिंबित विज्ञान और शिक्षा पर पुस्तकों की शृंखला, प्रवेशकों के लिए विद्यार्थी संस्कृत शब्दकोश, संस्कृत शिक्षण कार्य पद्धति के सुधार पर कार्यक्रम और संस्कृत में एक प्रशिक्षण पैकेज का विकास शामिल है। विद्यालयी छात्रों के लिए एक दृष्यन्त हिन्दी शब्दकोश प्रकाशन के लिए भेजा गया।

'पढ़ें और सीखें' परियोजना के अन्तर्गत 'एंशयन्ट स्टोरीज़ रीटेल्ड' और 'वी आर वन' नामक दो पूरक पाठमालाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। इस परियोजना में और अधिक पुस्तकें तैयार की जा रही हैं, जिनमें एक पंडित मदन मोहन मालवीय पर है। 'इंडियाज़ स्ट्रगल फॉर इंडिपेन्डेन्स–विजुअल्स एंड डाक्युमेंट्स' का हिंदी रूपान्तरण प्रकाशन के लिए तैयार है और 'ह्यूमन राइट्स–ए सोर्स बुक' के उर्दू रूपान्तरण की तैयारी प्रारंभ हो चुकी है।

विस्तार

'आधुनिक भारत में उर्दू शिक्षण–समस्याएं और सुधारात्मक उपाय' पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। बाल साहित्य में 19 भाषाओं (अष्टम अनुसूची की सभी भाषाओं और अंग्रेज़ी) में दो वर्षों में एक बार आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिता के अन्तर्गत 30वीं बाल साहित्य राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए गए। इस पुरस्कार के लिए तीस पुस्तकें/पाण्डुलिपियां चयनित की गईं।

'आधुनिक भारत में उर्दू शिक्षण' पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी।

'आज का सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य और कबीर' पर एक दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी के लेखों और कार्यविधियों को प्रकाशित करने के लिए संपादन कार्य किया जा रहा है।

देश के विभिन्न भागों में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रसिद्ध स्वतंत्रता और एकता के गीतों के एक संग्रह का संकलन किया गया। इन गीतों को मुद्रित किया जाएगा और इनके ऑडियो कैसेट बनाए जाएंगे।

सभी स्तरों पर संस्कृत शिक्षण के सभी पहलुओं पर चर्चा करने के लिए संस्कृत के माध्यम से संस्कृत शिक्षण के विशेष संदर्भ के साथ संस्कृत की शिक्षण पद्धति के सुधार पर एक तीन-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

'आज का सामाजिक - सांस्कृतिक परिदृश्य और कबीर' पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन-सत्र।

सामाजिक विज्ञान और मानविकी में क्षेत्रीय निवेश

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर ने उच्च प्राथमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण में हरियाणा के अध्यापकों की कठिनाइयों के समाधान के लिए एक अध्यापक संदर्शिका की रूपरेखा तैयार की। दिल्ली के अध्यापकों के लिए माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान के एक भाग के रूप में अर्थशास्त्र शिक्षण के लिए अनुदेशी सामग्री भी विकसित की गई।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने (1) गोवा राज्य के लिए भूगोल शिक्षण के अनिवार्य कौशलों पर एक नियम पुस्तिका, (2) मध्य प्रदेश के लिए +2 के लिए इतिहास के मॉडल प्रश्न पत्रों पर एक पैकेज, (3) लेखाशास्त्र में प्रशिक्षण सामग्री, अध्यापक संदर्शिका के दो पैकेज और वाणिज्य में परियोजना प्रस्ताव, (4) माध्यमिक स्तर पर अंग्रेज़ी अध्यापकों के लिए मौखिक परीक्षण पर दिशानिर्देश

और (5) गोवा में मराठी और कोंकणी माध्यम वाले विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर अंग्रेज़ी भाषा में नवाचारी अध्यापन अधिगम पद्धतियों में एक नियम पुस्तिका और प्राथमिक स्तर पर उर्दू शिक्षण पद्धति में एक प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया। महाराष्ट्र में माध्यमिक स्तर पर मराठी शिक्षण का एक अवस्थिति सर्वेक्षण भी आयोजित किया गया और सामग्री के विकास के लिए कुछ समस्याओं की पहचान की गई।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने जनजातीय हाई स्कूलों के अध्यापकों के लिए सामाजिक विज्ञान और अंग्रेज़ी भाषा शिक्षण, सामाजिक विज्ञान शिक्षण के कठिन बिन्दुओं की पहचान, माध्यमिक विद्यालयों के लिए सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विषयवस्तु एवं प्रणाली का संवर्द्धन कार्यक्रम और संबंधित प्रशिक्षण प्रणाली व विषयवस्तु एवं प्रणाली, माध्यमिक-विद्यालय के अध्यापकों के लिए भौतिक भूगोल के शिक्षण पर संवर्द्धन कार्यक्रम, पाठ्यपुस्तक लेखकों के लिए प्रशिक्षण और कार्यशाला, हिंदी शिक्षण में डी.आई.ई. टी. संकाय के अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए।

1999-2000 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- रिपोर्ट ऑफ दि रिव्यू कमेटी ऑन सेन्ट्रली स्पोन्सर्ड स्कीम ऑफ फाइनेंसियल असिस्टेंस फॉर एपाइंटमेंट ऑफ माडर्न इंडियन लेंग्वेजिज़ टीचर्स (प्रेफेरेबली साउथ इंडियन लेंग्वेजिज़) इन हिंदी स्पीकिंग स्टेट्स (फोटोप्रति)
- मैपबुक फॉर विजुअली इम्पेयर्ड स्टूडेन्ट्स फॉर ट्राई-आउट
- ए सलेक्टिड एन्नोटेटिड बिबिलियोग्राफी ऑन स्कूल एजुकेशन (1981-99) (अनुलिपि)
- अरुणाचल प्रदेश की पाँचवीं कक्षा के छात्रों द्वारा हिंदी भाषा में अर्जित दक्षता संप्राप्ति मूल्यांकन-एक अध्ययन (वर्ड प्रोसेस्ड)
- सम आस्पेक्ट्स ऑफ अपर प्राइमरी स्टेज ऑफ एजुकेशन इन इंडिया-स्टेटस स्टडी (1998) (मुद्रणाधीन)
- फाइनेलाइज़ेशन ऑफ प्रोजेक्ट डाक्युमेंट्स ऑफ सब-कान्ट्रेक्टिंग एजेन्सीज़ (एन.सी.टी.ई., एन.वी.एस., सी.बी.एस.ई. एण्ड एन.ओ.एस.) (अनुलिपि)।

बोर्डों, अध्यापकों और सामान्य जनता के हित में ग्रेडिंग जैसे तकनीकी विषय को यथासंभव आसान बनाने के लिए 'विद्यालयों में ग्रेडिंग' नामक दस्तावेज़ विकसित किया गया। यह दस्तावेज़ वास्तव में 'ग्रेडिंग के बारे में सब कुछ जानिए' को स्पष्ट करता है।

एन सी ई आर टी परीक्षा सुधार के क्षेत्र में मापन और मूल्यांकन से संबंधित अनेक कार्यकलापों में संलग्न है। इस क्षेत्र के कार्यक्रम खासतौर से संसाधन व्यक्तियों, प्रश्नपत्र निर्माताओं और परीक्षकों के प्रशिक्षण, अवधारणात्मक और नमूना सामग्री के विकास, अनुसंधान आयोजन और संवृद्धि, परामर्शकारी सेवाओं की उपलब्धता और शैक्षिक मूल्यांकन के क्षेत्र में शोधन गृह कार्यकलापों पर केंद्रित हैं। 1999-2000 की अवधि में परीक्षा सुधार के क्षेत्र में किए गए कार्यक्रमों और क्रियाकलापों के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं :

अनुसंधान

बोर्ड के उच्चतर माध्यमिक परीक्षाफल का विश्लेषण

इस पायलट अध्ययन के अंतर्गत आठ बोर्डों- पंजाब, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, गोवा, सी.बी.एस.ई., आई.सी.एस.ई., पश्चिम बंगाल और नागालैंड- के परीक्षा-परिणामों का विश्लेषण किया गया। इस विश्लेषण से पता चलता है कि लड़कों की अपेक्षा लड़कियों का उत्तीर्ण प्रतिशत अधिक था, अन्य बोर्डों की अपेक्षा आई.सी.एस.ई. में उत्तीर्ण प्रतिशत उच्चतर था, विज्ञान विषयों में गोवा बोर्ड के विद्यार्थियों का उत्तीर्ण प्रतिशत अन्य बोर्डों की तुलना में अधिक था और सभी बोर्डों में विज्ञान के अन्य विषयों की तुलना में जीव विज्ञान में विद्यार्थियों ने अच्छे अंक प्राप्त किए थे। सी.बी.एस.ई. में लगभग 56 प्रतिशत और नागालैंड में मात्र 6% अभ्यर्थियों ने 60% से अधिक अंक प्राप्त किए थे।

आंतरिक और बाह्य परीक्षा प्राप्तांकों के मध्य संबंध

दिल्ली राज्य के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के 18 उच्चतर माध्यमिक सरकारी विद्यालयों से कुल 215 विज्ञान विद्यार्थियों का एक नमूना इस्तेमाल किया गया। उपलब्धियों से संकेत मिलता है कि बोर्डपूर्व और बोर्ड परीक्षा परिणामों के मध्य एक सार्थक सहसंबंध है, विज्ञान और गणित में बोर्डपूर्व और बोर्ड परीक्षाओं दोनों के प्राप्तांक में लड़कियों और लड़कों के बीच अभिव्यंजक अंतर नहीं था लेकिन गणित की बोर्ड परीक्षा में औसत प्राप्तांक में सार्थक अन्तर था। विज्ञान, गणित और अंग्रेज़ी में ग्रामीण और शहरी परीक्षार्थियों के बीच बोर्डपूर्व और बोर्ड परीक्षा के औसत प्राप्तांकों में महत्वपूर्ण अन्तर नहीं था।

विकास

विद्यालयों में ग्रेडिंग

बोर्डों, अध्यापकों और सामान्य जनता के हित में ग्रेडिंग जैसे तकनीकी विषय को यथासंभव आसान बनाने के लिए 'विद्यालयों में ग्रेडिंग' नामक दस्तावेज़ विकसित किया गया। यह दस्तावेज़ वास्तव में 'ग्रेडिंग के बारे में सब कुछ जानिए' को स्पष्ट करता है।

कक्षा चार के लिए पर्यावरणीय अध्ययन (सामाजिक अध्ययन) में परीक्षण इकाई

कक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया को मज़बूत करने और अच्छे प्रश्नों को तैयार करने में शिक्षकों की कठिनाइयों को समाप्त करने के क्रम में एन.सी.ई.आर.टी. ने कक्षा चार के लिए पर्यावरणीय अध्ययन (सामाजिक अध्ययन) में एक प्रश्न भंडार विकसित, परिष्कृत और निश्चित किया। प्राथमिक विद्यालयों में व्यापक पैमाने पर वितरण के लिए इसे मुद्रित रूप में लाया जाएगा।

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान के प्रयोगात्मक मूल्यांकन के लिए एक मूल्यांकन पद्धति का विकास

रसायन-प्रयोगशाला कार्यों के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए पूरे देश में रसायन प्रयोगों में प्रचलित मूल्यांकन पद्धति का विश्लेषण किया गया। विद्यालय शिक्षा के उच्च माध्यमिक स्तर के लिए प्रयोग-कार्य पुस्तिका विकसित, परिष्कृत और निश्चित की गई और रसायन प्रयोग कार्यों की एक मूल्यांकन पद्धति विकसित की गई। ग्राह्य और अनुकूल बनाने के लिए यह पद्धति विद्यालयी शिक्षा के बोर्डों को प्रचारित-प्रसारित की जाएगी।

प्रशिक्षण

प्रश्न-पत्र निर्माताओं का प्रशिक्षण

जम्मू और कश्मीर विद्यालय शिक्षा बोर्ड के 68 प्रश्न-पत्र निर्माताओं/परीक्षकों को अंग्रेज़ी, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और गणित में संतुलित प्रश्न-पत्रों के निर्माण के लिए श्रीनगर में एक पाँच-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित किया गया। कार्यशाला में मूल्यांकन और निर्मित प्रश्न-पत्रों पर प्रत्ययात्मक सामग्री से युक्त कार्यक्रमों की एक रिपोर्ट तैयार की गई और उस पर विचार-विमर्श किया गया।

संतुलित प्रश्न-पत्रों के निर्माण हेतु 'कर्नाटक माध्यमिक शिक्षा और परीक्षा बोर्ड' के 50 प्रश्न-पत्र निर्माताओं के लिए एक अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रतिभागियों को मूल्यांकन के प्रत्यय और परीक्षण की विभिन्न तकनीकों से अवगत कराया गया। उन्होंने अंग्रेज़ी, हिंदी, विज्ञान, गणित और सामाजिक अध्ययन के विषयों का संतुलित प्रश्न-पत्र तैयार किया। एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की गई और प्रतिभागियों के बीच परिचालित की गई।

आइटम बैंक निर्मित करने हेतु शिक्षकों का प्रशिक्षण

गोवा राज्य के उच्च माध्यमिक शिक्षकों को अच्छे प्रश्न बनाने और आइटम बैंक तैयार करने की तकनीक से अवगत कराया गया। अंग्रेज़ी, अर्थशास्त्र, भूगोल, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और गणित विषयों के लगभग 60 अध्यापकों ने इस कार्यशाला में भागीदारी की और कार्यशाला के दौरान हर विषय में लगभग 500 प्रश्न तैयार किए। गोवा के शिक्षकों के प्रयोग के लिए इन प्रश्नों की जाँच कर अन्तिम रूप दिया जाएगा और आइटम बैंक के रूप में संकलित किया जाएगा।

सतत् और व्यापक मूल्यांकन में केंद्रीय विद्यालय के अध्यापकों का प्रशिक्षण

दो दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम में दिल्ली के केंद्रीय विद्यालयों के 28 अध्यापकों को सतत् और व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की अवधारणा और तकनीक में अभिमुख किया गया। अवधारणा, निदान और उपचार, गैर-शैक्षिक क्षेत्रों का मूल्यांकन और छात्र विकास के विभिन्न पहलुओं के मूल्यांकन के लिए उपकरण का विकास जैसे सी.सी.ई. के विभिन्न आयामों की उन्हें जानकारी दी गई। यह आशा की जाती है कि ये अध्यापक अपने विद्यालयों के अन्य अध्यापकों में संसाधन समूह के रूप में कार्य करके इस प्रशिक्षण को प्रचारित कर सकेंगे।

मानसिक योग्यता परीक्षण (एम.ए.टी.) के लिए लेखन आइटमों में प्रशिक्षण

राज्य स्तरीय राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के लिए गुजरात और मेघालय राज्यों के आइटम लेखकों को मानसिक योग्यता परीक्षण के लिए लेखन आइटम में प्रशिक्षित करने के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन दोनों कार्यशालाओं में प्रतिभागियों ने मानसिक क्रियाकलापों के मूल्यांकन हेतु बड़ी संख्या में आइटमों का विकास किया। ये आइटम पुनरीक्षित और परिष्कृत किए जाएंगे और मैट के लिए आइटम पूल विकसित करने के लिए प्रयोग किए जाएंगे।

विस्तार

राज्य शिक्षा बोर्डों के अध्यक्षों के एक दो-दिवसीय सम्मेलन में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर विचार-विमर्श किया गया। इसमें अंकों के स्थान पर ग्रेड देने और एक राष्ट्रीय मूल्यांकन संगठन के निर्माण के मुद्दों पर विचार-विमर्श किया गया। सम्पूर्ण देश के प्रमुख

राज्य शिक्षा बोर्डों के अध्यक्षों का दो दिवसीय सम्मेलन।

शिक्षाशास्त्री और मा.सं.वि. मंत्रालय के अधिकारियों के अतिरिक्त 28 राज्य बोर्डों के अध्यक्षों और संसाधित अधिकारियों ने इस सम्मेलन में हिस्सा लिया। पाठ्यचर्या रूपरेखा पर प्रतिभागियों के प्रेक्षण रूपरेखा के दस्तावेज़ में समाहित किए जाएंगे। प्रतिभागी इस बात पर सहमत थे कि ग्रेडिंग प्रणाली के क्रियान्वयन के पूर्व सी.ओ.बी.एस.ई. अपने साझेदारों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए क्षेत्रीय कार्यशालाएँ आयोजित कर सकता है। राष्ट्रीय मूल्यांकन संगठन की स्थापना के संबंध में प्रतिभागियों की राय थी कि एन.सी.ई.आर.टी. इस प्रस्ताव पर कार्य कर सकती है और एन.ई.ओ. के विशिष्ट लक्ष्यों, उद्देश्यों और ढाँचे के संदर्भ निष्कर्ष पर पहुँच सकती है।

परीक्षा सुधार में क्षेत्रीय निवेश

आर.आई.ई., अजमेर ने राजस्थान की डाइट के प्रयोग के लिए उच्च प्राथमिक स्तर के लिए विज्ञान विषय में आदर्श

ब्ल्यू प्रिन्ट्स और प्रश्न-पत्रों की रूपरेखा तैयार की। ये हरियाणा के माध्यमिक स्तर के लिए भी तैयार किए गए जिसके संसाधन व्यक्ति प्रशिक्षित थे।

आर.आई.ई., भोपाल ने उच्च माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान और गणित में प्रश्न-पत्र निर्माण के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया।

आर.आई.ई., भुवनेश्वर ने हिंदी और उड़िया में भाषा दक्षता परीक्षण का विकास और मानकीकरण किया और अधिगम निष्कर्षों के मूल्यांकन के लिए उभरते हुए तरीकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

1999-2000 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- ग्रेडिंग इन स्कूल्स
- इग्ज़ामिनेशन रिफार्म बुलेटिन वाल्यूम II नंबर 2
- टेस्ट आइटम्स इन इन्वायरनमेन्टल स्टडीज़ (सोशल स्टडीज़) फार क्लास IV (फोटोप्रति)
- एनालिसिस ऑफ सीनियर सेकेण्डरी रिज़ल्ट्स ऑफ बोर्ड्स – ए पायलट स्टडी (फोटोप्रति)
- ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटवीन इन्टरनल एण्ड एक्सटरनल इग्ज़ामिनेशन स्कोर्स ऑफ सीनियर सेकेण्डरी स्टूडेन्ट्स इन डेल्ही (फोटोप्रति)
- ए स्कीम ऑफ केमिस्ट्री प्रेक्टिकल फार सीनियर सेकेण्डरी लेवेल (फोटोप्रति)
- एनालिसिस ऑफ स्टूडेन्ट्स परफॉरमेन्स ऑफ डिफरेन्ट सोशियो-इकोनॉमिक स्टेटस इन एन.टी.एस. (फोटोप्रति)
- एन एप्रैज़ल ऑफ एन.टी.एस. इग्ज़ामिनेशन, 1999 (फोटोप्रति)।

राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा संसाधन केन्द्र की स्थापना की गई है जोकि मूल्यों की सामग्रियों के राष्ट्रीय निधि सदन के रूप में कार्य करेगा। मूल्य-परिवर्तन, मूल्यों का शिक्षण व अधिगम, जनजाति समाजों के मूल्य, मूल्यों की भारतीय अवधारणा, विभिन्न धर्मों में मूल्य का शिक्षण इत्यादि सरीखा शिक्षा में मूल्यों से संबंधित विभिन्न प्रकार का साहित्य इसमें शामिल है।

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन के क्षेत्रों में अनुप्रयोगों के द्वारा विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना परिषद् के मुख्य सरोकारों में से एक है। इस क्षेत्र के कार्यक्रमों के परिणामों का विद्यालयी छात्रों के शैक्षिक विकास पर ही नहीं बल्कि उनके चहुंमुखी विकास तथा प्रारम्भिक और माध्यमिक स्तरों पर उनके सामाजिक, भावात्मक एवं जीवनवृत्तिक विकास पर भी प्रभाव पड़ता है। कुछ कार्यक्रम मुख्य रूप से अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों को सशक्त और सक्षम बनाने और इसके परिणामस्वरूप अध्यापक प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए तैयार किए जाते हैं। परामर्श और मार्गदर्शन के कार्य क्षेत्र में एक मुख्य संस्था होने के नाते एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालयी छात्रों, अध्यापकों और समुदायों को अपनी सेवाएँ प्रदान करने में राज्य स्तर के अभिकरणों की सहायता करती रही है। राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा संसाधन केन्द्र के रूप में जानी जाने वाली एन.सी.ई.आर.टी. ने दो कार्यक्रम आरम्भ किए हैं– प्रकाशित कार्यों की विस्तृत संदर्भ ग्रंथ-सूची और संस्थाओं को मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में सूचना उपलब्ध कराना।

अनुसंधान

कक्षा 11 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक का मूल्यांकन : एक पायलट अध्ययन

पुनरीक्षकों, अध्यापकों और शिक्षकों के लिए मूल्यांकन के आधारों को तैयार करने हेतु संबंधित साहित्य का पुनरीक्षण किया गया। पुनरीक्षकों के लिए विकसित अलग-अलग मूल्यांकन प्रारूपों को अन्तिम रूप दिया गया। संकाय-सदस्यों के सुझावों को शामिल किया गया। दिल्ली के उन विद्यालयों के अध्यापकों और छात्रों से आंकड़ा एकत्र किया गया, जहाँ मनोविज्ञान एक विद्यालयी विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

परामर्शदाता निर्माण : स्थिति एवं विकास (फेज़ II)

अध्ययन का उद्देश्य प्रभावशाली परामर्शदाताओं के केस-अध्ययन को तैयार करना है। साक्षात्कार के द्वारा ऐसे 15 परामर्शदाताओं से आंकड़ा एकत्रित किया गया। केस-वृत्तों को मार्गदर्शन कार्मिकों और अन्य इच्छुक शैक्षिक प्रशासकों और अध्यापकों के प्रयोगार्थ प्रकाशन के लिए तैयार किया जाएगा।

सामाजिक मानदण्ड के प्रति किशोरों के दृष्टिकोण पर एक अध्ययन

अनुसंधान की यह योजना किशोरों के दृष्टिकोणों और व्यवहारों के प्रति माता-पिता के मानदंडों और अपेक्षाओं की प्रकृति तथा इन अपेक्षाओं के प्रति किशोरों के दृष्टिकोणों का अध्ययन करने के लिए बनाई गयी। प्रश्नावलियों और साक्षात्कारों की सहायता से आंकड़ा इकट्ठा किया गया। माता-पिता की अपेक्षाओं और किशोरों की अपेक्षाओं के बीच अंतर्विरोध देखने, यदि कोई हो, तो उसे देखने के लिए आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। रिपोर्ट तैयार की जा रही है। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर माता-पिता के लिए कुछ निश्चित दिशा-निर्देश तैयार किए जा रहे हैं ताकि वे किशोरों के विकास में वृद्धि के लिए उनके अंतर्द्वंद्वों और तनावों को कम करने का प्रयास कर सकें।

विज्ञान की प्रकृति, मनोवृत्ति, विज्ञान के प्रति मूल्य और दैनिक जीवन में इसकी प्रासंगिकता के संदर्भ में माध्यमिक विद्यालय स्तर की विज्ञान पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण

इस परियोजना के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी. के माध्यमिक स्तर की विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का विज्ञान की प्रकृति, उसके प्रति मनोवृत्ति व मूल्य और दैनिक जीवन के लिए उसकी प्रासंगिकता के संदर्भ में विश्लेषण किया गया। यह विश्लेषण मौजूदा विश्लेषण योजना की सहायता से किया गया, जिसे इस अध्ययन के लिए अनुकूलित किया गया। इसके परिणामों पर चर्चा की गई और पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए मार्गदर्शिका तैयार की गई। अनुलिपि रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा चुका है।

भारत में शैक्षिक मनोविज्ञान की अनुसंधान प्रवृत्तियाँ एवं मौलिकता : दैनिक पत्र-पत्रिकाओं और रिपोर्टों का विश्लेषण

इस अध्ययन का उद्देश्य पिछले पन्द्रह वर्षों में भारत में शैक्षिक मनोविज्ञान में अनुसंधान-प्रवृत्तियों का पता लगाना और संरचनात्मक विशेषताओं, लेखकीय मानदंड, विधि और विषयों के केंद्र-बिंदु तथा शैक्षिक मनोविज्ञान में संस्थानों के योगदान के संदर्भ में विश्लेषण करने के लिए पत्र-

पत्रिकाओं में प्रकाशित आलेखों और अनुसंधान रिपोर्टों की जाँच पड़ताल करना था। इस अध्ययन के अंतर्गत विश्लेषण के लिए 641 आलेख (पूर्ण पाठ्यसामग्री) एकत्र किए गए। रिपोर्ट को अन्तिम रूप दिया जा चुका है।

परामर्शदाता प्रशिक्षण कार्यक्रम में कार्य- निष्पादन और सेवाकार्य-निष्पादन के लिए चयन प्रक्रिया की भावी संभावना का अध्ययन

इस परियोजना का उद्देश्य परामर्शदाता प्रशिक्षण कार्यक्रम में कार्य-निष्पादन और सेवाकार्य-निष्पादन के लिए चयन प्रक्रिया की भावी संभावना का निर्धारण करना था। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित परामर्शदाता प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रवेश के लिए उम्मीदवारों के चयन में एक लिखित परीक्षा, साक्षात्कार और आत्म अभिव्यक्ति की तकनीक अपनाई जाती है। इस तकनीक के परिणामों के साथ उम्मीदवारों के प्रशिक्षण और सेवाकार्य निष्पादनों का सह-संबंध स्थापित किया गया। इस अध्ययन में गुणात्मक आंकड़ा विश्लेषण सहित सह-संबंधनात्मक विश्लेषण से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए उनसे डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए उम्मीदवारों की मौजूदा चयन-प्रक्रिया हेतु प्रयोग की जा रही परीक्षाओं और साक्षात्कार की तकनीक की पुष्टि होती है। अनुलिपि रिपोर्ट को अन्तिम रूप दिया जा चुका है।

भारत में प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा की शैक्षिक मनोविज्ञान पाठ्यचर्या का आलोचनात्मक अध्ययन

देश भर में प्राथमिक शिक्षक शिक्षा में शैक्षिक मनोविज्ञान के 31 पाठ्यक्रमों के राष्ट्रीय सर्वेक्षण की अनुलिपि रिपोर्ट को अन्तिम रूप दिया जा चुका है। यह रिपोर्ट दो भागों में है। पहला भाग सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्यों से संबंधित है और दूसरा भाग पाठ्यक्रम प्रकृति के आनुभविक विश्लेषण, संरचना और पाठ्यचर्या की योजना में निहित विषयवस्तु, नीतियों और प्रयासों तथा शैक्षिक मनोविज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों के अवबोधन से संबंधित है। इस रिपोर्ट को संशोधित करने के लिए इसे एन.सी.टी.ई. और एस.सी.ई.आर.टी. को उनके अपने पाठ्यक्रमों में प्रयोग करने के लिए भेजा गया।

मीरांबिका में शिक्षा : एक केस अध्ययन

अध्ययन का उद्देश्य मीरांबिका सरीखे एक ऐसे विद्यालय में शिक्षण कार्यविधि का परीक्षण करना है, जोकि श्री अरविन्द के मुक्त विकास दर्शन पर आधारित है। मीरांबिका में 8 महीने तक तीन अन्वेषकों द्वारा गहन प्रतिभागी प्रेक्षण किया गया। नृजातीय पद्धति का अनुसरण करते हुए मीरांबिका का एक आन्तरिक केस अध्ययन किया गया। त्रिविध पद्धति अर्थात् प्रेक्षण, साक्षात्कार और प्रश्नावलियों के प्रयोग से विद्यालय में 3 अन्वेषकों के प्रेक्षणों की अंतर्वैधता में सहायता मिली।

यह अध्ययन विद्यालयों में संगठनात्मक गतिकी, विकेन्द्रित योजना, विद्यार्थियों में उत्तरदायित्व की भावना के विकास, बच्चों की आवश्यकताओं और क्षमताओं के अनुरूप बाल-केन्द्रित पाठ्यक्रम और पठन-पाठन की परियोजना पद्धति पर प्रकाश डालता है। इस अध्ययन की उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. की अध्यक्षता में संबंधित विद्यालयों के सदस्यों के सम्मुख किया गया। मुख्य उपलब्धियों की रिपोर्ट भी प्रकाशित की गई।

परामर्शदाता निर्माण : स्थिति एवं विकास (फेज़ I)

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य विभाग द्वारा प्रशिक्षित परामर्शदाताओं का अनुवर्तन करना है। परामर्शदाताओं की प्रभविष्णुता पर परामर्शदाताओं, प्रधानाध्यापकों, अध्यापकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर सूचना प्राप्त की गई। प्रभविष्णुता के मूल्यांकन के मानदण्ड पर कुछ परामर्शदाता प्रभावी पाए गए जिनकी पहचान की गई। निष्कर्षों से परामर्शदाताओं के अवबोधन का संकेत मिलता है।

परामर्शदाता अपनी भूमिका के निर्वाह में अंतर्विरोधों का सामना कर रहे हैं क्योंकि कार्यों की मांग उनकी अवबोधन-भूमिका के अनुरूप नहीं है। नियोक्ताओं, विद्यालय के प्रभारी और विद्यार्थियों में परामर्शदाताओं के कार्यों के प्रति समझदारी का अभाव है। परियोजना से संबंधित कार्य पूरा हो चुका है और रिपोर्ट को लगभग अन्तिम रूप दिया जा चुका है।

भारत में मार्गदर्शन के क्षेत्र में अनुसंधान : एक गहन अध्ययन

इस परियोजना का उद्देश्य मार्गदर्शन और परामर्श में भारतीय अनुसंधानों का सूक्ष्म और स्थूल विश्लेषण करना है। पत्र-

पत्रिकाओं और विभिन्न आयामों पर उपलब्ध प्रलेखों से लगभग 500 अनुसंधानों की पहचान का कार्य पूरा किया जा चुका है तथा रिपोर्ट तैयार की जा रही है। आगे के अनुसंधान की योजना में और व्यावसायिक प्रयास के लिए व्यावहारिक देशी आदर्श के विकसित निष्कर्ष उपयोगी हैं।

विकास

लोकप्रिय मनोविज्ञान शृंखला

इस कार्यक्रम का उद्देश्य अध्यापकों और अभिभावकों के लिए ऐसी पुस्तिकाओं का विकास करना है जिनसे बच्चों के अधिगम और विकास की समझ में वृद्धि हो सके। इस शृंखला के अंतर्गत 14 पुस्तिकाएँ पहले ही तैयार कर ली गई थीं । एक कार्यशाला में विशेषज्ञों ने इन सभी 14 पुस्तिकाओं का पुनरीक्षण किया और पाण्डुलिपि में संशोधन के लिए अपने प्रेक्षण, मत और सुझाव दिए। पुनरीक्षकों के सुझावों के आधार पर इन पुस्तिकाओं को अन्तिम रूप दिया जाएगा।

'डाइट कार्मिकों के लिए अध्यापन-अधिगम के मनोविज्ञान में संवर्द्धन पाठ्यक्रम' के स्व-अधिगम माड्यूल : संसाधन सामग्री का विकास

32 स्व-अधिगम माड्यूल विकसित और पुनरीक्षित किए गए। पुनरीक्षणकर्ताओं के सुझावों को समाहित करने के बाद ये माड्यूल 27 सितम्बर से 1 अक्टूबर 1999 और 10 से 12 जनवरी 2000 को संपादन-मंडल के सदस्यों के सम्मुख रखे गए। संपादन-मंडल के सदस्यों ने इन सभी 32 माड्यूलों का संपादन किया। सदस्यों ने कुछ माड्यूलों में संशोधन का सुझाव दिया। संशोधित माड्यूल संपादन-मंडल के एक सदस्य के पास भेजा गया है। माड्यल के अन्तिम रूप को मुद्रित किया जाएगा।

प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा के लिए शैक्षिक मनोविज्ञान में पाठ्यचर्या

एन.सी.ई.आर.टी. शैक्षिक मनोविज्ञान में पाठ्यक्रम ढाँचे के निर्माण की प्रक्रिया में है जो कम सैद्धान्तिक, कार्यात्मक, यथार्थोन्मुख और देशी होगा। यह विषयवस्तु के निर्माण, एकीकृत सिद्धान्त और व्यवहार, प्रस्तावित क्षेत्रों और तरीकों, उपयुक्त अधिगम पद्धतियों के निर्णय में पाठ्यचर्या निर्माताओं के लिए सुनिश्चित मार्गदर्शन प्रदान कर सकेगा। अब तक जो कार्य किए गए, वे निम्न हैं- साहित्य का गहन पुनरीक्षण, प्रशिक्षण में छूटे हुए पहलुओं के बारे में सेवाकालीन अध्यापकों के बोध के लिए ऐसे पाठ्यक्रम में मूलतः क्या होना चाहिए-विषय पर विशेषज्ञों के विचार आदि। पाठ्यचर्या के विकास के लिए मुद्दों और रूपात्मकता पर विचार-विमर्श करने के लिए संचालन समिति की बैठक की गई। बाद में विचार-विमर्श के लिए एक आधार पत्र तैयार किया गया। विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों की शोध अंतर्दृष्टि और अनुभवों की पहचान के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई और प्रकाशन के लिए एक लेख तैयार किया गया।

परामर्शकारी केस प्रबंधन : व्यावहारिक संदर्शिका का विकास

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा चलाए जा रहे परामर्शकारी डिप्लोमा के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा तैयार व सफलतापूर्वक चलाए जा रहे परामर्शकारी केस-अध्ययनों पर एक केस-पुस्तिका तैयार करने का प्रयास है।

एन.सी.ई.आर.टी. में उपलब्ध पाँच सौ केस-रिकार्डों में से 20 केसों की पहचान कर ली गई है। प्रकाशन के लिए इन केस-अध्ययनों का संपादन, संशोधन और पुनरावलोकन किया जा चुका है। केस-अध्ययनों के पुनरीक्षण और कुछ सैद्धान्तिक अध्यायों के लिए पुनरीक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। यह केस-पुस्तिका पुनरीक्षकों द्वारा सुझाए गए परिवर्तनों को समाहित करने के बाद अन्तिम प्रारूप की प्रक्रिया में है।

कक्षा में अध्यापकों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्न : संसाधन सामग्री का विकास

इस कार्यक्रम का उद्देश्य अध्यापन-साधन के रूप में प्रश्न पूछने की भूमिका का पता लगाना और अध्यापकों के लिए प्रश्न पूछने पर संसाधन सामग्री विकसित करना है। प्रश्नों से संबंधित अनुसंधानों की प्रवृत्तियों को जानने के लिए भारतीय और विदेशी दोनों पत्र-पत्रिकाओं में अनुसंधानों का पुनरीक्षण किया गया। अध्यापकों के प्रश्नों की वर्तमान स्थिति को जानने के लिए कक्षाओं के छोटे नमूने का खोजपरक अध्ययन किया गया। अध्यापकों के उपयोग के

लिए प्रश्नों के बारे में शिक्षक प्रशिक्षकों के विचारों से संबंधित आंकड़ा विकसित किया गया। यह विस्तार से बताता है कि प्रश्न कैसे और क्यों हों। यह मार्ग निर्देशन करता है और बताता है कि कक्षा-प्रश्नों की संरचना कैसी हो। प्रश्न पूछने के विभिन्न आयामों से संबंधित अनुकरणीय सामग्री विकसित की गई है। एक प्रबन्ध के रूप में लाने के लिए सामग्री को शीघ्रता से अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

+2 स्तर पर मनोविज्ञान पाठ्यचर्या

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य है +2 स्तर पर वर्तमान मनोविज्ञान की पाठ्यचर्या का परीक्षण करना और इस स्तर पर मनोविज्ञान के स्थिति प्रपत्र का विकास करना।

पूरे देश के विभिन्न राज्य बोर्डों में +2 स्तर पर लागू मनोविज्ञान की पाठ्यचर्या के विश्लेषण का कार्य किया गया। मनोविज्ञान के विद्यालय अध्यापकों और छात्रों के एक प्रतिदर्श के माध्यम से आवश्यकता मूल्यांकन सर्वेक्षण कार्य किया गया। स्थिति पत्र तैयार किया जाएगा जिसके बाद +2 स्तर पर मनोविज्ञान की अनुकरणीय पाठ्यचर्या विकसित होगी।

मूल्य, मनोवृत्ति और रुचियों की पुस्तिका

यह पुस्तिका मूल्य, रुचि और मनोवृत्ति के क्षेत्र में आलोचनात्मक पुनरीक्षण के लगभग 60 परीक्षणों से युक्त है। विभाग द्वारा तैयार की गई ऐसी पुस्तिकाओं की शृंखला में यह तीसरी है। अन्तिम रूप दिए जाने के बाद यह पाण्डुलिपि प्रेस में भेजने हेतु तैयार है।

प्रशिक्षण

+ 2 स्तर पर विद्यालयी शिक्षकों के लिए मनोविज्ञान में संवर्धन पाठ्यक्रम

इस पाठ्यक्रम की विषयवस्तु आवश्यकता मूल्यांकन सर्वेक्षण और 22 से 23 सितम्बर 1999 में आयोजित कार्यशाला के आधार पर तैयार की गई थी। दिल्ली और संबद्ध राज्यों में सी.बी.एस.ई. से संबद्ध विद्यालयों के +2 के स्तर पर मनोविज्ञान पढ़ा रहे 20 विद्यालयी शिक्षकों के लिए नई दिल्ली में 27 मार्च से 1 अप्रैल 2000 तक संवर्द्धन पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था– इस क्षेत्र में हुए नवीन विकासों, मनोविज्ञान में देशीकरण के महत्व, अधिक प्रभावी शिक्षण तकनीकों की खोज, मनोविज्ञान में भविष्य में जीविकोपार्जन के विभिन्न आयामों के बारे में प्रतिभागियों को जागरूक करना।

मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम

नौ महीने के इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा का उद्देश्य है– केन्द्र, राज्य और स्कूल स्तर पर शैक्षणिक संस्थाओं में व्यावसायिक परामर्शदाता तैयार करना। 1999-2000 सत्र के दौरान कुल 31 प्रशिक्षणार्थी-3 राज्यों से, 1 केन्या से और 2 तिब्बत से प्रशिक्षण ले रहे हैं। इस पाठ्यक्रम में गहन सिद्धान्त और व्यवहार कार्य के साथ-साथ विद्यालय में सप्ताह में एक बार का अभ्यास भी शामिल है। प्रशिक्षणार्थी मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को संचालित करता है। विद्यार्थियों को जीविका हेतु परामर्श देता है और विद्यालयों में जीविका सम्मेलन आयोजित करता है। कार्यशालाएँ आयोजित करके विशेषज्ञों द्वारा अतिथि व्याख्यान के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों के ज्ञान में वृद्धि की जाती है। इसी तरह का एक पाँच- दिवसीय कार्यक्रम जीवन विज्ञान अकादमी, महरौली, नई दिल्ली में ध्यान और योग पर होता है। इसके अलावा मार्गदर्शन और परामर्श के क्षेत्र में प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न संस्थाओं और अभिकरणों के कार्यों से परिचित कराने के लिए स्थानीय और शैक्षिक यात्राएँ भी आयोजित की गईं।

राज्य स्तर पर प्रशिक्षित मार्गदर्शन कर्मियों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

राज्य/ज़िला स्तर पर मार्गदर्शन और परामर्शकारी सेवाओं के संगठनों के लिए ज़िम्मेदार कर्मियों को अद्यतन जानकारी देना इस पाँच दिवसीय पाठ्यक्रम का उद्देश्य था। स्टेट ब्यूरो ऑफ गाइडेन्स एण्ड काउन्सलिंग और राज्य स्तर की दूसरी एजेन्सियों द्वारा किए गए एक आवश्यकता सर्वेक्षण के आधार पर तीन पाठ्यक्रम तैयार किए गए। मानसिक स्वास्थ्य, एड्स, ड्रग्स, परिवार-परामर्श, सामाजिक कौशल
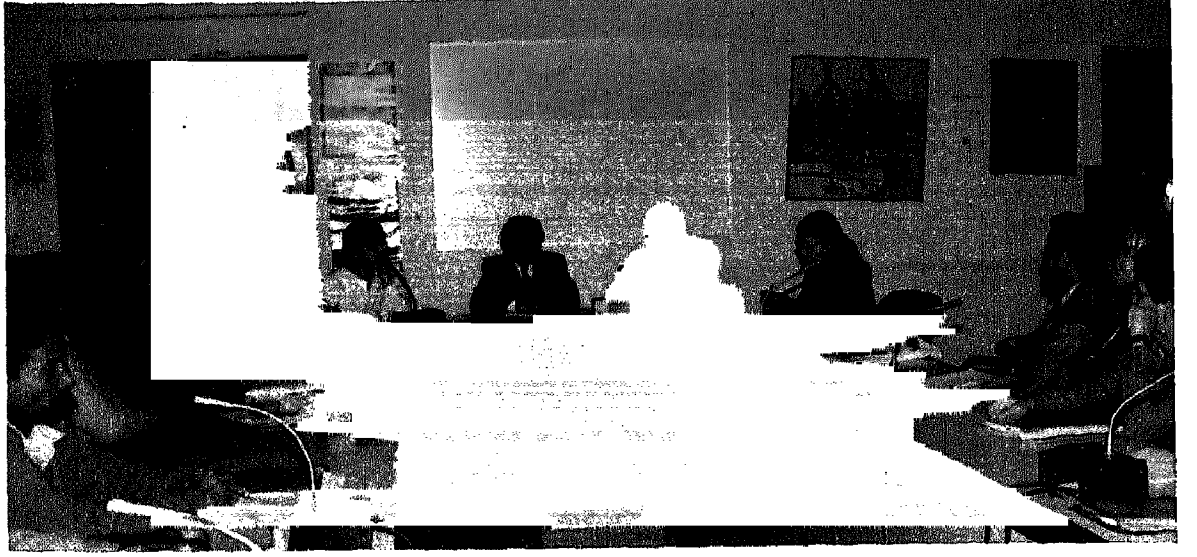
राज्य स्तर पर प्रशिक्षित मार्गदर्शन कर्मियों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का समापन-सत्र।

इत्यादि क्षेत्रों में कार्य कर रहे विशेषज्ञों के द्वारा विचार-विमर्श किया गया। पूरे भारत से 36 प्रतिभागियों ने जिनमें से अधिकांश व्यावसायिक प्रशिक्षित परामर्शदाता थे, 10 से 14 जनवरी 2000 तक इस पाठ्यक्रम में हिस्सा लिया।

मार्गदर्शन और परामर्श में अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम

अंतर्राष्ट्रीय व सार्क तथा एशिया-अफ्रीका के अन्य पड़ोसी देशों के लिए मार्गदर्शन और परामर्श के क्षेत्र में एन.सी.ई.आर.टी. ने एक कार्यक्रम आयोजित करने का प्रस्ताव किया। विभिन्न दूतावासों के कर्मियों से व्यक्तिगत विचार-विमर्श के द्वारा, विभिन्न सेवार्थी देशों को लिखकर व साहित्य का सर्वेक्षण कर और इस क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ अनेक बैठकें कर इस प्रशिक्षण की आवश्यकता का मूल्यांकन किया गया। सर्वेक्षण संकेत देता है कि इन विकासशील देशों में प्रशिक्षण की बहुत आवश्यकता थी।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम आयोजित करने से पूर्व प्रासंगिक मुद्दों की संख्या का पता लगाने के लिए सलाहकार समिति की एक बैठक आयोजित की गई। बोर्ड ऑफ स्टडीज़ से विचार-विमर्श करके इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए पाठ्यचर्या के विकास की तैयारी की जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रम आयोजित करने के क्रम में आवश्यक आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए कुछ कदम उठाए गए हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षण लाइब्रेरी

इस परीक्षण लाइब्रेरी में विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप लगभग 2000 भारतीय और विदेशी परीक्षण हैं। इस न्यासी में ये परीक्षण नमूने के रूप में रखे गए हैं। दर्शकों के अनुरोध पर लाइब्रेरी सुविधाओं में विस्तार किया गया। लगभग 25 नए परीक्षण लाइब्रेरी में शामिल किए गए।

कैरियर सूचना कक्ष

मार्गदर्शन प्रयोगशाला के एक अंग के रूप में कैरियर सूचना कक्ष देश में विभिन्न स्रोतों से एकत्रित जीविका संबंधी सूचना सामग्री रखते हैं। यह सामग्री प्रशिक्षणार्थियों, मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के संकायों के साथ-साथ मार्गदर्शन और परामर्श के विभिन्न क्षेत्रों के दूसरे कार्यक्रमों के लिए भी उपयोगी है।

वर्ष के दौरान जीविका और व्यवसाय के अपनाए गए विभिन्न मार्गों पर अद्यतन प्रकाशित सामग्री और वीडियो कार्यक्रमों को प्राप्त करने के लिए कई संगठनों से पत्राचार किया गया। जीविका से संबंधित विषयों पर लोगों को वैयक्तिक रूप से अथवा पत्राचार के द्वारा कुछ सलाह दी गई।

मार्गदर्शन प्रयोगशाला

मार्गदर्शन प्रयोगशाला के लिए सामग्री को एकत्र करने और उसके विकास का कार्यक्रम जारी है। विशेष रूप से

मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के संकाय और प्रशिक्षणार्थियों ने सामग्री और प्रयोगशाला द्वारा प्रदान की गई अन्य सुविधाओं का उपयोग किया।

मूल्य शिक्षा पर विस्तृत ग्रंथ-सूची

परियोजना का उद्देश्य भारत में मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों को संकलित करना है। इसमें विस्तृत क्षेत्रों को समाहित करने के लिए एन.आई.ई., सी.आई.ई.टी. सहित चारों क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों-अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में नोडल-केन्द्र बनाए गए हैं। प्रत्येक केन्द्र से दो संकाय सदस्य परियोजना पर कार्य कर रहे हैं। उद्धरण और संकलन के लिए प्रारूप विकसित करने हेतु, विभिन्न उपलब्ध प्रारूपों के आधार पर साहित्य पुनरीक्षण कर लिया गया है। परियोजना के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए संकलन के लिए दिशा निर्देश भी विकसित किए गए।

उद्धरण और संकलन के लिए प्रारूप को अन्तिम रूप प्रदान करने हेतु 22 से 23 मार्च 2000 को एक नोडल-संकाय की बैठक आयोजित की गई। देश के विस्तृत क्षेत्रों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए तरीका खोज लिया गया है। यह 14 महीने की परियोजना है। आशा की जाती है कि मूल्य शिक्षा पर किए गए कार्यों की संकलित ग्रंथ सूची को मुद्रित और साथ ही साथ आडियो-वीडियो मीडिया रूप में भी तैयार किया जाएगा।

मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाओं की नेटवर्किंग

इस परियोजना का उद्देश्य मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत संगठनों की पहचान करना और इन संगठनों पर आधारित एक आँकड़ा विकसित करना है। इन संगठनों से संपर्क भविष्य की कार्रवाइयों से संबंधित कार्यक्रमों की अभिव्यक्ति और सूचनाओं के विनिमय के लिए अवसर प्रदान करेंगे। एक उभय मंच पर सूचनाओं का आदान-प्रदान मूल्य-उन्मुख शिक्षा के लिए सहयोगी प्रयासों हेतु माहौल तैयार करेगा। 250 संगठनों के पते इकट्ठे किए जा चुके हैं। उनसे सूचनाएं इकट्ठी करने के लिए प्रारूप को अन्तिम रूप दिया जा चुका है। इन संगठनों के संपर्क में रहकर उनकी गतिविधियों की एक निर्देशिका विकसित करना प्रस्तावित है।

राष्ट्रीय मूल्य-शिक्षा संसाधन केन्द्र

राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा संसाधन केन्द्र की स्थापना की गई है जोकि मूल्यों की सामग्रियों के राष्ट्रीय निधि सदन के रूप में कार्य करेगा। मूल्य-परिवर्तन, मूल्यों का शिक्षण व अधिगम, जनजाति समाजों के मूल्य, मूल्यों की भारतीय अवधारणा, विभिन्न धर्मों में मूल्य का शिक्षण इत्यादि सरीखा शिक्षा में मूल्यों से संबंधित विभिन्न प्रकार का साहित्य इसमें शामिल है।

परामर्श

एन.सी.ई.आर.टी. ने शैक्षिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में परामर्श और संसाधन सहयोग तथा डी.आर.डी.ओ., रक्षा मंत्रालय, यू.जी.सी., विश्वविद्यालयों, विद्यालयों तथा एन.जी.ओ. जैसे विभिन्न संगठनों को दिशा निर्देश और परामर्श प्रदान किया। कुछ संकाय सदस्यों ने विम्हैंस (वी.आई.एम.एच.ए.एन.एस.) द्वारा 'रोल्स एण्ड फंक्शन्स ऑफ प्रोफेशनल काउन्सलर्स' पर आयोजित संगोष्ठी 'एक्सप्रेशन्स-99' में भी भाग लिया। सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा दूरदर्शन पर 'समाधान' कार्यक्रम के अंतर्गत 'आत्मविश्वास निर्माण' पर एक वार्ता प्रसारित की गई।

शैक्षिक मनोविज्ञान में क्षेत्रीय निवेश

मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर डिलोमा के लिए एक पाठ्यक्रम भी विकसित किया गया।

1999-2000 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- स्कूलिंग इन मीरांबिका- ए केस स्टडी (अनुलिपि)
- फ्री प्रोग्रेस एजुकेशन इन मीरांबिका- ए केस स्टडी
- ऐस्थेटिक्स इन एजुकेशन: ए साइकोलाजी करिक्युलम इन एलीमेंटरी टीचर एजुकेशन
- ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ एजुकेशनल साइकोलाजी करिक्युलम इन एलीमेंटरी टीचर एजुकेशन (अनुलिपि)।

कार्य-प्रभाविता बढ़ाने में स्वायत्तता के प्रभाव का पता लगाने के लिए दिल्ली की स्वायत्त एस.सी.ई.आर.टी. का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि स्वायत्तशासी स्तर ने संस्था के कार्यों के सम्यक और व्यवस्थित संचालन में सुविधा प्रदान की। संस्थान के स्वायत्तशासी स्तर प्राप्त करने के पश्चात एस.सी.ई.आर.टी. के कार्य के क्षेत्रों में विस्तार हुआ। आर्थिक सहायता में वृद्धि ने एस.सी.ई.आर.टी. को विस्तृत सुविधाओं और संसाधनों के साथ कार्य करने के लिए प्रारम्भिक पहल का आत्मविश्वास दिया तथा दृष्टिकोण और कार्य की स्वतन्त्रता के साथ मानव और सामग्री दोनों में उच्च गुणवत्तायुक्त संसाधनों की प्राप्ति के योग्य बनाया।

विद्यालयी शिक्षा के सुधार में अध्यापक शिक्षा एक पाठ्यचर्यात्मक निवेश है। इस क्षेत्र के कार्यक्रम और कार्यकलाप सामान्यतया ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) और प्राथमिक अध्यापकों के विशेष अभिविन्यास के लिए सॉप्ट के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम सहित राज्यों में क्षमता विकसित करने, अध्यापक शिक्षा की केन्द्र प्रायोजित योजनाओं जैसे ज़िला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डाइट), अध्यापक शिक्षा के कालेज (सी.टी.ई.), शिक्षा के उच्च अध्ययन संस्थानों (आई.ए.एस.ई.) तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों को शैक्षिक समर्थन देने पर केंद्रित हैं। अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता के सुधार के लिए, एन.सी.ई.आर.टी. के मुख्य घटक राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) के अंतर्गत अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.), नई दिल्ली और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान- अजमेर, भुवनेश्वर, भोपाल, मैसूर और शिलांग अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता के सुधार संबंधी कार्यों में संलग्न हैं। 1999-2000 के दौरान अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यक्रमों और क्रियाकलापों के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

अनुसंधान

प्राथमिक अध्यापकों की शैक्षिक और व्यावसायिक योग्यताओं के संबंध में उनकी अध्यापन प्रभविष्णुता

अध्यापक प्रभविष्णुता और अध्यापकों की शैक्षिक और व्यावसायिक योग्यताओं के मध्य संबंध की पहचान और विभिन्न शैक्षिक तथा व्यावसायिक योग्यताओं की संहतियों से अध्यापक प्रभविष्णुता की तुलना इस अध्ययन का उद्देश्य है। अध्ययन के लिए विभिन्न शैक्षणिक योग्यताओं वाले दिल्ली नगर निगम के 249 प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों को बानगी के तौर पर चुना गया। अध्ययन के लिए तैयार किए गए उपकरणों में (1) प्रधानाध्यापक अवबोधन सूची, (2) अध्यापक की स्व-अवबोधन सूची, (3) हिंदी, गणित, पर्यावरणीय अध्ययन-1 (समाज अध्ययन) और (3) विज्ञान में उपलब्धि पत्र समाविष्ट किए गए। शैक्षणिक और व्यावसायिक योग्यताओं पर आधारित अध्यापकों के 10 समूह बनाए गए।

यह अध्ययन उद्घाटित करता है कि विभिन्न शैक्षिक और व्यावसायिक योग्यताओं वाले शिक्षक जैसा कि उनके प्रधानाध्यापकों द्वारा और उनके अवबोधन से निर्णित हुआ, प्रभविष्णुता में एक दूसरे से भिन्न हैं, यद्यपि बहुत अर्थ पूर्ण रूप में नहीं। वे अध्यापक जो योग्यताओं की अन्य संहति रखते हैं उनकी अपेक्षा प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमाधारी स्नातक, विज्ञान शिक्षक और बी.एड. की डिग्री वाले विज्ञान के स्नातकोत्तर शिक्षक उच्च स्व-अवबोधन रखते हैं।

यह अध्ययन यह भी उद्घाटित करता है कि अध्यापकों का वस्तुज्ञान विज्ञान और गणित में उनकी शैक्षिक और व्यावसायिक योग्यताओं के अनुरूप भिन्न-भिन्न था। प्राथमिक स्तर पर विज्ञान और गणित पढ़ाने के लिए बी.एससी./बी.टी.सी./ई.टी.ई. अध्यापक अधिक प्रभावी पाए गए।

महाराष्ट्र में स्मार्ट-पी.टी. के अन्तर्गत शिक्षक-प्रशिक्षण की गुणवत्ता का निर्धारण

अध्ययन का उद्देश्य महाराष्ट्र राज्य के 'स्टेटवाइड मैसिव एण्ड रिगरस ट्रेनिंग ऑफ प्राइमरी टीचर्स' (स्मार्ट-पी.टी.) के अंतर्गत विभिन्न निवेशों की उपयुक्तता की जाँच करना और प्रतिभागियों की दक्षता तथा ज्ञान-प्राप्ति के संदर्भ में इसकी गुणवत्ता का अध्ययन करना था। यह अध्ययन यह भी उद्घाटित करता है कि निरीक्षित चार प्रशिक्षण केन्द्रों के पास श्यामपट, शौचालय, व्याख्यान कक्ष, तकनीकी सामग्री और अधिगम सामग्री की समय पर उपलब्धता जैसी सुविधाएँ पहले दिन ही पर्याप्त थीं, यद्यपि पुस्तकालय की सुविधा अपर्याप्त थी। प्रशिक्षण के दौरान लिंग, संस्था, निवास-स्थान इत्यादि पर ध्यान दिए बिना अध्यापकों ने सार्थक ज्ञानोपलब्धि की।

स्वायत्तशासी एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली का केस अध्ययन

कार्य-प्रभाविता बढ़ाने में स्वायत्तता के प्रभाव का पता लगाने के लिए दिल्ली की स्वायत्त एस.सी.ई.आर.टी. का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि स्वायत्तशासी स्तर ने संस्था के कार्यों के सम्यक और व्यवस्थित संचालन में सुविधा प्रदान की। संस्थान के स्वायत्तशासी स्तर प्राप्त करने के पश्चात एस.सी.ई.आर.टी. के कार्य के क्षेत्रों में विस्तार हुआ। आर्थिक सहायता में

वृद्धि ने एस.सी.ई.आर.टी. को विस्तृत सुविधाओं और संसाधनों के साथ कार्य करने के लिए प्रारम्भिक पहल, दृष्टिकोण और कार्य की स्वतन्त्रता के साथ मानव और सामग्री दोनों में उच्च गुणवत्तायुक्त संसाधनों की प्राप्ति के योग्य बनाया। यद्यपि एस.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्य अब भी नौकरी से जुड़ी हुई समस्याओं का सामना कर रहे हैं, जिनके उपयुक्त निदान की आवश्यकता है।

एस.सी.ई.आर.टीज़./एस.आई.ईज़. की स्थिति

विभागीय ढाँचा, भौतिक सुविधाएँ, स्टाफ विवरण, कार्य योजना और कार्यान्वयन के संदर्भ में एस.सी.ई.आर.टीज़./एस.आई.ईज़. की मौजूदा स्थिति का पता लगाने के लिए यह अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का दूसरा उद्देश्य इन संस्थानों के सुचारू रूप से कार्यकलापों के संचालन में बाधा डालने वाले कारकों की जानकारी करना और बाधाओं को निष्प्रभावित करने के लिए उपयुक्त कदम उठाने का सुझाव देना था। आंकड़ा इकट्ठा और विश्लेषित कर लिया गया है। मसौदा रिपोर्ट तैयार होने के क्रम में है।

डाइट की योजना का कार्य-संचालन : एक सर्वेक्षण

डाइट को अपनी भूमिका प्रभावकारी ढंग से निभाने में मदद के उद्देश्य से अपेक्षित कदम के सुझाव देने की दृष्टि से स्थिति और कार्यकलापों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन जारी है। 156 डाइट और 2203 शिक्षक-प्रशिक्षकों से आंकड़ा प्राप्त हुआ। आंकड़ों का विश्लेषण किया गया और रिपोर्ट तैयार की गई। सर्वेक्षण से पता चला कि विभिन्न राज्यों में सेवा-पूर्व प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के विभिन्न नाम थे। यह देखा गया कि अधिकांश डाइट में सभी सात शाखाएँ जो मूल घटक हैं, सुचारू रूप से कार्यरत नहीं थीं। इसके अतिरिक्त बड़ी संख्या में पद रिक्त थे, यद्यपि शिक्षक-प्रशिक्षक पर्याप्त योग्यता की स्थिति में थे। इन शिक्षक-प्रशिक्षकों को उनके व्यावसायिक विकास के लिए अनवरत निवेश जैसे प्रशिक्षण आदि की आवश्यकता है। डाइट ने अपनी कार्यक्रम सलाहकार समिति बनाई है और 'एक्शन रिसर्च' के लिए प्रयोग क्षेत्रों की पहचान कर ली है।

विज्ञान-शिक्षण के रचनात्मक उपागम

इस परियोजना में प्राथमिक कक्षाओं में विज्ञान की रचनात्मक उपयोगिता की जानकारी के लिए अध्यापकों को विद्यालय आधारित प्रशिक्षण दिया गया। इसके लिए जो प्रक्रियाएँ अपनायी गईं, वे थीं- वास्तविक कक्षा अधिगम स्थिति का प्रेक्षण, रचनात्मकता के प्रयोग द्वारा अध्यापकों का अध्यापन कैसे प्रभावी बनाया जा सकता है, शिक्षकों को इसका प्रदर्शन और कक्षा शिक्षण पर प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन से यह पता चलता है कि इस विधि से प्रशिक्षित अध्यापकों को उपलब्ध कराकर हमारे स्कूलों में रचनात्मकता को आसानी से कार्यान्वित किया जा सकता है। अध्यापकों को बताया गया कि वे विद्यार्थियों के साथ उनके पाठ विस्तार, क्रियाकलापों में उनकी मदद और अपने निष्कर्षों तक पहुँचने में इस अवधारणा का उपयोग करें। अध्यापक इस बात से सहमत थे कि रचनात्मकता के साथ शिक्षण विद्यार्थी और शिक्षक दोनों को प्रेरित करता है, शिक्षक को पूरी विषयवस्तु समझने में मदद मिलती है और कक्षा के अधिगम वातावरण में वृद्धि करता है। यह उपागम शिक्षकों से कुछ नई अपेक्षा रखता है, जैसे-विषयवस्तु का सम्यक ज्ञान और शिक्षा शास्त्री दक्षताओं का विकास। यह विद्यार्थियों की रटकर सीखने की आदत को कम करता है।

अध्यापक मूल्यांकन की सहभागिता और आंकड़ा आधारित प्रणाली का ढाँचा

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु उत्तरदायी मानकों को बल प्रदान के लिए एन.सी.ई.आर.टी. ने शिक्षक मूल्यांकन के लिए सहयोगी और आंकड़ा आधारित प्रणाली का ढाँचा विकसित किया। इस ढाँचे में अध्यापक का आत्म-मूल्यांकन और प्रत्येक अध्यापक के शैक्षिक और सह-पाठ्यचर्यात्मक गतिविधियों तथा योगदानों के बारे में एकत्रित आंकड़े के आधार पर प्रधानाचार्य के मूल्यांकन को भी शामिल किया जाता है। इस ढाँचे के अंतर्गत यह भी सुझाव है कि एक मूल्यांकन साक्षात्कार भी इसमें शामिल किया जाए ताकि जिस अध्यापक का मूल्यांकन किया जा रहा है उसे अपने महत्वपूर्ण योगदानों को प्रस्तुत करने का मौका मिल सके। प्रयोगात्मक तौर पर इसे चार प्रायोगिक

स्कूलों और तीन जवाहर नवोदय विद्यालयों में लागू करने का प्रयास किया गया। जिन स्कूलों में यह प्रयोग किया गया उन्होंने इस ढाँचे के कार्यान्वयन के लिए प्रक्रिया आरम्भ कर दी है।

उत्तर-पूर्व क्षेत्र के माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षकों का सेवाकालीन प्रशिक्षण : एक व्यावहारिक अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य क्षेत्र में मौजूदा मानव शक्ति और शिक्षक शिक्षा से जुड़ी हुई आधारभूत सुविधाओं का पता लगाना तथा इन राज्यों में सेवाकालीन प्रशिक्षण-कार्यक्रमों के आयोजन की विशिष्ट आवश्यकताओं का पता लगाना है।

इस अध्ययन के लिए प्रश्नावलियों, उत्तर-पूर्वी राज्यों के क्षेत्र-दौरों और अन्य दूसरे स्रोतों से आंकड़ा इकट्ठा किया गया। इस अध्ययन से पता चला कि खराब यातायात, प्रतिभागी के लिए आवासीय सुविधा की कमी, आधारभूत सुविधाओं की कमी, जैसे-सभागार, दृश्य-श्रव्य सामग्री और पठन सामग्री इत्यादि समस्याओं के कारण इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभागियों की संख्या कम रही। आर्थिक बंधनों और विभिन्न विषय क्षेत्रों के असक्षम संसाधन व्यक्तियों ने भी सेवाकालीन प्रशिक्षण की गुणवत्ता को प्रभावित किया। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार के लिए किए गए इस अध्ययन ने निम्नलिखित आवश्यकताओं पर बल दिया: (1) संदर्भ संस्थानों में खर्च के अधिक उदार नियमों के साथ आधारभूत सुविधाओं में संवर्द्धन हेतु विशेष योजना, (2) लक्ष्य समूह, प्रशिक्षण तकनीक, आवश्यकता-निर्धारण, प्रशिक्षण कार्यक्रम की संख्या और अवधि इत्यादि को स्पष्ट करती हुई माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षकों के लिए विशेष अभिविन्यास योजना (एस.ओ.एस.एस.टी.)।

विकास

भारत में अध्यापक शिक्षा के पचास वर्ष : मूल्यांकन और भावी परिप्रेक्ष्य

अध्यापक शिक्षा के विकास की प्रवृत्ति और मौजूदा स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से इस परियोजना अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं: (1) सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा के विभिन्न प्रकारों और स्तरों के ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण करना, (2) सेवारत शिक्षा के ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण करना, (3) आज़ादी के बाद शुरू किए गए नवाचारी कार्यक्रमों और कार्यान्वित कार्यक्रमों की समीक्षा करना, (4) अध्यापक शिक्षा के पुनर्गठन की केन्द्र प्रायोजित योजना के अंतर्गत स्थापित अध्यापक शिक्षा संस्थानों के कार्य निष्पादन का मूल्यांकन करना और (5) अध्यापक शिक्षा के विकास में विभिन्न संस्थानों और संगठनों की भूमिकाओं की समीक्षा करना। अध्यापक शिक्षा के एकीकृत विषयों सहित विभिन्न आयामों को लेकर 11 अध्यायों के विषयों की अंतिम रूप से पहचान की गई। विशेषज्ञ दल और एन.सी.ई.आर.टी. से चुनिंदा लेखकों की पहचान कर ली गई है। अध्याय लिखने का कार्य प्रगति पर है जो अंतिम प्रलेखन और प्रकाशन के लिए संपादित किया जाएगा।

प्राथमिक शिक्षा में डिप्लोमा के लिए स्व-अधिगम सामग्री

इग्नू ने प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए एक सेवाकालीन डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव किया है। इस डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए स्व-अधिगम अनुदेशी सामग्री का विकास कर लिया गया है। इस अनुदेशी सामग्री में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में मौजूदा विकास और कार्य व्यवहार, जैसे-बड़े आकार की कक्षाओं में अध्यापन, सहकारी अधिगम विधियाँ, बाल-केन्द्रित और क्रियाकलाप आधारित खेल विधि शामिल हैं। इस सामग्री में सतत व्यापक मूल्यांकन के माड्यूल्स, पाठयोजना, अधिगम का मनोविज्ञान आदि भी शामिल हैं। आरंभ में यह डिप्लोमा कार्यक्रम पूर्वोत्तर राज्यों, जहाँ अधिकांश संख्या में अप्रशिक्षित अध्यापक हैं, के सेवारत अध्यापकों के लिए दूरवर्ती शिक्षा माध्यम के रूप में शुरू किया जाएगा।

भारतीय शिक्षा का विश्वकोश

एन.सी.ई.आर.टी. भारतीय शिक्षा के विश्वकोश निर्माण की परियोजना पर कार्य कर रही है, जोकि भारतीय शिक्षा के सभी कालों, सभी स्तरों और सभी दृष्टिकोणों से जुड़े हुए विभिन्न तथ्यों के लिए ज्ञान और सूचना का एकमात्र

स्रोत होगा। इसमें पाँच तरह की प्रविष्टियाँ शामिल हैं: (1) शैक्षिक विषयवस्तु, (2) शैक्षिक संस्थाएँ, संगठन आदि, (3) शैक्षिक परियोजनाएँ और योजनाएँ, (4) विभिन्न राज्यों में शिक्षा की प्रणाली और (5) शिक्षा की स्पष्ट भारतीय अवधारणा। लगभग 450 प्रविष्टियों के साथ संभावित लेखकों की पहचान कर ली गई है जो विभिन्न प्रविष्टियों पर उच्च व्यावसायिक और विद्वत्तापूर्ण आलेख तैयार कर सकें। सलाहकार समूह की चार बैठकों में लेखकों के नाम और प्रविष्टियों पर गंभीरतापूर्वक विचार कर लिया गया है। लेखकों की पहचान का काम प्रगति पर है।

प्रशिक्षण

डाइट-संकाय का प्रशिक्षण

एन.सी.ई.आर.टी. विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित करके डाइट के प्रिंसिपल और संकाय सदस्यों की क्षमता का निर्माण कर रही है। इस क्रम में प्रशिक्षण की रूपरेखा और अनुदेशी अधिगम माड्यूल का विकास कर लिया गया है। इस कार्यक्रम में योजना और प्रबन्धन, सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा, वयस्क और अनौपचारिक शिक्षा, शैक्षिक तकनीक का उपयोग, शिक्षार्थी केन्द्रित उपागम इत्यादि सहित प्रशिक्षण में विभिन्न क्षेत्रों को शामिल कर लिया गया है। अनुदेशी सामग्री का क्षेत्र परीक्षण और माड्यूलों का अन्तिम पुनरीक्षण किया गया। एन.आई.ई. परिसर, नई दिल्ली में 27 से 31 दिसम्बर 1999 को डाइट के प्रधानाचार्यों के प्रशिक्षण के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें पाँच राज्यों- दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और राजस्थान के 25 प्रधानाचार्यों ने प्रतिभागिता की। डाइट की विभिन्न शाखाओं में कार्यरत सभी संकाय सदस्यों को प्रशिक्षण प्रदान करने के क्रम में एक कार्य योजना तैयार की गई। 27 मार्च से 3 अप्रैल 2000 तक डाइट के संकाय के प्रशिक्षण हेतु एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के 18 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।
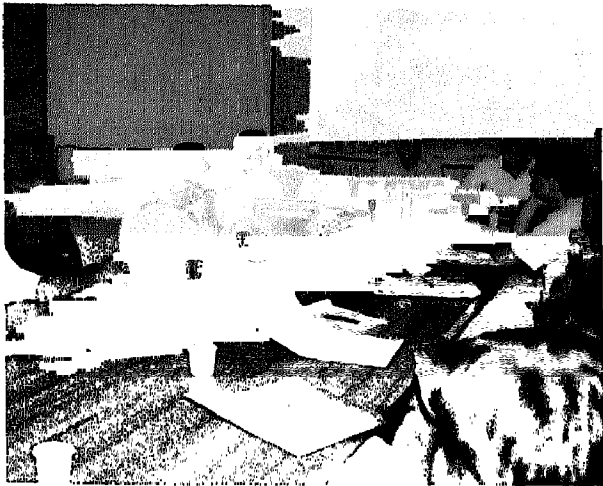
जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों के संकाय-सदस्यों का प्रशिक्षण कार्यक्रम।

आई.ए.एस.ईज़. के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा में अनुसंधान उन्नयन हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम

अनुसंधान के लिए दिशानिर्देश प्रदान करने के क्रम में 29 मार्च से 1 अप्रैल 2000 तक एन.आई.ई. परिसर, नई दिल्ली में प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा में अनुसंधान का उन्नयन विषय पर एन.सी.ई.आर.टी. ने एक कार्यक्रम आयोजित किया। आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु और दिल्ली के 27 प्रधानाचार्यों और संस्थाओं के अध्यक्षों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। प्राथमिक शिक्षा के उभरते हुए सूक्ष्मतर सरोकारों और प्राथमिक शिक्षा के उन्नयन में अनुसंधान की आवश्यकता पर प्रतिभागियों ने विचार-विमर्श किया। प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा के क्षेत्रों जैसे-प्रवेश-प्रक्रिया, सेवा-पूर्व शिक्षा का पाठ्यक्रम, स्थानबद्ध कार्यक्रम और मूल्यांकन आदि संभावित अनुसंधान विषयवस्तुओं पर विचार-विमर्श हुआ और अनेक अनुसंधान प्रस्ताव विकसित किए गए।

अनुक्रियात्मक टेलीविजन (आई.पी.टी.टी. : आई.टी.वी) के माध्यम से सेवारत प्राथमिक अध्यापकों का प्रशिक्षण

राष्ट्रीय कार्रवाई योजना के अन्तर्गत देश भर में प्रशिक्षण साफ्टवेयर के रूप में प्रयोग के पहले इसे मार्गदर्शी परियोजना के रूप में प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण साफ्टवेयर का पूर्व परीक्षण मध्य प्रदेश और गुजरात में किया जा रहा है। इस परियोजना का पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन एन.सी.ई.आर.टी. कर रही है। इस परियोजना के सहयोगी संगठन जैसे शिक्षा विभाग और इसके स्वायत्त संगठन, दूरसंचार विभाग, भारत सरकार, यूनेस्को और अन्तर्राष्ट्रीय दूर संचार संघ को विशेष

ज़िम्मेदारी सौंपी गई है। इस परियोजना के कार्यान्वयन के लिए राज्य स्तरीय मुख्य अभिकरण हैं– एस.सी.ई.आर.टी., मध्य प्रदेश और जी.सी.ई.आर.टी., गुजरात। एन.सी.ई.आर.टी. अकादमिक समर्थन देने के अलावा परियोजना का समन्वयन, निगरानी और मूल्यांकन का कार्य भी देख रही है। इस परियोजना के अंतर्गत गुजरात के छह ज़िले और 62 प्रखंड तथा मध्य प्रदेश के 10 ज़िले और 124 प्रखंड हैं। इसके लिए 20 अधिगम केन्द्र हैं। इनमें 12 केन्द्र मध्य प्रदेश में हैं और 6 गुजरात में हैं। इस परियोजना के लाभार्थी हैं– अध्यापक, अध्यापक प्रशिक्षक और शिक्षा पर्यवेक्षक। विस्तृत भौगोलिक क्षेत्रों तक पहुँच के लिए ज़िलों और प्रखण्डों का चयन कर लिया गया है। अनुक्रियात्मक गुणवत्ता में सुधार के लिए कम्प्यूटर समर्थन प्रणाली के तहत इस प्रौद्योगिकी के दो तरफा आडियो और वीडियो माध्यम प्रयोग किए जाते हैं। एन.सी.ई.आर.टी. ने भी अपने संस्थान में डिजीटल अपलिंग अर्थ स्टेशन स्थापित करने का प्रस्ताव रखा है ताकि प्राथमिक स्तर के अधिकांश अध्यापक प्रशिक्षक सीधे प्रशिक्षण का लाभ प्राप्त कर सकें। इसके लाभार्थियों में शमिल हैं–एस.सी.ई.आर.टी. और डाइट के संकाय, वी.ई.सी., अध्यापक और विद्यालय शिक्षा से संबद्ध अन्य कार्मिक। एन.सी.ई.आर.टी. ने अध्यापकों के लिए स्व–अधिगम मुद्रित सामग्री का निर्माण किया है।

एस.सी.ई.आर.टी. संकाय के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

एन.सी.ई.आर.टी. ने एन.आई.ई. परिसर, नई दिल्ली में 29 नवम्बर से 3 दिसम्बर 1999 तक एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. संकाय के लिए एक पाँच–दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया। उत्तर–पूर्व और पश्चिमी राज्यों के 14 एस.सी.ई.आर.टीज़./एस.आई.ईज़. के 30 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य इस क्षेत्र में विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबंधित उभरती प्रवृत्तियों और मुद्दों के बारे में भागीदारों को अवगत कराना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम की अनुदेशी सामग्री में प्रारंभिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के विषय, प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा के सरोकार और मुद्दे, पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री का विकास, योजना, आयोजन, निगरानी और सेवाकालीन शिक्षा–प्रशिक्षण कार्यक्रम में मूल्यांकन, क्रियात्मक अनुसंधान की तकनीकें और कक्षा–शिक्षण में उनके निहितार्थ सम्मिलित हैं।

विस्तार

एस.सी.ई.आर.टीज़. और एस.आई.ईज़. के निदेशकों का सम्मेलन

एस.सी.ई.आर.टीज़./एस.आई.ईज़. के निदेशकों का एक सम्मेलन 7–8 मार्च को नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में गोवा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, असम, महाराष्ट्र, त्रिपुरा, केरल, हरियाणा, कर्नाटक, नागालैण्ड, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, पश्चिम बंगाल और दिल्ली के 17 एस.सी.ई.आर.टीज़./एस.आई.ईज़. ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्देश्य विद्यालय शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में अनुभवों और विचारों का आदान–प्रदान करना था। सम्मेलन में विभिन्न एस.सी.ई.आर.टीज़. की महत्वपूर्ण उपलब्धियों, कार्यक्रमों और परियोजनाओं पर भी विचार–विमर्श किया गया। एन.आई.ई. के विभिन्न विभागों ने विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार के पारस्परिक रुचि के सरोकारों पर एस.सी.ई.आर.टीज़./एस.आई.ईज़. के निदेशकों से विचार–विनिमय किया।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, अनुभवजन्य मूल्य शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी. और एस.सी.ई. आर.टीज़. के पारस्परिक संबंधों का सुदृढ़ीकरण, केंद्र पोषित योजना अध्यापक शिक्षा पुनर्संरचना के साथ डाइट, सी.टी.ई. व आई.ए.एस.ई. का परिचालन और एस.ओ.पी.टी. आदि पारस्परिक रुचि के सरोकारों पर विभिन्न सत्रों में गहन विचार–विमर्श हुआ। एस.सी.ई.आर.टीज़. के निदेशकों ने तीन समूहों में कार्य किया और एन.सी.ई.आर.टीज़. तथा एस.सी.ई.आर.टीज़. के बीच संबंध सूत्र को मज़बूत बनाने, डाइट, एस.आई.ईज़. और सी.टी.ईज़. में सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम, डाइट, सी.टी.ईज़. और आई.ए.एस.ईज़. के संबंध सूत्र आदि पर अपनी संस्तुतियां दीं। इस सम्मेलन की संस्तुतियां या सिफारिशें विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए दीर्घकालीन निहितार्थ रखेंगी।

अध्यापक शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा में नवाचार–अखिल भारतीय प्रतियोगिता

अध्यापक प्रशिक्षकों और विद्यालयी अध्यापकों में नव प्रयोगों, अनुसंधानों और नवाचारी कार्य व्यवहारों को बढ़ावा देने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. प्रतिवर्ष दो अखिल भारतीय प्रतियोगिताएँ आयोजित करती है। अध्यापक शिक्षा में नवाचार और विद्यालयी शिक्षा में नवाचार नामक इन प्रतियोगिताओं का उद्देश्य है– अध्यापक प्रशिक्षकों और विद्यालय के शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देना। इस योजना में शिक्षक-प्रशिक्षकों और विद्यालय अध्यापकों से नवाचारी आलेख आमंत्रित किए जाते हैं। एन.सी.ई.आर.टी. पुरस्कार के लिए इन आलेखों का मूल्यांकन विशेषज्ञों के एक पैनल द्वारा किया जाता है। चयनित अध्यापक प्रशिक्षकों को नकद पुरस्कार और राष्ट्रीय स्तर की पहचान के रूप में प्रोत्साहन दिया जाता है। एन.सी.ई.आर.टी. इन चयनित अध्यापकों को उनके नवाचारों पर विचार-विमर्श करने और इन नवाचारों की उपयोगिता का क्षेत्र परीक्षण करने का अवसर प्रदान करती है।

पिछले वर्ष के दौरान 15 राज्यों से 71 आलेख प्राप्त हुए। इनमें से एन.सी.ई.आर.टी. पुरस्कार के लिए 27 आलेख- प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा से 19 और माध्यमिक अध्यापक शिक्षा से 8-चुने गए। एन.आई.ई., नई दिल्ली में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित एक गोष्ठी में चयनित अध्यापकों ने अपने नवाचारी विचारों पर विचार-विमर्श के लिए प्रतिभागिता की। नवंबर 1999 में अध्यापक प्रशिक्षकों को पुरस्कार दिए गए।

1999-2000 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- डिस्ट्रिक्ट इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग- स्टेटस ऑफ देयर ऑपरेशनलाइज़ेशन
- इन्स्ट्रक्शनल प्रैक्टिसेज़ एंड क्लासरूम मैनेजमेंट इन लार्ज साइज्ड क्लासेज़ एट प्राइमरी स्टेज (फोटो प्रति)
- इन्नोवेटिव एक्सपेरिमेन्ट्स एंड प्रैक्टिसेज़ इन एलिमेंटरी टीचर एजुकेशन (पुरस्कृत आलेख 1998-99) (फोटोप्रति)
- इन्नोवेटिव एक्सपेरिमेन्ट्स एंड प्रैक्टिसेज़ इन सेकन्डरी टीचर एजुकेशन (पुरस्कृत आलेख 1998-99) (फोटोप्रति)
- ऑल इंडिया कम्पटीशन ऑन इन्नोवेशंस फॉर सेकेंडरी/सीनियर सेकेंडरी (एस.एस.ई.) टीचर्स 1998-99
- ए स्टडी ऑफ वर्किंग कंडीशन ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स इन हरियाणा एंड मध्य प्रदेश (फोटोप्रति)
- एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली–ए केस स्टडी
- पार्टीसिपेटरी एंड डाटाबेस्ड सिस्टम ऑफ टीचर एप्रेज़ल : ए फ्रेमवर्क (फोटोप्रति)
- इन सर्विस ट्रेनिंग ऑफ सेकेंडरी एंड सीनि. सेकेंडरी टीचर्स ऑफ नार्थ-ईस्टर्न रीजन: ए फीज़िबिल्टी स्टडी (फोटोप्रति)
- टीचिंग इफेक्टिवनेस ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टु देयर एजुकेशनल एंड प्रोफेशनल क्वालिफिकेशंस (फोटोप्रति)
- ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ सॉप्ट प्रोग्राम इन लखनऊ एंड उन्नाव डिस्ट्रिक्ट ऑफ उत्तर प्रदेश
- सर्वे ऑफ इन्नोवेशंस इन टीचर एजुकेशन।

अध्यापक शिक्षा को क्षेत्र स्तरीय योगदान

सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रमुख सरोकारों में सेवापूर्व नवाचारी अध्यापक शिक्षा का विकास और संचालन भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी.के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में विज्ञान शिक्षा में चार वर्षीय एकीकृत अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम और प्रारंभिक शिक्षा में विशेषीकरण के साथ एक वर्ष का एम.एड. पाठ्यक्रम संचालित किया जाता है। 1999-2000 के दौरान विज्ञान और मानविकी में प्रायोगिक आधार पर एक नया द्विवर्षीय बी.एड. सेकेंडरी कोर्स प्रारम्भ किया गया। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के विभिन्न सेवापूर्व पाठ्यक्रमों में कुल 1589 छात्र नामांकित किए गए। इस चार वर्षीय एकीकृत बी.एससी.बी.एड/बी.एससी.एड. पाठ्यक्रम का मुख्य ज़ोर गुणवत्ता जैसे-विषययुक्त की सम्यक जानकारी युक्त प्रक्रिया, शिक्षाशास्त्र और सहपाठ्यचर्यात्मक क्रियाकलापों से युक्त अच्छे अध्यापक तैयार करना है। शिक्षक शिक्षा में

एक वर्षीय एम.एड. बुनियादी शिक्षा पाठ्यक्रम प्रारंभिक शिक्षा और अनुसंधान आधारित निवेशों से जुड़े सरोकारों पर पर्याप्त ज़ोर देता है। इस पाठ्यक्रम में शिक्षक समुदाय के बुनियादी शिक्षा के विभिन्न प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में कई प्रकार के अनुसंधान अध्ययन किए गए। मार्गदर्शन और परामर्श में एक स्नातकोत्तर डिप्लोमा की रूपरेखा तैयार की गयी है जिसे अगले सत्र से शुरू किया जाएगा।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर ने डाइट और एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. के संकाय सदस्यों के लिए निम्नलिखित विषयों पर पांच कार्यक्रम आयोजित किए: (1) हिन्दी, गणित और पर्यावरण अध्ययन 1 और 2 के विषय क्षेत्रों में कार्यकलाप आधारित शिक्षण, (2) सेवाकालीन कार्यक्रमों का आयोजन, (3) शैक्षिक सर्वेक्षणों का संचालन, (4) सेवाकालीन कार्यक्रमों का मूल्यांकन और (5) उच्च अनुदेशी कार्यनीतियाँ और कार्यक्रम प्रबन्धन।

निम्नांकित को भी प्रशिक्षण प्रदान किया गया: (1) संस्था के स्तर पर प्रभावी योजना और विद्यालय के कार्यकलापों की निगरानी पर चण्डीगढ़ के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक, (2) प्रशिक्षण-सामग्री के निर्माण के बाद शिक्षक और उनके विद्यालयी निष्पादन के मूल्यांकन पर चण्डीगढ़ के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों और एस.आई.ई. के संकाय, (3) विद्यालयों की प्रभावशाली निगरानी के लिए प्राथमिक स्तर पर विषयवस्तु और तरीकों के शिक्षण पर उत्तर प्रदेश के निगरानी कार्यकर्ता। विस्तार भाषण, प्रधानाध्यापकों का अभिविन्यास/सहयोग करने वाले विद्यालयों के अध्यापक जैसे कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों, विद्यार्थियों और उन सभी लोगों के लिए जो पर्यावरण संरक्षण के लिए अपनी ज़िम्मेदारी महसूस करते हैं, 'ग्लोबल क्लाइमेट चेंजेज़' शीर्षक सामग्री विकसित की।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने डाइट संकाय और मुख्य संसाधन व्यक्तियों के लिए निम्नांकित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया- (1) माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, (2) जनसंख्या शिक्षा, (3) माध्यमिक स्तर पर अंग्रेज़ी भाषा शिक्षण के नवाचारी तरीके, (4) विकलांग बच्चों की एकीकृत शिक्षा, (5) माध्यमिक स्तर पर भूगोल (समाज विज्ञान) की मूलभूत दक्षताएँ और (6) कम्प्यूटर साक्षरता।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान ने नवोदय विद्यालय के स्नातकोत्तर शिक्षकों के लिए निम्नलिखित दो सेवाकालीन अभिविन्यास पाठ्यक्रम संचालित किए: (1) अर्थशास्त्र, भूगोल, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान तथा (2) हिन्दी, वाणिज्य व इतिहास। इसके साथ केन्द्रीय विद्यालय के स्नातकोत्तर शिक्षकों के लिए भी इतिहास, भूगोल, हिन्दी और गणित में अभिविन्यास पाठ्यक्रम संचालित किए गए।

संस्थान ने निम्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण सामग्री भी विकसित की: (1) विशेष शिक्षा, (2) लेखा शास्त्र-शिक्षण, (3) माध्यमिक स्तर पर मौखिक परीक्षण, (4) प्राथमिक स्तर पर उर्दू शिक्षा की शिक्षण-विधियाँ। विभिन्न आवश्यक क्षेत्रों में अनुदेशी सामग्री का विकास किया गया जैसे (1) मध्य प्रदेश में शैशवकालीन शिक्षा के लिए नमूना क्रियाकलाप योजना, (2) मध्य प्रदेश में शिक्षा प्रक्रिया में लैंगिक-पूर्वाग्रह को दूर करने के तरीके, (3) पर्यावरण आधारित नवाचारी सामग्री और (4) मध्य प्रदेश के लिए +2 पर इतिहास का आदर्श प्रश्न-पत्र।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने एस.सी.ई.आर.टी. कर्मियों, डाइट और सी.टी.ईज़. के शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए कार्यात्मक अनुसंधान प्रणालियों पर अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। एन.सी.टी.ई. के मार्गदर्शन पर शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए पाँच वर्षीय बी.ए., बी.एड/बी.एससी. बी.एड. और एम.एड. कार्यक्रम पुनर्निर्मित किए गए।

संस्थान ने सहयोग करने वाले विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों और अध्यापकों का 'स्थानबद्ध शिक्षण' पर, डाइट और एस.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों का सतत और व्यापक मूल्यांकन पर सम्मेलन आयोजित किया। इसके साथ संस्थान ने प्राथमिक स्तर पर शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए शैक्षिक तकनीक पर अभिविन्यास कार्यक्रम और कम

लागत की शैक्षिक सामग्री के उत्पादन/विकास पर कार्यशाला भी आयोजित की। संस्थान ने पाठ्यचर्या में संस्कृति, परंपरा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के तरीकों की पहचान के लिए कार्यशाला आयोजित की और उत्तर पूर्वी राज्यों में पी.एम.ओ.एस.टी. के क्रियान्वयन के लिए सत्रह संसाधन व्यक्तियों का पाँच-दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ने एरिक की दो परियोजनाओं पर कार्य किया: (1) प्रारंभिक शिक्षक-प्रशिक्षकों में उपलब्ध दक्षता और अपेक्षित दक्षताओं की पहचान के लिए 'डेवलपमेन्ट ऑफ ए प्रोफाइल ऑफ काम्पीटेन्सीज़ एवेलेबल एण्ड ट्रेनिंग डिज़ाइन फॉर दि टीचर एजुकेटर्स एट दि एलिमेंटरी लेवेल' और (2) शिक्षा व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण क्रियान्वयन परिणामों के उद्देश्य से 'ए स्टडी ऑफ सब्जेक्ट्स ऑफ स्पेसलाइज़ेशंस ऑफर्ड बाई दि इंस्टीट्यूशन ऑफ टीचर एजुकेशन ऑप्टिड हेड बाई स्टूडेंट टीचर एण्ड रिक्वायर्ड बाई दि प्राइमरी एण्ड सेकेण्डरी स्कूल्स इन दि साउथर्न रिजन' अध्ययन का कार्य प्रगति पर है। संस्थान ने केरल और आंध्र प्रदेश के एस.सी.ई. आर.टीज़., डाइटों, सी.टी.ईज़., आई.एस.एस.ईज़. और डी.पी.ई.पी. में कार्यरत संसाधन व्यक्तियों के लिए कम्प्यूटर अनुप्रयोगों पर एक कार्यक्रम आयोजित किया। कक्षा दस के लिए गणित की अध्यापक पुस्तिका और पर्यावरणीय अध्ययन में क्रियाकलाप आधारित अनुदेशी सामग्री तैयार की गई।

दक्षिणी राज्यों में पाठ्यचर्या/पाठ्यपुस्तकों के पुनरीक्षण और पुनर्संरचना, डाइट संकाय के लिए कार्यात्मक अनुसंधान और नवोदय विद्यालय के गणित के स्नातकोत्तर शिक्षकों को विषयवस्तु और तरीकों में प्रशिक्षण के लिए अकादमिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।

एन.सी.टी.ई. पाठ्यचर्यात्मक ढाँचे के मुख्य बिन्दुओं से शिक्षक-प्रशिक्षकों/प्रशासकों को परिचित कराने के लिए मैसूर विश्वविद्यालय के सहयोग से दो वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम के लिए 'ऑपरेशनलाइज़ेशन ऑफ एन.सी.टी.ई. करीकुलम फ्रेमवर्क' पर सेमिनार आयोजित किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. के क्षेत्रीय सलाहकार कार्यालय हैदराबाद ने आंध्र प्रदेश के आवासीय संस्थानों के विद्यार्थियों की उपलब्धियों पर 'पर्यावरण का प्रभाव' पर अध्ययन किया और रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग

उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग ने 'इम्पैक्ट स्टडी ऑफ सॉप्ट प्रोग्राम' अध्ययन प्रारंभ किया जो पूर्ण होने की प्रक्रिया में है। असम के डाइट और एस.सी.ई.आर.टी. संकाय सदस्य सतत और व्यापक मूल्यांकन में प्रशिक्षित किए गए। एस.सी.ई.आर.टी./डाइट संकाय सदस्यों के साथ मिज़ोरम के विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अकादमिक अधिकारियों के लिए 'मिज़ोरम के पाठ्यपुस्तक लेखकों के लिए प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला' का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने कक्षा 8 तक के लिए पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम के साथ पाठ्यपुस्तक लेखन के मार्गनिर्देशों को विकसित किया। संस्थान ने वर्ष 1999 के राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मिज़ोरम, त्रिपुरा, मणिपुर और मेघालय शिक्षकों की राज्य स्तरीय चयन समिति तथा क्षेत्रीय समिति, नवोदय विद्यालय, शिलांग के अनुबंध/पार्ट टाइम आधार पर पीजीटी/टीजीटी के चयन में मदद की।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान ने मा.सं.वि.म./नीपा की ओर से ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड योजना के राष्ट्रीय मूल्यांकन का कार्य किया। डी.पी.ई.पी. के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी की प्रस्तावना के रूप में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में एक क्षेत्रीय गोष्ठी विद्यालय की प्रभविष्णुता पर आयोजित की गई।

प्रायोगिक विद्यालय

प्रायोगिक विद्यालय आर.आई.ईज़. के अभिन्न अंग हैं। ये संस्थान की प्रयोगशालाएँ हैं जहाँ विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के नवाचारी प्रयोगों का परीक्षण किया जाता है। आर.आई.ईज़. के सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित अध्यापक विद्यार्थी इन विद्यालयों में व्यावहारिक प्रशिक्षण का अभ्यास कर रहे हैं। पिछले चार वर्षों से डी.एम. विद्यालयों के प्राथमिक स्तर के अध्यापक क्रियात्मक अनुसंधान के अंतर्गत दक्षता

वर्ष 1999-2000 के दौरान क्षे.शि. संस्थानों में पाठ्यक्रमानुसार नामांकन

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
1.	बी.एससी.बी.एड.				
	1 वर्ष	82	78	86	82
	2 वर्ष	74	78	85	62
	3 वर्ष	69	80	76	64
	4 वर्ष	59	72	87	49
2.	बी.एड. (माध्यमिक) विज्ञान	40	32	40	40
	मानविकी	40	44	39	40
3.	एम.एड. (प्रारंभिक)	17	11	32	31
	कुल	381	395	445	368

वर्ष 1999-2000 के दौरान क्षे.शि.सं. के परीक्षा परिणाम उत्तीर्ण प्रतिशत

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
1.	बी.एससी. बी.एड./ बी.एससी. एड.				
	1 वर्ष	93	92	91	
	2 वर्ष	96	100	97	
	3 वर्ष	100	94	93	
	4 वर्ष	100	100	97	89
2.	एम.एड. (प्रारंभिक)	100	94	86	100

आधारित शिक्षण का प्रयोग कर रहे हैं। वे बच्चों की अधिगम संबंधी आवश्यकताओं, कक्षा कक्ष आंकड़ों के आधार पर शिक्षण और कार्यनीतियों की योजना बनाते हैं। डी.एम. विद्यालय, सी.बी.एस.ई., नई दिल्ली से संबद्ध हैं और कक्षा 1 से 12 तक अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा प्रदान करते हैं। ये विद्यालय मार्गदर्शन और परामर्शकारी सेवाएँ भी प्रदान करते हैं और इनमें +2 स्तर पर अलग प्रकार के व्यावसायिक पाठ्यक्रम हैं।

वर्ष 1999-2000 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

क्षे.शि.सं., अजमेर

- कंडक्टिंग ऑन एजुकेशनल सर्वे एट डिस्ट्रिक्ट लेवल (फोटोप्रति)
- इम्प्रूविंग इंस्ट्रक्शंस इन वोकेशनल एकाउन्टेंसी (फोटोप्रति)

वर्ष 1999-2000 के दौरान प्रायोगिक विद्यालयों में कक्षानुसार नामांकन

कक्षा	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
1	30	68	64	68
2	34	68	79	69
3	32	70	77	70
4	34	67	78	70
5	35	68	78	70
6	63	88	112	70
7	58	66	117	70
8	39	65	122	64
9	65	67	125	70
10	51	61	121	67
11	58	55	55	35
12	69	57	95	39
कुल	**568**	**800**	**1123**	**762**

वर्ष 1999-2000 के दौरान प्रायोगिक विद्यालयों के परीक्षा परिणाम उत्तीर्ण प्रतिशत

कक्षा	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
10	81	93	98	92
12 (विज्ञान)	78	85	97	94
12 (कला)	80	100	97	-
12 (वाणिज्य)	100	84	96	-
12 (व्यावसायिक)	67	92	100	-
12 (मानविकी)	-	-	-	83

- हिन्दी शिक्षण संदर्शिका (फोटोप्रति)
- ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन कन्टेन्ट एनरिचमेंट इन एकाउन्टेंसी (+2 अध्यापकों के लिए शैक्षिक धारा) (फोटोप्रति)
- उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान विषय में मुख्य संदर्भ व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण हेतु नील पत्र प्रश्न पत्र की रूपरेखा निर्माण संदर्भ सामग्री (फोटोप्रति)
- डिज़ाइनिंग ए शॉर्ट टर्म इनसर्विस प्रोग्राम इन इकोनॉमिक्स फॉर सेकण्डरी क्लासिस एंड डेवलपिंग रेलीवेन्ट इंस्ट्रक्शनल मेटीरियल्स (फोटोप्रति)
- ट्रेनिंग ऑफ हैड मास्टर्स इन इफैक्टिव मैनेजमेंट ऑफ एकाडिमिक फंक्शनिंग इन प्राइमरी स्कूल्स (फोटोप्रति)
- वर्क एक्सपीरियंस/एस.यू.पी.डब्ल्यू. एक्टीविटीज़ (फोटोप्रति)
- डेवेलपमेन्ट ऑफ ट्रेनिंग पैकेज फॉर डिज़ाइनिंग ऑफ ब्लूप्रिंट एण्ड सेटिंग ऑफ क्वेसचन पेपर फॉर के.आर.पीज़. इन साइंस एट सेकण्डरी स्टेज ऑफ हरियाणा स्टेट (फोटोप्रति)

- डेवेलपमेन्ट ऑफ कन्टेन्ट एनरिचमेन्ट पैकेज एंड ट्रेनिंग ऑफ के.आर.पीज़. इन कैमिस्ट्री एट +2 लेवल फॉर राजस्थान स्टेट (फोटोप्रति)
- ज्यॉग्राफी ट्रेनिंग ऑफ के.आर.पीज़. इन टीचिंग सोशल साइंसेज़ एट अपर प्राइमरी लेवल (फोटोप्रति)
- बीजगणित शिक्षण एक अभिनव उपागम (फोटोप्रति)
- ट्रेनिंग ऑफ एस.आई.ई. परसोनल ऑन इवैल्युएशन ऑफ इनसर्विस ट्रेनिंग प्रोग्राम (फोटोप्रति)
- मैथेमेटिक्स एट सीनियर सेकण्डरी लेवल (फोटोप्रति)
- क्रियापरक शिक्षण प्रशिक्षण मंजूषा हिंदी गणित कक्षा 1 और 2 (फोटोप्रति)
- ट्रेनिंग पैकेज फॉर सोशल साइंस टीचर्स (ज्यॉग्राफी) (फोटोप्रति)
- ट्रेनिंग पैकेज ऑन डायगनोस्टिक टेस्टिंग इन साइंस एंड मैथेमेटिक्स एट अपर प्राइमरी लेवल (फोटोप्रति)
- ट्रेनिंग पैकेज फॉर कन्टिन्यूवस इवैल्युएशन एंड वर्क एक्सपीरिएंस फॉर प्राइमरी स्कूल (फोटोप्रति)

क्षे.शि.सं., भोपाल

- डेवलपमेंट ऑफ ट्रेनिंग पैकेज फॉर डी.आई.ई.टी. फैकल्टी इन दि एरिया ऑफ स्पेशल एजुकेशन (हिन्दी) (फोटोप्रति)
- इनसर्विस ट्रेनिंग मैटीरियल्स एंड टीचर्स गाइड इन बुक कीपिंग एंड एकाउन्टेंसी फॉर +2 लेवल (हिन्दी) (फोटोप्रति)
- ए ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर दि टीचर्स ऑफ इन्टीग्रेटिड एजुकेशन स्कूल्स इन स्पेशल एजुकेशन (फोटोप्रति)
- ओरियन्टेशन ऑफ की रिसोर्स परसन्स ऑफ गुजरात स्टेट इन सांइस एट सेकण्डरी लेवल (फोटोप्रति)
- ट्रेनिंग प्रोग्राम इन पॉपुलेशन एजुकेशन फॉर दि डी.आई.ई.टी. परसोनल ऑफ गुजरात स्टेट (फोटोप्रति)
- ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर रिसोर्स परसन्स इन इंटीग्रेटिड एजुकेशन फॉर दि डिसएबल्ड चिल्ड्रन (फोटोप्रति)
- ओरियंटेशन ऑफ की रिसोर्स परसन्स ऑफ गोवा इन एसेंशियल स्किल्स ऑफ ज्यॉग्राफी एट सेकण्डरी लेवल (फोटोप्रति)
- डेवलपमेंट ऑफ गाइडलाइन्स फॉर ओरल टीचिंग फॉर नॉलिज (इंग्लिश) टीचर्स एट सेकण्डरी लेवल (फोटोप्रति)
- आइडेंटिफिकेशन ऑफ थीम्स फॉर प्रोजेक्ट वर्क एंड डेवेलपमेंट ऑफ प्रोपोज़ल इन कामर्स एट दि सीनियर सेकण्डरी लेवल (फोटोप्रति)
- ट्रेनिंग पैकेज इन टीचिंग स्ट्रेटजीस ऑफ उर्दू फॉर टीचर्स एट प्राइमरी लेवल (फोटोप्रति)
- मॉडल क्वेसचन पेपर्स इन हिस्ट्री एट +2 लेवल (फोटोप्रति)
- डेवलपमेन्ट ऑफ स्ट्रेटजीस टु रिमूव जैन्डर बायस इन एजुकेशनल प्रोसेसिस इन प्राइमरी स्टेज ऑफ एजुकेशन इन मध्य प्रदेश (फोटोप्रति)
- हैंडबुक ऑन यूज़ ऑफ कम्प्यूटर फॉर डी आई ई टी फैकल्टी (फोटोप्रति)
- डेवलपमेन्ट ऑफ ट्रेनिंग पैकेज ऑन पेपर सेटिंग इन कैमिस्ट्री ऑफ सीनियर सेकण्डरी लेवल (फोटोप्रति)
- इनवायरनमेन्ट बेस्ड इन्नोवेटिव मैटीरियल-ग्लोबल क्लाइमेटिक चेंजिस (फोटोप्रति)
- डेवलपमेन्ट ऑफ ट्रेनिंग पैकेज ऑन पेपर सेटिंग इन बॉयोलोजी एट सीनियर सेकण्डरी लेवल (फोटोप्रति)
- टूल्स फॉर इवेल्युएशन ऑफ ब्लॉक रिसोर्स सेन्टर्स एंड क्लस्टर रिसोर्स सेन्टर्स टु डी.पी.ई.पी. डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ महाराष्ट्र (फोटोप्रति)
- टीचर्स ट्रेनिंग पैकेज ऑफ डायगनोस्टिक टेस्टिंग इन मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी क्लासिस (फोटोप्रति)

क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर

- डेवलपमेन्ट ऑफ ट्रेनिंग मेथोडोलोजी ऑन कान्सेप्ट सेन्टर्ड टीचिंग एंड एक्विज़िशन ऑफ सब्जेक्ट स्पेसीफिक स्किल्स इन बॉयोलोजी एट + लेवल (डी टी पी)
- डेवलपमेन्ट ऑफ ए ट्रेनिंग मैथोडोलोजी ऑन कान्सेप्ट सेन्टर्ड टीचिंग एंड एक्विजिशन ऑफ सब्जेक्ट स्पेसिफिक स्किल्स इन बॉयोलोजी एट +2 लेवल (फेस I: आइडेंटिफिकेशन) (डी.टी.पी.)
- डेवलपमेन्ट ऑफ रिमीडियल मैटीरियल्स इन मैथेमेटिक्स बेस्ड इन दि एनालिसिस ऑफ कॉमन एरर्स कमिटिड बाई स्टूडेन्ट्स इन दि हायर सेकण्डरी मैथेमेटिक्स इग्ज़ैमिनेशन कंडक्टिड बाई सी.एच.एस.ई. (उड़ीसा) (डी.टी.पी.)

- न्यू डाइमेन्शन ऑफ साइंस करीकुलम इन ऑपरेशनल एप्रोच
- रिव्यू ऑफ मैथमेटिक्स टेक्स्टबुक्स ऑफ क्लासिस-1 एंड 2 ऑफ उड़ीसा एंड डेवलपमेंट ऑफ इग्ज़ेम्प्लर मैटीरियल्स (डी टी पी)
- डायग्नोसिस ऑफ लर्निंग डिफिकल्टीज़ ऑफ प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रन इन मैथेमेटिक्स (डी टी पी)
- डायग्नोस्टिक टैस्टिंग एंड रिमीडियल पैकेज इन मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी क्लासिस (डीटीपी)
- इफैक्ट्स ऑफ मास्टरी लर्निंग स्ट्रेटजी ऑन अटेनमेन्ट ऑफ सलेक्टिड कॉमपिटेन्सीज़ इन मैथेमेटिक्स ऑफ क्लासिस 1 और 2 (डी.टी.पी.)
- ओरियन्टेशन ऑफ स्टेट लेवल रिसोर्स पर्संस इन आई.ई.डी.सी. स्कीम फॉर वेस्ट बंगाल, बिहार एंड उड़ीसा (डी.टी.पी.)
- इफैक्ट ऑफ ट्रेनिंग ऑफ पैडागोजिकल रीन्यूअल इन दि कानटेक्स्ट ऑफ डी.पी.ई.पी. इंटरवेन्शन्स ऑफ कांपीटेन्स ऑफ प्राइमरी टीचर्स ऑफ उड़ीसा (डी.टी.पी.)
- डेवलपमेन्ट ऑफ सेल्फ इंस्ट्रक्शनल ट्रेनिंग मैटीरियल्स फॉर प्राइमरी टीचर्स ऑफ उड़ीसा (डी.टी.पी.)
- रिव्यू ऑफ दि बुक, इनटाइटल्ड आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास की रचना प्रक्रिया, समीक्षा
- बिहार के ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के संकाय सदस्यों का प्राथमिक विद्यालय में हिन्दी शिक्षण सम्बन्धी अभिज्ञान (फोटोप्रति)
- ओरियन्टेशन ऑफ फैकल्टी मेम्बर्स ऑफ डी.आई.ई.टीज़. लोकेटिड इन बिहार ऑन टीचिंग ऑफ हिन्दी इन प्राइमरी स्कूल्स (डी.टी.पी.)
- डेवलपमेन्ट ऑफ स्ट्रेटजीज़ फॉर आइडेंटिफिकेशन एंड रिमीडिएशन ऑफ एजुकेशनल बेरियर्स ऑफ माइल्ड डिसएबल्ड चिल्ड्रेन इन डी.पी.ई.पी. डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ उड़ीसा (डी.टी.पी.)
- एनालिसिस ऑफ साइंस टेक्स्टबुक्स ऑफ उड़ीसा स्टेट फॉर क्लासिस 6, 7 एंड 8 टु आइडेंटिफाई हार्ड कानसेप्ट्स फॉर डेवलपिंग मैटीरियल्स फॉर कान्सेप्ट सेन्टर्ड टीचिंग एंड इनकल्केशन ऑफ साइंटिफिक स्किल्स रिलेटिड टु साइंस अमंग लर्नर्स (डी.टी.पी.)

क्षे.शि.सं., मैसूर

- ट्रेनिंग पैकेज फॉर टीचर एजुकेशन : मल्टी-लेवल टीचिंग इन मल्टी-ग्रेड स्कूल्स (कम्प्यूटर प्रिंट)
- मैनुअल ऑफ लैबोरेट्री एक्सरसाइज़ इन बॉयोलोजी फॉर हायर सेकण्डरी क्लासिस इन पांडिचेरी (कम्प्यूटर प्रिंट)
- ट्रेनिंग ऑफ टीचर एजुकेटर्स इन हैल्थ एंड फिज़ीकल एजुकेशन (कम्प्यूटर प्रिंट)
- ए रिपोर्ट ऑन दि ओरियन्टेशन प्रोग्राम इन एडोलसेन्स एजुकेशन फॉर दि फैकल्टीज़ ऑफ डी.आई.एल. ई.टीज़. एंड सी.टी.ई. ऑफ कर्नाटक एंड केरल (कम्प्यूटर प्रिंट)
- ओरियन्टेशन प्रोग्राम फॉर दि पी.जी.टीज़. इन मैथेमेटिक्स ऑफ नवोदय विद्यालय समिति, न्यू दिल्ली (कम्प्यूटर प्रिंट)
- एनरिचमेन्ट मैटीरियल्स इन मैथेमेटिक्स फॉर सीनियर सैकण्डरी टीचर्स (कम्प्यूटर प्रिंट)
- रिपोर्ट ऑफ पापुलेशन एजुकेशन वीक (कम्प्यूटर प्रिंट)
- ब्रिज कोर्स मैटीरियल्स इन मैथेमेटिक्स फॉर सेकण्डरी स्कूल टीचर्स ऑफ केरल प्रोमोटिड फ्रॉम अपर प्राइमरी स्कूल्स (कम्प्यूटर प्रिंट)
- डेवलपमेंट ऑफ क्वेसचन बैंक इन बायोलोजी एट हायर सेकंडरी लेवल ऑफ साउदर्न रीजन (कम्प्यूटर प्रिंट)
- डेवलपमेन्ट ऑफ क्वेसचन बैंक इन फिज़िक्स एट हायर सेकण्डरी लेवल ऑफ साउदर्न रीजन (कम्प्यूटर प्रिंट)
- डेवलपमेन्ट ऑफ डिसआर्डर्स, अर्ली आइडेंटिफिकेशन एंड इन्टरवेन्शन (मल्टी-डिसीप्लीनेरी अप्रोच) (कम्प्यूटर प्रिंट)
- डेवलपमेन्ट ऑफ ए डिज़ाइन एंड टूल्स फॉर रिसर्च स्टडी ऑन अवेयरनेस एंड एटीच्यूड टु एडोलसन्स एजुकेशन अमंग डी.एम.एस. स्टूडेन्ट्स (कम्प्यूटर प्रिंट)

उत्तर-पूर्वी क्षे.शि.सं., शिलांग

- पर्सपैक्टिव्स ऑफ स्कूल एजुकेशन इन दि नार्थ-ईस्टर्न स्टेट्स (साइक्लोस्टाइल)
- एनुअल रिपोर्ट – अप्रैल 1998–मार्च 1999 (फोटोप्रति)।

व्यावसायिक शिक्षा

विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर व्यावसायिक शिक्षा में सुधार करना एन.सी.ई.आर.टी. का एक प्रमुख सरोकार रहा है। पंडित सुंदरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस. सी.आई.वी.ई.), भोपाल एन.सी.ई.आर.टी. का एक घटक है और व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास की एक शीर्षस्थ राष्ट्रीय संस्था है। यह भारत में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय परियोजना का केन्द्र भी है, जिसका संचालन यूनेस्को द्वारा किया जाता है। यह केन्द्रीय और राज्य सरकारों को मानव संसाधन विकास मंत्रालय और व्यावसायिक शिक्षा की संयुक्त परिषद् की तकनीकी शाखा के रूप में व्यावसायिक शिक्षा और कार्यानुभव कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के बारे में सलाह और मदद प्रदान करता है।

विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर व्यावसायिक शिक्षा में सुधार करना एन.सी.ई.आर.टी. का एक प्रमुख सरोकार रहा है। पंडित सुंदरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल एन.सी.ई.आर.टी. का एक घटक है और व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास की एक शीर्षस्थ राष्ट्रीय संस्था है। यह भारत में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय परियोजना का केन्द्र भी है, जिसका संचालन यूनेस्को द्वारा किया जाता है। पी.एस.एस.सी. आई.वी.ई. का मुख्य उद्देश्य विभिन्न व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों को अनुसंधान और विकास तथा तकनीकी सहायता उपलब्ध कराना है। यह केन्द्रीय और राज्य सरकारों को मानव संसाधन विकास मंत्रालय और व्यावसायिक शिक्षा की संयुक्त परिषद् की तकनीकी शाखा के रूप में व्यावसायिक शिक्षा और कार्यानुभव कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के बारे में सलाह और मदद प्रदान करता है। पी.एस.एस.सी. आई.वी.ई. व्यावसायिक शिक्षा की औपचारिक और अनौपचारिक प्रणाली में पाठ्यचर्या विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मार्गदर्शन, सूचनाओं का प्रचार-प्रसार, विस्तार, अनुसंधान, निगरानी और मूल्यांकन तथा परामर्शकारी सेवाएं प्रदान करने का कार्य करता है। यह कार्यक्रमों की गुणवत्ता के मानदंड को ध्यान में रखते हुए प्रमाणपत्रों की समतुल्यता स्थापित करने एवं व्यावसायिक संस्थानों तथा कार्यक्रमों को मान्यता प्रदान करने, संबंधित और अन्य संगठनों के स्वैच्छिक सहयोग के आधार पर व्यावसायिक सूचना प्रणाली और सेवाओं के राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क को बढ़ावा देने तथा सूचनाओं के प्रभावशाली प्रसार को सुगम बनाने तथा व्यावसायिक शिक्षा व मानव संसाधन विकास के अंतर्राष्ट्रीय पहलुओं का सतत् ध्यान रखते हुए कार्य करता है। वर्ष 1999-2000 के दौरान व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में किए गए मुख्य कार्यक्रम/क्रियाकलाप निम्नलिखित हैं:

अनुसंधान

व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में आयोजित निम्नांकित परियोजना अध्ययन जारी हैं:

- कुछ राज्यों में सामान्य बेसिक पाठ्यक्रमों के कार्यान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन
- राज्यों में व्यावसायिक मार्गदर्शन का निर्देश चिह्न (बैंचमार्क) सर्वेक्षण
- भारत में व्यापार और वाणिज्य आधारित पाठ्यक्रमों के व्यावसायिक शिक्षा के उत्तीर्ण उम्मीदवारों की स्थिति का अध्ययन
- ग्रामीण तथा नगरीय समाजों में लड़कियों की वृत्तिक आकांक्षाएं और व्यावसायिक शिक्षा
- माध्यमिक व्यावसायिक विद्यालयों में विद्यालय उद्योग संयोजन की स्थापना-क्रियात्मक अनुसंधान
- चुनिंदा राज्यों में व्यावसायिक पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री के मानदण्ड और गुणवत्ता का तुलनात्मक अध्ययन
- कृषि में व्यावसायिक अध्यापन अधिगम की स्थिति और प्रभाविता का तुलनात्मक अध्ययन
- महाराष्ट्र के कुछ व्यावसायिक संस्थानों के विद्यालय-उद्योग संयोजन पर केस अध्ययन
- पंजाब में व्यावसायिक शिक्षा के छात्रों के कार्यनिष्पादन पर (ओ.जे.टी.) का प्रभाव
- महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण में गृह विज्ञान के व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का महत्व
- 10+2 स्तर के विद्यार्थियों में व्यावसायिक कौशलों के विकास में अध्यापक की भूमिका

विकास

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की पाठ्यचर्या का विकास और संशोधन

वनस्पति उपज और प्रबन्धन की पाठ्यचर्या, सामान्य स्वागती, कार्यालय प्रबन्धन, आशुलिपि, मत्स्य पालन, बीज उत्पादन और नेत्र तकनीशियन पाठ्यक्रमों में संशोधन किए गए। कंप्यूटर की सहायता से आरेखण और पांडुलेखन, कम लागत के आवास, समुदाय पर आधारित पुनर्वासन (समुदाय पुनर्वासन सहायक) पर नवीन पाठ्यचर्या और (1) स्वास्थ्य और पैरा-चिकित्सा, (2) गृह विज्ञान के व्यावसायिक पाठ्यचर्या सहित पर्यावरणजन्य घटकों के एकीकरण पर पाठ्यचर्या के एक परिशिष्ट का विकास किया गया। माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों

के छात्रों हेतु व्यावसायिक मार्गदर्शन और परामर्श पर एक पुस्तिका का विकास किया गया। पाइलट-अध्ययन के पश्चात् इसे अन्तिम रूप दिया जाएगा।

राष्ट्रीय व्यावसायिक योग्यता (एन.वी.क्यू.) प्रणाली का विकास

राष्ट्रीय व्यावसायिक योग्यता प्रणाली के अंतर्गत बड़ी संख्या में उद्यान विज्ञान, रेशम उत्पादन और विद्युत अभियांत्रिकी में लघु माड्यूल पाठ्यक्रमों का विकास किया गया और फसल उत्पाद एवं भवन रख-रखाव के अंतर्गत विकसित माड्यूलों की समीक्षा की गई।

व्यावसायिक और पूर्व व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए अनुदेशी सामग्री का विकास

व्यावसायिक शिक्षा पर अनुदेशी सामग्री की पंद्रह पांडुलिपियाँ जिनमें अधिकांश कक्षा 11 और 12 की पाठ्यपुस्तकें तथा पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा पर नौ पांडुलिपियों का विकास किया गया। ये सभी प्रकाशनाधीन हैं।

प्रशिक्षण

मुख्य कार्यकर्ताओं के लिए अल्पावधि का प्रशिक्षण

मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गोवा, उड़ीसा, दिल्ली तथा जम्मू और कश्मीर के 10 मुख्य कार्यकर्ताओं के लिए व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन से संबंधित संकल्पनात्मक स्पष्टीकरण हेतु अल्पावधि का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम

व्यावसायिक विद्यालयों के अनुशिक्षण में सुधार के लिए बारह अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित किए गए: क्रय और भण्डारण, घरेलू विद्युत उपकरणों की मरम्मत और अनुरक्षण, केरल के विद्यालयों में उत्पादन सहित प्रशिक्षण केन्द्रों (पी.टी.सी.) की स्थापना, कम्प्यूटर यूनिक्स प्रणाली प्रशासन, कम्प्यूटर तकनीक, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और हरियाणा के लिए व्यावसायिक मार्गदर्शन और परामर्श, उद्यम विकास, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, गुजरात के जनजातीय कल्याण विभाग के अध्यापकों हेतु व्यावसायिक मार्गदर्शन और परामर्श, विकलांगों के लिए कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रशिक्षक/अध्यापकों हेतु उद्यम विकास, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति तथा अल्पसंख्यक वर्ग के संस्थानों के अध्यापकों हेतु एक प्रशिक्षण कार्यक्रम। इन कार्यक्रमों में कुल 285 अध्यापक प्रशिक्षित हुए।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली के अनुरोध पर विभिन्न राज्यों के केन्द्रीय विद्यालयों के 19 कार्यानुभव अध्यापकों हेतु जातिगत व्यावसायिक पाठ्यक्रम पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

नवसाक्षर जनजातीय/ग्रामीण महिलाओं का व्यावसायिक प्रशिक्षण

केंद्रीय कृषि अभियांत्रिक संस्थान (सी.आई.ए.ई.), भोपाल के सहयोग से नवसाक्षर जनजातीय/ग्रामीण महिलाओं हेतु 25 दिन का व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इनमें से 10 प्रतिभागियों के एक समूह को ट्रेक्टर ऑपरेशन, देखभाल और अनुरक्षण तथा बॉयोगैस प्लांट अनुरक्षण नामक दो क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया गया। अन्य 15 प्रतिभागियों ने भी गृह और कृषि कचरे के उपयोग तथा बॉयोगैस प्लांट अनुरक्षण के दो क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

अभिविन्यास कार्यक्रम

वर्ष के दौरान आठ अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें से दो आंध्र प्रदेश और दिल्ली के मुख्य कार्यकर्ताओं हेतु व्यावसायिक शिक्षा पर, एक उत्तर-पूर्व राज्यों हेतु व्यावसायिक मार्गदर्शन और परामर्श पर, एक-एक गैर सरकारी संगठनों और अल्संख्यक वर्ग की शिक्षा और अ.जा./अ.ज.जा. के मुख्य कार्यकर्ताओं से संबंधित संस्थानों तथा हरियाणा और आंध्र प्रदेश के राज्यों के व्यवसाय और वाणिज्य के अध्यापकों हेतु दो अभिविन्यास कार्यक्रम थे।

विस्तार

राष्ट्रीय संगोष्ठी/राष्ट्रीय सम्मेलन/राष्ट्रीय बैठकें

(1) मत्स्य पालन, दुग्ध उत्पादन, कुक्कुट पालन और सुअर पालन, (2) अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी, (3) व्यापार
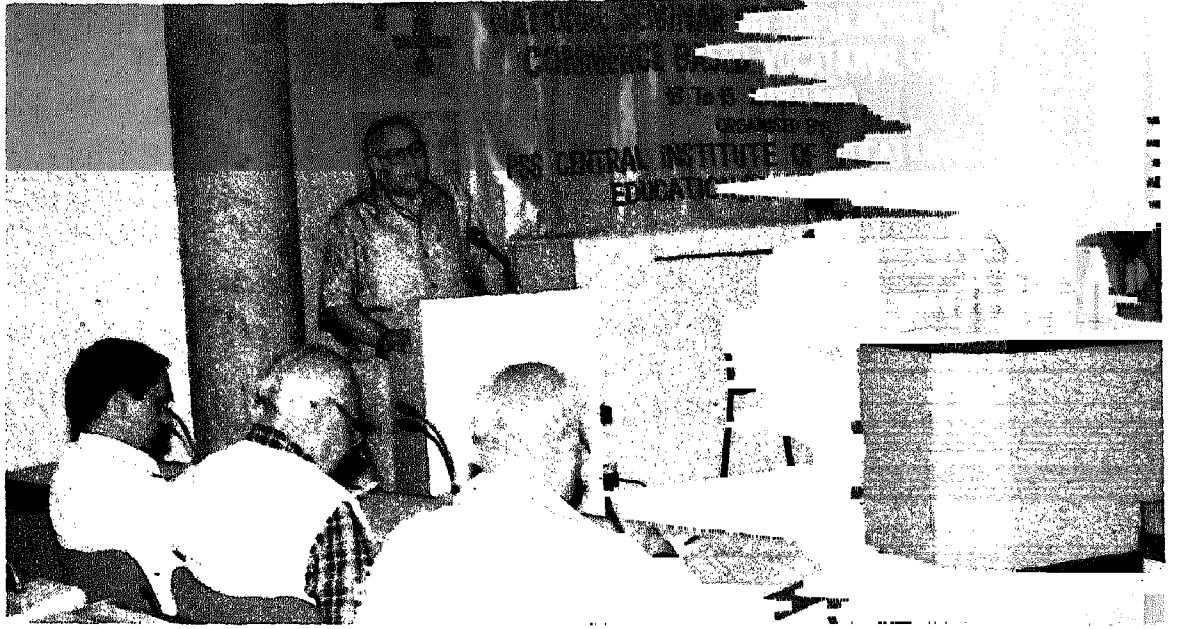
वाणिज्य आधारित व्यावसायिक शिक्षा को लोकप्रिय बनाने हेतु आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी।

और वाणिज्य से संबंधित व्यावसायिक पाठ्यक्रम और (4) यात्रा और पर्यटन प्रबन्धन। व्यावसायिक पाठ्यक्रम को लोकप्रिय बनाने के लिए छह राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ/बैठकें आयोजित की गईं। एक-एक राष्ट्रीय संगोष्ठी, विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा : परिचर्चा दस्तावेज प्रारूप और वी.ई.पी. की स्थिति के मूल्यांकन पर विचार-विमर्श करने हेतु आयोजित की गई। सिओल में आयोजित द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा कांग्रेस की प्रस्तावना के रूप में भारतीय परिप्रेक्ष्य में नई सहस्राब्दि के लिए व्यावसायिक शिक्षा नीति के स्तर के निर्धारण हेतु 'शिक्षा का व्यावसायीकरण : नई सहस्राब्दि के लिए परिप्रेक्ष्य' विषय पर आई.आई.टी., नई दिल्ली में राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।

व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पुरस्कार

व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से व्यावसायिक शिक्षा के प्रति समर्पित व्यक्तियों को प्रोत्साहित करने और अन्य व्यक्तियों के बीच उनकी प्रतिष्ठित पहचान के लिए पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. हर साल पुरस्कार कार्यक्रम आयोजित करती है। यह कार्यक्रम 5 जुलाई को संस्थान के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित किया जाता है। इस वर्ष यह कार्यक्रम 17-11-1999 को तकनीकी अध्यापक प्रशिक्षण (टी.टी.टी.आई.) के सम्मेलन कक्ष, भोपाल में हुआ। इस अवसर पर निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए गए:

- सर्वोत्तम उपार्जनकर्ता पुरस्कार (प्रत्येक राज्य से दो-राज्य में उच्चतर माध्यमिक व्यावसायिक शिक्षा के परीक्षाफल के आधार पर)

प्रो. एम.एस. सोढा पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. का सर्वोत्तम उपार्जनकर्ता पुरस्कार प्रदान करते हुए।

- सर्वोत्तम व्यावसायिक अध्यापक पुरस्कार (प्रत्येक राज्य से एक)
- सर्वोत्तम संस्था पुरस्कार (प्रत्येक राज्य में से एक संस्थान, जो +2 व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्रस्तुत करता है)
- सर्वोत्तम विद्यालय उद्योग संयोजन पुरस्कार (प्रत्येक राज्य के लिए एक विद्यालय और उद्योग को भी दिया गया)।

पुरस्कृत व्यक्तियों को स्मृति चिह्न और प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। छात्रों और अध्यापकों को नकद पुरस्कार भी दिए गए। यह अनुभव किया गया कि ये पुरस्कार देश में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के गुणात्मक विस्तार में योगदान देंगे।

इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन

संस्थान ने अर्द्धवार्षिक पत्रिका का 'इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन' नामक शीर्षक से प्रकाशन प्रारंभ किया है। यह पत्रिका व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े सभी लोगों को शोध आलेखों, लेखों, समीक्षा और सार लेखन के लिए मंच प्रदान करती है। समीक्षाधीन वर्ष में एक संयुक्त अंक का प्रकाशन हो चुका है और दूसरा संयुक्त अंक प्रकाशनाधीन है।

व्यावसायिक शिक्षा का त्रैमासिक बुलेटिन

संस्थान में व्यावसायिक शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के लिए एक त्रैमासिक बुलेटिन-'व्यावसायिक शिक्षा' का प्रकाशन करती है। बुलेटिन की प्रतियाँ राज्य के मुख्य कार्यकर्ताओं सहित देश के 4000 विद्यालयों को भेजी जाती हैं। इस वर्ष बुलेटिन के दो अंकों का संयुक्त रूप से प्रकाशन किया गया और दो अंकों (हिन्दी/अंग्रेज़ी अनुवाद) का एक अन्य संयुक्त अंक प्रकाशनाधीन है।

प्रकाशनों की प्रदर्शनियाँ

व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के व्यापक प्रचार के लिए, प्रत्येक वर्ष पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. अपने प्रकाशनों की प्रदर्शनी आयोजित करती है। इस वर्ष प्रकाशनों की दो प्रदर्शनियाँ, एक पी.एस.एस.सी. आई.वी.ई. पुरस्कार समारोह के अवसर पर, टी.टी.टी.आई., भोपाल में और दूसरी राष्ट्रीय सम्मेलन आई.आई.टी., दिल्ली में आयोजित की गईं। संस्थान द्वारा मुख्य कार्यकताओं के कार्यक्रम के अल्पकालीन प्रशिक्षण के दौरान भी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

गैर-सरकारी संगठनों का मूल्यांकन

मा.सं.वि. मंत्रालय के संयुक्त मूल्यांकन दल के रूप में, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. ने केन्द्रीय रूप से आयोजित योजना के अंतर्गत नवाचारी व्यावसायिक कार्यक्रमों का संचालन करने के लिए मा.सं.वि. मंत्रालय से वित्तीय सहायताप्राप्त बिहार, विशेषकर पटना और वैशाली ज़िलों के गैर-सरकारी संगठनों का मूल्यांकन किया और मा.सं.वि. मंत्रालय को रिपोर्ट प्रस्तुत की। मा.सं.वि. मंत्रालय से वित्तीय सहायता के लिए गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रस्तुत अनेक प्रस्तावों का भी मूल्यांकन किया और मंत्रालय द्वारा अनुदान-सहायता हेतु उनकी उपयुक्तता पर अपने मत मा.सं.वि. मंत्रालय को प्रस्तुत किए।

अन्य क्रियाकलाप

वी.ई.पी. के प्रोत्साहन हेतु राज्य के मुख्य कार्यकर्ताओं से गहन विचार-विमर्श

हिमाचल प्रदेश, मेघालय, उत्तर प्रदेश और उड़ीसा राज्यों ने शिक्षा मंत्री, राज्य शिक्षा विभाग के अधिकारियों और मुख्य कार्यकर्ताओं के साथ व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं पर गहन विचार-विमर्श करने के लिए दौरा किया। उन्होंने पी.एस.एस.सी. आई.वी.ई. की भूमिका और कार्य, देश में वी.ई.पी. की वर्तमान स्थिति और संबंधित राज्यों की कार्यान्वयन समस्याओं पर वार्तालाप किया।

राज्यों को परामर्शकारी सेवाएँ

संस्थान विचार-विमर्श और दौरों के द्वारा व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं पर राज्यों/सं.शा. प्रदेशों के लिए परामर्शकारी सेवाएँ उपलब्ध कराता है:

- मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री के सलाहकार के साथ बैठक में माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा को लागू करने की संभावना की खोज।

- मध्य प्रदेश सरकार द्वारा व्यावसायिक शिक्षा पर समिति का गठन।
- मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश के राज्यों ने सामान्य आधार पाठ्यक्रम (जी.एफ.सी.) के पाठ्यविवरण/पाठ्यचर्या के विकास में सहायता की। असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा परिषद्, गुवाहाटी कृषि, व्यापार व वाणिज्य, अभियांत्रिकी व प्रौद्योगिकी और गृह विज्ञान आदि क्षेत्रों के 8 पाठ्यक्रमों में परिशोधन कर रहा है।
- मध्य प्रदेश सरकार को व्यावसायिक शिक्षा पर उनकी समिति और मिडिल स्तर पर व्यावसायिक शिक्षण आरम्भ करने की अन्वेषी सम्भावना पर परामर्श भी प्रदान किया।

व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में क्षेत्रीय स्तर का योगदान

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर ने पंजाब और हरियाणा के मुख्य शीर्षस्थ व्यक्तियों को गृह विज्ञान, कृषि, वाणिज्य और विज्ञान के क्षेत्रों में प्रारंभिक स्तर पर कार्यानुभव/एस.यू.पी.डब्ल्यू. क्रियाकलापों को प्रारंभ करने के लिए प्रशिक्षित किया और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक लेखाशास्त्र की अध्यापन कार्यप्रणाली पर प्रशिक्षण संबंधी सामग्री का विकास किया।

वर्ष 1999-2000 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- क्वार्टर्ली बुलेटिन - वोकेशनल एजुकेशन, खंड-5, अंक 3 और 4 (संयुक्त अंक)
- क्वार्टर्ली बुलेटिन-वोकेशनल एजुकेशन, खंड-6, अंक 1 और 2 (संयुक्त अंक) (मुद्रणाधीन)
- इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन, खंड 2, सं. 2 और खंड 3, सं. 1 (संयुक्त अंक)
- इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन, खंड 3, सं. 2 और खंड 4, सं. 1 (संयुक्त अंक) (मुद्रणाधीन)
- वोकेशनलाइज़ेशन ऑफ एजुकेशन : पर्सपैक्टिव्स फॉर दि न्यू मिलेनियम- दि चैलेंज

व्यावसायिक पाठ्यचर्या

- कंपीटेंसी बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑन फूड प्रिज़र्वेशन एंड प्रोसेसिंग (हिन्दी)
- कंपीटेंसी बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑन इन्शयोरेंस
- कंपीटेंसी बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑन टैक्सेशन प्रैक्टिस
- गाइडलाइन्स ऑन इस्टैबलिशमेन्ट ऑफ प्रोडक्शन-कम-ट्रेनिंग सेन्टर्स इन दि स्कूल्स रनिंग 10+2 वोकेशनल सेन्टर्स (हिन्दी)
- कंपीटेंसी बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑन एक्स-रे टैक्नीशियन
- कंपीटेंसी बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑन मैडिकल लैबोरेट्री टैक्नीशियन
- कंपीटेंसी बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑन पर्चेज़िंग एंड स्टोर कीपिंग (मुद्रणाधीन)
- कंपीटेंसी बेस्ड वोकेशनल सर्विस करीकुलम ऑन ट्रांसपोर्ट सर्विस मैनेजमेंट (मुद्रणाधीन)
- कंपीटेन्सी बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑन ट्रेवल एंड टूरिज़्म टैक्नीक (मुद्रणाधीन)
- कंपीटेन्सी बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑन कमर्शियल गारमेन्ट डिज़ाइनिंग एंड मार्केटिंग (हिन्दी) (मुद्रणाधीन)
- कंपीटेन्सी बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑन डेयरी टैक्नोलोजी (हिन्दी) (मुद्रणाधीन)
- कंपीटेन्सी बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑन फिश प्रोसेसिंग टैक्नोलोजी (मुद्रणाधीन)
- लिस्ट ऑफ नॉन-फार्मल एंड फार्मल वोकेशनल कोर्सेज़

अनुदेशी सामग्री

व्यावसायिक शिक्षा

- डेयरी एनीमल मैनेजमेन्ट टैक्स्टबुक कक्षा 11
- फ्रूट प्रोडक्शन टैक्स्टबुक कक्षा 12
- कमर्शियल क्लोथिंग टैक्स्टबुक कक्षा 11
- बेसिक बेकरी टैक्स्टबुक कक्षा 11

- फूड प्रिज़र्वेशन टैक्नीक्स टैक्स्टबुक कक्षा 11 (फोटोप्रति)
- फूड पैकेजिंग टैक्स्टबुक कक्षा 11 (फोटोप्रति)
- एलीमेन्ट्स ऑफ सेल्समैनशिप टैक्स्टबुक कक्षा 11 (फोटोप्रति)
- एलीमेन्ट्स ऑफ मार्केटिंग टैक्स्टबुक कक्षा 11 (फोटोप्रति)
- पब्लिक हैल्थ एडमिनिस्ट्रेशन एंड हैल्थ स्टैटिस्टिक्स टैक्स्टबुक कक्षा 12 (फोटोप्रति)
- जनरल सेरिकल्चर टैक्स्टबुक कक्षा 11 (फोटोप्रति)
- मॅलबेरि कल्टीवेशन टैक्स्टबुक कक्षा 11 (फोटोप्रति)
- सिल्क वोर्म-सिल्क प्रोडक्शन टैक्नोलोजी टैक्स्टबुक कक्षा 12 (फोटोप्रति)
- सिल्क वोर्म-रिअरिंग टैक्स्टबुक कक्षा 12 (फोटोप्रति)
- एगरी बिज़नेस टैक्स्टबुक कक्षा 12(फोटोप्रति)
- एगरी बिज़नेस प्रैक्टिकल कक्षा 12 (फोटोप्रति)
- मैनुफेक्चर मैटीरियल एंड टैक्नोलोजी टैक्स्टबुक कक्षा 12 (फोटोप्रति)

पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा

- बॉयो-फर्टिलाइज़र (फोटोप्रति)
- मिल्क कन्फेक्शनरी (फोटोप्रति)
- शुगर कन्फेक्शनरी (फोटोप्रति)
- प्रेपरेशन ऑफ ब्रेड एंड अदर यीस्ट लीवंड प्रोडक्ट्स (फोटोप्रति)
- प्रेपरेशन ऑफ बिस्किट्स एंड कुकीज़ (फोटोप्रति)
- प्रिजर्वेशन ऑफ फ्रूट्स एंड वेजिटेबल्स यूज़िंग कैमिकल्स (फोटोप्रति)
- प्रिज़र्वेशन ऑफ फ्रूट्स एंड वेजिटेबल्स बाई ड्राईंग एंड डीहाइड्रेशन (फोटोप्रति)
- प्रिज़र्वेशन ऑफ फ्रूट्स एंड वेजिटेबल्स यूज़िंग शुगर (फोटोप्रति)
- प्रिज़र्वेशन ऑफ फ्रूट्स एंड वेजिटेबल्स यूज़िंग साल्ट, विनेगर एंड ऑयल (फोटोप्रति)
- इंस्ट्रक्शनल मैटीरियल्स ऑन सेरीकल्चर फॉर न्यू-लिटरेट्स (प्रकाशनाधीन)।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक शीर्षस्थ संस्थान के रूप में केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का मुख्य सरोकार आवश्यकताओं का मूल्यांकन, लक्ष्य समूह की रूपरेखा तैयार करना, श्रव्य व दृश्य कार्यक्रमों और अध्यापन सहायक सामग्री की रूपरेखा व विकास, शैक्षिक प्रौद्योगिकी की प्रक्रियाओं जैसे आलेख लेखन, मीडिया कार्यक्रमों का निर्माण और तकनीकी प्रचालन में राज्य स्तरीय कार्मिकों का प्रशिक्षण है। यह घटक अनुसंधान और मूल्यांकन, प्रलेखन और प्रचार-प्रसार से सम्बन्धित क्रियाकलापों को प्रारंभ करने के साथ-साथ शैक्षिक प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों और विकास में विभिन्न संगठनों को परामर्श देता है। मीडिया संसाधनों के कंप्यूटर डाटाबेस, अन्योन्यक्रिया संबंधी मल्टीमीडिया सहित श्रव्य और दृश्य कार्यक्रमों के विकास के लिए नई तकनीकों के साथ परीक्षण करता है।

एनसी ई आर टी के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में से एक है- विद्यालय स्तर पर देश में शिक्षा की वैकल्पिक प्रणाली के विकास के साथ-साथ शिक्षा में सुधार और प्रसार हेतु विशेषकर जन संचार माध्यम द्वारा शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना। शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक शीर्षस्थ संस्थान के रूप में केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का मुख्य सरोकार आवश्यकताओं का मूल्यांकन, लक्ष्य समूह की रूपरेखा तैयार करना, श्रव्य और दृश्य कार्यक्रमों और अध्यापन सहायक सामग्री की रूपरेखा व विकास, शैक्षिक प्रौद्योगिकी की प्रक्रियाओं जैसे आलेख लेखन, मीडिया कार्यक्रमों का निर्माण और तकनीकी प्रचालन में राज्य स्तरीय कार्मिकों का प्रशिक्षण है। यह घटक अनुसंधान और मूल्यांकन, प्रलेखन और प्रचार-प्रसार से सम्बन्धित क्रियाकलापों को प्रारंभ करने के साथ-साथ शैक्षिक प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों और विकास में विभिन्न संगठनों को परामर्श देता है। मीडिया संसाधनों के कंप्यूटर डाटाबेस, अन्योन्यक्रिया संबंधी मल्टीमीडिया सहित श्रव्य और दृश्य कार्यक्रमों के विकास के लिए नई तकनीकों के साथ परीक्षण करता है। वर्ष 1999-2000 के दौरान इस क्षेत्र में प्रारम्भ किए गए मुख्य कार्यक्रम और कार्यकलाप नीचे दिए गए हैं:

शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम

संस्थान में कक्षा 11 के छात्रों के लिए गणित की शृंखला, कला और हस्तकला शिक्षा जिसमें कला का प्रदर्शन, व्यावसायिक शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, मल्टीग्रेड अध्यापन, खेल-कूद, नवाचारी अध्यापक सृजनात्मक गतिविधियाँ और सांगीतिक वाद्ययंत्रों तथा मानवाधिकारों, बाल अधिकारों और शैशवकालीन शिक्षा में प्रसारण हेतु संस्थागत रूप में 181 ई.टी.वी. कार्यक्रमों का निर्माण किया गया। अन्य महत्वपूर्ण शृंखलाओं 'एक्सप्लोरिंग दि यूनिवर्स' और 'स्पेस साइंस' का निर्माण हो रहा है। 'हेमिस फैस्टीवल' पर एक कार्यक्रम और 'फ्रीडम फाइटर' शृंखला संपूर्ण होने वाली है।

आलेख डिज़ाइन

आलेखों का विकास, मीडिया कार्यक्रमों के शीघ्रता से निर्माण में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस वर्ष विभिन्न शृंखलाओं के अन्तर्गत तैयार किए गए ई.टी.वी. आलेख इस प्रकार हैं: 'एक्सप्लोरिंग दि यूनीवर्स' (माध्यमिक स्तर) के अंतर्गत ग्यारह, 'स्पेस साइंस और एक्सप्लोरेशन्स' (माध्यमिक स्तर) के अंतर्गत तीन, दि 'लिविंग प्लानेट-अर्थ' (माध्यमिक स्तर) के अंतर्गत दो, 'एनवायरनमेंट'

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित बच्चों के एक कार्यक्रम में सुविख्यात वैज्ञानिक प्रो. यशपाल।

के अन्तर्गत दो, 'क्रिएटिव मूवमैंट्स एंड म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट्स' के अन्तर्गत ग्यारह, 'वाटर एंड लाइफ' (प्राथमिक स्तर) शृंखला के अंतर्गत नौ, 'वाटर मोशन' पर तीन, 'ज्योग्राफी सीरीज़' के अन्तर्गत दो, 'होम साइंस' के क्षेत्र में पाँच, 'सेरीकल्चर एंड ड्रिप इरीगेशन' (कृषि विज्ञान) में छह, व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों हेतु व्यवसाय और वाणिज्य क्षेत्र में छह और अध्यापकों की समस्याओं पर प्रतिष्ठित अध्यापक प्रशिक्षकों की चर्चा पर आधारित 'समाधान' शृंखला के अंतर्गत नौ, 'एक-एक कदम आगे' नामक शीर्षक के अंतर्गत गिजुभाई वधेका का 'दिवास्वप्न' पर बारह और 'परफोर्मिंग आर्ट्स' व 'म्यूज़िकल इंस्ट्रूमेंट्स' पर चार-चार आलेखों के प्रारूप तैयार किए गए।

ई.टी.वी. और श्रव्य कार्यक्रमों का प्रसारण

तरंग

सी.आई.ई.टी. माध्यमिक और प्राथमिक स्तर पर छात्रों और अध्यापकों हेतु डी.डी.-1 पर 'तरंग' नामक शीर्षक से एक घंटा और 15 मिनट की शैक्षिक दूरदर्शन सेवा प्रदान कर रही है। विभिन्न वर्गों के लिए टेलीविजन प्रसारण का समय इस प्रकार है:

प्रसारण समय	लक्ष्य समूह
05.45 प्रात: से 06.00 प्रात:	अध्यापक (सप्ताह में सात दिन)
10.00 प्रात: से 10.30 प्रात:	माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक छात्र
10.30 प्रात: से 11.00 प्रात:	प्राथमिक विद्यालयी छात्र

ज्ञान दर्शन

मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा सूचना और प्रसारण मंत्रालय के माननीय मंत्रियों द्वारा 26 जनवरी, 2000 को उपग्रह शैक्षिक चैनल 'ज्ञान दर्शन' का परीक्षण प्रसारण किया गया। सी.आई.ई.टी. (एन.सी.ई.आर.टी.) ज्ञान दर्शन के परिचालन में सहभागी है और विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में ई.टी.वी. कार्यक्रमों हेतु एक नोडल एजेंसी है। संस्थान इस शैक्षिक चैनल पर चार घंटों के प्रसारण में से प्रतिदिन 6.30 सायं से 8.00 सायं तक डेढ़ घंटे की अवधि के लिए ई.टी.वी. कार्यक्रमों हेतु सॉफ्टवेयर का योगदान देता है। कुछ ही महीनों में इस चैनल से कार्यक्रमों का प्रसारण संभवत: बढ़ा कर 16 घंटे कर दिया जाएगा, ऐसी योजना बनाई जा रही है।

शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम।

उमंग

सी.आई.ई.टी. (एन.सी.ई.आर.टी.) 'उमंग' शीर्षक से आकाशवाणी पर श्रव्य कार्यक्रमों के लिए 10 मिनट के एक साप्ताहिक स्लॉट को पोषित कर रही है जो 195 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित होता है जबकि गत वर्ष में यह कार्यक्रम 10 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित होता था। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। आकाशवाणी के साथ एम.ओ.यू. को वर्ष 1999 से और आगे बढ़ाकर वर्ष 2001 तक कर दिया गया है। इस वर्ष संस्थान ने प्रसारण और गैर-प्रसारण दोनों के लिए 'राग रस बरसे' की शृंखला के अंतर्गत छोटे बच्चों/अध्यापकों हेतु राग/संगीत के अध्यापन पर 20 कार्यक्रमों सहित 61 श्रव्य कार्यक्रमों का निर्माण किया। निर्माण के क्षेत्र में अन्य महत्वपूर्ण कार्य, एक संयुक्त प्रयास के रूप में मा.सं.वि. मंत्रालय के राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान हेतु मिडिल विद्यालय बच्चों के लिए संस्कृत के अध्यापन पर कार्यक्रमों की शृंखला और 'उमंग' शीर्षक के अंतर्गत प्रसारण के लिए श्रव्य कार्यक्रमों के 16 आलेखों का निर्माण है।

प्रशिक्षण और संयोजन

सी.आई.ई.टी. शैक्षिक प्रौद्योगिकी के सभी पहलुओं विशेषकर आलेखों की रूपरेखा, निर्माण और निर्माणोत्तर तकनीकों (एनीमेशन और ग्राफिक्स, कैमरा प्रचालन और स्टूडियो प्रकाश, संपादन इत्यादि), स्टूडियो से संबंधित कार्य और प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करता है। संस्थान व्यावसायिक संस्थानों के छात्रों को औद्योगिक प्रशिक्षण भी देता है।

सी.आई.ई.टी. ने इस वर्ष दृश्य कार्यक्रमों हेतु अन्-रैखिक संपादन, नवीन विशेषतायुक्त जेनरेटर के प्रचालन और व्यावहारिक प्रयोग तथा डी एक्स सी-डी 30 पी स्टूडियो कैमरों और डी एफ एस 500 पी वी एफ 500 पी वी डब्ल्यू 800 पी संपादकीय उपकरणों के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक प्रचालन तथा अनुरक्षण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

सी.आई.ई.टी. ने पूर्वोत्तर राज्यों और उड़ीसा को डी.आई.ई.टी. के प्रौद्योगिकी संकाय के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी में 2 सप्ताह का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम, एस.आई.ई.टी. के कार्मिकों के लिए मल्टीमीडिया पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा एस.सी.ई.आर.टी., मणिपुर के लिए ई.टी. और उसके लक्ष्यार्थ पर 3 सप्ताह का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया।

विभिन्न महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों से संचार विभाग के स्नातकोत्तर छात्रों और वीडियोग्राफी के स्नातक छात्रों को उनके व्यावसायिक पाठ्यक्रम के भाग के रूप में औद्योगिक प्रशिक्षण हेतु संयोजित किया गया। राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान, अहमदाबाद के स्नातक छात्र सी.आई.ई.टी. के मल्टीमीडिया पैकेज पर एनीमेशन कार्य में सम्मिलित हुए। उन्होंने इस कार्य को इंटर्नशिप के लिए अपनी परियोजनाओं के एक भाग के रूप में लिया।

एस.आई.ई.टी.-सी.आई.ई.टी. समन्वय

क्रियाकलाप का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र, देश में सात एस.आई.ई.टीज़. के क्रियाकलापों में समन्वय और मार्गनिर्देशन से संबंधित है। सी.आई.ई.टी.-एस.आई.ई.टीज़. समन्वय समिति की बैठक 14 और 16 मार्च, 2000 को हुई जिसमें सात एस.आई.ई.टीज़. के निदेशकों, उत्पादन प्रभारी, अभियांत्रिकी प्रभारी और संपादकों ने भाग लिया। प्रत्येक एस.आई.ई.टी. ने उपकरण और मानवशक्ति के विवरण की स्थिति रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए उपायों पर विचार-विमर्श किया।

विस्तार कार्यकलाप

सी.आई.ई.टी. जापान की वीडियो लाइब्रेरी हेतु दक्षिण-पूर्व एशिया का केन्द्र है और सभी एन.एच.के. पुरस्कृत कार्यक्रमों के यू-मेटिक/बैटाकॉम कैसट प्राप्त करता है। संस्थान ने जापान, अमेरिका और जर्मनी में हुए अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक दृश्य समारोहों में भाग लिया तथा इसके ई.टी.वी. कार्यक्रमों में से एक 'रोज़ बदलता कैसे चाँद' (दि चेंजिंग मून) ने एन.एच.के. टोकियो समारोह में 'दि मायडा' पुरस्कार प्राप्त किया। यह शैक्षिक टी.वी. निर्माण में अपने नवीन दृष्टिकोण के लिए शैक्षिक दृश्य कार्यक्रमों की एक सुप्रसिद्ध प्रतियोगिता है। कठपुतलियों द्वारा कही गई कहानी पर आधारित एक अन्य कार्यक्रम को म्यूनिख, जर्मनी में 'वीडियो बार' के लिए चुना गया।

राजकोट, गुजरात में आयोजित 26वीं जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी में फोटोग्राफी और वीडियो कवरेज प्रदान की गई। 'बडिंग साइंटिस्ट्स' नामक शीर्षक से ई.टी.वी. कार्यक्रम की एक श्रृंखला प्रारंभ की गई जो चालू वर्ष सहित विभिन्न राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्रदर्शित प्रदर्शों पर आधारित है। चालू वर्ष की प्रदर्शनी में ई.टी.वी. कार्यक्रम निर्मित किया गया जिसका प्रसारण गुजराती और हिंदी दोनों में किया गया।

सह-संस्थानों जैसे राष्ट्रीय खुला विद्यालय और राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान के क्रियाकलापों में परामर्श और सहायता उपलब्ध कराई गई। संस्थान ने मूल्य शिक्षा के श्रव्य और दृश्य कार्यक्रमों की सटिप्पण ग्रंथ सूची तैयार करने हेतु शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग को सहयोग दिया।

संस्थान ने दृश्य कार्यक्रम का एक वृहत डाटाबेस विकसित किया है जिसमें सभी तकनीकी विवरण, स्थिर दृश्यों का एक सेट और एक मिनट की शो रील संचित है। सूचना की पुन: प्राप्ति की प्रक्रिया विभिन्न संभावित प्रयोगकर्ताओं जैसे ई.टी.वी. लाइब्रेरी स्टाफ, मीडिया संसाधन प्रभाग, निर्माताओं और शिक्षाविदों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए आरंभ की गई। मुद्रण/मल्टीमीडिया फॉर्मेट और प्रकाशनों का समस्त डाटाबेस सी.आई.ई.टी. के बेवसाइट पर है।

मीडिया अनुसंधान और मूल्यांकन

सी.आई.ई.टी. ने डी.डी.-1 और आकाशवाणी से 'तरंग' और 'उमंग' की प्रसारण सेवा का अनुवीक्षण जारी रखा। इसके अतिरिक्त 26 जनवरी, 2000 से 'ज्ञान दर्शन' नामक शैक्षिक चैनल से प्रसारित कार्यक्रमों का अनुवीक्षण कर रही है। अन्य क्रियाकलापों में सम्मिलित हैं: (1) 'पत्रों के उत्तर' नामक शीर्षक से मासिक कार्यक्रम, जो पत्रों द्वारा बच्चों से उत्तरों के विश्लेषण पर आधारित है, (2) छठे श्रेणी स्तर पर मापन संकल्पना के अध्यापन हेतु दृश्य कार्यक्रमों की अन्योन्यक्रिया का अध्ययन, (3) विभिन्न विषयी क्षेत्रों के अन्तर्गत कम्प्यूटर सहायक अधिगम-एक अधि-विश्लेषक, (4) मीडिया अनुसंधान की समीक्षा शीर्षक-शैक्षिक मीडिया की प्रभावकारिता : एक अनुसंधान सर्वेक्षण।

विशेष परियोजनाएँ

भारत सरकार की शैक्षिक तकनीकी योजना का प्रभाव-अध्ययन

संस्थान द्वारा आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश के राज्यों में चार राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थानों के सहयोग से भारत सरकार की केन्द्र द्वारा प्रायोजित योजना का प्रभाव-अध्ययन किया गया। प्रायोगिक अध्ययन का उद्देश्य पाठ्यचर्या और पाठ्यचर्येत्तर क्षेत्रों (सामान्य जागरूकता, जीवन को बल देने वाले कौशल और मूल्य अंतर्निवेशन) में बच्चों की उपलब्धियों पर शैक्षिक टी.वी. और रेडियो सह कैसट प्लेयर (आर.सी.सी.पी.) के प्रभावों का मूल्यांकन करना है एवं इन कार्यक्रमों की प्रासंगिकता और उपयोगिता पर कार्यकर्ताओं, व्यापक स्तर पर अभिभावक और समाज के ज्ञान को भी जानना है। अपेक्षित अनुसंधान साधन तैयार कर लिए गए हैं और पूर्व-परीक्षण पूर्ण हो गए हैं। अनुवीक्षण सहित आंकड़े और अवलोकन रिपोर्ट प्राप्त हो गई है और विश्लेषण हेतु कंप्यूटर में डाल दी गई है।

मल्टीमीडिया सी.डी. आर.ओ.एम. का विकास

कक्षा 6 के विज्ञान हेतु अन्योन्यक्रिया मल्टीमीडिया सी.डी. आर.ओ.एम. (कोर्सवेयर) विकसित किया, जो एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यपुस्तक पर आधारित है। इसे सी.आई.ई.टी. परिसर में मल्टीमीडिया केन्द्र के उद्घाटन समारोह में प्रस्तुत किया गया। नए मीडिया के इस सर्वप्रथम प्रकाशन को एस.सी.ई.आर.टीज़. अनेक डाइटों, के.वि.सं. इत्यादि द्वारा बखूबी स्वीकार किया गया तथा इसकी और अधिक प्रतिलिपियों के लिए अनुरोध आ रहे हैं। आंध्र प्रदेश सरकार की सी.डी. के तेलुगू रूपान्तरण को निकालने की योजना है।

वेबसाइट का सृजन

सी.आई.ई.टी. ने शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सूचना को, डालने के लिए वेबसाइट डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट सी.आई.ई.टी. डॉट एन.आई.सी. का सृजन किया है। यह अनेक अन्वेक्षण यंत्रों के साथ पंजीबद्ध है, अन्य संबंधित साइट से संबद्ध है और इसमें कार्यक्रमों विशेषकर ई.टी.वी.

कार्यक्रमों के संबंध में निरंतर अद्यतन सूचना होती है। इस साइट को शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर पूर्ण रूप से विकसित करने और इसमें प्रशिक्षण तथा कान्फ्रेंसिंग के घटकों को समाविष्ट करने का विचार है।

ई.टी.वी. कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार

ग्राफिक्स में एनीमेशन सम्मिलित करके ई.टी.वी. निर्माण की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक संयुक्त प्रयास किया जा रहा है। विभिन्न ई.टी.वी. कार्यक्रमों हेतु शीर्षकों से लेकर अचल चित्रों तक 2-डी. एनीमेशन, 3-डी. एनीमेशन और सेल एनीमेशन परियोजनाएं प्रारम्भ की गईं। पाँच छात्रों ने सी.आई.ई.टी. के साथ अपनी डिप्लोमा परियोजनाओं पर कार्य किया, जिसमें से दो सेल एनीमेशन परियोजनाएँ थीं। इन परियोजनाओं के अन्तर्गत उन्होंने अपने कार्य के लिए विभिन्न स्तरों पर कंप्यूटर का प्रयोग किया जिसमें टेस्टिंग, कंपोज़िंग, स्पेशल इफेक्ट्स सम्मिलित हैं। अन्य परियोजनाओं में चित्रों और एनीमेशन के छोटे-छोटे सेक्शनों को सम्मिलित किया गया। वीडियो डाउनलोड कार्ड प्रणाली की सहायता से छाया-चित्रण से चित्रों को स्थानांतरण किया गया और दीवार पर चित्रों और एनीमेशन परियोजना को सीधे वीडियो टेप पर पहुंचाया गया जिससे गुणवत्ता की मात्रा में पर्याप्त सुधार हुआ है।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्षेत्रीय योगदान

क्षे.शि.सं., भोपाल द्वारा महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश की डी.आई.ई.टी. संकाय के लिए कंप्यूटर साक्षरता पर 10-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके ई.टी. प्रकोष्ठ ने सभी सुविधाएं और परामर्श उपलब्ध कराए।

क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर ने प्राथमिक स्तर के अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया।

क्षे.शि.सं., मैसूर ने कर्नाटक के कक्षा 1 और 2 के बच्चों के लिए 60 श्रवण कार्यक्रम, कक्षा 3 और 4 के बच्चों के लिए तमिल में 10 श्रवण कैसट विकसित किए। संस्थान ने अंग्रेज़ी में श्रवण कैसटों के विकास के लिए आलेख लेखन प्रारंभ किया और तमिल भाषा में सक्षमता आधारित श्रवण कार्यक्रम प्रारंभ किए। कंप्यूटर अनुप्रयोग प्रयोगशाला की अवसंरचना सुविधा में कुछ अतिरिक्त मल्टीमीडिया सॉफ्टवेयर के साथ वृद्धि की गई है।

वर्ष 1999-2000 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- ऐस्थेटिक एंड टैक्नीकल आस्पैक्ट्स ऑफ साउंड (टंकित)
- ए स्टडी ऑफ दि इंटरएक्टिव वीडियो प्रोग्राम फॉर टीचिंग ऑफ मेजरमेन्ट कान्सैप्ट एट सिक्स्थ ग्रेड लेवल (अनुलिपि)
- कंप्यूटर एसिस्टिड लर्निंग विदिन डिफ्रिंग सब्जैक्ट एरियाज़ (अनुलिपि)
- एफैक्टिवनैस ऑफ एजुकेशनल मीडिया: ए सर्वे ऑफ रिसर्च (अनुलिपि)
- मैथेमेटिक्स टीचिंग एड्स एट दि मिडल एंड हाई स्कूल लेवल
- समाधान एक पहल (अनुलिपि)
- गिजुभाई वधेका के 'दिवास्वप्न' से प्रेरित 'एक-एक कदम आगे' (अनुलिपि)
- डिज़ाइन एंड डेवेलपमेंट ऑफ ई.टी.वी. स्क्रिप्ट्स वोकेशनल एजुकेशन-5, समाधन-9, परफोर्मिंग आर्ट्स-4, म्युज़िकल इंस्ट्रूमेंट्स-4 और दिवास्वप्न-12 (टंकित)
- डिज़ाइन एंड डेवेलपमेंट ऑफ 5 ई.टी.वी. स्क्रिप्ट्स ऑन सेरीकल्चर (वोकेशनल एजुकेशन) (फोटोप्रति)
- कोर्सवेयर (इंटरएक्टिव मल्टीमीडिया) ऑन साइंस फॉर क्लास 6 (सी.डी. आर.ओ.एम.) ओरियंटेशन ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स थ्रू ऑडियो कान्फ्रेंसिंग (वर्ड प्रोसेस्ड)।

कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकी सहायता

विद्यालयों के लिए मल्टीमीडिया अधिगम सामग्रियों का विकास और सेवाकालीन अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए इंटेल एशिया इलैक्ट्रोनिक्स के सहयोग से एक मल्टीमीडिया प्रयोगशाला विकसित की गई है। अध्यापकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहायता देने हेतु प्रशिक्षण मॉड्यूलों का विकास किया गया। प्रारंभ से ही प्रयोगशाला क्रियाकलापों का सक्रिय केन्द्र बन गई है। आई.टी. आधारित अधिगम सामग्रियों के बढ़ते हुए संग्रह के साथ ही प्रयोगशाला कम्प्यूटर विस्तार शिक्षा हेतु राष्ट्रीय केन्द्र में परिवर्धित हो गई है। साथ ही स्मार्ट विद्यालयों हेतु रूपरेखा विकसित की गई और मा.सं.वि. मंत्रालय को प्रस्तुत की गई। यह दस्तावेज़ क्लास 2000, भारत सरकार के नवीन विद्यालय कंप्यूटिंग कार्यक्रम, के अंतर्गत प्रारंभ किए गए स्मार्ट विद्यालयों हेतु आधार बनाता है।

एनसी ई आर टी ने अपने कार्यों में सूचना प्रौद्योगिकी को आत्मसात कर उसे बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एन.सी.ई.आर.टी. के सभी संघटकों में कम्प्यूटर हार्डवेयर प्रणाली और उचित साफ्टवेयर की स्थापना के लिए चुनाव, परीक्षण एवं उपलब्धता के लिए विस्तृत एवं अपूर्व प्रयत्न किए गए हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न संघटकों/विभागों में आई.टी. और सूचना सुविधाओं में अत्यधिक वृद्धि हुई है। अब एन.आई.ई. परिसर के प्रत्येक विभाग इंटरनेट से संबद्ध हैं। वर्ष के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. अधिकारियों/कर्मचारियों में विभिन्न आई.टी. कौशलों को विकसित करने हेतु अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए जिससे कि वे उपलब्ध आई.टी. सुविधाओं का सर्वोत्तम प्रयोग कर सकें।

एन.सी.ई.आर.टी. के नवीन वेबसाइट की स्थापना की गई है, जो उपयोगी सूचना और घोषणाएँ उपलब्ध करवाता है और वह अत्यन्त सक्रिय रूप से विस्तृत, समृद्ध एवं नवीन हो रहा है। कोई भी एचटीटीपी://डब्ल्यूडब्ल्यू डब्ल्यू. एनसीईआरटी. एनआईसी. आईएन पर पहुंच सकता है। यह साइट मुख्य रूप से विद्यालयी शिक्षा में कार्य करने जा रही है। वर्ष 1989-98 के दौरान त्रैमासिक पत्रिका 'स्कूल साइंस' के सभी चालीस अंक कम्पैक्ट डिस्क पर चुनिंदा अनुसंधान और प्रिंटिंग सुविधाओं सहित उपलब्ध किए गए हैं। प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों हेतु विज्ञान किटों का उत्पादन, विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षुओं का प्रशिक्षण, और टी.टी.आईज़. से छात्रों द्वारा कार्यशाला में अल्प अध्ययन दौरे प्रौद्योगिकीय सहायता के क्षेत्र में प्रमुख कार्यकलाप रहे।

कम्प्यूटर विस्तार शिक्षा राष्ट्रीय केन्द्र

विद्यालयों के लिए मल्टीमीडिया अधिगम सामग्रियों का विकास और सेवाकालीन अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए इंटेल एशिया इलैक्ट्रोनिक्स के सहयोग से एक मल्टीमीडिया प्रयोगशाला विकसित की गई है। अध्यापकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सहायता देने हेतु प्रशिक्षण मॉड्यूलों का विकास किया गया। प्रारंभ से ही प्रयोगशाला क्रियाकलापों का सक्रिय केन्द्र बन गई है। आई.टी. आधारित अधिगम सामग्रियों के बढ़ते हुए संग्रह के साथ ही प्रयोगशाला कम्प्यूटर विस्तार शिक्षा हेतु राष्ट्रीय केन्द्र में परिवर्धित हो गई है।

दिनांक 16-17 फरवरी, 2000 को सूचना प्रौद्योगिकी और विद्यालयी प्रक्रिया पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। श्री महाराज कृष्ण काव, शिक्षा सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। संगोष्ठी की कार्रवाई प्रकाशनाधीन है। वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों के लिए रचनात्मक प्रयोगशाला क्रियाकलापों का विकास करने हेतु एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

सूचना प्रौद्योगिकी और विद्यालयी प्रक्रिया पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी।

विकास

कम्प्यूटर शिक्षा

स्मार्ट विद्यालयों हेतु रूपरेखा विकसित की गई और मा.सं.वि. मंत्रालय को प्रस्तुत की गई। यह दस्तावेज़ क्लास 2000, भारत सरकार के नवीन विद्यालय कंप्यूटिंग कार्यक्रम, के अंतर्गत प्रारंभ किए गए स्मार्ट विद्यालयों हेतु आधार बनाता है। वर्ड प्रोसेसिंग, डाटाबेस मैनेजमेन्ट सिस्टम, स्प्रेडशीट, वेब डिज़ाइन, डेस्क टॉप पब्लिशिंग पर अनुलिपि

प्रशिक्षण मॉड्यूलों, अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण और एन.सी.ई.आर.टी. के अधिकारियों/ कर्मचारियों के स्वयं प्रशिक्षण को सुसाध्य बनाने के लिए कंप्यूटर संबंधित प्रस्तुति विकसित की गई।

विद्यालयों के लिए कोर्सवेयर का विकास भी प्रगति पर है। यह आने वाले महीनों में पूर्ण हो जाएगा।

प्रौद्योगिकीय सहायता

प्राथमिक विद्यालयों के लिए तीन सौ प्राथमिक विज्ञान किट और सत्तर छोटे टूल किट राज्यों की माँग पर उन्हें पहुंचाए गए। माध्यमिक विद्यालयों हेतु एक सौ प्राथमिक विज्ञान किट, तीस छोटे टूल किट और दो सौ पैंसठ एकीकृत विज्ञान किट निर्मित किए गए। ये प्रेक्षण हेतु तैयार हैं।

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के लिए धारा विद्युत हेतु लागत-प्रभावी प्रयोगशाला क्रियाकलाप के लिए लागत-प्रभावी प्रौद्योगिकीय सहायता का छात्र निर्माण पर्चा और अध्यापक सूचना पर्चा सहित दिल्ली के अनेक विद्यालयों में परीक्षण किया गया।

प्रौद्योगिकीय सहायता के अंतर्गत टी.टी.आई. के नौ प्रशिक्षुओं को उनके अनिवार्य प्रशिक्षण कार्यक्रम के भाग के रूप में विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षित किया गया। टी.टी.आई. के छात्रों हेतु पन्द्रह-पन्द्रह दिनों के दो प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जोकि अर्द्ध स्वचालित इंजैक्टिंग मोल्ड मशीन के प्रयोग के बारे में थे।

प्रशिक्षण और विस्तार

आई.टी. समृद्ध वातावरण में आधुनिकता का सामना करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. अधिकारियों/कर्मचारियों हेतु 13 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन किया गया। इन कार्यक्रमों में विंडोज़ प्लेटफॉर्म, वर्ड प्रोसेसिंग, स्प्रेडशीट, वेब डिज़ाइनिंग और डेस्कटॉप पब्लिशिंग पर कार्य शामिल हैं।

केन्द्रीय विद्यालयों और दिल्ली के अनेक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए पंद्रह दिन के कार्यक्रम का संचालन किया गया। इस कार्यक्रम में मल्टीमीडिया सॉफ्टवेयर विकास की प्रक्रिया द्वारा कम्प्यूटर प्रयोग सिखाया गया।

कंप्यूटर शिक्षा में क्षेत्रीय निवेश

क्षे.शि.सं., मैसूर में कम्प्यूटर अनुप्रयोग लैब की अवसंरचना सुविधा में कुछ अतिरिक्त मल्टीमीडिया सॉफ्टवेयर के साथ वृद्धि की गई है। पूर्व और सेवाकालीन दोनों कार्यक्रमों की आवश्यकता को यह लैब पूरा करती है। संस्थान परिसर के अंदर कंप्यूटरों के नेटवर्क का स्थानीय क्षेत्र स्थापित किया जा रहा है। संस्थान की लाइब्रेरी ने कुछ महत्वपूर्ण सी.डी.-आर.ओ.एम. जैसे वर्ल्ड एटलस, वर्ल्ड बुक एनसाइक्लोपीडिया, साइंस एनसाइक्लोपीडिया आदि उपलब्ध कराए हैं। लाइब्रेरी में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों तथा छात्रों के लिए इंटरनेट अनुसंधान सेवा प्रस्तुत की गई है। यह 'मैसूर लाइब्रेरी नेटवर्क' (एम.वाई. एल.आई.बी.एन.ई.टी.) परियोजना द्वारा प्रायोजित एन.आई.एस.एस.ए.टी. में सदस्य के रूप में नामांकित हैं और सभी क्रियाकलापों में सक्रिय रूप से भाग ले रही है।

वर्ष 1999-2000 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- आई.टी. लिटरेसी मॉड्यूल्स, विंडोज़ 98, वर्ड 2000, एक्सेल 2000, एक्सेस 2000, पॉवर पॉइन्ट 2000, वेब पेज डिज़ाइनिंग एंड डी.टी.पी. (अनुलिपि)
- स्मार्ट स्कूल्स : ए ब्लूप्रिंट (अनुलिपि)
- प्रोसीडिंग्स ऑफ दि नेशनल सेमीनार ऑन इन्फोर्मेशन टैक्नोलोजी एंड दि स्कूलिंग प्रोसेस (प्रेस में)।

विशेष कार्यक्रम

ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) वर्ष 1994 में शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा की सुलभता और प्रतिधारण में सुधार, अधिगम संप्राप्ति में संवृद्धि और सामाजिक व लैंगिक असमानताओं को कम करने के लिए विद्यालय त्याग की दर में कमी लाने में राज्य सरकारों का सहयोग करना है। डी.पी.ई.पी. का उद्देश्य मात्र प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण ही नहीं बल्कि प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक सुधार का भी सार्वजनीकरण है। इस कार्यकम में कक्षाओं में विद्यार्थी-केंद्रित और क्रियाकलाप आधारित शिक्षण-अधिगम की शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि स्थापित करने पर ज़ोर दिया गया है।

(क) ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम

ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) वर्ष 1994 में शुरू किया गया था। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा की सुलभता और प्रतिधारण में सुधार, अधिगम संप्राप्ति में संवृद्धि और सामाजिक व लैंगिक असमानताओं को कम करने के लिए विद्यालय त्याग की दर में कमी लाने में राज्य सरकारों का सहयोग करना है। डी.पी.ई.पी. का उद्देश्य मात्र प्राथमिक शिक्षा का सार्वजनीकरण ही नहीं बल्कि प्राथमिक शिक्षा के गुणात्मक सुधार का भी सार्वजनीकरण है। इस कार्यकम में कक्षाओं में विद्यार्थी-केंद्रित और क्रियाकलाप आधारित शिक्षण- अधिगम की शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि स्थापित करने पर ज़ोर दिया गया है।

देश भर में डी.पी.ई.पी. कार्यक्रमों और कार्यकलापों में योगदान देने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. में निम्नलिखित संसाधन समूहों की स्थापना की गई है-

- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संसाधन समूह (एन.सी.आर.जी.)
- राष्ट्रीय अनुसंधान संसाधन समूह (एन.आर.आर.जी.)
- राष्ट्रीय प्रशिक्षण संसाधन समूह (एन.टी.आर.जी.)

अक्टूबर 1996 में शिक्षा विभाग के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एम.एच.आर.डी.), राज्य परियोजना निदेशकों के कार्यालयों, एड.सिल. इत्यादि के बीच संपर्क स्थापित करने के अलावा एन.आई.ई. और आर.आई.ईज़. स्तर पर, जहाँ कि डी.पी.ई.पी. कार्य प्रगति पर है, एन.सी.आर.जी., एन.आर.आर.जी. और एन.टी.आर.जी. की गतिविधियों के समन्वयन और नियंत्रण तथा राज्य परियोजना निदेशकों, एड.सिल. इत्यादि बाहरी साधनों से संपर्क करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. में डी.पी.ई.पी. केन्द्रिक संसाधन समूह (डी.पी.ई.पी.सी.आर.जी.) गठित किया गया।

आधार रेखा और मध्यावधि मूल्यांकन सर्वेक्षण

डी.पी.ई.पी. केन्द्रिक संसाधन दल के महत्वपूर्ण दायित्वों में से एक था- आधार रेखा निर्धारण सर्वेक्षण (बी.ए.एस.) और मध्यावधि निर्धारण सर्वेक्षण (एम.ए.एस.) का संचालन। समूह ने बी.ए.एस. और एम.ए.एस. के संचालन के लिए अनुसंधान की रूपरेखा के विकास और अनुसंधान उपकरणों में संशोधन के कार्य शुरू किए। प्रशिक्षण और विस्तार के स्तर पर, राजस्थान के दस विस्तृत ज़िलों में आधार रेखा निर्धारण सर्वेक्षण के संचालन के लिए मुख्य प्रशिक्षकों के लिए एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर में एक सात-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके अलावा आंध्र प्रदेश, गुजरात, हिमाचल प्रदेश और उड़ीसा में फैले कम से कम 17 ज़िलों में मध्यावधि निर्धारण सर्वेक्षण संचालित किया गया।

चरण II के राज्यों में संचालित मध्यावधि निर्धारण सर्वेक्षण की अन्तिम रिपोर्ट का विश्लेषण किया गया और विद्यार्थियों की उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। 'स्टूडेन्ट्स अचीवमेन्ट अण्डर एम.ए.एस. अप्रैज़ल इन फेज II स्टेट्स' शीर्षक से एक दस्तावेज़ प्रकाशित किया गया। इस दस्तोवज़ में मध्यावधि सुधार के संकेतक दिए गए हैं जो डी.पी.ई.पी. के अन्तर्गत भावी योजना निर्माण के कार्य बिन्दु स्थापित करते हैं। डी.पी.ई.पी. की समन्वय समिति द्वारा डी.पी.ई.पी. की गतिविधियों की प्रगति का पुनरीक्षण किया गया। डी.पी.ई.पी. चरण I की एम.ए.एस. रिपोर्ट के आधार पर गणित और भाषा दोनों के लिए अधिगम के कठिन बिन्दुओं की पहचान की गई और इन समस्याओं के समाधान हेतु कदम उठाने के लिए चरण I के सात डी.पी.ई.पी. राज्यों को भेजा गया। दस राज्यों के 76 ज़िलों के लिए मध्यावधि निर्धारण सर्वेक्षण (एम.ए.एस.) प्रस्तावों को अन्तिम रूप देने के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई।

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

डी.पी.ई.पी. के तत्वावधान में एन.सी.ई.आर.टी. 1995 से विद्यालयी प्रभविष्णुता पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करती रही। प्राथमिक स्तर पर विद्यालयी प्रभविष्णुता से संबंधित अनुसंधानों पर पाँचवीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 14-16 जुलाई को आयोजित की गई। संगोष्ठी में मुख्य बल रहा- शोध, खास तौर से प्राथमिक स्तर पर विद्यालयी प्रभविष्णुता के लिए अन्तर्वर्ती कार्यनीतियों के प्रभाव पर।

अप्रैल-मई 1999 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की प्रस्तावना के रूप में एन.सी.ई.आर.टी. ने अपने शिक्षा के क्षेत्रीय संस्थानों में तीन क्षेत्रीय संगोष्ठियाँ- भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर प्रत्येक में एक-एक आयोजित की। क्षेत्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत करने के लिए भारतीय सहयोगियों की 171 प्रविष्टियों में से 59 प्रपत्र छाँटे गए। अन्ततः पूरे देश से 14
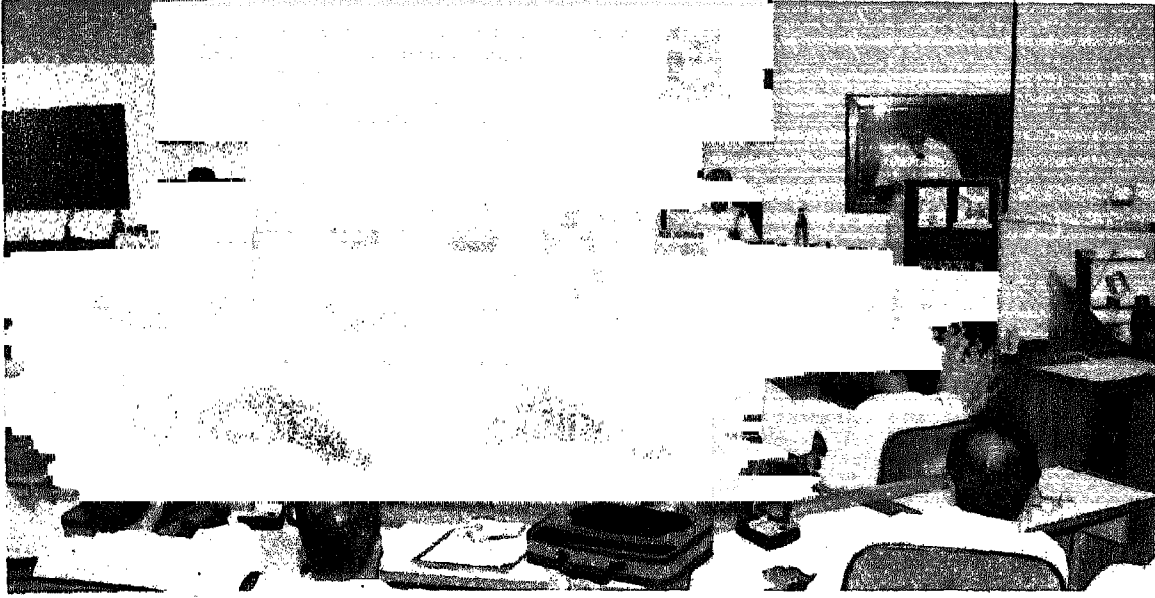
प्राथमिक स्तर पर विद्यालय प्रभविष्णुता में अनुसंधान पर आयोजित पांचवीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी।

आलेख अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत करने के लिए चुने गए। 10 विदेशी सहयोगियों के आलेखों में से आठ आलेख चुने गए। ये आलेख ईरान, जापान, नीदरलैण्ड, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका और युगांडा से थे। इनके अलावा डी.पी.ई.पी. ब्यूरो, एम.एच. आर.डी., नई दिल्ली द्वारा तैयार की गई कुछ प्रस्तुतियों का चुनाव संगोष्ठी में प्रस्तुतीकरण के लिए किया गया। 'समुदाय की भागीदारी और विद्यालय की प्रभविष्णुता' पर एक समूह-वार्तालाप के अलावा संगोष्ठी में 27 प्रस्तुतियाँ की गईं।

संगोष्ठी में विद्यालयी प्रभविष्णुता के विविध आयामों पर चर्चा की गई और इसमें प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के उद्देश्य की संप्राप्ति के हमारे प्रयासों में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान की गई।

संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए पत्रों का प्रलेखन और संगोष्ठी की कार्रवाइयाँ पाँचवीं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की रिपोर्ट में शामिल हैं। बुनियादी स्तर पर गुणवत्ता शिक्षा के संकेतकों पर दिसम्बर 2000 में आयोजित की जाने वाली 66वीं अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान संगोष्ठी की तैयारी की जा रही है।

प्राथमिक शिक्षा पर अनुसंधान अध्ययन

एन.सी.ई.आर.टी. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों सहित अपने संघटकों के माध्यम से डी.पी.ई.पी. के अंतर्गत प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान अध्ययन करती रही है। 1999-2000 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. के घटकों द्वारा डी.पी.ई.पी. के अंतर्गत निम्नलिखित चार परियोजनाएं प्रारंभ की गईं:

1. स्टडी ऑफ क्लासरूम प्रोसेस एण्ड इंस्टीट्यूशनल स्ट्रक्चर ऑफ प्राइमरी स्कूल्स प्रोवाइडिंग स्कूलिंग बेस्ड ऑन एजुकेशनल फिलासफी ऑफ इन्डियन स्कूल रिफोरमर्स/ग्रेट एजुकेटर्स/इण्डियन सोशियो-कल्चरल ट्रेडिशन
2. इफेक्टिवनेस ऑफ ट्रेनिंग पैकेज ऑन कान्टीनुउस एण्ड काम्प्रीहेन्सिव इवैल्युएशन ओवर दि इवैल्युएशन प्रेक्टिसेज़ ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स
3. इम्पैक्ट ऑफ ई.सी.सी.ई. ऑन प्राइमरी स्कूलिंग
4. स्टडी ऑफ इफेक्टिवनेस एण्ड इनइफेक्टिव स्कूल एजुकेशन कमेटीज़ (एस.ई.सीज़.) एण्ड देयर इम्पैक्ट ऑन इनरोल्मेन्ट, रिटेन्शन एण्ड एचीवमेन्ट ऑफ प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रेन इन डी.पी.ई.पी. डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ आंध्र प्रदेश।

प्राथमिक कक्षाओं के लिए गणित में निदानात्मक परीक्षण

अधिगम समस्याओं के निदान के लिए कार्यक्रम में परीक्षण सामग्रियों का एक डाटा बैंक विकसित किया गया। तीन राज्यों में परीक्षण आयोजित किए और बच्चों के अधिगम की

संभावित कठिनाइयों को समझने के लिए आंकड़े का विश्लेषण किया गया। शिक्षकों के प्रयोग के लिए अनुभव पर आधारित निदानात्मक परीक्षणों के परीक्षण के लिए एक पुस्तिका तैयार की गई। निदानात्मक उपचार के उपायों का प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रयास जारी हैं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने प्राथमिक कक्षाओं में गणित के निदानात्मक परीक्षण के लिए प्रशिक्षण सामग्री का विकास किया।

कक्षा-प्रक्रियाएँ : तुलनात्मक केस अध्ययन

यह अध्ययन एन.सी.ई.आर.टी. के डी.पी.ई.पी. कार्यक्रम के अंतर्गत क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, भोपाल और मैसूर के संकाय-सहयोग से किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न राज्यों में प्राथमिक शिक्षा की कक्षा-प्रक्रियाओं में एक आधार बिन्दु का विकास था। अध्ययन में अकादमिक वर्ष के दौरान किए गये विस्तृत कक्षा-सर्वेक्षण में शिक्षकों, अध्यापकों और प्रशिक्षणार्थियों के साक्षात्कार सहित गुणात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया।

यह अध्ययन सात राज्यों- आंध्र प्रदेश, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में सितम्बर 1998 में शुरू किया गया। डी.पी.ई.पी. के बारहवें संयुक्त पुनरीक्षण मिशन के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सदस्यों के साथ साझा करने के लिए विभिन्न राज्यों की सूचनाओं पर आधारित एक अंतरिम रिपोर्ट तैयार कर ली गई है। रिपोर्ट को अंतिम रूप प्रदान करने का कार्य जारी है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ने तमिलनाडु के एम.एल.एल. आधारित कक्षा चार स्तर के पर्यावरण अध्ययन-1 पाठ्यक्रम के लिए सहायक सामग्री विकसित की और प्राथमिक अध्यापकों की आवश्यक दक्षताओं के विकास के लिए परिणामोन्मुख परीक्षण सामग्री विकसित की।

आदिवासी बच्चों द्वारा गणित का अधिगम : एक केस अध्ययन (उड़ीसा का गजपति ज़िला)

अध्ययन में मूल रूप से यह जानने और उसका प्रलेखन करने का प्रयास किया गया कि आदिवासी अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार के गणित का उपयोग करते हैं। इस उद्देश्य के लिए गजपति ज़िले के सौरा आदिवासी समुदाय का चयन किया गया। शुरू में समुदाय के मानव शास्त्री और सामाजिक लक्ष्यों का दस्तावेज़ तैयार करने के लिए सर्वेक्षण संचालित किया गया। अध्ययन के अगले दो दौरों में सौरा की संख्या-गणना पद्धति, बाजार लेन-देन पद्धति आदि से संबंधित दस्तावेज़ तैयार किए गए। यह पाया गया कि गृह-निर्माण से लेकर कृषि से संबंधित छोटे उपकरण बनाने में सौरा जनजाति अलग प्रकार के गणित का प्रयोग करती है। रिपोर्ट का पहला प्रारूप तैयार है। रिपोर्ट जनजातीय क्षेत्रों में गणित की विद्यालयी पाठ्यचर्या में संशोधन के लिए कुछ अन्तर्वर्ती सुझाव देती है। इनमें कुछ सुझाव निम्न है:

1) गणित के प्रश्न जनजातियों के दैनिक जीवन की वास्तविक स्थितियों को प्रदर्शित करने वाले होने चाहिए, न कि परिकल्पनात्मक गणितीय प्रश्न।
2) प्राथमिक स्तर पर जनजातीय बच्चों के गणित शिक्षण के लिए जनजातीय अंक पद्धति को आरंभ किया जाना चाहिए।
3) गणित की पाठ्यपुस्तकों में 'गुणा' और 'भाग' की जगह 'जोड़' और 'घटाना' जैसी एल्गोरिदम्स पर ज़ोर होना चाहिए।

कार्यात्मक अनुसंधान पद्धति में प्रशिक्षण

हिमाचल प्रदेश के 25 डी.पी.ई.पी. कर्मचारियों के लिए कार्यात्मक अनुसंधान पद्धति में एक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई।

उत्तर प्रदेश और बिहार में अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित संस्थाओं की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान

यह परियोजना डी.पी.ई.पी. राज्यों उत्तर प्रदेश और बिहार में स्थित अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित संस्थाओं की शैक्षिक आवश्यकताओं की जाँच करने के विशिष्ट उद्देश्य से लागू की गई। संस्थाओं, विद्यार्थियों और अध्यापकों के बारे में अधिक जनसंख्या वाले अल्पसंख्यक प्रखंडों से आंकड़ा इकट्ठा किया गया। विभिन्न आयामों से युक्त इस अध्ययन में संस्थाओं के बारे में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार की सूचनाएँ शामिल हैं। आँकड़ों का विश्लेषण किया गया और प्रारूप रिपोर्ट तैयार की गई है जिसे अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

विकलांगों की एकीकृत शिक्षा

राज्य की योजनाओं के विकास के लिए राज्य सलाहकार समिति का सदस्य होने के नाते एन.सी.ई.आर.टी. ने केरल और उत्तर प्रदेश में एन.जी.ओज़ द्वारा परियोजनाओं के चयन, पुनरीक्षण और अनुवीक्षण के लिए डी.पी.ई.पी. के अंतर्गत आई.ई.डी.सी. के क्रियान्वयन हेतु संसाधन सामग्री प्रदान की। उड़ीसा के डी.पी.ई.पी. ज़िलों में कम विकलांग बच्चों की शैक्षिक बाधाओं की पहचान और उनके निदान के लिए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने कार्यनीतियाँ विकसित कीं।

परामर्श

विभिन्न राज्यों द्वारा किए गए कार्यों का विश्लेषण किया गया और राज्यों में इस कार्यक्रम के अनुवीक्षण के लिए ज़िम्मेदार पदाधिकारियों के उपयोग के लिए दूरवर्ती राज्यों में जनजातीय शिक्षा की स्थिति पर रिपोर्ट तैयार की गई। डी.पी.ई.पी. राज्यों में जनजातीय शिक्षा के समन्वयकों की एक पुनरीक्षण बैठक करने की योजना है।

1999-2000 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- लर्निंग आर्गनाइज़ेशन, कम्युनिटी पार्टिसिपेशन एण्ड स्कूल इफेक्टिवनेस एट प्राइमरी स्टेज (प्रोसीडिंग्स ऑफ दि स्टडीज़ डिस्कस्ड एट दि 1998 इन्टरनेशनल सेमिनार)
- स्टडीज़ ऑन लर्निंग आर्गनाइज़ेशन, कम्युनिटी पार्टिसिपेशन एण्ड स्कूल इफेक्टिवनेस एट प्राइमरी स्टेज (ए कम्पेन्डियम ऑफ स्टडीज़ प्रजेन्टेड इन दि 1998 इन्टरनेशनल सेमिनार)
- स्टूडेन्ट्स एचीवमेन्ट अण्डर एम.ए.एस. अप्रैज़ल इन फेज़-II स्टेट्स, अक्टूबर 1999 (फोटोप्रति)
- आइडेन्टीफिकेशन ऑफ हार्डस्पोट्स ऑफ लर्निंग इन लैंग्वेज़ एण्ड मैथमेटिक्स अण्डर एम.ए.एस. इन डी.पी.ई.पी. फेज़-I स्टेट्स, अक्टूबर 1999 (फोटोप्रति)
- रिसर्चेज़ इन स्कूल इफेक्टिवनेस एट प्राइमरी स्टेज (प्रोसीडिंग्स ऑफ दि स्टडीज़ डिस्कस्ड इन 1999 इन्टरनेशनल सेमिनार) फरवरी 2000
- डेवलपमेन्ट ऑफ़ स्ट्रेटजीज़ फॉर आइडेन्टीफिकेशन एण्ड रेमेडिएशन ऑफ एजुकेशनल बैरियर्स ऑफ माइल्ड डिसएबल्ड चिल्ड्रेन इन डी.पी.ई.पी. डिस्ट्रिक्ट्स ऑफ उड़ीसा, आर.आई.ई., भुवनेश्वर (डी.टी.पी.)
- इफेक्ट ऑफ ट्रेनिंग ऑफ पेडागाजिकल रिनेवल इन दि कान्टेक्स्ट ऑफ डी.पी.ई.पी. इन्टरवेंशन्स आन कम्पीटेन्स ऑफ प्राइमरी टीचर्स ऑफ उड़ीसा, आर.आई.ई., भुवनेश्वर (डी.टी.पी.)।

(ख) राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.), जोकि देश में अप्रैल 1980 में शुरू की गई, अपने चौथे चरण (1998-2000) जून 1998 से नए नाम- 'एन.पी.ई.पी.: विद्यालयों में जनसंख्या और विकास शिक्षा' के नाम से चलाई जा रही है। यह परियोजना 30 राज्यों और संघ शासित प्रदेशों के संबंधित राज्य जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठों और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.), राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.), राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय (एन.ओ.एस.), केन्द्रीय विद्यालय संगठन और नवोदय विद्यालय समिति जैसे राष्ट्रीय संगठनों द्वारा कार्यान्वित की जा रही है। 1999-2000 के दौरान परियोजना के अंतर्गत संचालित मुख्य गतिविधियाँ रहीं:

विकास

विद्यालयों में किशोरावस्था शिक्षण पर आधारभूत सामग्री के एक पैकेज का प्रकाशन किया गया। इस पैकेज

जनसंख्या शिक्षा में अंतर-विद्यालयी चित्रकला प्रतियोगिता के कुछ प्रतिभागी।

में निम्नांकित छह पुस्तिकाएं हैं: (1) प्रस्तावना, (2) किशोरावस्था शिक्षा की सामान्य रूपरेखा, (3) ज्ञान आधारित: किशोरावस्था शिक्षा, (4) किशोरावस्था शिक्षा : प्रश्न और उत्तर, (5) विद्यार्थियों के कार्यकलाप और (6) किशोरावस्था शिक्षा : वयस्कों की भूमिका। (1) विद्यालयों में जनसंख्या शिक्षा पर विशेष व्याख्यान और दृश्य-श्रव्य प्रदर्शन, (2) लम्बी दूरी की दौड़, (3) राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता 1999 और (4) अन्तर्क्षेत्रीय समन्वयन पर विस्तृत दिशानिर्देश तैयार किए गए और राज्यों तथा संघशासित क्षेत्रों में वितरित किए गए। जनसंख्या शिक्षा पत्रिका के दो अंक प्रकाशित और प्रसारित किए गए। किशोरावस्था पुनरुत्पादक और लैंगिक स्वास्थ्य पर पी.ओ.पी.डी.ओ.सी., डी.एल.डी.आई. द्वारा एक संदर्भ ग्रंथसूची तैयार की गई और उसका प्रचार-प्रसार किया गया।

प्रशिक्षण

राज्य परियोजना कार्मिकों के लिए विद्यालयों में जनसंख्या और विकास शिक्षा में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 13 राज्यों/केंद्र शासित क्षेत्रों के 21 परियोजना कार्मिकों और दूसरे कार्यान्वयन अभिकरणों ने भाग लिया। केरल राज्य में अन्तर्राज्यीय शैक्षिक दौरे का एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 5 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के 15 परियोजन कार्मिकों ने भाग लिया।

विस्तार

अप्रैल और सितंबर 1999 में यू.एन.एफ.पी.ए. पोषित एक कार्यक्रम-अन्तर्राष्ट्रीय पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय था- '21वीं सदी के लिए निर्णय : चयन और उत्तरदायित्व'। राष्ट्रीय स्तर के निर्णायक समूह द्वारा हज़ारों प्रविष्टियों में से 15 विजेता - पांच वर्गों से प्रत्येक से तीन-तीन-चुनी गईं और उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया। शैक्षिक निर्णय के लिए पांचों आयु वर्गों की प्रत्येक प्रथम प्रविष्टि यू.एन.एफ.पी.ए. मुख्यालय न्यूयार्क भेज दी गई।

जुलाई-अक्टूबर 1999 के दौरान पाँच स्तरों-विद्यालय स्तर, ज़िला/मंडल स्तर, राज्य स्तर, क्षेत्रीय स्तर और राष्ट्रीय स्तर- पर 'भारत में जनसंख्या स्थिरीकरण में महिलाओं का सशक्तीकरण ही सहायक होगा' विषय पर एक राष्ट्रीय वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। राष्ट्रीय स्तर पर विषय के पक्ष और विपक्ष में तीन सर्वश्रेष्ठ टीमों और सर्वश्रेष्ठ वक्ताओं को पुरस्कार दिया गया।

अनुसंधान और मूल्यांकन

जनसंख्या शिक्षा में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए यू.जी.सी., वयस्क शिक्षा निदेशालय और यू.एन.एफ.पी.ए. के सहयोग से एक कार्य योजना तैयार की गई। किशोरों के पुनरोत्पादक स्वास्थ्य पर आधारभूत सर्वेक्षण के लिए आंकड़ा इकट्ठा और संसाधित किया गया। रिपोर्ट को अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

परियोजना क्रियान्वयन का अनुवीक्षण

विद्यालय शिक्षा, वयस्क शिक्षा, विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्रों में परियोजना के प्रभावशाली कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों को सहायता प्रदान करने के लिए पाँच अंतर्क्षेत्रीय समन्वय बैठकें की गईं। पुनरीक्षण की यह नई प्रक्रिया राज्य स्तर पर भी शुरू की गई। एम.एच.आर.डी., एम.एच.ओ.एफ.ड़ब्ल्यू और यू.एन.एफ.पी.ए. की बैठकों में निश्चित अन्तरालों पर परियोजना क्रियान्वयन का पुनरीक्षण किया गया। 1999 के दौरान हुई प्रगति का पुनरीक्षण और 2000 के लिए कार्य योजना तैयार करने तथा बजट का अनुमान करने के लिए नवम्बर-दिसम्बर 1999 में परियोजना प्रगति की दो पुनरीक्षण बैठकें आयोजित की गईं।

जनसंख्या शिक्षा में क्षेत्रीय स्तर पर योगदान

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर ने उत्तरी क्षेत्रों के शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए किशोरावस्था शिक्षा और जनसंख्या शिक्षा के पुर्नविधारण रूपरेखा में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। जनसंख्या शिक्षा सप्ताह के दौरान विद्यालयों में विविध क्रियाकलाप आयोजित किए गए। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में स्त्रीभ्रूण हत्या और स्त्री शिशु मृत्यु के कारणों और इसे रोकने के लिए उठाए गए कदमों का एक अध्ययन पूर्ण किया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने जनसंख्या शिक्षा अधिगम सामग्री (पापुलेशन लर्निंग मेटीरियल्स) विकसित की। मध्य प्रदेश के डाइटों की जनसंख्या शिक्षा प्रयोगशालाओं में उत्पादित सामग्री का पुनरीक्षण किया और उसे अन्तिम रूप प्रदान किया और मध्य प्रदेश तथा एस.सी.ई.आर.टी. व डाइटों में उसका प्रचार-प्रसार किया गया। किशोरावस्था शिक्षा (एडोल्सेन्स एजुकेशन) सामग्री उत्पादित और विकसित की गई। इसे अन्तिम रूप दिया गया और इसका प्रचार-प्रसार किया गया। किशोर पुनरोत्पादक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और अभिवृत्ति का एक अध्ययन किया जा रहा है। आँकड़ों के विश्लेषण का कार्य किया जा रहा है। संस्थान ने विश्व जनसंख्या दिवस और जनसंख्या शिक्षा सप्ताह भी मनाया तथा विद्यालय के बच्चों के लिए अतिथि व्याख्यान, विद्यालयी और अंतर्विद्यालयी चित्रकला, कहानी लेखन और निबंध प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने भी विश्व जनसंख्या दिवस और जनसंख्या शिक्षा सप्ताह मनाया। इस दौरान विभिन्न क्रियाकलाप आयोजित किए। उड़ीसा के खुर्दा, बलसोर और कोरापत ज़िलों के मानव जनसंख्या का पी.क्यू.एल. के मानकों पर एक स्तर अध्ययन किया गया। पूर्वी और पूर्वोत्तरीय क्षेत्रों के राज्यों/संघशासित प्रदेशों के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के पाठ्यचर्या निर्माताओं और सामग्री विकसित करने वाले कर्मियों के लिए 'पुर्नविधारण जनसंख्या शिक्षा : एक सहक्रियात्मक संगोष्ठी' आयोजित की गई।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ने विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर और जनसंख्या शिक्षा सप्ताह के दौरान कई सह-पाठ्यचर्यात्मक क्रियाकलाप आयोजित किए। किशोरावस्था शिक्षा पर एक आवश्यकता मूल्यांकन अध्ययन किया गया। विद्यालयों में जनसंख्या और विकास शिक्षा पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया गया। कर्नाटक और केरल के डाइटों और सी.टी.ईज़. के संकायों के लिए किशोरावस्था शिक्षा पर एक सात-दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रायोगिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच किशोरावस्था शिक्षा के प्रति जागरूकता और अभिवृत्ति पर एक अध्ययन के लिए रूपरेखा और सामग्री विकसित की गई।

1999-2000 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

निम्नलिखित प्रकाशन राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित और प्रचारित-प्रसारित किए गए :

- एडोल्सेन्स एजुकेशन इन स्कूल्स : ए पैकेज ऑफ बेसिक मेटिरियल्स
- पापुलेशन एजुकेशन थ्रू एक्टिविटीज़ (अनुलिपि)
- पापुलेशन एजुकेशन बुलेटिन (दो अंक)
- ए रिपोर्ट ऑन एनुअल प्रोजेक्ट प्रोग्रैस रिव्यू मीटिंग 1999 (अनुलिपि)
- पापुलेशन एजुकेशन रिसर्च इन इण्डिया (फोटोप्रति)
- पापुलेशन एजुकेशन स्कूल करीकुलम - ए रिपोर्ट ऑफ दि कन्टेन्ट एनालिसिस (प्रकाशनाधीन)
- रिपोर्ट ऑफ मिड-टर्म इवैल्युएशन ऑफ नेशनल पापुलेशन एजुकेशन प्रोजेक्ट-थर्ड साइकिल (प्रकाशनाधीन)
- ट्रेनिंग प्रोग्राम इन पापुलेशन एजुकेशन फॉर दि डाइट परसनेल ऑफ गुजरात स्टेट, आर.आई.ई., भोपाल (फोटोप्रति)
- ए रिपोर्ट ऑन दि ओरिएन्टेशन प्रोग्राम इन एडोल्सेन्स एजुकेशन फॉर दि फेकल्टीज़ ऑफ डाइट्स एण्ड सी टी.ईज़. ऑफ कर्नाटक एण्ड केरल (कम्प्यूटर प्रिन्ट)
- डेवलपमेन्ट ऑफ ए डिज़ाइन एण्ड टूल्स फॉर रिसर्च स्टडी ऑन अवेयरनेस एण्ड एटीट्यूड टु एडोल्सेन्स एजुकेशन एमंग डी.एम.एस. स्टूडेन्ट्स (कम्प्यूटर प्रिन्ट)।

(ग) प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य की संप्राप्ति के तरीकों के एक भाग के रूप में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए 1993-94 में तैयार किया गया प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (सॉप्ट) एक केन्द्र प्रायोजित योजना है। प्राथमिक विद्यालयों में आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के अंतर्गत प्रदान की गयी सामग्री के इस्तेमाल के लिए अध्यापकों में दक्षता

का विकास करना और अधिगम के लिए बाल-केंद्रित पद्धति अपनाने के लिए अध्यापकों को प्रोत्साहित करना इस योजना के मुख्य बिंदु हैं। न्यूनतम अधिगम स्तर (एम एल एल) पर राष्ट्रीय रिपोर्ट में निहित दक्षताओं के विकास पर भी यह अभिविन्यास कार्यक्रम आधारित है। सॉप्ट कार्यक्रम प्रतिवर्ष 4.5 लाख अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लक्ष्य से आरंभ किया गया था। एन.सी.ई.आर.टी. राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन को आगे बढ़ाने की ज़िम्मेदारी सौंपना चाह रही है। इस दिशा में एन.सी.ई.आर.टी. ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रयोगार्थ प्रशिक्षण की रूपरेखा, प्रशिक्षण पैकेज और दृश्य-श्रव्य सामग्री का विकास किया। तीन चरणों का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित किया गया जिसमें एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा राज्य शिक्षा विभाग के संसाधन व्यक्ति प्रशिक्षित किए गए। राज्य स्तर के संसाधन व्यक्तियों ने ज़िला स्तर पर प्रशिक्षण देकर संसाधन व्यक्ति तैयार किए। राज्यों में प्राथमिक अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करने की ज़िम्मेदारी इन्हीं संसाधन व्यक्तियों को सौंपी गई।

सॉप्ट ने राज्य नोडल अभिकरणों जैसे असम, केरल, कर्नाटक, हरियाणा, महाराष्ट्र और केन्द्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ को प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए निधि प्रदान की। कुछ राज्यों ने सॉप्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन पिछले वर्षों के दौरान प्राप्त निधि के अव्ययित शेष से किया।

विभिन्न राज्यों में आयोजित सॉप्ट कार्यक्रमों को शैक्षिक सहयोग प्रदान करने और अनुवीक्षण की ज़िम्मेदारी एन.सी.ई.आर.टी. की है। सॉप्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम के एक भाग के रूप में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान और क्षेत्र सलाहकार ने अपने-अपने क्षेत्रों में सॉप्ट प्रशिक्षण कार्यक्रमों का पर्यवेक्षण किया और उन्हें प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक सहयोग और मार्गदर्शन प्रदान किए। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के गहन अध्ययन भी आयोजित किए गए। इस वर्ष के दौरान सॉप्ट योजना के अंतर्गत लगभग 2.80 लाख अध्यापक प्रशिक्षित किए गए और 1993-94, जब से यह योजना प्रारंभ की गयी है, तब से मार्च 1999 तक लगभग 12.5 लाख अध्यापक प्रशिक्षित हो चुके हैं। इसके अलावा पंजाब, हिमाचल प्रदेश और उत्तर पूर्वी राज्यों के मुख्य संसाधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम भी एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित किया गया।

(घ) विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की तैयारी

कार्रवाई योजना में 1992 और नौवीं योजना के दस्तावेज़ में दिए गए सुझावों के अनुपालन में परिषद् ने विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर कार्य प्रारंभ किया। इस दिशा में कार्य प्रारंभ करने के लिए सितंबर 1999 में निदेशक की अध्यक्षता में एन.आई.ई. के विभिन्न विभागों से 6 संकाय सदस्यों के 'पाठ्यचर्या समूह' का गठन किया गया।

विभागीय गोष्ठियां आयोजित कर परिषद् के प्रत्येक संकाय सदस्य से परामर्श लेकर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थाओं में गोष्ठी कर, खासतौर से आमंत्रित प्रतिष्ठित वक्ताओं से विचार-विमर्श कर और अनेक प्रकार की सैद्धान्तिक और शोध सामग्रियों का अध्ययन कर 'पाठ्यचर्या समूह' ने विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का परिचर्चा दस्तावेज़ तैयार किया।

जनवरी 2000 में परिचर्चा दस्तावेज़ का विमोचन किया गया और इस दस्तावेज़ को सभी राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय संगठनों, प्रतिष्ठित शिक्षाविदों और अनेक लोगों के पास विचार और सुझाव हेतु भेजा गया। पाठ्यचर्या समूह ने क्षेत्रीय गोष्ठियों की एक शृंखला (उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के साथ हर क्षेत्र में एक गोष्ठी) और व्यावसायिक क्षेत्र के लिए एक राष्ट्रीय गोष्ठी आयोजित की। केन्द्रीय संस्थाओं, जैसे- सी.बी.एस.ई., के.वी.एस.,एन.वी.एस., एन.ओ.एस. नीपा, इग्नू आदि के लिए भी एक राष्ट्रीय स्तर की गोष्ठी आयोजित की गई। विभिन्न स्वैच्छिक संस्थाओं के अनुरोध पर इस आशय के लिए आयोजित गोष्ठियों हेतु परिषद् ने उन्हें धन भी प्रदान किया। ये संगोष्ठियां अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ, कला, संस्कृति और शिक्षा स्थायीकरण समाज (एस.पी.ए.सी.ई.), गांधी शांति प्रतिष्ठान, राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, इलाहाबाद, गांधी शांति प्रतिष्ठान (नई तालीम के संस्थानों/अध्यापकों के लिए) ने आयोजित कीं।

इनके अतिरिक्त देश के सभी माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्षों के एक दो-दिवसीय सम्मेलन में इस दस्तावेज़ पर विचार-विमर्श किया गया।

विभिन्न गोष्ठियों और कार्यशालाओं की संस्तुतियों के आलोक में देश के विभिन्न भागों से प्राप्त पुनर्निवेशन के आधार पर दस्तावेज़ को अंतिम रूप दिया जा रहा है। आशा है अंतिम दस्तावेज़ जुलाई 2000 तक पूरा हो जाएगा।

प्रतिभा की पहचान और प्रोत्साहन

एनसी ई आर टी अपनी राष्ट्रीय प्रतिभा खोज (एन.टी.एस.) योजना के अंतर्गत अ.जा./अ.ज. जाति के लिए 70 छात्रवृत्तियों सहित छात्रों को प्रतिवर्ष 750 छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती है। इस योजना का उद्देश्य कक्षा 10 के अंत में मेधावी छात्रों की पहचान करना और उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है ताकि वे अपनी प्रतिभाओं का विकास कर सकें और अपनी रुचि के विषय में उन्नति करते हुए देश के विकास में सहायक हो सकें।

एन सी ई आर टी अपनी राष्ट्रीय प्रतिभा खोज (एन.टी.एस.) योजना के अंतर्गत अ.जा./अ.ज. जाति के लिए 70 छात्रवृत्तियों सहित छात्रों को प्रतिवर्ष 750 छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती है। इस योजना का उद्देश्य कक्षा 10 के अंत में मेधावी छात्रों की पहचान करना और उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है ताकि वे अपनी प्रतिभाओं का विकास कर सकें और अपनी रुचि के विषय में उन्नति करते हुए देश के विकास में सहायक हो सकें।

एन.टी.एस. के अंतर्गत पुरस्कार का चयन दो चरणों में किया जाता है। प्रथम चरण में राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों के द्वारा प्राय: अक्टूबर और दिसम्बर के बीच लिखित

वर्ष 1999-2000 के दौरान दी गई एन.टी.एस. छात्रवृत्तियों की संख्या

क्रमांक	राज्य/संघीय क्षेत्र	आबंटित कोटा	परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	पुरस्कृत छात्रवृत्तियों की संख्या (सामान्य वर्ग)	अ.जा./अ.ज.जा. वर्गों को दी गई छात्रवृत्तियां	योग
1.	आन्ध्र प्रदेश	185	162	19	02	21
2.	अरुणाचल प्रदेश	25	18	01	–	01
3.	असम	90	89	04	–	04
4.	बिहार	175	167	82	12	94
5.	दिल्ली	50	48	27	02	29
6.	गोवा	25	24	03	–	03
7.	गुजरात	170	129	07	–	07
8.	हरियाणा	55	55	25	01	26
9.	हिमाचल प्रदेश	35	35	04	01	05
10.	जम्मू और कश्मीर	25	23	–	–	–
11.	कर्नाटक	170	164	43	03	46
12.	केरल	185	181	26	03	29
13.	मध्य प्रदेश	205	196	35	06	41
14.	महाराष्ट्र	380	374	153	07	160
15.	मणिपुर	25	24	03	02	05
16.	मेघालय	25	22	–	–	–
17.	मिजोरम	25		(परीक्षा आयोजित नहीं हुई)		
18.	नागालैंड	25	25	01	02	03
19.	उड़ीसा	155	151	31	01	32
20.	पंजाब	85	85	26	02	28
21.	राजस्थान	105	99	42	05	47
22.	सिक्किम	25	23	–	01	01
23.	तमिलनाडु	255	237	37	03	40
24.	त्रिपुरा	25	21	02	01	03
25.	उत्तर प्रदेश	420	404	63	07	70
26.	पश्चिम बंगाल	250	229	38	07	45
27.	अंडमान निकोबार द्वीप समूह	10	09	–	01	01
28.	चण्डीगढ़	10	10	08	–	08
29.	दादर और नगर हवेली	10	08	–	–	–
30.	दमन और दीव	10		(किसी भी छात्र को संस्तुत नहीं किया गया)		
31.	लक्षद्वीप	10	08	–	–	–
32.	पाण्डिचेरी	10	10	–	01	01
	कुल	3255	3030	680	49	750

परीक्षा के माध्यम से चयन किया जाता है। इस परीक्षा के आधार पर निर्धारित संख्या में चुने छात्रों को एन.सी.ई.आर.टी. के अंतर्गत दूसरे स्तर की परीक्षा के लिए संस्तुत किया जाता है। द्वितीय स्तर की चयन परीक्षा में लिखित परीक्षा और साक्षात्कार दोनों ही सम्मिलित हैं। एन.सी.ई.आर.टी. इन छात्रों को न केवल छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती है, बल्कि देश के प्रमुख संस्थानों की सहायता और सहयोग से छात्रों की प्रतिभा को विकसित करने के लिए उपयुक्त ग्रीष्मावकाश संस्थानों की व्यवस्था भी करती है।

वर्ष 1999-2000 के दौरान पुरस्कृत कुल विद्यार्थियों की संख्या

+2 स्तर पर	1500
अवर स्नातक	
विज्ञान	165
सामाजिक विज्ञान	87
इंजीनियरिंग	2095
चिकित्सा	896
स्नातकोत्तर	
विज्ञान	17
सामाजिक विज्ञान	15
इंजीनियरिंग/एम.टैक.	02
चिकित्सा	–
प्रबन्धन	23
कुल	4710

वर्ष 1999-2000 के दौरान व्यय

1.	छात्रवृत्तियों का वितरण	रु. 1,25,00,000.00
2.	एन.टी.एस. परीक्षा का आयोजन	रु. 10,00,000.00
	कुल	1,35,00,000.00

वर्ष 1999-2000 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- एन अप्रेज़ल ऑफ नेशनल टैलंट सर्च एक्ज़ामिनेशन, 1999 (फोटो प्रतिलिपि)
- एनालिसिस ऑफ स्टूडेन्ड्स परफॉरमेन्स ऑफ डिफ्रेन्ट सोशियो-इकोनॉमिक स्टेटस इन नेशनल टैलंट सर्च स्कीम (फोटो प्रतिलिपि)।

19

शैक्षिक अनुसंधान

ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी. शोध के राष्ट्रीय संघटकों का संचालन भी करती है। अनुसंधान में लगे एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों के अतिरिक्त परिषद् की एक स्थायी समिति के रूप में कार्यरत शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) विद्यालय और अध्यापक शिक्षा के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में शैक्षिक अनुसंधान को प्रोत्साहन देने और उसे सहायता देन के लिए उत्प्रेरक का भी कार्य करती है।

एन सी ई आर टी

विद्यालयी शिक्षा में अनुसंधान और गुणात्मक सुधार के लिए अनुसंधान पर आधारित नीतिगत परिप्रेक्ष्य को बढ़ावा देना एन.सी.ई.आर.टी. का महत्वपूर्ण सरोकार है। इस क्षेत्र के मुख्य कार्यों में शामिल हैं- (1) सांस्थानिक अनुसंधान क्षमता का विकास और सुदृढ़ीकरण, (2) शिक्षा, विशेषकर विद्यालयी शिक्षा से जुड़े हुए पहलुओं पर अनुसंधान आधारित सूचना का प्रलेखन और (3) अनुसंधान निष्कर्षों और उनके पुनर्निर्देशन तथा शिक्षा प्रणाली पर उनके प्रभावों को शैक्षिक शोध से संबंधित कार्यकर्ताओं और लाभार्थियों तक पहुंचाने के लिए संप्रेषण के माध्यम उपलब्ध कराना। ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी. शोध के राष्ट्रीय संघटकों का संचालन भी करती है। अनुसंधान में लगे एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों के अतिरिक्त परिषद् की एक स्थायी समिति के रूप में कार्यरत शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) विद्यालय और अध्यापक शिक्षा के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में शैक्षिक अनुसंधान को प्रोत्साहन देने और उसे सहायता देन के लिए उत्प्रेरक का भी कार्य करती है। एरिक के सदस्यों में विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों के शिक्षा तथा उससे संबद्ध विषयों के प्रख्यात अनुसंधानकर्ता तथा एस.आई.ईज़./एस.सी.ई.आर.टीज़. के प्रतिनिधि शामिल हैं।

शैक्षिक अनुसंधान और भारतीय शैक्षिक सार-संक्षेप का सर्वेक्षण

शैक्षिक अनुसंधान का सर्वेक्षण आयोजित करना एन.सी.ई.आर.टी. के महत्वपूर्ण कार्यों में से एक है। शैक्षिक अनुसंधान के पांचवें सर्वेक्षण में, 1988 से 1992 तक की अवधि के लिए, भारतीय विश्वविद्यालयों के सर्वाधिक उत्कृष्ट पीएच.डी. और एम.फिल शोध प्रबंधों के सार-संक्षेप प्रस्तुत किए गए हैं। शैक्षिक अनुसंधान के पांचवें सर्वेक्षण के दूसरे भाग में शामिल 1800 सार-संक्षेपों को अंतिम रूप दिया गया।

अनुसंधान अध्ययन के पूरे होने और उसके प्रचार-प्रसार के मध्य के अंतराल को कम करने के लिए 1986 से एक अर्द्धवार्षिक अनुसंधान पत्रिका 'इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रैक्ट्स' का प्रकाशन आरंभ किया गया है। 1999-2000 के दौरान 'इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रैक्ट्स' (भाग 7 और 8) के एक संयुक्त अंक को जिसमें 201 सार-संक्षेप शामिल हैं, अंतिम रूप दिया गया। यह प्रकाशनाधीन है। इसके नौवें अंक का कार्य प्रगति पर है।

एरिक द्वारा सहायताप्राप्त अनुसंधान परियोजनाएँ

1999-2000 के दौरान एरिक द्वारा सहायताप्राप्त 13 अनुसंधान परियोजनाएँ पूरी हुईं और 47 परियोजनाओं का कार्य प्रगति पर है। परियोजनाओं का विवरण इस प्रकार है।

वर्ष 1999-2000 में पूरी की गईं अनुसंधान परियोजनाएँ

(1) +2 स्तर पर भौतिकी के चुने हुए विषयों पर शिक्षणार्थियों की पूर्वधारणाओं और भ्रांतधारणाओं का अध्ययन

डा. एच.सी. जैन, आर.आई.ई., अजमेर

इस अध्ययन का उद्देश्य रहा : (1) +2 स्तर पर भौतिकी के चुने हुए विषयों पर विद्यार्थियों की पूर्वधारणा/भ्रांतधारणा/सहज सिद्धान्तों/सहजानुभूत विचारों की पहचान, (2) ऊपर पहचानी गई पूर्वधारणाओं के कारणों का निर्धारण, (3) भ्रांत अवधारणाएं समाप्त करने के लिए मानदंड सुझाना। विभिन्न केन्द्रों पर +2 स्तर के शिक्षणार्थियों के लिए बहुविकल्पी परीक्षण लागू किया गया और उनके द्वारा उल्लिखित कारणों को समझने के लिए समूह साक्षात्कार आयोजित किए गए। विभिन्न परीक्षणों के लिए नमूना प्रतिवर्ती 368 से 475 तक थे। उपलब्धियों से पता चला कि एक निश्चित विषय पढ़ाने के बाद विद्यार्थियों से क्या अपेक्षा की गई थी और वास्तविक रूप में पढ़ने के बाद उन्होंने क्या स्पष्ट किया, दोनों के बीच सार्थक वैविध्य के प्रमाण मौजूद हैं। हम क्या पढ़ायें और क्या सीखा गया, इसके अंतराल को कम करने के लिए पी.आई. ने निम्नलिखित सहायक हो सकने वाले सुझाव दिए:

- वास्तविक संसार से जुड़ी हुई प्रासंगिक विषय वस्तु पढ़ाई जानी चाहिए।
- विद्यार्थियों में सोच-विचार के ढाँचे का अध्ययन और परिवर्तन किया जाना चाहिए।

- विद्यार्थियों को विज्ञान प्रक्रिया की दक्षताओं, खासतौर से आदर्शीकरणों और पूर्वानुमानों की पहचान से जुड़ी हुई योग्यता, सादृश व अधिगम की गुणात्मक व्याख्या और गणितीय परिणामों के विश्लेषण की आवश्यकता से परिचित कराना।
- भौतिकी के अध्यापकों के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों का पुनर्नवीकरण करना चाहिए।

(2) हाईस्कूल स्तर पर बधिर बच्चों में पठन दक्षता विकास की कार्यनीति

डा. पी. विमला देवी, तिरुपति

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य थे- (1) कक्षा 9 में बधिर विद्यार्थियों के पठन स्तर की पहचान, (2) पठन स्तरों में अंतराल की पहचान, (3) कक्षा 9 में चार विद्यालय विषयों- तेलुगू, गणित, जीव विज्ञान, सामाजिक विज्ञान अध्ययन- को पढ़ रहे बधिर बच्चों के पठन स्तर में सुधार के तरीकों का विकास और (4) इन तरीकों की प्रभाविता का परीक्षण। इस अध्ययन की रूपरेखा सर्वेक्षण सह-प्रयोगात्मक है। बधिर विद्यार्थियों की शैक्षिक दक्षता के विकास पर उनके प्रभाव के लिए बारह परिवर्ती चुने गए। कक्षा 12 के 142 बधिर विद्यार्थियों पर नमूने के रूप में पठन बोध परीक्षण लागू किया गया। अध्ययन की उपलब्धियों से ज्ञात हुआ कि (1) लागू की गई नीतियों के माध्यम से प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थी पठन योग्यता के विकास में सक्षम थे जबकि नियंत्रित समूह ने कोई सुधार प्रदर्शित नहीं किया, (2) तेलुगू में पठन दक्षता का संपूर्ण विकास 13.71%, गणित में 35.9%, जीव विज्ञान में 29.19%, और समाज विज्ञान में यह 34.80% था, जो 0.01 स्तर पर अभिव्यंजक थे, (3) पारस्परिक अंत:संबंधी सांचे से स्पष्ट था कि संप्राप्ति में संबंध था और पठन दक्षता योग्यता का श्रवण विकार की मात्रा से कोई संबंध नहीं था, (4) बधिर बच्चों में पठन दक्षता 39% से कम थी, (5) श्रवण विकार विद्यार्थियों के प्रदर्शन को प्रभावित करने वाला एक बुनियादी घटक नहीं था। अध्ययन से पता चलता है कि महत्वपूर्ण पठन दक्षताओं, जैसे- पहचानना, संघटन, मिलाना, निष्कर्ष निकालना, निर्णय लेना और प्रयोग करना- का विकास कक्षा स्थितियों में निर्धारित पाठ्य से पाठ पढ़ाते समय प्रश्न पूछकर और निर्देश के माध्यम से किया जा सकता है। वास्तव में पठन दक्षताओं के विकास के लिए कक्षा में पढ़ाए गए सभी पाठों में इन दक्षताओं के विकास का अभ्यास करना है।

(3) मिडिल विद्यालयों के विज्ञान-शिक्षण में विज्ञान प्रौद्योगिकी सोसायटी (एस.टी.एस.) उपागम का विकास और चुने हुए विद्यालयों में इसकी प्रभाविता का परीक्षण

डा. ए.सी. बैनर्जी, प्रो. एवं अध्यक्ष
डी.ई.एन.एफ.ए.एस., एन.सी.ई.आर.टी.

(1) मिडिल विद्यालयों में विज्ञान-शिक्षण के एस.टी.एस. माड्यूल व परीक्षण, एस.टी.एस. उपागम का विकास व क्षेत्र परीक्षण और (2) अवधारणाओं के विविध क्षेत्रों में योग्यताओं का विकास, समस्या समाधान और निर्णय-निर्माण, रचनात्मक सोच और अभिवृत्ति के विकास में पारंपरिक उपागम की तुलना में एस.टी.एस. उपागम की प्रभविष्णुता का मूल्यांकन। तीन विद्यालयों से नौ अध्यापकों, प्रत्येक विद्यालय से तीन अध्यापक और 622 विद्यार्थियों (कक्षा छह, सात और आठ) से, एस.टी.एस. समूह के 305 विद्यार्थियों और पाठ्यपुस्तक समूह के 317 विद्यार्थियों से नमूना लिया गया। 14 एस.टी.एस. माड्यूल विकसित किए गए। इस अध्ययन के लिए प्री-पोस्ट कन्ट्रोल ग्रुप के साथ एक अर्द्ध-प्रयोगात्मक रूपरेखा अपनाई जा चुकी है। एस.टी.एस. कक्षाओं के विद्यार्थी प्रयोगात्मक समूहों के हैं जबकि पाठ्यपुस्तक कक्षाओं के विद्यार्थी नियंत्रण समूह के हैं। सांख्यिकीय विश्लेषण में शामिल हैं- युग्मित और अयुग्मित टी-टेस्ट्स, एकमार्गीय एनोवा (ए.एन.ओ. वी.ए.) और बेनोफरीन बहुआयामी परीक्षण। इस अध्ययन से पता चला कि रचनात्मकता के क्षेत्रों में एस.टी.एस. और पाठ्यपुस्तक समूहों के विद्यार्थियों की योग्यताओं में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं था। अभिवृत्ति क्षेत्र के परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि एक परियोजना विद्यालय में विज्ञान अध्यापकों और कक्षाओं के प्रति एस.टी. एस. उपागम ने प्रत्येक विद्यार्थी की अभिवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन किए। इस प्रकार प्राथमिक कक्षाओं में बेहतर समाधान और निर्णय-निर्माण की योग्यताओं के विकास में एस.टी.एस. उपागम विश्वसनीय है।

(4) आंध्र प्रदेश में आदिम चेन्चू जनजाति समूह में बच्चों की शिक्षा की समस्याएँ

डा. जी. ईश्वरैया, हैदराबाद

वर्तमान अध्ययन आंध्र प्रदेश में आदिम चेन्चू में बच्चों की शिक्षा की समस्याओं से संबंधित है। अध्ययन का उद्देश्य निम्न को विस्तार से जानना है : (1) पुरातनता, (2) अन्यत्रवासिता, निष्क्रियता और विद्यालय छोड़ना, (3) अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए माता-पिता की जागरूकता और अभिवृत्ति, (4) शिक्षा के लिए बच्चों की आकांक्षा, (5) चेन्चू विद्यार्थियों के साथ अध्यापकों की अंतर्क्रिया और रुचि, (6) साक्षरता से जुड़े हुए सांस्कृतिक, सामाजिक-आर्थिक और प्रशासनिक कारक, (7) देशांतरण और शिक्षा, (8) चेन्चू बच्चों की शिक्षा पर जनजाति विकास कार्यक्रमों का प्रभाव और (9) बच्चों की शिक्षा में सुधार के लिए मानकों का सुझाव। वर्तमान अध्ययन के आंकड़े में 528 परिवार और 2212 जनसंख्या शामिल है, जो आंध्र प्रदेश के छह जिलों से चुने हुए हैं। अध्ययन के निष्कर्ष से पता चला कि (1) चेन्चू घरेलू पशु और मुर्गी पालन में रुचि रखते हैं और उन्हें अनवरत पशु-चिकित्सा सेवाओं की आवश्यकता है, (2) प्राइमरी स्तर पर सब मिलाकर उनकी उच्च साक्षरता दर 76.6%, कम नामांकन अनुपात नगण्य, शाला-त्याग और अनियमित उम्र में प्रवेश (अधिक उम्र और कम उम्र में), (3) लम्बी अवधि की विद्यालयी शिक्षा के प्रति अनिच्छा के कारण सातवीं कक्षा के बाद नामांकन में तेज़ी से गिरावट। पितृसत्ता समाज के कारण प्राय: सभी लड़कियाँ सातवीं कक्षा के बाद रोक दी जाती हैं, (4) कुछ विद्यार्थियों के लिए हिन्दी, गणित और विज्ञान जैसे विषय कठिन हैं, सरकारी खर्च पर विशेष कोचिंग की आवश्यकता है और (5) कक्षा प्रबंधन और अच्छा होना चाहिए। अध्यापक को प्रत्येक बच्चे पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है।

(5) बिहार में एकीकृत शिक्षा प्रणाली : विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन का एक अध्ययन

डा. शशि प्रभा, पटना विश्वविद्यालय, पटना

वर्तमान अध्ययन का झुकाव एकीकृत शिक्षा प्रणाली का समग्रता में अध्ययन और मूल्यांकन की ओर है। अध्ययन का उद्देश्य है- (1) विकलांग विद्यार्थियों के पृष्ठभूमिगत लक्षणों, उनकी शैक्षिक और व्यावसायिक आकांक्षा के स्तरों की जाँच करना, (2) अध्यापकों और गैर-विकलांग विद्यार्थियों के साथ विकलांग विद्यार्थियों की प्रकृति और एकीकरण के तरीकों का मूल्यांकन, (3) विकलांग विद्यार्थियों के लिए सुविधाओं की उपलब्धता का मूल्यांकन और प्रदान की गई तथा उपलब्ध सुविधाओं के अन्तर को निश्चित करना, (4) एकीकरण की प्रक्रिया में विकलांग विद्यार्थियों के सामने आने वाली समस्याओं की पहचान और (5) विकलांग विद्यार्थियों में समायोजन की समस्याओं, जैसाकि उनके संसाधन शिक्षकों, माता-पिता और गैर-विकलांग विद्यार्थियों द्वारा अनुभव किया गया था, का अध्ययन। इस अध्ययन में 500 विकलांग बच्चे (70 दृष्टिहीन, 25 बधिर, 370 अस्थि विकलांग और 15 बहु-विकलांग) शामिल हैं। जांच के क्रम में यह पाया गया कि सरकार द्वारा दी गई सभी सुविधाओं को विद्यालय प्राप्त नहीं करते और विकलांग विद्यार्थियों के निर्दिष्ट नामांकन को 100 प्रतिशत सुनिश्चित नहीं करते। विकलांगों के प्रवेश की नीति में सुधार की आवश्यकता है। एकीकरण के विस्तार और एकीकंरण की प्रक्रिया में सामने आने वाली समस्याओं के संदर्भ में यह पाया गया कि विकलांगों से उनके माता-पिता और अभिभावकों द्वारा लगाव और प्यार का व्यवहार किया जाता है और विद्यालयी जीवन में यह व्यवहार सामान्य संबंध बनाने में उनकी मदद करता है। अधिकतर विकलांग और गैर-विकलांग विद्यार्थी पुस्तकों के आदान-प्रदान और दूसरे कुछ अन्य क्रियाकलापों में एक दूसरे की मदद करते हैं लेकिन साथ-साथ मनोरंजक स्थानों के भ्रमण में अनिच्छुक रहते हैं। यह संकेतित करता है कि एक दूसरे का साथ देने में मानसिक रूप से तैयार नहीं हैं। अध्ययन ज़ोर देकर प्रदर्शित करता है कि शारीरिक-विकलांग विद्यार्थियों में सामाजिक अंतर्क्रिया और शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित समायोजन की समस्याओं की अपेक्षा भावनात्मक दवाब और तनाव ज़्यादा होता है। चूंकि वे विकलांग हैं, उनमें अध्ययन के प्रति पर्याप्त रुचि का अभाव होता है और उनमें से कुछ बोध में समस्या का सामना करते हैं। पी.आई. ने कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं।

(6) उत्तर-पूर्व क्षेत्र में नवोदय विद्यालयों के कार्य और प्रबंधन का मूल्यांकन

डा. पी.पी. गोकुलनाथन, शिलांग

इस अध्ययन में जवाहर नवोदय विद्यालयों द्वारा क्षेत्र स्थिति में अपनायी जाने वाली कार्य पद्धति और प्रबंधन रणनीति के पुनरीक्षण का विचार है। अध्ययन के उद्देश्य हैं- (1) विद्यालयों में उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं की गुणवत्ता के साथ-साथ अध्यापकों और विद्यार्थियों के संघटक का विश्लेषण करना, (2) जवाहर नवोदय विद्यालयों के कार्य और प्रबन्धन का अध्ययन करना, (3) विभिन्न वर्षों में विद्यार्थियों की उपलब्धियों के स्तरों का पता लगाना, (4) राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने के लिए विद्यालयों द्वारा की जा रही गतिविधियों का पता लगाना और (5) क्षेत्र में विद्यालयों द्वारा सामना की जा रही समस्याओं का अध्ययन। नमूने में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न भागों में स्थित जवाहर नवोदय विद्यालयों से 75 अध्यापकों और 322 विद्यार्थियों को लिया गया है। अध्यापकों, विद्यार्थियों और प्रधानाध्यापकों के लिए बनाई गई प्रश्नावलियों द्वारा सूचना इकट्ठी की गई। निष्कर्षों में संक्षेप में निम्न शामिल हैं- उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय जवाहर नवोदय विद्यालयों के बारे में सूचना, क्षेत्र में जवाहर नवोदय विद्यालयों का प्रबंधन, आर्थिक प्रशासन, प्रदान की गई सुविधाएं, संबंधित कार्मिकों की स्थिति, विद्यार्थियों की सूचना, अकादमिक संगठन, विद्यार्थियों का प्रदर्शन, उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में अनुभव की गई ताकतें और कमज़ोरियाँ, जवाहर नवोदय विद्यालयों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएं। अध्ययन में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में जवाहर नवोदय विद्यालयों की योजना को प्रभावी बनाने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव भी शामिल हैं। इसमें 21वीं सदी के लिए दृष्टिकोण भी शामिल है।

(7) विद्यार्थियों से शिक्षक-प्रत्याशाएं और शिक्षण प्रक्रिया तथा विद्यार्थी-निष्कर्षों से उनके संबंध

डा. एन.सी. धोन्डियाल, अल्मोड़ा

यह अध्ययन निम्न बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करता है- (1) हाई स्कूल स्तर पर सेवाकालीन शिक्षकों में सामान्यीकृत शिक्षक-प्रत्याशाओं के समूह की मौजूदगी का सर्वेक्षण, (2) चयनित अध्यापक लक्षणों और उनकी सामान्यीकृत प्रत्याशाओं के बीच संयोजन का विश्लेषण, (3) कक्षा व्यवस्था में अलग-अलग अध्यापक-प्रत्याशाओं पर विचार करना और (4) उच्च और निम्न प्रत्याशा समूहों में विद्यार्थियों के नामांकन के द्वारा व्यक्त हुई अध्यापकों की सामान्यीकृत प्रत्याशाओं और उनकी अलग-अलग प्रत्याशाओं के बीच साहचर्य का विश्लेषण। नमूने में अल्मोड़ा ज़िले के यादृच्छिक रूप से चयनित 38 विद्यालयों के हाई स्कूल स्तर की कक्षाओं में पढ़ा रहे 335 अध्यापक शामिल हैं। अध्ययन से पता चला कि विद्यार्थी-निष्कर्षों के परिवर्त्यों जैसे- समायोजन, स्व-अवधारणा, प्रतिभा, शैक्षिक दुश्चिंता, अध्ययन से जुड़ाव और अकादमिक उपलब्धि अवबोधन पर अंक प्राप्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था, जबकि अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा और अकादमिक उपलब्धि की संप्राप्ति में उच्च और निम्न अध्यापक प्रत्याशाओं वाले विद्यार्थियों में महत्वपूर्ण अन्तर था। यह पाया गया कि अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा और वास्तविक अकादमिक उपलब्धि के संबंध में उन विद्यार्थियों ने जो उच्च शिक्षक-प्रत्याशा समूह में नामांकित थे, निम्न शिक्षक-प्रत्याशा समूह में नामांकित विद्यार्थियों की तुलना में उच्च औसत अंक प्राप्त किए। यह भी निष्कर्ष निकला कि वैयक्तिक विद्यार्थियों के बारे में प्रत्याशाओं के प्रतिपादन की प्रक्रिया में, विद्यार्थी के गुणों पर अध्यापक का अवबोधन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

(8) दृष्टिहीन बच्चों में मापन-संबंधी अवधारणाओं का विकास

डा. देबजानी सेनगुप्ता, कलकत्ता

इस अध्ययन का उद्देश्य है, दृष्टिहीन, आंशिक दृष्टि दोष वाले बच्चों, जैसाकि उनके दृष्टि प्रतिरूपों के आधार पर तुलना की गई, के मासिक व्यवहार की व्याख्या। इस अध्ययन में 6 से 12 वर्ष की आयुवर्ग के 160 पूर्ण दृष्टियुक्त, आंशिक दृष्टि और दृष्टिहीन बच्चों के नमूने लिए गए। आंकड़ा इकट्ठा करने के लिए इस्तेमाल की गई सामग्रियाँ हैं- व्यक्तिगत आंकड़ा प्रपत्र और वस्तु के विभिन्न गुणों जैसे दूरी, लम्बाई, क्षेत्र, घनत्व, द्रव्यमान और भार आदि के मापन में बच्चों की योग्यता के मूल्यांकन के लिए परीक्षणों की बैटरी। समय के अवबोधन और मापन में

बच्चों की दक्षता का भी परीक्षण किया गया। उपलब्धियों से पता चला कि दृष्टिहीन और आंशिक दृष्टि वाले बच्चे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष मापन के क्रम में दृष्टियुक्त बच्चों के बराबर थे लेकिन संरक्षण और पृथक मूल्यांकन में निश्चित रूप से पीछे रह गए। दृष्टिहीन बच्चों को आस-पास के वातावरण से समय का अनुमान लगाने में कठिनाई हुई। विद्यालयों और सुधार कार्यक्रमों के लिए निष्कर्षों के गंभीर निहितार्थ हैं क्योंकि दैनिक जीवन में दूरी, भार, समय आदि के मापन की क्षमता अत्यन्त आवश्यक है। रिपोर्ट में गतिविधियों के मापन में सहायक पाठ्यचर्या की एक बाह्य रूपरेखा भी सुझायी गई है।

(9) शिक्षार्थियों के सामने पारिवारिक समस्याएँ, सामाजिक - आर्थिक स्तर, साक्षरता केंद्रों में उपलब्ध भौतिक सुविधाएं, साक्षरता कार्यक्रम के संगठनात्मक और अनुदेशात्मक पहलू और पश्चिम बंगाल में महिला साक्षरता की उपलब्धि से उनके संबंध का आलोचनात्मक अध्ययन

डा. शर्मिष्ठा चक्रवर्ती, कलकत्ता

इस अध्ययन का उद्देश्य (1) साक्षरता कक्षाओं में शामिल होने के लिए महिला शिक्षार्थियों के सामने घर की समस्याएं और साक्षरता में उनकी उपलब्धि पर इसके प्रभाव का निर्णय, (2) साक्षरता केंद्रों पर उपलब्ध भौतिक सुविधाएं और महिला साक्षरता उपलब्धि से इनका संबंध, (3) शिक्षार्थी की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और यह शिक्षार्थियों की उपलब्धि को कैसे प्रभावित करती है, का निर्णय, (4) साक्षरता कार्यक्रम का संगठनात्मक पहलू और साक्षरता उपलब्धि से इसके संबंध का अध्ययन करना है। पश्चिम बंगाल के दो ज़िलों से साक्षरता उपलब्धि के अभिलिखित ढांचे के आधार पर 9-16 वय वर्ग के 302 महिला शिक्षार्थियों का नमूना इसमें समाविष्ट है। अधिकतर टूल्स संरचनागत और कुछ मुक्त थे। अध्ययन की उपलब्धियों से पता चला कि (1) अनुसूचित जाति शिक्षार्थियों का निष्पादन भाषा समस्या के कारण खराब था, (2) बीरभूम ज़िले के शिक्षार्थियों का प्रदर्शन दक्षिण चौबीस परगना ज़िले के शिक्षार्थियों की अपेक्षा महत्वपूर्ण रूप से अधिक था, (3) उपलब्धि परिवार के आर्थिक स्तर पर निर्भर नहीं थी, (4) साक्षरता में आय और उपलब्धि के बीच कमज़ोर आपसी संबंध था, (5) परिवार के शैक्षिक स्तर ने शिक्षार्थियों को प्रभावित किया, (6) साक्षरता कार्यक्रम आयोजित करने हेतु जिन स्थानों पर पर्यवेक्षक, ग्राम शिक्षा समिति और पंचायत सम्मिलित प्रयास कर रही थीं वहीं साक्षरता दर ऊंची (64.6%) थी, (7) जो महिला शिक्षार्थी गृह कार्य और बाहरी कार्य दोनों से जुड़ी हुई थीं, उनका प्रदर्शन केवल घरेलू क्रियाकलापों में लगी हुई महिलाओं से बेहतर था। इससे पता चलता है कि साक्षरता केंद्रों में महिला शिक्षार्थी नियमित अन्योन्यक्रिया का अवसर पा रही थीं।

(10) हिंदी और उड़िया में भाषा दक्षता परीक्षणों का विकास और उनका मानकीकरण

डा. ताप्ति दत्ता, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

इस अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों की कक्षा 1 से 7 तक में पढ़ रहे डिस्लैक्सिक बच्चों के निदान के लिए हिंदी और उड़िया में भाषिक दक्षता परीक्षणों का विकास और मानकीकरण तथा प्रायोगिक उपचार कार्यक्रम के लिए नियत सुझाव प्रदान करना है। नमूने के अंतर्गत कक्षा 1 से 7 तक के 700 विद्यार्थी, 350 हिन्दी माध्यम के और 350 उड़िया माध्यम के, जो पटना और भुवनेश्वर के 10 विभिन्न शहरी विद्यालयों से चुने गए, शामिल हैं। आंकड़े का विश्लेषण हिंदी और उड़िया दोनों के लिए शब्द डिकोडिंग और परिच्छेद बोध परीक्षणों से कार्यकारी नियमों की स्थापना के लिए किया गया। इन परीक्षणों में जिन विद्यार्थियों ने खराब प्रदर्शन किया, उनके लिए उपचारात्मक कार्यक्रम बनाया गया। पूर्व परीक्षण और परीक्षणोत्तर परिणाम की तुलना प्रदर्शित करती है कि जिन बच्चों ने उपचारात्मक कार्यक्रम में हिस्सा लिया उनके अंकों में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी हुई।

(11) उड़ीसा के प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थी उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन

डा. बी.एन. पांडा, क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर

सभी विद्यालयी विषयों में ग्रामीण, शहरी और जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर की तुलना इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था। इसके साथ शिक्षार्थी उपलब्धि पर

घर और विद्यालय से जुड़े हुए अध्यापक प्रभाव का भी अध्ययन किया गया। नमूने में 6 जिलों के 7 ब्लाकों के 64 विद्यालयों, 245 अध्यापकों और 882 विद्यार्थियों (478 लड़के और 404 लड़कियों) को शामिल किया गया है। अध्ययन से पता चलता है कि अभिभावकों की शिक्षा और आय, घर पर भोजन की उपलब्धता शिक्षार्थी प्रदर्शन को बढ़ाने में अर्थपूर्ण हैं। विद्यालय का शैक्षिक वातावरण, विद्यालय संसाधन और प्रोत्साहन योजनाएँ, विद्यालय में उपलब्ध शैक्षिक सुविधाएँ संप्राप्ति की वृद्धि में बहुत प्रभावी हैं। शहरी क्षेत्रों में गणित की संप्राप्ति और जनजाति क्षेत्रों में भाषा उपलब्धि में अध्यापक की योग्यता के अलावा अध्यापक की गुणवत्ता संप्राप्ति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं रखती। प्रोत्साहन योजनाओं में, ग्रामीण और जनजाति क्षेत्रों में दोपहर के भोजन और छात्रवृत्तियों तथा जनजाति क्षेत्रों में मुफ्त पाठ्यपुस्तकों और मुफ्त यूनिफार्म (वर्दी) को संप्राप्ति की वृद्धि में बहुत ही प्रभावी पाया गया।

(12) प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के विशेष संदर्भ में उत्तर प्रदेश में बालिका प्रोत्साहन योजनाओं का प्रभाव

डा. जी.डी. भट्ट, दिल्ली

यह अध्ययन लड़कियों पर दोपहर के भोजन योजना के प्रभाव तक ही सीमित है। उ.प्र. में लड़कियों के लिए दूसरी प्रोत्साहन योजना नहीं है। इस अध्ययन का उद्देश्य निम्न बातों का अध्ययन करना रहा- (1) उ.प्र. सरकार द्वारा प्रदान किया जाने वाला दोपहर का भोजन क्या सभी समूह की बालिकाओं को उपलब्ध था, (2) प्राथमिक स्तर पर लड़कियों के नामांकन, उपस्थिति और विद्यालय में बने रहने पर क्या इस योजना का कोई सकारात्मक प्रभाव है, (3) लड़कियों की शिक्षा के प्रति माता-पिता के मनोवृत्तिगत परिवर्तन में क्या इस योजना का प्रभाव है और (4) बालिकाओं के शैक्षिक विकास के लिए दोपहर के भोजन की योजना के क्रियान्वयन में क्या कोई प्रशासनिक अड़चन है। अध्ययन की उपलब्धियों से पता चला कि उ.प्र. सरकार द्वारा प्रदान किया जा रहा दोपहर का भोजन सभी वर्गों की लड़कियों को उपलब्ध है और लड़कियों की शिक्षा के प्रति माता-पिता के मनोवृत्तिगत परिवर्तनों पर इसका सकारात्मक प्रभाव है। आंकड़े बताते हैं कि दोपहर के भोजन की योजना के लागू होने के बाद नमूना विद्यालयों में लड़कियों के नामांकन में वृद्धि हुई है। अपेक्षित लक्ष्य समूह पर यू.ई.ई. क्रियान्वित करने में पी. आई. महसूस करता है कि राज्य के हर प्राथमिक विद्यालय में अन्य प्रोत्साहन योजनाएँ जैसे- मुफ्त यूनिफार्म, मुफ्त पाठ्यपुस्तकें और उपस्थिति छात्रवृत्ति योजनाएँ लागू की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त मेधावी विद्यार्थियों के अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए कुछ विशेष प्रोत्साहनों को भी लागू करना चाहिए।

(13) बुद्धि की संस्कृति और प्रत्ययात्मकता

डा. ए.के. श्रीवास्तव, डी.ई.आर.पी.पी. एन.सी.ई.आर.टी.

इस अध्ययन का उद्देश्य भारतीय संस्कृति के संदर्भ में बुद्धि की देशज धारणा की पहचान करना है। इस क्रम में निम्नलिखित प्रयास किए गए: (अ) देशज विचार की भारतीय विद्वत्ता और परम्पराओं को प्रमाण के रूप में प्रलेखित, विश्लेषित और प्रस्तुत करना, (ब) लोक परिप्रेक्ष्य के माध्यम से बुद्धि के सामाजिक-सांस्कृतिक निर्माण का परीक्षण। एक द्विपक्षीय सैद्धान्तिक रणनीति अपनाई गई। प्रथम चरण में भगवद् गीता की शिक्षाओं, व्यवहारों को प्रभावित करने वाली संस्कृत सूक्तियों और हिन्दी लोकोक्तियों में निहित आम आदमियों के विचार और अनुभूतियों के विश्लेषण का प्रयास किया गया। द्वितीय चरण में एक बहुकेन्द्रिक अध्ययन के रूप में आम आदमी की समझदारी और बुद्धि के प्रयोग का गहराई से अध्ययन किया गया। इसके लिए विविध आर्थिक-सांस्कृतिक संदर्भों, शिक्षा, उम्र और लिंग के चयनित 1885 भागीदारों को शामिल किया गया।

निष्कर्ष से यह भी प्रदर्शित हुआ कि भारतीय दृष्टि संज्ञानात्मक योग्यताओं की पहचान और उत्प्रेरक संज्ञानात्मक योग्यताओं के संदर्भित सार ढाँचे के अलावा प्रभावी घटकों को भी ध्यान में रखती है। बुद्धि के चार पहलुओं की पहचान की गई। ये हैं- संज्ञान, सामाजिक दक्षता, कार्य-प्रदर्शन और व्यक्तित्व। कुल मिलाकर, इस कार्य से बुद्धि की जो दृष्टि उभरी उसे 'समग्र' नाम दिया जा सकता है जिसमें पूर्णता, अंतर्संपर्क, अंतर्निर्भरता और पूरकता पर जोर है। अध्ययन यूरो-अमेरिकन देशों के सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर विकसित मानदण्डों की बजाय अध्ययन में उल्लिखित बुद्धि की देशज धारणा पर आधारित बुद्धि के मानदण्डों के विकास का समर्थन करता है।

वर्ष 1999-2000 के दौरान जारी अनुसंधान अध्ययन

क्रम संख्या	अध्ययन का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
1.	विभिन्न राज्यों में सामान्य आधारभूत पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन	डा. डी.पी. सिंह पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भोपाल
2.	माध्यमिक व्यावसायिक विद्यालयों में विद्यालय उद्योग संयोजन का स्थापना-कार्य अनुसंधान	डा. सौरभ प्रकाश पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भोपाल
3.	भारत में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों पर आधारित व्यापार और वाणिज्य में व्यावसायिक प्रवेश का स्थितिपरक अध्ययन	डा. ए. पालेनिवेल पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भोपाल
4.	व्यावसायिक शिक्षा की तुलना में शहरी और ग्रामीण समाजों में लड़कियों की जीविका आकांक्षा	डा. (सुश्री) पूनम अग्रवाल पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भोपाल
5.	दक्षिणी क्षेत्र में अध्यापक शिक्षा के संस्थानों द्वारा प्रस्तावित, विद्यार्थी अध्यापकों द्वारा चयनित और प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों द्वारा अपेक्षित विशेषज्ञता के विषयों का अध्ययन	डा. के डोरास्वामी आर.आई.ई., मैसूर
6.	राज्यों में व्यावसायिक मार्गदर्शन का दिशा-निर्देश सर्वेक्षण	डा. (श्रीमती) के. माथुर पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भोपाल
7.	उड़ीसा के जनजातीय बच्चों के विज्ञान अधिगम पर मनोवैज्ञानिक - सामाजिक घटकों के प्रभाव	डा. (श्रीमती) एम. महापात्र आर.आई.ई., भुवनेश्वर
8.	प्रारंभिक स्तर (कक्षा 6, 7,8) पर विज्ञान शिक्षण के एकीकृत पद्धति के नमूने का विकास	डा. एम.के. सत्पथी आर.आई.ई., भुवनेश्वर
9.	प्रारंभिक स्तर पर अध्यापक शिक्षकों के लिए शिक्षण रूपरेखा और उपलब्ध दक्षताओं की एक पाश्विका का विकास	डा. वी.डी. भट्ट आर.आई.ई., मैसूर
10.	चयनित राज्यों में व्यावसायिक पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री की गुणवत्ता और मानक का तुलनात्मक मूल्यांकन	डा. जी. भार्गव पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भोपाल
11.	प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में संवेदनात्मक बुद्धिमत्ता की पहचान और पोषण- एक खोज	डा. अंजुम सीबिया डी.ई.पी.एफ.ई.

क्रम संख्या	अध्ययन का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
12.	महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण पर गृह विज्ञान-व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का महत्व	डा. पिंकी खन्ना पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भोपाल
13.	10+2 स्तर के विद्यार्थियों में कौशलों के विकास में शिक्षक व्यवस्था की भूमिका	डा. वी.के. जैन पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भोपाल
14.	महाराष्ट्र के व्यावसायिक संस्थानों में विद्यालय उद्योग संयोजन (एस.आई.एल.) का केस अध्ययन	डा. आस्फा एम. यासीन पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भोपाल
15.	कृषि में व्यावसायिक पठन-पाठन के स्तर और प्रभविष्णुता का तुलनात्मक अध्ययन	डा. वी.एस.महरोत्रा पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भोपाल
16.	पंजाब राज्य में रोज़गार प्रशिक्षण के कार्यान्वियन और व्यावसायिक विद्यार्थियों पर इसके प्रभाव का अध्ययन	डा. ब्रजवन्ती देवी पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भोपाल
17.	विज्ञान-संप्राप्ति, संज्ञानात्मक-कौशल और विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में अवधारणा का प्रभाव	डा. मंजुला पी. राव आर.आई.ई., मैसूर
	एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रायोजित अध्ययन	
18.	शैक्षिक रूप से पिछड़े बच्चों के अध्ययन और गृह-कार्य व्यवहार के संवर्धन से संबद्ध माता-पिता प्रशिक्षण तकनीकों का व्यवहारगत विश्लेषण और परिष्करण	डा. एस.एस. कौशिक वाराणसी
19.	वाराणसी में जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थियों के वैज्ञानिक-स्वभाव का अध्ययन	प्रो. वी.के. दूबे वाराणसी
20.	भारत में विद्यालय शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए नवाचारी संस्थान और उनके कार्यक्रम	प्रो. मोहम्मद मियां नई दिल्ली
21.	शिक्षा महाविद्यालयों में प्रशिक्षण निष्कर्षों पर मुख्य सांस्थानिक और अनुदेशिक परिवर्त्यों के प्रभाव का अध्ययन	डा. अरुण कुमार गुप्ता जम्मू
22.	उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में किशोरों में नशीली दवाओं के सेवन की व्यक्तित्व-पार्श्विका और स्वभावगत अति संवेदनशीलता के परिष्कार के द्वारा मद्य-व्यसन को दूर करने के लिए निश्चित हस्तक्षेपकारी तकनीकों का प्रयोग	डा. एस. बैनर्जी वाराणसी
23.	विशेष शिक्षा अध्यापकों के प्रदर्शन की भूमिका	डा. जी.एल. रेड्डी कणयकुडी

क्रम संख्या	अध्ययन का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
24.	अध्यापिकाओं में उत्प्रेरणा का कम होना	डा. (श्रीमती) एन. मिश्रा लखनऊ
25.	उत्तर प्रदेश में माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान की शिक्षा में स्थानीय संसाधनों का प्रभाव	डा. जी.एस. पालीवाल गढ़वाल, (यू.पी.)
26.	महिला महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों के छात्रों के प्रयोग की वृत्ति-परिपक्वता सूची का विकास	डा. (श्रीमती) ए. शुक्ला लखनऊ
27.	ग्रामीण समुदाय के लिए महिला शिक्षा कार्यक्रमों में महिला स्वास्थ्य कार्मिकों की भागीदारी की संभावना का अध्ययन	डा. (श्रीमती) पी. माथुर दिल्ली
28.	छह से आठ वय: वर्ग के बच्चों के संज्ञानात्मक विकास पर घरेलू पर्यावरण का प्रभाव	डा. सुधा भोगले बंगलौर
29.	अध्यापकों के उत्प्रेरणात्मक संलक्षणों पर कार्य अनुभव का प्रभाव	डा. उमा रंगन हैदराबाद
30.	दृष्टिहीन बच्चों के लिए हस्तकार्य की आवश्यकता	डा एम. इतिएरा दिल्ली
31.	आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के जनजातीय क्षेत्रों में आश्रम विद्यालयों के प्रकार्यों का अध्ययन	डा. पी.एस. रेड्डी तिरुपति
32.	शैशवकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों का मूल्यांकन और परिप्रेक्ष्यों की सुझाव योजनाएं	डा. एस.पी. मल्होत्रा कुरुक्षेत्र
33.	उड़ीसा में अलौकिक सदृशमूलक भाषा की खोज: इसके भाषा वैज्ञानिक, संज्ञानात्मक और शैक्षिक निहितार्थ	डा. नंदिता बाबू भुवनेश्वर
34.	प्राथमिक स्तर के बच्चों में पठन संबंधी अक्षमता और संज्ञानात्मक सूचना प्रक्रिया	डा. एम.के. पाणी उड़ीसा
35.	विद्यालयी बच्चों में शैक्षिक कार्य निष्पादन के एकीकृत मध्यस्थता के प्रभाव का अध्ययन	डा. अर्चना डोगरा नई दिल्ली
36.	बोर्ड परीक्षा में छात्रों की शैक्षिक संप्राप्ति का मूल्यांकन और सोलो-टेक्सोनामी का तुलनात्मक अध्ययन	डा. रंजीत बसु कलकत्ता
37.	परंपरागत समाज में गणितीय अवधारणाओं की पहचान पर आधारित गणित में शिक्षण कार्य प्रणाली का विकास	डा. एन.सी. घोष कलकत्ता
38.	ग्रामीण क्षेत्रों में चुनिंदा भौतिकीय अवधारणाओं के प्रदर्शनात्मक शिक्षण के प्रभावकारी मॉडलों का विकास	डा. जी.एस. रॉय कटक

क्रम संख्या	अध्ययन का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
39.	कक्षा आठ में दूसरी भाषा के रूप में अंग्रेजी के अधिगम और परीक्षण के संदर्भ में कंप्यूटर द्वारा भाषा-अधिगम की प्रभविष्णुता	डा. एन. बालसुब्रमण्यन कोयम्बटूर
40.	दृष्टिहीन छात्रों हेतु भौतिकी और जीव विज्ञान पर शिक्षण-अधिगम सामग्री तैयार करने का प्रयास	डा. देबाशीष पॉल पश्चिम बंगाल
41.	शिक्षण की कार्यनीतियाँ, अध्यापकों का जुड़ाव और विद्यालय संप्राप्ति	डा. (सुश्री) बी.एस. रेड्डी हैदराबाद
42.	सूचना प्रक्रियन माध्यम द्वारा भौतिकी की कठिनाइयों को हल करने की योग्यता का विकास	डा. एस. मोहन करायकुडी
43.	बच्चों में भाषा अक्षमता को कम करने के लिए अनेक उपचारात्मक कार्यनीतियों की तुलना	डा. (श्रीमती) तेहल कोहली चण्डीगढ़
44.	जनजातीय और गैर-जनजातीय किशोरों की व्यावसायिक आकांक्षा, मूल्य और सामाजिक-आर्थिक स्तर के मध्य संबंध	श्रीमती एस कुमावत उदयपुर
45.	किशोरावस्था में आत्महत्या उद्भावना की मनोवृत्तियाँ	प्रो. वी.वी. उपमन्यु चण्डीगढ़
46.	विद्यालयी शहरी-गरीब बच्चों की समस्याएँ (बालिकाओं के विशेष संदर्भ में)	डा. एस.के. पन्त इलाहाबाद

प्रकाशन अनुदान

एरिक एन.सी.ई.आर.टी. की आंशिक सहायता से प्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध

शीर्षक	लेखक का नाम
कन्जर्वेशन ऑफ सब्सटेंसेज़ एमंग स्कूल चिल्ड्रेन	डा. प्रभा शुक्ला रायपुर

पी.ई.ओज़. को आर्थिक सहायता

शिक्षा के सुधार के लिए स्वैच्छिक प्रयासों को बढ़ावा देने हेतु 'व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों (पी.ई.ओज़.) को सहायता योजना' के अंतर्गत निम्नलिखित प्रत्येक संगठन को उसके सम्मुख लिखित विस्तार/प्रकाशन संबंधी गतिविधियों के लिए दस हज़ार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई:

संगठन	कार्यक्रम/क्रियाकलाप
भारतीय सामाजिक विज्ञान अकादमी, इलाहाबाद	26-31 दिसम्बर 1999 को 33वीं इंडियन सोशल साइंसेज कांग्रेस का आयोजन
भारतीय गणित अध्यापक संघ (ए.एम.टी.आई.) चेन्नई	'जूनियर मैथेमेटीशियन' के हिंदी रूपान्तरण का प्रकाशन
गणित शिक्षण उन्नयन संघ कलकत्ता	'इंडियन जर्नल ऑफ मैथेमेटिक्स टीचिंग' का प्रकाशन

एरिक गोष्ठी

अनुसंधान परियोजनाओं की आर्थिक सहायता और अनुसंधान से जुड़े हुए दूसरे मामलों पर विचार करने के लिए एरिक की 31वीं बैठक एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में 11-3-2000 को आयोजित की गई।

अनुसंधान पर एरिक द्वारा प्रायोजित संगोष्ठी

एरिक द्वारा वित्तीय सहायताप्राप्त अनुसंधान परियोजनाओं की प्रगति तथा अनुवीक्षण के लिए छठी और सातवीं संगोष्ठी 27 से 29 मई 1999 को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल और 8 से 9 दिसम्बर 1999 को एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में आयोजित की गई।

विशेषज्ञ समूह गोष्ठियाँ

उपर्युक्त गोष्ठियों जैसे 27-29 मई 1999 को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल और 8-9 दिसम्बर 1999 को एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, के अलावा नए अनुसंधान प्रस्तावों की संवीक्षा के लिए विशेषज्ञ समूह गोष्ठियाँ भी आयोजित की गईं।

अनुसंधान पत्रिकाएँ

शैक्षिक अनुसंधान पर एन.सी.ई.आर.टी. ने तीन पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं, जिनके नाम हैं- (1) जर्नल ऑफ इण्डियन एजुकेशन, (2) भारतीय आधुनिक शिक्षा, (3) इण्डियन एजुकेशनल रिव्यू। 'इण्डियन एजुकेशनल रिव्यू' एक अर्द्धवार्षिक पत्रिका है जिसमें अनुसंधान पर्चे समाहित रहते हैं। 'जर्नल ऑफ इण्डियन एजुकेशन' और 'भारतीय आधुनिक शिक्षा' अंग्रेज़ी और हिन्दी की त्रैमासिक पत्रिकाएँ हैं। इन दोनों पत्रिकाओं का मुख्य उद्देश्य है- नवाचारी विचारों के प्रस्तुतीकरण द्वारा अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों और शोधकर्ताओं को फलदायी और अनवरत अंत:क्रिया के लिए एक खुला मंच प्रदान करना। शिक्षा की नवीनतम प्रगति से पाठकों को परिचित कराकर ये पत्रिकाएं विद्यालयी शिक्षा के सभी पहलुओं में नई सोच का विकास करती हैं।

प्रशिक्षण

डाइट और एस.सी.ई.आर.टी. संकाय के लिए अनुसंधान पद्धति में प्रशिक्षण कार्यक्रम

विभाग ने एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली में 27 मार्च से 7 अप्रैल 2000 तक उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। हरियाणा, पंजाब और हिमाचल प्रदेश के कुल 24 डाइट और एस.सी.ई.आर.टी. संकाय सदस्यों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। अनुसंधान पद्धति के विभिन्न घटकों पर बातचीत करने के साथ-साथ प्रतिभागियों ने बारह अनुसंधान प्रस्तावों का विकास किया जिसे वे अपने कार्य स्थल पर ले जा सकते हैं।

एन.आई.ई. व्याख्यानमाला

एन.आई.ई. व्याख्यानमाला के अंतर्गत 10 और 11 अगस्त 1999 को एक प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री प्रो. आर.एच. दवे ने निम्नलिखित विषयों पर भाषण दिया-

1. एन.सी.ई.आर.टी. के सम्मुख कार्य
2. सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता के संदर्भ में पाठ्यचर्या विकास
3. विद्यालयी शिक्षा में मूल्यांकन और निर्धारण : उभरती प्रवृत्तियाँ
4. विद्यालयी शिक्षा में अनुसंधान : उभरती संभावनाएँ

शैक्षिक सर्वेक्षण

जनगणना और नमूने के आधार पर शैक्षिक सर्वेक्षण संचालित करना एन.सी.ई.आर.टी. का एक महत्वपूर्ण कार्य है। वर्ष के दौरान निम्नलिखित शीर्षकों की परियोजनाएँ पूरी हो चुकी हैं। 'प्राथमिक स्तर पर एक आयु-वर्ग के नामांकन का अनुमान', 'प्राथमिक स्तर पर निष्क्रियता और शाला-त्याग-उत्तर प्रदेश के दो चयनित ज़िलों में नमूना अध्ययन', 'विद्यालयी शिक्षा का वर्धन : एक आलेखीय प्रस्तुतीकरण', 'प्राथमिक विद्यालयों में लड़कियों के लिए प्रोत्साहनकारी योजनाओं का मूल्यांकन और पुनरीक्षण' तथा उपकरणों के निर्माण, आकड़ों के एकत्रीकरण तथा विश्लेषण और आंकड़ों के प्रचार-प्रसार की रणनीति पर विचार-विमर्श करने हेतु 6 अक्टूबर 1999 को एक गोष्ठी आयोजित की गई। 7वीं ए.आई.एस.एस.ई. के लिए आंकड़ों को सारणीबद्ध करने हेतु रणनीति के बारे में राष्ट्रीय सूचना केन्द्र (एन.आई.सी.) के डिप्टी डायरेक्टर जनरल के साथ एक बैठक भी आयोजित की गई।

छठी ए.आई.ई.एस. की योजना और संचालन में ज़िला शिक्षा अधिकारियों और दूसरे अधिकारियों तथा राज्यों के उन अधिकारियों को जिनके लिए नीपा में प्रशिक्षण आयोजित किया गया था, एक अभिविन्यास प्रदान किया गया। 'शैक्षिक

सांख्यिकी (विद्यालय शिक्षा) भाग-1 का विश्वकोश' परियोजना पर कार्य शुरू किया जा चुका है।

कंप्यूटर संसाधन केन्द्र

एस.पी.एस.एस. का प्रयोग करते हुए मात्रात्मक अनुसंधान तरीकों में दो प्रशिक्षण कार्यक्रम-20 दिसम्बर 1999 से 7 जनवरी 2000 और 21 मार्च 2000 से 7 अप्रैल 2000 तक संचालित किए गए। एन.आई.ई. के विभिन्न अनुसंधानों, परिषद् की राष्ट्रीय प्रतिभा खोज (एन.टी.एस.) योजना के परिणामों और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर के प्रायोगिक विद्यालय में कक्षा-1 में प्रवेश के आंकड़ों को संसाधित करने का काम जारी है।

सांख्यिकी विभाग, भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, योजना आयोग और भारतीय सामाजिक विज्ञान और अनुसंधान परिषद् को, शैक्षिक सांख्यिकी पर उनकी समितियों के लिए, सलाह प्रदान की गई। एन.आई.ई. विभागों के संकाय को उनकी परियोजनाओं के लिए विश्लेषण योजना और अनुसंधान की रूपरेखा विकसित करने में सहयोग किया गया।

वर्ष 1999-2000 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

- सिक्स्थ ऑल इण्डिया एजुकेशनल सर्वे-मेन रिपोर्ट
- स्कूल एजुकेशन इन इण्डिया - ए ब्रोशर
- स्टेट पालिसिज़ ऑन इन्सेन्टिव स्कीम्स इन प्राइमरी स्कूल्स एण्ड देयर कन्ट्रीब्यूशन टु गर्ल्स पार्टिसिपेशन (प्रकाशनाधीन)
- ट्रेनिंग प्रोग्राम इन रिसर्च मैथडोलाजी फॉर डाइट एण्ड एस.सी.ई.आर.टी. फेकल्टी (अनुलिपि)।

20 अंतर्राष्ट्रीय संबंध

भारत सरकार के द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न देशों से शैक्षिक सामग्री/सूचनाएँ जैसे पाठ्यपुस्तकें, अध्यापक निर्देशिकाएँ और पूरक पुस्तकें भेजीं और प्राप्त की गईं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में सहमति से पाठ्यचर्या क्षेत्रों में विशेषज्ञों के दौरों की अदला-बदली की गई। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत प्राप्त सामग्री को एन.सी.ई.आर.टी. के पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना प्रभाग (डी.एल.डी. आई.) के अंतर्राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र में प्रदर्शित किया गया।

एन सी ई आर टी विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों (सी.ई.पीज़.) के प्रबंधनों को कार्यान्वित करने वाली भारत सरकार की एक एजेंसी की तरह कार्य करती है। एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में यूनेस्को/एपिड/यू.एन.डी.पी. इत्यादि द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं और कार्यक्रमों को भी लागू करती है और विचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए विदेशी शिष्टमंडलों और विशेषज्ञों हेतु कार्यक्रम आयोजित करती है। वह यूनेस्को, यू.एन.डी.पी., यूनीसेफ आदि के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, विचारविमर्श बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि में प्रतिभागिता के लिए अपने संकाय सदस्यों को प्रायोजित करती है। एन.सी.ई.आर.टी., अन्य बातों के साथ-साथ विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में विदेशी नागरिकों के लिए अल्पावधि सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करती है। यह विभिन्न देशों, संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों को भारत में विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के संबंध में सूचनाएं भी उपलब्ध कराती है।

द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

भारत सरकार के द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न देशों से शैक्षिक सामग्री/सूचनाएँ जैसे पाठ्यपुस्तकें, अध्यापक निर्देशिकाएँ और पूरक पुस्तकें भेजीं और प्राप्त की गईं। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों में सहमति से पाठ्यचर्या क्षेत्रों में विशेषज्ञों के दौरों की अदला-बदली की गई। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत प्राप्त सामग्री को एन.सी.ई.आर.टी. के पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना प्रभाग (डी.एल.डी. आई.) के अंतर्राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र में प्रदर्शित किया गया। वर्ष 1999-2000 के दौरान सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम भारत सरकार सहित सीरिया, ग्रीस, कुवैत, कम्बोडिया और फ्रांस द्वारा निष्पादित किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. में विदेशी आगन्तुक

वर्ष 1999-2000 के दौरान विभिन्न देशों के निम्नलिखित शिक्षाविद्/विशेषज्ञ/शिष्टमंडल एन.सी.ई. आर.टी. पधारे :

- यू.के. से डा. मैरी हेरिस ने 13 जुलाई, 1999 को जेन्डर एंड मैथेमेटिक्स के क्षेत्र में तथा महिला अध्ययन विभाग के साथ प्राथमिक गणित अध्यापकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण पर माड्यूल के मसौदे पर चर्चा करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया।
- प्रो. ई.आई. ब्राडकिन, प्रोफेसर (इतिहास), कनैक्टीकट कॉलेज, न्यू लंदन, इंग्लैंड ने 1 सितम्बर, 1999 को
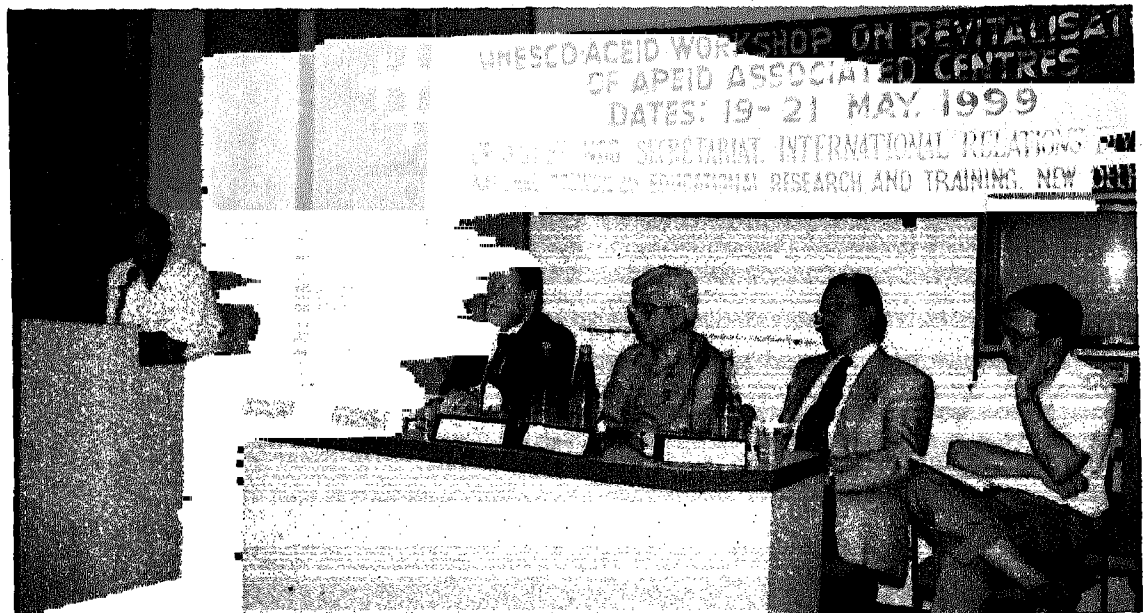
अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग के तत्वावधान में एपिड से संबद्ध केंद्रों के पुनःस्फूर्तिकरण पर आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन-सत्र।

प्रायोगिक विद्यालय, क्षे.शि.सं. मैसूर और कनैक्टीकट कॉलेज, न्यू लंदन के मध्य छात्र आदान-प्रदान कार्यक्रम के संबंध में क्षे.शि.सं., मैसूर का दौरा किया। उन्होंने संस्थान और विद्यालय के सदस्यों के साथ बातचीत की और छात्र आदान-प्रदान कार्यक्रम के संबंध में विचार-विमर्श किया।

इंटरनेशनल रिसर्च फांउडेशन फॉर ओपन लर्निंग, इंग्लैण्ड के डा. हिलेरी पेर्राटन ने 8 सितंबर, 1999 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने उन्हें एन.आई.ई. विभागों सहित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की भूमिका और कार्यों के संबंध में संक्षिप्त विवरण दिया।

श्री क्लावर यीसा, निदेशक (योजना), शिक्षा मंत्रालय, रावांडा के नेतृत्व में दो सदस्यों के शिष्टमंडल ने 16 सितम्बर, 1999 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया और निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. के साथ शैक्षिक प्रशिक्षण और अनुसंधान कार्यनीति तथा परिषद् के मुख्य कार्यक्रमों और क्रियाकलापों पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने विज्ञान और गणित किटों के प्रदर्शन के संबंध में डी.सी.ई.टी.ए. का भी दौरा किया।

क्यूशू यूनिवर्सिटी और किन्की यूनिवर्सिटी, जापान के प्रो. हीरोनाका काजूहीको, प्रोफेसर एमरीटस ने 16 सितम्बर, 1999 को एन.सी.ई.आर.टी. की संरचना और कार्यों के संबंध में जानने के लिए एन.सी.ई. आर.टी. के क्षेत्रीय कार्यालय, कलकत्ता का दौरा किया।

18 नवम्बर, 1999 को श्रीलंका का एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल भारत आया। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के संयुक्त निदेशक और विभागीय वरिष्ठ सदस्यों ने शिष्टमंडल का स्वागत किया। शिष्टमंडल के सदस्यों और एन.आई.ई. विभागों के वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने पाठ्यचर्या के क्षेत्र में अपने अनुभवों का आदान-प्रदान किया। शिष्टमंडल ने एन.सी.ई.आर.टी. का भी दौरान किया। उन्हें उसकी भूमिका और कार्यों का भी संक्षिप्त विवरण दिया गया।

14 दिसम्बर, 1999 को बांग्लादेश का एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल एन.सी.ई.आर.टी. आया। डीन (अकादमिक) और डी.टी.ई.ई., डी.ई.एस. और डी.पी., डी.ई.एस.एस.एच., डी.ई.एस.एम. और सी.आई.ई.टी. के अध्यक्षों ने शिष्टमंडल का स्वागत किया। शिष्टमंडल और एन.आई.ई. विभागों के वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने भारत में पाठ्यचर्या की योजना और प्रबन्ध, अध्यापक प्रशिक्षण और अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के क्षेत्र में अपने अनुभवों का आदान-प्रदान किया। शिष्टमंडल ने सी.आई.ई.टी. का भी दौरा किया और इसके कार्यों को समझने के लिए सी.आई.ई.टी. के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया।

- 22 दिसम्बर, 1999 को तीन सदस्यों के एरीटरीन शिष्टमंडल ने एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। अध्यक्ष, आई.आर. प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. ने शिष्टमंडल का स्वागत किया और एन.सी.ई.आर.टी. के सभी संघटकों के कार्यों और क्रियाकलापों के बारे में बताया। शिष्टमंडल ने सी.आई.ई.टी. का भी दौरा किया और उसके कार्यों और ढांचे को समझने के लिए सी.आई.ई.टी. के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया।
- 23 दिसम्बर, 1999 को शिक्षा सचिव के नेतृत्व में नेपाल से उच्च स्तरीय शिष्टमंडल एन.सी.ई.आर.टी. आया। निदेशक, संयुक्त निदेशक सहित एन.आई.ई. विभागों के वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने शिष्टमंडल का स्वागत किया और विभिन्न शैक्षिक पहलुओं पर चर्चा की। शिष्टमंडल ने प्रकाशन प्रभाग और सी.आई.ई.टी. का भी दौरा किया तथा उनके समक्ष तकनीकी सुविधाओं, ई.टी.वी. कार्यक्रमों इत्यादि का प्रदर्शन किया गया।
- डा. हॉवर्ड ए. हूसोक, हारवर्ड यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. ने 10 जनवरी, 2000 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया और ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम पर संकाय सदस्यों के साथ विचार विमर्श किया।
- डा. बेट्टी कॉलिस, प्रोफेसर (टेली-लर्निंग), शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी संकाय, सैन्टर फॉर टेलीमैटिक्स एंड इनफोर्मेशन टैक्नोलोजी (सी.टी. आई.टी.), यूनिवर्सिटी ऑफ ट्वंटे, नीदरलैण्ड ने 10 जनवरी, 2000 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया और भारत में शिक्षा प्रणाली पर विचार-विमर्श

जापान के विद्यार्थियों का परिषद्-दौरा।

किया तथा कक्षा 2000 और टेलीकान्फ्रेंसिंग प्रयोगों की सराहना की।

- श्री किल्ची ओयसू, यूनेस्को कार्यालय, बैंकाक, थाईलैण्ड ने 2 फरवरी, 2000 को 'भारत में विशेष आवश्यकता समूह' के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। विशिष्ट अतिथि को एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा किए गए कार्यों की प्रकृति और 'अंतर्राष्ट्रीय विशेष आवश्यकता शिक्षा केन्द्र' को स्थापित करने में आगे की भूमिका के बारे में सूचना उपलब्ध कराई गई।
- नार्वे से बीजरोन लूसियस के नेतृत्व में 9 छात्रों और 2 संकाय सदस्यों के एक दल ने 14 से 17 फरवरी, 2000 तक यूनेस्को/ए.एस.पी. सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर का दौरा किया।
- प्रो. गजेन्द्र के. वर्मा (ई.सी.टी. परियोजना पर यू.के. समन्वयक) के नेतृत्व में मनचेस्टर यूनिवर्सिटी के सात सदस्यों (छह यूरोपीय देशों) के शिष्टमंडल ने 23 फरवरी 2000 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया और शिष्टमण्डल ने एन.सी.ई.आर.टी. और जे.एन.यू. स्थित केन्द्रीय विद्यालयों का भी दौरा किया। शिष्टमंडल ने डीन (समन्वय) और संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श भी किया।
- नीपा में शैक्षिक योजना और प्रशासन के 16वें अंतर्राष्ट्रीय डिप्लोमा में भाग ले रहे 32 आगन्तुकों ने 2 मार्च 2000 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया और विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन शिक्षा, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा, महिला शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, पाठ्यपुस्तक शिक्षा के क्षेत्र में एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया। प्रतिभागियों ने सी.आई.ई.टी. का भी दौरा किया।
- बी.आर.ए.सी., बांग्लादेश से छह सदस्यों के शिक्षा अनुसंधान दल ने 8 मार्च 2000 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया और परिषद् द्वारा प्रारंभ किए गए अनुसंधान क्रियाकलापों पर चर्चा की।
- प्रो. ए. छिब्बर, इंटरनेशनल क्रिस्चियन यूनिवर्सिटी, जापान के नेतृत्व में जापान के दस छात्रों के एक दल ने 14 मार्च, 2000 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। समूह ने डी.टी.ई.ई. के संकाय सदस्यों के साथ अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में विचार-विमर्श किया।
- मंगोलिया के एक उच्च स्तरीय शिष्टमंडल ने 29 मार्च, 2000 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया और डीन (अकादमिक) तथा संकाय सदस्यों के साथ शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।
- डा. रूपर्ट मैकलीन, अध्यक्ष, ए.सी.ई.आई.डी., डा. इयान बिर्च, परामर्शदाता, यूनेस्को, बैंकाक और डा. हिरोशी ओम्यूरे, यूनेस्को के सहयोगी विशेषज्ञ, प्रो. मोएगिआडी, निदेशक, यूनेस्को कार्यालय, नई दिल्ली

ने मई, 1999 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित 'यूनेस्को-एपिड वर्कशाप ऑन रिवाइटीलाइज़ेशन ऑफ दि एसोसिएटिड सेन्टर्स ऑफ एपिड' में तीन दिन भाग लिया। भारत के 21 केन्द्रों में से एपिड के 16 सहयोगी केन्द्रों ने बैठक में भाग लिया।

- फिनलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी और इंग्लैण्ड के शैक्षिक विशेषज्ञों ने पूर्व-विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में संस्कृति-विशिष्ट संदर्भ में अध्यापक-अधिगम का अवलोकन करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया।
- कनाडा के अध्येता, डा. लेरी पोचनार ने ई.सी.सी.ई. क्रियाकलापों का अध्ययन करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के क्रेच और आई.आई.टी. परिसर में पूर्व-विद्यालय का दौरा किया।
- बांग्लादेश के एक उच्च स्तरीय दल को अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण विभाग द्वारा अनौपचारिक और सतत शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण दिया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों की अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में प्रतिभागिता

- डा. एस.एन. प्रसाद, प्रोफेसर (विज्ञान), क्षे.शि.सं., मैसूर ने यूनेस्को के लिए परामर्शदाता के रूप में मालदीव विद्यालयों में भौतिकी के अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु 17-24 अप्रैल, 1999 तक मालदीव गणराज्य, माले का दौरा किया। उन्होंने 30 अध्यापकों के लिए एक सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम का विकास और कार्यान्वयन किया।
- प्रो. अरुण के. मिश्रा (तत्कालीन संयुक्त निदेशक), पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल ने यूनेस्को विशेषज्ञ के रूप में 26-30 अप्रैल, 1999 तक सिओल, कोरिया गणराज्य का दौरा किया तथा तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा पर द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में आलेख प्रस्तुत किया।
- प्रो. ऊषा नैयर, अध्यक्ष, डी.डब्ल्यू.एस. 'एनहांसिंग कैपेबिलिटीज़ फॉर कम्युनिटी रीवाइटेलाइज़िंग प्रैक्टिसिज़ इन एजुकेशनल डिवेलपमेन्ट' पर अंतर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में भाग लेने के लिए 16-19 मई, 1999 तक कराची गईं। उन्होंने दो आलेख प्रस्तुत किए (1) शिक्षा लहर: रिपोर्ट ऑफ यूनेस्को इन्नोवेटिव पायलट प्रोजेक्ट ऑन एजुकेशन ऑफ गर्ल्स इन रूरल एरियाज़ और (2) जैन्डर सेन्ज़ीटिव एप्रोच टु करीकुलम ट्रांसेक्शन एट दि एलीमेंटरी स्टेज।
- डा. वी. माधा सुरेश, प्रवक्ता (भूगोल) क्षे.शि.सं., मैसूर 'संयुक्त राष्ट्र संघ सम्मेलन के 'लॉ ऑफ दि सी : इट्स इम्पिलीमैंटेशन एंड एजंडा 21' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के लिए 31 मई से 27 अगस्त 1999 तक इंटरनेशनल ओशन इंस्टीट्यूट, डलहौज़ी यूनिवर्सिटी, हालीफैक्स, कनाडा गए।
- प्रो. अर्जुन देव, अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस.एच. ने गैर तमिल-भारतीय भाषाओं से संबंधित परियोजना पर शिक्षा मंत्रालय, सिंगापुर के सहयोग से विचार-विमर्श के लिए 8 से 12 जून, 1999 तक सिंगापुर का दौरा किया।
- प्रो. आर.डी. शुक्ल, अध्यक्ष, डी.ई.एस.एम. ने डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय संगठन (आई.ओ.एस.टी.ई.) की 9वीं संगोष्ठी में 26 जून से 3 जुलाई 1999 तक भाग लिया। उन्होंने 'वैज्ञानिक साक्षरता और पर्यावरण जागरूकता हेतु भारत में विद्यालयी शिक्षा के 10 वर्षों तक विज्ञान पाठ्यचर्या' पर आलेख प्रस्तुत किया।
- डा. (श्रीमती) सरोज बी. यादव, रीडर, डी.ई.एस.एस.एच. ने 'एडोलसेन्ट रीप्रोडक्टिव हैल्थ' में प्रशिक्षण को सुसाध्य (मार्ग निर्देशन और परामर्श तथा वयस्क विकास में 3 क्षेत्रीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम) बनाने हेतु 11-31 जुलाई 1999 तक दोमासी-मलावी का दौरा किया।
- डा. जी.सी. उपाध्याय, रीडर, डी.पी.एस.ई.ई. ने श्रीलंका में यूनीसेफ द्वारा प्रायोजित कार्यशाला 'एसेसिंग लर्निंग एचीवमेंट' में 19-23 जुलाई, 1999 तक भाग लिया।
- प्रो. ए.के. मिश्रा, डीन (अकादमिक) ने 21वीं शताब्दी के लिए शिक्षा के परिप्रेक्ष्य पर संगोष्ठी में भाग लेने के लिए 29-30 जुलाई, 1999 तक काठमांडू (नेपाल) का दौरा किया।

- डा. जी.एल. अरोड़ा, अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई. ने काठमांडू, नेपाल में दक्षिण एशिया प्रशिक्षण कार्यशाला के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने हेतु प्रारंभिक बैठक में 7-9 सितम्बर, 1999 तक भाग लिया।
- डा. कानन के. साधु, वरिष्ठ प्रवक्ता, डी.ई.एस.एस.एच. ने इंटरकन्ट्री विज़िट कार्यक्रम के अंतर्गत जनसंख्या शिक्षा, जिसमें किशोरावस्था पुनरुत्पादक स्वास्थ्य समिम्लत है, के क्षेत्र में अनुभवों का आदान-प्रदान करने के लिए 10-20 सितंबर, 1999 तक कोलम्बो-श्रीलंका का दौरा किया।
- डा. ए.एन. माहेश्वरी, (तत्कालीन संयुक्त निदेशक) ने 'एजुकेशन फॉर इंटरनेशनल अंडरस्टैंडिंग एंड पीस' पर कार्यशाला में भाग लेने के लिए 13-17 सितम्बर, 1999 इचॉन, दक्षिण कोरिया गणराज्य का दौरा किया।
- 3 संकाय सदस्य डा. डी.जी. राव और डा. एस.पी. मिश्रा, वरिष्ठ प्रवक्ता तथा श्री पी.एन. मिश्रा, पी.जी.टी. एवं क्षे.शि.स. और डी.एम. विद्यालय, भुवनेश्वर के चार छात्रों के एक दल ने यूनेस्को/ए.एस.पी. सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत 13-28 सितम्बर, 1999 तक नीड्यरेड वीडरजेन्डो स्कोले, ओसलो, नार्वे का दौरा किया।
- डा. एस.सी. पांडे, रीडर, डी.ई.एस.एस.एच. ने 14-18 सितम्बर 1999 को लंदन में आयोजित छठे विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लिया।
- डा. (सुश्री) सरोज पांडे, रीडर, डी.टी.ई.ई. ने टोक्यो, जापान में 'टीचर एजुकेशन फॉर पीस एंड इंटरनेशनल अंडरस्टैंडिंग' पर 27 सितम्बर से 8 अक्टूबर, 1999 तक क्षेत्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
- डा. (श्रीमती) अनीता जुल्का, रीडर, डी.ई.जी.एस.एन. ने युकोसूका कानागावा, जापान में विशेष शिक्षा पर नवीं क्षेत्रीय संगोष्ठी में 8-13 नवम्बर, 1999 तक भाग लिया।
- श्री बिमल जुल्का, आई.ए.एस., सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. ने यू.के. में टैक्नीकल कोओपरेशन ट्रेनिंग प्रोग्राम, 1999-2000, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, क्वीन एलीज़ेबेथ हाऊस में अध्येतावृत्ति के अंतर्गत 24 नवंबर 1999 से 15 जुलाई 2000 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- प्रो. उत्पल मलिक, अध्यक्ष, डी.सी.ई.टी.ए. ने विद्यालयों में आई.टी. प्रयोग के मूल्यांकन पर अंतर्राष्ट्रीय बैठक में भाग लेने के लिए 29 जनवरी से 6 फरवरी तक टोक्यो, जापान का दौरा किया। यह बैठक नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशनल रिसर्च ऑफ जापान तथा यूनेस्को द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई थी।

21 हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन

राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा बहुत से कदम उठाए गए। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा समय-समय पर जारी आदेशों, निर्देशों और राजभाषा विषयों के समुचित अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए हिन्दी प्रकोष्ठ, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा बहुत से उपाय किए गए।

राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा बहुत से कदम उठाए गए। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा समय-समय पर जारी आदेशों, निर्देशों और राजभाषा विषयों के समुचित अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए हिन्दी प्रकोष्ठ, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा बहुत से उपाय किए गए। एन.सी.ई.आर.टी. का प्रशासनिक और शैक्षिक कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना और प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध करवाना इसके कार्यकलापों का मुख्य केन्द्र है। इस उद्देश्य से हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा संकल्पनात्मक साहित्य तैयार किया गया, एन.सी.ई.आर.टी. के कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, भावी योजनाएं तैयार की गईं, एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न संघटकों में हिन्दी के प्रयोग की प्रगति का निरीक्षण किया गया और त्रैमासिक प्रगति का मूल्यांकन किया गया। वर्ष 1999-2000 के दौरान हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए किए गए मुख्य कार्यक्रम निम्नलिखित हैं:

हिन्दी पखवाड़ा

1-14 सितम्बर, 1999 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। इस पखवाड़े के दौरान जो प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं वे थीं :

- हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता
- हिन्दी टिप्पण व प्रारूपण प्रतियोगिता
- हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता
- हिन्दी टंकण प्रतियोगिता
- हिन्दी कविता प्रतियोगिता
- हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

इन प्रतियोगिताओं में 30 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया जिनमें 29 व्यक्तियों को विजयी घोषित किया गया। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले पुरस्कृत विजेताओं को क्रमशः रु. 800, रु. 500 तथा रु. 300 की धनराशि के नकद पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। समूह 'घ' के नवसाक्षर समूह हेतु एक हिन्दी लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया और दो समूहों के छह कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में भी हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी सप्ताह/पखवाड़े के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं तथा कार्यक्रमों का आयोजन किया गया तथा विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिन्दी अनुवाद कार्य

परिषद् के विभिन्न संघटकों, विभागों/अनुभागों आदि से प्राप्त प्रशासनिक कागज़-पत्रों का अनुवाद करने में हिन्दी

हिंदी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक उपस्थित व्यक्तियों को संबोधित करते हुए।

प्रकोष्ठ सहायता करता रहा है। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत आने वाले सभी प्रतिवेदनों जैसे कार्यालय ज्ञापन, परिपत्र, विज्ञापन, प्रेस, विज्ञप्ति, कार्यालय आदेश, प्रशासनिक व लेखा संबंधी अन्य रिपोर्ट आदि का हिन्दी अनुवाद किया गया।

कार्यान्वयन-बैठकों की मानीटरिंग (अनुवीक्षण)

हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को अधिकाधिक बढ़ावा देने और राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा करने के लिए 24 सितम्बर, 1999 को एन.सी.ई.आर.टी. मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीन बैठकें आयोजित की गईं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा भी अपने संस्थानों में इस प्रकार की बैठकों का आयोजन किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित कार्यों की निगरानी और प्रगति का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से तिमाही प्रगति रिपोर्ट तैयार करने के अलावा हिन्दी प्रकोष्ठ ने परिषद् के विभिन्न विभागों/अनुभागों का निरीक्षण भी किया। इस दौरान उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग, आर.आई.ई./एफ.ए. अनुभाग और सी.आई.ई.टी. का निरीक्षण व दौरा किया गया तथा राजभाषा के प्रयोग से संबंधित उनकी कठिनाइयों के निराकरण के लिए विभिन्न प्रकार के सुझाव दिए गए।

हिन्दी कार्यशाला

हिन्दी को बढ़ावा देने और एन.सी.ई.आर.टी. के अधिकारियों/कर्मचारियों में प्रवीणता का विकास करने के लिए मुख्यालय में अपर श्रेणी लिपिकों और उच्च श्रेणी लिपिकों तथा अनुभाग अधिकारियों के लिए पृथक-पृथक कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

22 परिशिष्ट

- **परिशिष्ट I**
  एन सी ई आर टी की समितियाँ : 1999-2000
- **परिशिष्ट II**
  स्वीकृत स्टाफ की स्थिति (31 मार्च, 2000)
- **परिशिष्ट III**
  वर्ष 1999-2000 का प्राप्ति और भुगतान लेखा
- **परिशिष्ट IV**
  1999-2000 के दौरान निकाले गए प्रकाशन
- **परिशिष्ट V**
  एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के क्षेत्रीय उत्पादन व वितरण केन्द्र तथा थोक एजेंटों के नाम और पते

एन सी ई आर टी की समितियाँ : वर्ष 1999-2000

- महासमिति
- कार्यकारिणी समिति
- वित्त समिति
- स्थापना समिति
- भवन एवं निर्माण समिति
- कार्यक्रम सलाहकार समिति
- शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति
- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अकादमिक समिति
- सी.आई.ई.टी. का संस्थान सलाहकार बोर्ड
- पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. का संस्थान सलाहकार बोर्ड
- आर.आई.ई., अजमेर की प्रबंध समिति
- आर.आई.ई., भोपाल की प्रबंध समिति
- आर.आई.ई., भुवनेश्वर की प्रबंध समिति
- आर.आई.ई., मैसूर की प्रबंध समिति
- राजभाषा कार्यान्वयन समिति

महासमिति

पद	सदस्य
1. मंत्री मानव संसाधन विकास मंत्रालय पदेन अध्यक्ष	1. डा. मुरली मनोहर जोशी केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001
2. अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग पदेन	2(i) प्रो. (कु.) अरमैती देसाई अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली 110002 (20.7.1999 तक) (ii) डा. हरि प्रताप गौतम अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली 110002 (22.7.1999 से)
3. सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) पदेन	3. श्री एम.के. काव सचिव, भारत सरकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001
4. भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालयों के नामित चार उप-कुलपति (प्रत्येक क्षेत्र से एक)	4. उप-कुलपति तेजपुर विश्वविद्यालय तेजपुर, सोनीतपुर असम 784001 5. उप-कुलपति महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय वडोदरा गुजरात 390002

5. प्रत्येक राज्य सरकार और विधान सभा से युक्त संघ शासित क्षेत्र का एक-एक प्रतिनिधि जो राज्य/संघ शासित क्षेत्र का शिक्षा मंत्री (अथवा उसका प्रतिनिधि) हो

6. उप-कुलपति
   हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
   समर हिल, शिमला 171005

7. उप-कुलपति
   श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय
   तिरुपति 517502
   आंध्र प्रदेश

8. विद्यालय शिक्षा मंत्री
   आंध्र प्रदेश सरकार
   ए.पी. सचिवालय भवन
   हैदराबाद 500022

9. विद्यालय शिक्षा मंत्री
   अरुणाचल प्रदेश सरकार
   ईटानगर 791111

10. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    असम सरकार, जनता भवन
    दिसपुर (असम) 781006

11. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    बिहार सरकार
    नया सचिवालय भवन
    पटना 800015

12. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    गोवा सरकार, गोवा सचिवालय
    पणजी 403001

13. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    गुजरात सरकार
    ब्लाक नं. 1, सचिवालय
    गांधी नगर 382010

14. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    हरियाणा सरकार
    हरियाणा सिविल सचिवालय
    चण्डीगढ़ 160001

15. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    हिमाचल प्रदेश सरकार
    शिमला 171002

16. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    जम्मू और कश्मीर सरकार
    श्रीनगर 180001

17. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    कर्नाटक सरकार
    विधान सौध
    बैंगलूर 560001

18. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    केरल सरकार
    अशोक नंथनकोडे
    तिरुअनंतपुरम 695001

19. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    मध्य प्रदेश सरकार
    भोपाल 462001

20. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    महाराष्ट्र सरकार
    मंत्रालय मेन
    मुंबई 400032

21. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    मणिपुर सरकार
    मणिपुर सचिवालय
    इंफाल 759001

22. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    मेघालय सरकार
    मेघालय सचिवालय
    शिलांग 793001

23. विद्यालय शिक्षा मंत्री
    नागालैंड सरकार
    कोहिमा 797001

24. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मिज़ोरम सरकार
आइज़ोल 796001

25. विद्यालय शिक्षा मंत्री
उड़ीसा सरकार
उड़ीसा सचिवालय
भुवनेश्वर 751001

26. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पंजाब सरकार
चण्डीगढ़ 160017

27. विद्यालय शिक्षा मंत्री
राजस्थान सरकार
सरकारी सचिवालय
जयपुर 302001

28. विद्यालय शिक्षा मंत्री
सिक्किम सरकार
सिक्किम सचिवालय
ताशिलिंग, गंगटोक 737101

29. विद्यालय शिक्षा मंत्री
तमिलनाडु सरकार
फोर्ट सेंट जॉर्ज
चेन्नई 500009

30. विद्यालय शिक्षा मंत्री
त्रिपुरा सरकार
सिविल सचिवालय
अगरतला 799001

31. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पश्चिम बंगाल सरकार
राइटर्स बिल्डिंग
कलकत्ता 700001

32. विद्यालय शिक्षा मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ 226001

33. विद्यालय शिक्षा मंत्री
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार, पुराना सचिवालय
दिल्ली 110054

34. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पांडिचेरी सरकार
विधान सभा सचिवालय
विक्टर सिमोनल स्ट्रीट
पांडिचेरी 605001

6. कार्यकारिणी समिति के वे सदस्य जो ऊपर दी गई सूची में सम्मिलित नहीं हैं

35. श्री जयसिंह राव गायकवाड़ पाटिल
शिक्षा राज्य मंत्री
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग)
शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110001

36(i) प्रो. ए.के. शर्मा
निदेशक
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016
(30.6.99 तक)

(ii) प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत
निदेशक
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016
(14.7.99 से)

37. प्रो. जे.वी. नारलीकर
खगोलशास्त्र तथा खगोल भौतिकीय
अंतर विश्वविद्यालय केन्द्र
पुणे विश्वविद्यालय
पुणे

38. प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत
अध्यक्ष
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्
सी 2/10, सफदरजंग विकास क्षेत्र
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016
(13.7.99 तक)

39. श्रीमती विषलक्षी एच.
सहायक मिस्ट्रेस
सर्वोदय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय
जयानगर, शिमोगा ज़िला
कर्नाटक 577201

40. श्रीमती विभा पार्थसारथी
राष्ट्रीय महिला आयोग
4, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली 110003

41. प्रो. ए.एन. माहेश्वरी
संयुक्त निदेशक
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016
(8.11.99 तक)

42. डा. अरुण के. मिश्र
संयुक्त निदेशक
पंडित सुंदरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक
शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.,
एन.सी.ई.आर.टी.)
131, जोन-2, एम.पी. नगर
भोपाल 462011
(1.6.99 तक)

43. डा. पी.के. भट्टाचार्य
संयुक्त निदेशक
सी.आई.ई.टी.
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016

44. डा. डी. के. भट्टाचारजी
प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर 750007

45. श्री एम. एम. झा
संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा)
शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110001

46(i) श्री सुधीर नाथ
वित्तीय सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी.
शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110001
(मई 1999 तक)

(ii) श्री संजय नारायण
वित्तीय सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी.
शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110001
(3.6.99 से)

7. (क) अध्यक्ष
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
नई दिल्ली
पदेन

47. श्री बी.पी. खंडेलवाल
अध्यक्ष
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केन्द्र, 2, कम्युनिटी सेंटर
प्रीत विहार, दिल्ली 110092

(ख) आयुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन
नई दिल्ली
पदेन

48. आयुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन
18, इंस्टीट्यूशनल एरिया
शहीद जीत सिंह मार्ग
नई दिल्ली 110016

(ग) निदेशक
केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो
नई दिल्ली
पदेन

49. निदेशक
केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो
(डी.जी.एच.एस.)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
कोटला रोड
नई दिल्ली 110002

(घ) उपमहानिदेशक
प्रभारी, कृषि शिक्षा
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली
पदेन

50. उप महानिदेशक
प्रभारी, कृषि शिक्षा
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
कृषि मंत्रालय
डा. राजेन्द्र प्रसाद रोड
नई दिल्ली 110001

(ङ) निदेशक (प्रशिक्षण)
प्रशिक्षण और रोज़गार महानिदेशालय
श्रम मंत्रालय
नई दिल्ली
पदेन

51. निदेशक (प्रशिक्षण)
प्रशिक्षण और रोज़गार महानिदेशालय
श्रम मंत्रालय
श्रमशक्ति भवन
नई दिल्ली 110001

(च) शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि
योजना आयोग
नई दिल्ली
पदेन

52. शिक्षा सलाहकार
योजना आयोग
योजना भवन, संसद मार्ग
नई दिल्ली 110001

8. भारत सरकार द्वारा मनोनीत छह व्यक्ति (जिनमें कम से कम चार विद्यालयी अध्यापक हों)

53. श्री के. आर. सिद्दप्पा
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
डी/2 विद्यालय नगर
दावणगेरे 577005
कर्नाटक

54. श्री जे.एस. भण्डारी
प्रधानाचार्य
केंद्रीय विद्यालय
पो.ओ. न्यू फारेस्ट
देहरादून 248006
उत्तर प्रदेश

55. श्री जी.बी. हेगाड़ी
प्रधानाचार्य
दिल्ली कन्नड़ व. मा. विद्यालय
लोधी एस्टेट
नई दिल्ली 110003

56. श्री ओ. रंगरेड्डी
प्रधानाचार्य
जवाहर नवोदय विद्यालय
वलसपल्ले, मदनपल्ले (पोस्ट)
चित्तूर ज़िला 517325
आंध्र प्रदेश

57. डा. एम.एन. कुलकर्णी
आई 302
अंसल लेक व्यू अपार्टमेंट
श्यामला हिल्स
भोपाल 462013

58. प्रो. जयालक्ष्मी
जया भवन
पोरूवाज़ी, पो.ओ. सस्तामकोट्टा
कोल्लम 690520
केरल

विशेष आमंत्रित

59. सचिव
भारतीय स्कूल प्रमाण-पत्र परीक्षा परिषद्
प्रगति हाउस, तीसरी मंज़िल
47, नेहरू प्लेस
नई दिल्ली 110019

संयोजक

60(i) श्री बिमल जुल्का
सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016
(23.11.1999 तक)

(ii) श्रीमती सोनाली कुमार
सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016
(24.11.1999 से)

कार्यकारिणी समिति

परिषद् के अध्यक्ष जो कार्यकारिणी के पदेन अध्यक्ष होंगे	1. डा. मुरली मनोहर जोशी मानव संसाधन विकास मंत्री एवं अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001
मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री जो कार्यकारिणी के पदेन उपाध्यक्ष होंगे	2. श्री जयसिंह राव गायकवाड़ पाटिल शिक्षा राज्य मंत्री मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110001
परिषद् के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत शिक्षा उपमंत्री	......
परिषद् के निदेशक	3(i) प्रो. ए.के. शर्मा निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (30. 6. 1999 तक) (ii) प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (14. 7. 1999 से)
सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय पदेन	4. श्री एम.के. काव सचिव, भारत सरकार शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001
अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग पदेन	5(i) प्रो. (कु.) अरमैती देसाई अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली 110002 (20. 7. 1999 तक)

	(ii) डा. हरि प्रताप गौतम अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली 110002 (22.7.1999 से)
अध्यक्ष द्वारा मनोनीत स्कूल शिक्षा में रुचि रखने वाले चार शिक्षाविद् (जिनमें से दो स्कूल के अध्यापक हों)	6(i) प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत अध्यक्ष राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् सी-2/10, सफदरजंग विकास क्षेत्र श्री अरविंद मार्ग नई दिल्ली 110016 (13.7.1999 तक)
	(ii) श्रीमती विषलक्षी एच. सहायक मिस्ट्रेस सर्वोदय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय जयानगर शिमोगा ज़िला कर्नाटक 577201
	(iii) श्रीमती विभा पार्थसारथी अध्यक्ष राष्ट्रीय महिला आयोग 4, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली 110003
परिषद् के संयुक्त निदेशक	7. डा. ए.एन. माहेश्वरी संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (8.11.1999 तक)
अध्यक्ष द्वारा मनोनीत परिषद् के संकाय के तीन सदस्य, जिनमें कम से कम दो सदस्य प्रोफसर तथा विभागाध्यक्षों के स्तर के हों	8(i) प्रो. अरुण के. मिश्र संयुक्त निदेशक पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान 131, ज़ोन-2 एम.पी. नगर, भोपाल 462011 (1.6.1999 तक)

	(ii) प्रो. पी.के. भट्टाचार्य संयुक्त निदेशक केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016
	(iii) डा. डी.के. भट्टाचारजी प्राचार्य क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भुवनेश्वर 750007
मानव संसाधन विकास मंत्रालय का एक प्रतिनिधि	9. श्री एम.एम. झा संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा) शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001
वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि जो परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा	10(i) श्री सुधीर नाथ वित्तीय सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी. शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110001 (मई 1999 तक)
	(ii) श्री संजय नारायण वित्तीय सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी. शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110001 (3.6.1999 से)
सचिव एन.सी.ई.आर.टी संयोजक	11(i) श्री बिमल जुल्का सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (23.11.1999 तक)
	(ii) श्रीमती सोनाली कुमार सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (24.11.1999 से)

वित्त समिति

निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. अध्यक्ष, पदेन	1(i) प्रो. ए.के. शर्मा निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (30.6.1999 तक) (ii) प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (14.7.1999 से)
वित्तीय सलाहकार पदेन	2(i) श्री सुधीर नाथ वित्तीय सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी. शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001 (मई 1999 तक) (ii) श्री संजय नारायण वित्तीय सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी. शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001 (3.6.1999 से)
संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा) मानव संसाधन विकास मंत्रालय पदेन	3(i) श्री एम.एम. झा संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा) शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001

(ii) संयुक्त निदेशक
नीपा, एन.आई.ई. परिसर
नई दिल्ली 110016

(iii) डा. बी.पी. खंडेलवाल
अध्यक्ष
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केंद्र, 2 कम्युनिटी सेंटर
प्रीत विहार, दिल्ली 110092

सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
सदस्य संयोजक

4(i) श्री बिमल जुल्का
सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016
(23.11.1999 तक)

(ii) श्रीमती सोनाली कुमार
सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016
(24.11.1999 से)

स्थापना समिति

निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. अध्यक्ष पदेन	1(i) डा. ए.के. शर्मा निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (30.6.1999 तक) (ii) प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (14.7.1999 से)
संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. पदेन	2. प्रो. ए.एन. माहेश्वरी संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016
परिषद् के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार का नामिती	3. श्री एम.एम. झा संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा) शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001
अध्यक्ष द्वारा मनोनीत चार शिक्षाविद् जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक हो	4. प्रो. सी.एल. आनन्द विज़िटिंग प्रोफेसर पंजाब विश्वविद्यालय एफ 87, विकास पुरी नई दिल्ली 110018 5. प्रो. पी. वेंकटरमय्या उपकुलपति कुवेम्पु विश्वविद्यालय, ज्ञान सहयाद्रि शंकरघट्टा, ज़िला शिमोगा 577115 (कर्नाटक)

6. डा. एस.एस. सालगांवकर
निदेशक
भारतीय शिक्षा संस्थान
128/2, जे.पी. नायक मार्ग
कोथरुड, पुणे 411029

7. कु. नरगिस पंचपकेसन
प्रोफेसर, केंद्रीय शिक्षा संस्थान
दिल्ली विश्वविद्यालय
33 छात्र मार्ग, दिल्ली 110007

अध्यक्ष द्वारा मनोनीत क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान से एक प्रतिनिधि

8. प्रो. डी.के. भट्टाचारजी
प्राचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर 751007

अध्यक्ष द्वारा मनोनीत राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (नई दिल्ली) से एक प्रतिनिधि

9. प्रो. (श्रीमती) ऊषा नायर
अध्यक्ष
महिला अध्ययन विभाग
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016

परिषद् के शैक्षिक तथा गैर-शैक्षिक नियमित स्टाफ, प्रत्येक में से एक-एक प्रतिनिधि जिनका चयन परिशिष्ट में इस संबंध में निर्धारित वनियम के अनुसार किया गया हो

10. श्री विनोद चंद्र किमोथी
पी.जी.टी.
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
(शैक्षिक स्टाफ के प्रतिनिधि)

11. श्री वेद प्रकाश
सहायक कार्यक्रम समन्वयक
डी.ई.जी.एस.एन., एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016
(गैर-शैक्षिक स्टाफ के प्रतिनिधि)

वित्तीय सलाहकार
एन.सी.ई.आर.टी.

12(i) श्री सुधीर नाथ
वित्तीय सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी.
शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110001
(मई 1999 तक)

(ii) श्री संजय नारायण
वित्तीय सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी.
शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110001
(3.6.1999 से)

सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
संयोजक

13(i) श्री बिमल जुल्का
सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016
(23.11.1999 तक)

(ii) श्रीमती सोनाली कुमार
सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016
(24.11.1999 से)

भवन एवं निर्माण समिति

निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. अध्यक्ष, पदेन	1(i)	प्रो. ए.के. शर्मा निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (30.6.1999 तक)
	(ii)	प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (14.7.1999 से)
संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. उपाध्यक्ष, पदेन	2.	प्रो. ए.एन. माहेश्वरी संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (8.11.1999 तक)
मुख्य अभियंता सी.पी.डब्ल्यू.डी. या उनका प्रतिनिधि	3.	श्री वी.के. शर्मा अधीक्षक अभियंता, सी.पी.डब्ल्यू.डी. कमरा सं. 113, सेवा भवन आर.के. पुरम नई दिल्ली 110022
वित्त मंत्रालय (निर्माण) का एक प्रतिनिधि	4.	श्री डी.सी. भट्ट सहायक वित्त सलाहकार (निर्माण) शहरी विकास मंत्रालय निर्माण भवन नई दिल्ली 110001
एन.सी.ई.आर.टी. का परामर्शदाता वास्तुकार	5.	श्री दीना नाथ वरिष्ठ वास्तुकार सी.पी.डब्ल्यू.डी., सेवा भवन आर.के. पुरम नई दिल्ली 110022

परिषद् के वित्तीय सलाहकार या उनका प्रतिनिधि	6(i) श्री सुधीर नाथ वित्तीय सलाहकार एन.सी.ई.आर.टी. शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001 (मई 1999 तक)
	(ii) श्री संजय नारायण वित्तीय सलाहकार एन.सी.ई.आर.टी. शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001 (3.6.1999 से)
मानव संसाधन विकास मंत्रालय का एक प्रतिनिधि	7. श्री एम.एम. झा संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा) शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110001
एक स्थायी सिविल इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	8. श्री के.के. गुलाटी वास्तुकार व अभियन्ता सी-2 सी, पाकेट-2, फ्लैट सं. 9 जनकपुरी नई दिल्ली 110058
एक स्थायी विद्युत अभियंता (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	9. श्री एस.एन. गीरोत्रा आवासीय अभियंता (विद्युत) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान हौजखास नई दिल्ली 110016

कार्यकारिणी समिति का एक सदस्य (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	10(i) प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत अध्यक्ष राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् सी-2/10 सफदरजंग विकास क्षेत्र श्री अरविंद मार्ग नई दिल्ली 110016 (13. 7. 1999 तक)
	(ii) प्रो. पी.के. भट्टाचार्य संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी.) एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (12. 8. 1999 से)
सचिव एन.सी.ई.आर.टी. सदस्य-सचिव	11(i) श्री बिमल जुल्का सचिव एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (23. 11. 1999 तक)
	(ii) श्रीमती सोनाली कुमार सचिव एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110016 (24. 11. 1999 से)

कार्यक्रम सलाहकार समिति

1. निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *अध्यक्ष*
2. संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *उपाध्यक्ष*
3. संयुक्त निदेशक, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)
4. संयुक्त निदेशक, पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक
   शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)
   भोपाल 462011

एन.सी.ई.आर.टी. से सदस्य

5. प्रो. आर.एल. फुटेला
   केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)
   एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016
6. अध्यक्ष
   सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)
   एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016
7. प्रो. आर.के. दीक्षित
   सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)
   एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016
8. अध्यक्ष
   विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
   एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016
9. प्रो. हुकुम सिंह
   विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
   एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016
10. अध्यक्ष
    शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)
    एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016
11. डा. (श्रीमती) सुषमा गुलाटी
    शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)
    एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016
12. अध्यक्ष
    विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)
    एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

13. प्रो. के.के. वशिष्ठ
विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

14. अध्यक्ष
अनौपचारिक शिक्षा एवं वैकल्पिक शिक्षण विभाग (डी.ई.एन.एफ.ए.एस.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

15. डा. (श्रीमती) शुक्ला भट्टाचार्य
अनौपचारिक शिक्षा एवं वैकल्पिक शिक्षण विभाग (डी.ई.एन.एफ.ए.एस.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

16. अध्यक्ष
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

17. डा. के.पी. गर्ग
रीडर, शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

18. अध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

19. प्रो. वी.के. रैना
अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

20. अध्यक्ष
महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

21. डा. (श्रीमती) गौरी श्रीवास्तव
रीडर, महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

22. अध्यक्ष
पुस्तकालय, प्रलेखन एवं सूचना प्रभाग (डी.एल.डी.आई.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

23. अध्यक्ष
प्रकाशन प्रभाग
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

24. अध्यक्ष
कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग (डी.सी.ई.टी.ए.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

25. डा. एच.ओ. गुप्ता
रीडर, कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

26. अध्यक्ष
योजना, प्रोग्रामिंग, अनुवीक्षण एवं मूल्यांकन प्रभाग (पी.पी.एम.ई.डी.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

27. डा. जे.पी. मित्तल
रीडर, योजना, प्रोग्रामिंग, अनुवीक्षण एवं मूल्यांकन प्रभाग (पी.पी.एम.ई.डी.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

28. अध्यक्ष
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

29. प्रो. (सुश्री) के. शर्मा
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

30. अध्यक्ष
शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग (डी.ई.आर.पी.पी.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

31. प्रो. सतवीर सिंह
सदस्य सचिव, एरिक
शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग (डी.ई.आर.पी.पी.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

32. अध्यक्ष
शैक्षिक सर्वेक्षण और आँकड़ा प्रक्रियन विभाग (डी.ई.एस.डी.पी.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

33. श्री वी.के. जैन
रीडर, शैक्षिक सर्वेक्षण और आँकड़ा प्रक्रियन विभाग (डी.ई.एस.डी.पी.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

34. प्राचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर 305 004

35. डीन (अनुदेश)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर 305004

36. प्राचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल 462013

37. डीन (अनुदेश)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल 462013

38. प्राचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर 751007

39. डीन (अनुदेश)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर 751007

40. प्राचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर 570006

41. डीन (अनुदेश)
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर 570006

42. विशेष कार्य अधिकारी
उत्तर पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग 793003

43. प्रो. ए.के. सचेती
पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)
भोपाल 462013

अध्यक्ष एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित सदस्य

44. श्री आर. पी. सिंघल
डी 24, सी.सी. कालोनी
निकट राणा प्रताप बाग
दिल्ली 110007

45. डा. पुरुषोत्तम पटेल
प्रोफेसर अमेरीटस
गुजरात विद्यापीठ
आश्रम रोड
अहमदाबाद 380014

46. डा. मनमोहन सिंह
प्रोफेसर, उत्तर पूर्व पर्वतीय विश्वविद्यालय
शिलांग

47. डा. (श्रीमती) सुमन करींदकर
निदेशक, एस.आर.सी. भारतीय शिक्षा संस्थान
128/2, जे.पी. नायक पथ
कोथरुड, पुणे 491029

48. डा. सी. शेषाद्री
16, गंगोत्री लेआउट
I क्रॉस, II स्ट्रीट
मैसूर 570009

49. निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

50. निदेशक
महाराष्ट्र राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
सदाशिव पेठ, पुणे 411030

51. निदेशक
सिक्किम राज्य शिक्षा संस्थान, गंगटोक 737107

52. निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
निशातगंज, लखनऊ 228007

53. निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
गुजरात, गांधी नगर 382021

विशेष आमन्त्रित

54. डीन (अकादमिक)
एन.सी.ई.आर.टी.

55. डीन (समन्वय)
एन.सी.ई.आर.टी.

56. मुख्य लेखाधिकारी
एन.सी.ई.आर.टी.

57 जन संपर्क अधिकारी
एन.सी.ई.आर.टी.

58. संयुक्त शिक्षा सलाहकार (ए) मा.सं.वि.म.
    शिक्षा विभाग
    शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110001

59. डा. जे.पी. मित्तल
    रीडर, योजना, प्रोग्रामिंग, अनुवीक्षण एवं मूल्यांकन प्रभाग (पी.पी.एम.ई.डी.)
    एन.सी.ई.आर.टी.

60. सचिव — *सदस्य-सचिव*
    एन.सी.ई.आर.टी.

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति

एन.सी.ई.आर.टी. से

डीन (अनुसंधान) — अध्यक्ष

डीन (अकादमिक)

डीन (समन्वय)

एन.सी.ई.आर.टी. के सभी घटकों के अध्यक्ष

1. संयुक्त निदेशक
   केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
   एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016
2. संयुक्त निदेशक
   पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
3. प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
4. प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
5. प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर
6. प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर
7. विशेष कार्य अधिकारी
   उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग

एन.आई.ई. के विभागाध्यक्ष/प्रभागाध्यक्ष

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित एस.सी.ई.आर.टीज़. के दो व्यक्ति

1. निदेशक, महाराष्ट्र राज्य शैक्षिक अनुसंधान
   और प्रशिक्षण परिषद्
   708 आर.डी., कामथेकर मार्ग
   सदाशिव पेठ
   पुणे 411030
2. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान
   और प्रशिक्षण परिषद्
   जे.बी.टी.सी. परिसर
   निशातगंज, लखनऊ 228007

विशेषज्ञ/शिक्षाविद/अनुसंधान अध्येता

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विश्वविद्यालयों/अनुसंधान संस्थानों अथवा अन्य उपयुक्त एजेंसियों से नामित आठ व्यक्ति

1. प्रो. सुश्री वीना आर. मिस्त्री
   पूर्व प्रो. उप-कुलपति
   एम.एस. बड़ोदा विश्वविद्यालय
   बी-5 संख्या 3, सी.एस. पटेल एन्क्लेव
   प्रतापगंज, वड़ोदरा

2. डा. बी.पी. खण्डेलवाल
अध्यक्ष
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केंद्र, 2 सामुदायिक केंद्र
प्रीत विहार, नई दिल्ली 110092

3. प्रो. सरोजिनी बी. शिन्त्री
प्राचार्य, सत्य साई शिक्षा सोसायटी
गृहविज्ञान संस्थान, बासवेश्वर भवन
धारवाड़ 580001

4. प्रो. के.डी. ब्रूटा
मनोविज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली 110007

5. प्रो. डी.के. सामन्त्रे
एन.1, 62-ए, आई.आर.सी. गांव
भुवनेश्वर 751 015

6. डा. (सुश्री) विनय भारद्वाज
968, विकास कुंज
नई दिल्ली 110018

7. डा. नीलम 'नीलकमल'
मार्फत डा. अजीत शरण
कलम बाग रोड
मुज़फ्फरपुर 842001

8. प्रो. शमीम हनफी
उर्दू विभाग
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली 110025

स्थाई/ विशेष आमंत्रित
(निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी.
द्वारा नामित)

1. संयुक्त सचिव (विद्यालय)
शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110001

2. प्रो. वी.के. रैना
अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016

3. प्रो. आर.एन. माथुर
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
(डी.ई.एस.एम.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016

4. प्रो. (श्रीमती) एस. सिन्हा
सामाजिक विज्ञान और मानविकी
शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110016

5. प्रो. (श्रीमती) आशा भटनागर
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा
आधार विभाग
(डी.ई.पी.एफ.ई.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016

6. प्रो. ए.के. सचेती
पंडित सुन्दरलाल शर्मा
केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान
(पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)
131, ज़ोन-II, एम.पी. नगर
भोपाल 462011

7. प्रो. एम. सेन गुप्ता
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, श्यामला हिल्स
भोपाल 462011

8. प्रो. के.के. वशिष्ठ
विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक
शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016

संयोजक

9. प्रो. ए.एल.एन. शर्मा
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर 751007

10. प्रो. सतवीर सिंह
सदस्य सचिव (एरिक)
शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग
(डी.ई.आर.पी.पी.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अकादमिक समिति

आंतरिक सदस्य

1. डीन (अकादमिक), एन.सी.ई.आर.टी. — *अध्यक्ष*
2. अध्यक्ष, विद्यालय-पूर्व और प्रारम्भिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)
3. अध्यक्ष, अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण विभाग (डी.ई.एन.एफ.ए.एस.)
4. अध्यक्ष, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)
5. अध्यक्ष, महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)
6. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)
7. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
8. अध्यक्ष, कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग (डी.सी.ई.टी.ए.)
9. अध्यक्ष, शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.)
10. अध्यक्ष, शैक्षिक सर्वेक्षण और आँकड़ा प्रक्रियन विभाग (डी.ई.एस.डी.पी.)
11. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)
12. अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)
13. अध्यक्ष, शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग (डी.ई.आर.पी.पी.)
14. अध्यक्ष, पुस्तकालय, प्रलेखन एवं सूचना प्रभाग (डी.एल.डी.आई.)

15. अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग
(आई.आर.डी.)

16. अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग (पी.डी.)

17. अध्यक्ष, योजना, प्रोग्रामिंग,अनुवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग
(पी.पी.एम.ई.डी.)

18. प्रो. आर.के. दीक्षित
सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
(डी.ई.एस.एस.एच.)

19. प्रो. हुकुम सिंह
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

20. डा. अवतार सिंह
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.)

21. प्रो. के.के. वशिष्ठ
विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)

22. डा. (श्रीमती) सुषमा गुलाटी
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)

23. डा. (श्रीमती) एन. सबरवाल
अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)

बाहरी सदस्य

24. डा. डी.पी. पटनायक
बी-188, बारमुंडा, ड्यूप्लेक्स कालोनी, भुवनेश्वर 751003

25. डा. एस.सी. सर्मा
20-8/2-7, नया अयोध्या नगर, विजयवाड़ा-3 (आंध्र प्रदेश)

26. प्रो. एस.एन. सिंह
(1) 36/34, के-1, शक्ति नगर, कबीर नगर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
(2) मार्फत ग्लोब बुक सेंटर, लंका, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

27. डा. सीताराम जायसवाल
निदेशक, भारतीय शोध संस्थान, सरस्वती कुंज, निराला नगर
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

28. डा. एस.के. गुप्ता
बी-17, कुतुब इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली

सी.आई.ई.टी. का संस्थान सलाहकार बोर्ड

1. संयुक्त निदेशक — *अध्यक्ष*
   केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)
2. प्रो. आर.एल. फुटेला
   सी.आई.ई.टी.
3. डा. एस.पी. बन्याल
   सी.आई.ई.टी.
4. डा. हरमेश लाल
   रीडर, सी.आई.ई.टी.
5. श्री एम. ब्रह्माजी
   अध्यक्ष, डी.पी.ओ.एम. प्रभाग, सी.आई.ई.टी.
6. एन.आई.ई. के सभी विभागों के अध्यक्ष
7. प्रो. लोकेश कौल
   डीन (अध्ययन) एवं अध्यक्ष
   शिक्षा विभाग
   हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
8. श्री पूरन चंद
   संयुक्त आयुक्त (अकादमिक)
   केंद्रीय विद्यालय संगठन, नई महरौली रोड
   नई दिल्ली
9. प्रो. ओ.एस. देवल
   ई-250, मयूर विहार, फेस II
   नई दिल्ली
10. प्रो. डी.पी. तिवारी
    16-ए मंदाकिनी एंक्लेव, अलकनन्दा परिसर
    नई दिल्ली 110019
11. प्रो. एन.के. अम्बष्ट
    अध्यक्ष
    राष्ट्रीय खुला विद्यालय
    बी-35, कैलाश कालोनी
    नई दिल्ली 110048

पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. का संस्थान सलाहकार बोर्ड

1. संयुक्त निदेशक
   पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
   भोपाल
   अध्यक्ष

2. प्रो. ए.के.सचेती
   पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
   भोपाल

3. प्रो. ए.पी.वर्मा
   पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
   भोपाल

4. प्रो. डी.के. वैद
   पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल

5. प्रो. एन.के. अम्बष्ट
   अध्यक्ष, राष्ट्रीय खुला विद्यालय
   बी-35, कैलाश कालोनी
   नई दिल्ली 110048

6. अध्यक्ष
   राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद
   सी-2/10, सफदरजंग विकास क्षेत्र, श्री अरविंद मार्ग
   नई दिल्ली 110016

7. प्रो. एस.वी. आर्य
   49, अलोक नगर, आधारताल, जबलपुर, मध्य प्रदेश

8. श्री वी.डी. देशमुख
   निदेशक (व्यावसायिक शिक्षा)
   व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण निदेशालय
   3, महापालिका मार्ग, पोस्ट बॉक्स नं. 10036
   मुंबई 400001

9. डा. रवि प्रकाश
   ई-100/40, शिवाजी नगर
   भोपाल 462016

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर की प्रबंध समिति

1. उप-कुलपति — *अध्यक्ष*
   एम.डी.एस. विश्वविद्यालय
   अजमेर

2. प्राचार्य — *उपाध्यक्ष*
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
   अजमेर

क्षेत्र में प्रत्येक राज्य और संघ शासित क्षेत्र के शिक्षा विभागों का एक नामिती

3. श्रीमती विद्यावती
   पी.ई.एस. (I)
   निदेशक
   राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पंजाब
   चंडीगढ़

4. निदेशक
   माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
   चंडीगढ़

5. निदेशक
   राज्य शिक्षा संस्थान
   सेक्टर-32
   चंडीगढ़ प्रशासन, चंडीगढ़

6. शिक्षा निदेशक (माध्यमिक)
   हिमाचल प्रदेश सरकार
   शिमला 171001

7. श्री एन.एस. टोलिया
   अवर शिक्षा निदेशक (विद्यालय)
   शिक्षा निदेशालय
   राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
   पुराना सचिवालय
   दिल्ली 110054

8. डा. (श्रीमती) एन.बी. बछिवाल
   प्राचार्य
   आई.ए.एस.ई., मीराहाली रोड
   अजमेर 305001

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ

9. श्रीमती एस. संधीर
   निदेशक
   एस.सी.ई.आर.टी., गुड़गांव
   हरियाणा

10. डा. शरद चन्द्र पुरोहित
   निदेशक
   एस.सी.ई.आर.टी.
   उदयपुर 313001

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के दो विभागाध्यक्ष

11. अध्यक्ष
   शिक्षा विभाग
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

12. अध्यक्ष
   विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. के एक नामिती

13. डीन (समन्वय)
   एन.सी.ई.आर.टी.
   नई दिल्ली 110016

उन विश्वविद्यालयों से अन्य सदस्य जिनसे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान संबद्ध हैं

14. प्रो. एम.एल. छीपा
   एम.डी.एस. विश्वविद्यालय
   अजमेर

15. प्रशासनिक अधिकारी — *सचिव*
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
   अजमेर

16. क्षेत्र के क्षेत्रीय सलाहकार — *विशेष आमंत्रित*

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल की प्रबंध समिति

1. उप-कुलपति *अध्यक्ष*
   बरकतुल्ला विश्वविद्यालय
   भोपाल

3. प्राचार्य *उपाध्यक्ष*
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
   भोपाल

क्षेत्र के प्रत्येक राज्य और संघ शासित क्षेत्र के शिक्षा विभागों का एक नामिती

3. श्री सुमित बोस
   सचिव
   शिक्षा विभाग
   भोपाल

4. श्री एम.वी. जोशी
   निदेशक
   राज्य शिक्षा संस्थान
   गोवा

5. श्री आर.के. चौधरी
   निदेशक
   गुजरात एस.सी.ई.आर.टी.
   अहमदाबाद, गुजरात

6. निदेशक
   एस.सी.ई.आर.टी.
   पुणे, महाराष्ट्र

7. सचिव (शिक्षा)
   दादर और नगर हवेली
   संघ शासित क्षेत्र शिक्षा विभाग
   सिल्वासा

8. सहायक शिक्षा निदेशक
   संघ शासित क्षेत्र, दमन और दीव

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ

9. प्रो. वी.जी. भिडे
   पूर्व उप-कुलपति
   पुणे विश्वविद्यालय, भौतिकी विभाग
   पुणे 411 007

10. प्रो. (श्रीमती) स्नेहाबेन जोशी
    प्रशासन और प्रबंधन विभाग
    शिक्षा और मनोविज्ञान संकाय
    एम.एस. विश्वविद्यालय, वड़ोदरा

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के दो अध्यक्ष

11. अध्यक्ष
    शिक्षा विभाग
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    भोपाल

12. अध्यक्ष
    विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    भोपाल

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. का एक नामिती

13. डीन (समन्वय)
    एन.सी.ई.आर.टी.
    नई दिल्ली 110016

उन विश्वविद्यालयों के अन्य सदस्य जिनसे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान संबद्ध है

14. डा. एच.के. गोस्वामी
    प्रोफेसर (आनुवंशिक) एवं अध्यक्ष
    विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग
    बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

15. डा. एस.के. कुलश्रेष्ठ
    प्राचार्य
    राजकीय हमीदिया महाविद्यालय
    भोपाल

16. प्रशासनिक अधिकारी — *सचिव*
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    भोपाल

17. क्षेत्र के क्षेत्रीय सलाहकार — *विशेष आमंत्रित*

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर की प्रबंध समिति

1. उप-कुलपति *अध्यक्ष*
   उत्कल विश्वविद्यालय
   भुवनेश्वर

2. प्राचार्य *उपाध्यक्ष*
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
   भुवनेश्वर

क्षेत्र में प्रत्येक राज्य और संघ शासित क्षेत्र के शिक्षा विभागों का एक नामिती

3. श्री बी.सी. स्वेन
   संयुक्त सचिव, शिक्षा विभाग
   उड़ीसा सरकार, उड़ीसा सचिवालय
   भुवनेश्वर

4. श्री एस. सोम
   संयुक्त सचिव
   विद्यालय शिक्षा विभाग
   विकास भवन (पांचवां तल) सॉल्ट लेक
   कलकत्ता

5. निदेशक
   एस.सी.ई.आर.टी.
   महेन्द्रू, पटना
   बिहार

6. श्री एन. दास
   शिक्षा निदेशक
   ए. एंड एन. प्रशासन
   पोर्ट ब्लेयर

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ

7. प्रो. डी.एन. राय
   विश्व भारती
   शांतिनिकेतन
   ज़िला बीरभूम
   पश्चिम बंगाल

8. श्री परवन्त सामन्तराय
   35, मीना बाग
   नई दिल्ली 110011

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों से दो अध्यक्ष

9. अध्यक्ष
   शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
   भुवनेश्वर

10. अध्यक्ष
    विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    भुवनेश्वर

एन.सी.ई.आर.टी. का एक नामिती

11. डीन (समन्वय)
    एन.सी.ई.आर.टी.
    नई दिल्ली 110016

उन विश्वविद्यालयों से अन्य सदस्य जिनसे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान संबद्ध है

12. डा. डी.सी. मिश्रा
    सेवानिवृत्त डी.पी.आई.
    जगन्नाथ लेन, बादामगढ़ी
    कटक

13. प्रशासनिक अधिकारी — *सचिव*
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    भुवनेश्वर

14. क्षेत्र के क्षेत्रीय सलाहकार — *विशेष आमंत्रित*

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर की प्रबंध समिति

1. उप-कुलपति *अध्यक्ष*
   मैसर विश्वविद्यालय
   मैसूर

2. प्राचार्य *उपाध्यक्ष*
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
   मैसूर

क्षेत्र में प्रत्येक राज्य और संघ शासित क्षेत्र के शिक्षा विभागों का एक नामिती

3. श्री वी. कृष्णमाचार्युलु
   निदेशक
   राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
   आंध्र प्रदेश सरकार
   आलिया भवन, लाल बहादुर स्टेडियम के सामने
   हैदराबाद 500 001

4. निदेशक
   डी.एस.ई.आर.टी.
   बी.पी. वाडिया रोड
   बसावनगुडी
   बैंगलूर 560004

5. श्री के. जयकुमार
   सरकार के सचिव
   सामान्य शिक्षा विभाग
   केरल सरकार
   तिरुअनन्तपुरम 695001

6. निदेशक
   डी.टी.ई.आर.टी.
   कॉलेज रोड
   चेन्नई 600006

7. श्री एस. हेमाचन्द्रन
   सचिव (शिक्षा) एवं सह-शिक्षा निदेशक
   पांडिचेरी सरकार
   पांडिचेरी 605001

8. श्री पी.बी. मुथुकोया
शिक्षा अधिकारी, शिक्षा निदेशालय
लक्षद्वीप प्रशासन
लक्षद्वीप संघ शासित क्षेत्र
कवारत्ती (वाया) कोचिन

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ

9. डा. मल्लादी श्री रामामूर्ति
प्रो. एवं डीन
शिक्षा संकाय
उस्मानिया विश्वविद्यालय
हैदराबाद

10. डा. जी. शिवरुद्रप्पा
पूर्व डीन
शिक्षा संकाय, कर्नाटक विश्वविद्यालय
वीरभद्र हाउसिंग बोर्ड कालोनी रोड
आर.टी. नगर, पो.ऑ. आदित्य नगर
बैंगलूर 560032

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के दो अध्यक्ष

11. अध्यक्ष
शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर

12. अध्यक्ष
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. का नामिती

13. डीन (समन्वय)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016

14. प्रशासनिक अधिकारी — *सचिव*
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर

15. क्षेत्र के क्षेत्रीय सलाहकार — *विशेष आमंत्रित*

(क) परिषद् मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1. निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *अध्यक्ष*
2. संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *उपाध्यक्ष*
3. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी.
4. सचिव, एन.सी.ई.आर.टी.
5. सभी विभागों/प्रभागों के अध्यक्ष
6. सभी उप सचिव
7. मुख्य लेखा अधिकारी
8. सतर्कता एवं सुरक्षा अधिकारी
9. जन संपर्क अधिकारी
10. निदेशक, राजभाषा
    मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली
11. निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग
    गृह मंत्रालय, नई दिल्ली
12. प्रोफेसर एवं प्रभारी, हिंदी प्रकोष्ठ — *सदस्य सचिव*
13. हिंदी अधिकारी

(ख) परिषद् की राजभाषा कार्यान्वयन समिति

1. निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *अध्यक्ष*
2. संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *उपाध्यक्ष*
3. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी.
4. संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
5. सचिव, एन.सी.ई.आर.टी.
6. सभी विभागाध्यक्ष/प्रभागाध्यक्ष
7. सभी क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के प्राचार्य
8. विशेष कार्य अधिकारी (ओ.एस.डी.)
   उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग

9. सभी क्षेत्रीय सलाहकार
10. सभी उप सचिव
11. मुख्य लेखा अधिकारी
12. सतर्कता एवं सुरक्षा अधिकारी
13. जन सम्पर्क अधिकारी
14. प्रोफेसर एवं प्रभारी, हिंदी प्रकोष्ठ — *सदस्य सचिव*
15. हिंदी अधिकारी

स्वीकृत स्टाफ की स्थिति

31.3.2000 को एन.सी.ई.आर.टी. में वर्गवार स्वीकृत स्टाफ की स्थिति

क्र.सं.	सूचना स्रोत	शैक्षिक संकाय			गैर-शैक्षिक (सचिवालयी)			गैर-शैक्षिक (तकनीकी)			ग्रुप डी	योग
		ए.	बीं.	सी.	ए.	बी.	सी.	ए.	बी.	सी.		
1.	परिषद् मुख्यालय	199	01	02	23	200	291	45	47	146	285	1239
2.	सी.आई.ई.टी.	25	–	–	03	23	33	30	34	74	24	246
3.	आर.आई.ई., अजमेर	57	24	35	01	10	37	04	03	41	85	297
4.	आर.आई.ई., भोपाल	57	24	42	01	11	35	03	03	32	86	294
5.	आर.आई.ई., भुवनेश्वर	68	27	55	01	11	35	04	04	44	92	341
6.	आर.आई.ई., मैसूर	68	19	44	01	10	37	05	04	36	75	299
7.	आर.आई.ई., शिलांग	24	–	–	–	01	02	–	–	01	02	30
8.	क्षेत्रीय सलाहकार कार्यालय	25	–	–	–	26	17	–	–	13	26	107
9.	आर.पी.डी.सीज.	–	–	–	–	–	15	06	06	06	06	39
10.	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल	35	–	–	04	05	12	05	01	15	05	82
	कुल	558	95	178	34	297	514	102	102	408	686	2974

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

वर्ष 1999-2000 का प्राप्ति और भुगतान लेखा

प्राप्तियां	*राशि रु.*	*रु.*	*भुगतान*	*राशि रु.*	*रु.*
आरंभिक बकाया			**बजट खर्च**		
नकद बकाया और बैंक में जमा	39,48,39,490		*अधिकारियों का वेतन*		
मार्गस्थ निधि	65,40,516	40,13,80,006	गैर-योजना	9,69,41,042	
			योजना	25,04,711	9,94,45,753
मानव संसाधन विकास मंत्रालय से			*प्रतिष्ठान वेतन*		
बजट खर्च के लिए प्राप्त अनुदान			गैर-योजना	11,67,32,993	
गैर-योजना	30,00,00,000		योजना	10,84,136	11,78,17,129
योजना	10,00,00,000	40,00,00,000			
विशेष परियोजनाओं से संबंधित			*भत्ते तथा मानदेय*		
अनुदान		8,65,55,628	गैर-योजना	14,12,12,968	
(अनुसूची 'एच')			योजना	22,71,458	14,34,84,426
			यात्रा भत्ता		
			गैर-योजना	33,10,053	
			योजना	2,25,204	35,35,257
परिषद् की प्राप्तियां					
(खंड 5)			*अन्य प्रभार*		
परिषद् भवनों का किराया	34,68,352		गैर-योजना	7,19,66,204	
ऋण और अग्रिमों पर ब्याज	22,36,171		योजना	19,32,215	7,38,98,419
सावधि जमा पर ब्याज	1,45,33,058		*छात्रवृत्तियां और अध्येतावृत्तियां*		
भविष्य निधि निवेश			गैर-योजना	3,86,684	
पर ब्याज	3,46,12,911		योजना	46,773	4,33,457
अधिक भुगतान की वसूली	8,16,931		*कार्यक्रम*		
विज्ञान किटों की बिक्री	8,94,729		गैर-योजना	17,03,68,961	
शुल्क और प्रभार	51,36,175		योजना	3,73,19,026	20,76,87,987
पुस्तकों और पत्रिकाओं			*उपकरण और फर्नीचर*		
की बिक्री	41,41,18,343		गैर-योजना	83,25,541	
छुट्टी वेतन और			योजना	1,71,08,019	2,54,33,560
पेंशन अंशदान	11,05,265		*भूमि और भवन*		
सी.जी.एच.एस.	8,86,011		गैर-योजना	2,43,57,186	
(केन्द्रीय स्वास्थ्य सेवा योजना)			योजना	3,37,00,635	5,80,57,821
विविध प्राप्तियां	1,04,28,003	48,82,35,949	*विशिष्ट परियोजनाओं से*		
			संबंधित भुगतान		
			(अनुसूची) 'एच'	28,41,70,886	28,41,70,886

विविध भुगतान (खंड 2)		
परिषद् भवन का किराया	31,51,858	
सी.जी.एच.एस.	33,58,659	
पेंशन अंशदान	3,72,767	
अंशदान भविष्य निधि ब्याज और परिषद् का अंश	19,96,163	
सामान्य भविष्य निधि पर ब्याज	3,69,09,008	
पेंशन और डी.सी.आर.जी.	11,09,57,742	
लेखा परीक्षा फीस	4,24,680	
विज्ञापन	24,48,559	
जमा लिंक बीमा योजना	5,25,588	
विविध/अदृष्ट	4,19,621	16,05,64,645

ऋण, जमा और प्रेषण

ऋण और अग्रिम (ब्याज सहित)		
खंड 4(3) (1)		
मोटर/स्कूटर	16,07,672	
अन्य वाहन (साइकिल)	1,09,828	
गृह निर्माण अग्रिम	30,70,527	
पंखा अग्रिम	22,298	
चक्रवात अग्रिम	85,650	48,95,975
खंड 4(3)(2) ब्याज रहित		
विभागीय अग्रिम खंड 4(5)		
स्थायी अग्रिम	20,085	
कार्यक्रम/विविध अग्रिम	22,42,454	22,62,539
ऋण खंड 4(1)		
सामान्य भविष्य निधि	10,01,49,755	
सामान्य भविष्य निधि पर ब्याज	3,61,99,222	13,63,48,977
सामान्य भविष्य निधि	(-) 17,33,984	
ब्याज और परिषद का अंश	19,96,163	2,62,179

ऋण और अग्रिम (ब्याज सहित)		
मोटरकार/स्कूटर	33,44,690	
अन्य वाहन (साइकिल)	1,15,500	
गृह निर्माण अग्रिम	47,23,199	
पंखा अग्रिम	24,000	
चक्रवात	5,60,000	87,67,389
विभागीय अग्रिम		
स्थायी अग्रिम	67,600	
कार्यक्रम/विविध अग्रिम	26,07,920	26,75,520
ऋण		
सामान्य भविष्य निधि		8,04,38,589
अंशदायी भविष्य निधि		17,02,190
भविष्य निधि		
दीर्घकालीन निवेश	5,23,54,118	
परिषद् से निवेश	21,85,89,353	27,09,43,471
अल्पकालीन		
बयाना राशि और प्रतिभूति जमा	43,32,006	
अवधान राशि	59,950	
अन्य	8,95,192	
अन्य जमा (विज्ञान किट)	9,46,094	62,33,242

निवेश			*प्रेषित धन*		
खंड 4(4)			सा.भ.नि./अं.भ.नि.	5,32,383	
भविष्य निधि			डाक जीवन बीमा/ जीवन बीमा निगम	5,03,712	
दीर्घकालीन निवेश	1,02,44,000		जी.एल.आई.एस.	28,76,604	
अल्पकालीन निवेश	20,46,41,653	21,48,85,653	आयकर	1,18,49,201	
			मृत्यु राहत निधि	3,85,962	
जमा					
खंड 4(2)			थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट सोसाइटी	8,98,033	
बयाना राशि और प्रतिभूति जमा	14,76,351		विविध	34,52,066	
अवधान राशि	1,82,679		उपकार्यालय प्रेषण	36,54,42,734	
अन्य	12,67,302		प्रधानमंत्री राहत कोष	11,33,033	
अन्य जमा (विज्ञान किट)	2,68,645	31,94,977	आवधिक प्रेषण	30,98,07,574	
			बिक्रीकर	33,866	69,69,15,168
प्रेषित धन					
(खंड 4(7)			अंतशेष		
सा.भ.नि./अं.भ.नि.	5,44,639		रोकड़ बकाया तथा बैंक में (अनुसूची 'सी')	18,19,67,642	
डाक जीवन बीमा/जीवन बीमा निगम	5,09,609		मार्गस्थ निधि	99,97,447	19,19,65,089
जी.एल.आई.एस.	26,60,369				
आयकर	1,17,29,608				
मृत्यु राहत निधि	2,30,851				
थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट सोसायटी	8,95,548				
विविध	29,14,909				
उप कार्यालय प्रेषण	36,56,64,482				
आवधिक प्रेषण	30,98,07,574				
प्रधानमंत्री राहत कोष	11,39,161				
बिक्री कर	51,365	69,61,48,115			
कुल योग		**2,43,41,69,998**			**2,43,41,69,998**

मुख्य लेखा अधिकारी
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016

सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110016

1999-2000 के दौरान निकाले गए प्रकाशन

शीर्षक

पहली कक्षा

- बाल भारती भाग-1
- अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-1
- वर्कबुक फॉर लैट अस लर्न इंग्लिश बुक-I (एस एस)
- लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक-I

दूसरी कक्षा

- बाल भारती भाग-2
- अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-2
- लैट अस लर्न इंग्लिश बुक-II (एस एस)
- वर्कबुक फॉर लैट अस लर्न इंग्लिश बुक-II (एस एस)
- लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक-II

तीसरी कक्षा

- बाल भारती भाग-3
- लैट अस लर्न इंग्लिश बुक-III (एस एस)
- वर्कबुक फॉर लैट अस लर्न इंग्लिश बुक-III (एस एस)
- लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक-III
- आओ गणित सीखें पुस्तक-III
- परिवेश अन्वेषण भाग-1 (विज्ञान)
- वी एण्ड अवर कंट्री (सोशल स्टडीज़)
- हम और हमारा देश
- एक्सप्लोरिंग एनवायरनमेंट बुक-I

चौथी कक्षा

- बाल भारती भाग-4 — दो संस्करण
- अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-4
- इंग्लिश रीडर बुक-I (एस एस)
- वर्कबुक फॉर इंग्लिश रीडर बुक-I (एस एस)
- रीड फॉर प्लेजर-I — दो संस्करण
  (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर फॉर क्लास-IV)
- लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक-IV

- हमारा देश भारत (सामाजिक अध्ययन)
- एक्सप्लोरिंग एनवायरनमेंट बुक-II (साइंस) दो संस्करण

पांचवीं कक्षा

- बाल भारती भाग-5
- अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-5
- स्वस्ति भाग-1 (संस्कृत पाठ्यपुस्तक)
- अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-1
- इंग्लिश रीडर बुक-II (एस एस)
- रीड फॉर प्लेजर-II (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर फॉर क्लास-V)
- लैट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक-V
- अवर कंट्री एंड दि वर्ल्ड (सोशल स्टडीज़)
- एक्सप्लोरिंग एनवायरनमेंट बुक-III (साइंस) दो संस्करण
- परिवेश अन्वेषण भाग-3 (विज्ञान)
- इंग्लिश वर्कबुक फॉर इंग्लिश रीडर-II

छठी कक्षा

- सरस भारती भाग-1
- संक्षिप्त रामायण (पूरक पठन की पुस्तक)
- नया जीवन (पूरक पठन की पुस्तक) भाग-1 दो संस्करण
- स्वस्ति भाग-2 (संस्कृत पाठ्यपुस्तक)
- अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-2
- इंग्लिश रीडर बुक-III (एस एस)
- वर्कबुक फॉर इंग्लिश रीडर बुक-III (एस एस)
- रीड फॉर प्लेजर-III (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर फॉर क्लास-VI)
- मैथेमैटिक्स बुक-I
- एन्शन्ट इंडिया (हिस्ट्री)
- प्राचीन भारत (इतिहास)
- लैंड्स एण्ड पीपुल पार्ट-I (ज्योग्राफी)
- देश और उनके निवासी भाग-1 (भूगोल)
- अवर सिविक लाइफ (सिविक्स)
- हमारा नागरिक जीवन (नागरिक शास्त्र)
- साइंस बुक-I
- विज्ञान पुस्तक-1
- हिन्दी व्याकरण और रचना (कक्षा 6-8)

सातवीं कक्षा

- सरस भारती भाग-2
- संक्षिप्त महाभारत — दो संस्करण
- स्वस्ति भाग-3 (संस्कृत पाठ्यपुस्तक)
- अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-3
- इंग्लिश रीडर बुक-IV (एस एस)
- मैथेमैटिक्स बुक-II पार्ट-I
- गणित पुस्तक-2 भाग-1
- गणित पुस्तक-2 भाग-2
- हाउ वी गवर्न अवरसेल्व्स (सिविक्स)
- हम अपना शासन कैसे चलाते हैं (नागरिक शास्त्र)
- मेडिवल इंडिया (हिस्ट्री)
- मध्यकालीन भारत (इतिहास)
- साइंस बुक-II
- विज्ञान पुस्तक-2
- लैंड्स एण्ड पीपुल पार्ट-II (ज्योग्राफी)

आठवीं कक्षा

- सरस भारती भाग-3 (नई पुस्तक)
- सरस भारती भाग-3 (पुनर्मुद्रित संस्करण)
- संक्षिप्त बुद्ध चरित (पूरक पठन की पुस्तक) (नई पुस्तक)
- नया जीवन भाग-3 (पूरक पठन की पुस्तक) (नई पुस्तक) — दो संस्करण
- स्वस्ति भाग-4 (संस्कृत पाठ्यपुस्तक)
- अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-4
- इंग्लिश रीडर बुक-V (एस एस)
- रीड फॉर प्लेजर-V (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर फॉर क्लास-VIII)
- मैथेमैटिक्स बुक-III पार्ट-I
- मैथेमैटिक्स बुक-III पार्ट-II
- मॉडर्न इण्डिया (हिस्ट्री)
- साइंस बुक-III
- विज्ञान पुस्तक-3

नवीं कक्षा

- लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर-I इंग्लिश रीडर ('बी' कोर्स)
- लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर-I वर्कबुक टु इंग्लिश रीडर ('बी' कोर्स)
- लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर-I — दो संस्करण
- सप्लीमेंटरी रीडर ('बी' कोर्स)
- स्वाति भाग-1 (हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'अ' पाठ्यक्रम – पद्य)

- पराग भाग-1 (हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'अ' पाठ्यक्रम – गद्य)
- विज्ञान भाग-1
- विज्ञान (संयुक्त)
- मैथेमैटिक्स
- गणित भाग-1 (संयुक्त)
- अंडरस्टैंडिंग एनवायरनमेंट (ज्योग्राफी)
- पर्यावरण बोध (भूगोल)
- मानक हिन्दी व्याकरण और रचना (हिन्दी व्याकरण 'अ' पाठ्यक्रम, कक्षा 9-10)
- अवर इकोनोमी - एन इंट्रोडक्शन — दो संस्करण
- पूर्वा भाग-1 (हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'बी' पाठ्यक्रम) (नई पुस्तक) — दो संस्करण
- कथा कलश (हिन्दी 'बी' पाठ्यक्रम) नई पुस्तक
- दि स्टोरी ऑफ सिविलाइज़ेशन वाल्यूम-I
- सभ्यता की कहानी भाग-1

दसवीं कक्षा

- लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर-II इंग्लिश रीडर ('बी' कोर्स)
- लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर-II वर्कबुक टु इंग्लिश रीडर ('बी' कोर्स)
- लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर -II (सप्लीमेंट्री रीडर 'बी' कोर्स)
- स्वाति भाग-2 (हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'अ' पाठ्यक्रम-पद्य)
- पराग भाग-2 (हिन्दी पाठ्यपुस्तक 'अ' पाठ्यक्रम-गद्य)
- मैथेमैटिक्स — दो संस्करण
- गणित (संयुक्त)
- इंडिया-इकॉनामिक ज्योग्राफी (ज्योग्राफी)
- भारत-आर्थिक भूगोल (भूगोल)
- सभ्यता की कहानी भाग-2 (इतिहास)
- इंडिया: कांस्टीट्यूशन एण्ड गवर्नमेंट
- भारत: संविधान और सरकार (कक्षा 9-10)
- दि स्टोरी ऑफ सिविलाइज़ेशन वाल्यूम-II

ग्यारहवीं कक्षा

- नीहारिका भाग-1 (हिन्दी पाठ्यपुस्तक केंद्रिक-पद्य)
- पल्लव भाग-1 (हिन्दी पाठ्यपुस्तक केंद्रिक-गद्य)
- मंदाकिनी भाग-1 (हिन्दी पाठ्यपुस्तक वैकल्पिक-गद्य)
- साहित्य का स्वरूप
- आई एम दि पीपुल (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर-कोर)
- स्टोरीज़, प्लेज़ एंड टेल्स ऑफ एडवेंचर (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर-कोर) — दो संस्करण
- सरकार के अंग-राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक
- एन्शन्ट इंडिया (हिस्ट्री) नई पुस्तक

- प्राचीन भारत (इतिहास) नई पुस्तक
- प्रिंसीपल्स ऑफ ज्यॉग्राफी पार्ट–I
- भूगोल के सिद्धान्त भाग–1
- समाजशास्त्र: एक परिचय
- मेडिवल इंडिया (हिस्ट्री)
- एलीमेंट्री स्टेटिस्टिक्स (इकोनोमिक्स)
- अंडरस्टैंडिंग साइकोलोजी ऑफ ह्यूमन बिहेवियर
- व्यवसाय अध्ययन
- फिज़िक्स पार्ट–I
- फिज़िक्स पार्ट–II
- कैमिस्ट्री
- बायोलोजी
- इवोल्यूशन ऑफ इंडियन इकोनोमी
- ए सप्लीमेंट टु मैथेमैटिक्स–पार्ट बी (फॉर साइंस) (नई पुस्तक)
- ए सप्लीमेंट टू मैथेमैटिक्स-पार्ट सी (फॉर कामर्स एंड ह्यूमैनिटीज़) (नई पुस्तक)

बारहवीं कक्षा

- नीहारिका भाग–2 (हिन्दी पाठ्यपुस्तक केंद्रिक–पद्य)
- पल्लव भाग–2 (हिन्दी पाठ्यपुस्तक केंद्रिक–गद्य) दो संस्करण
- प्रवाल भाग–2 (हिन्दी पाठ्यपुस्तक वैकल्पिक–गद्य)
- ए कोर्स इन रिटन इंग्लिश (कोर)
- दि वैब ऑफ अवर लाइफ (कोर)
- संस्कृत कविता कादम्बिनी दो संस्करण
- बायोलोजी पार्ट–I दो संस्करण
- बायोलोजी पार्ट–II
- कैमिस्ट्री
- रसायन विज्ञान भाग–1
- जीव विज्ञान भाग–1
- जीव विज्ञान भाग–2 (नई पुस्तक)
- मेजर कान्सेप्ट्स इन पॉलिटिकल साइंस (पॉलिटिकल साइंस)
- इंडिया : ए जनरल ज्योग्राफी (ज्योग्राफी)
- इण्डिया–रिसोर्सेज़ एण्ड रिजनल डेवलपमेंट दो संस्करण
- एकाउंटिंग बुक–I
- एकाउंटिंग बुक–II फाइनेंशियल स्टेटमेंट एनालिसिस
- नेशनल इनकम एकाउंटिंग
- एन इंट्रोडक्शन टु इकॉनोमिक थ्योरी
- आर्थिक सिद्धांत का परिचय
- इंडियन सोसाइटी
- साइकॉलोजी फॉर बैटर लिविंग

- सोशल चेंज
- कॉस्ट एकाउंटिंग
- मैथेमैटिक्स पार्ट-I
- मैथेमैटिक्स पार्ट-II
- गणित भाग-1 (नई पुस्तक)
- डेमोक्रेसी इन इंडिया (पॉलिटिकल साइंस)
- भारत में लोकतंत्र
- फिज़िक्स पार्ट-I
- फिज़िक्स पार्ट-II
- लेखाकरण भाग-2 (नई पुस्तक)
- ए सप्लीमेंट टु मैथेमैटिक्स (पार्ट-बी फॉर साइंस) (न्यू बुक)
- ए सप्लीमेंट टु मैथेमैटिक्स (पार्ट-सी फॉर कामर्स एंड ह्यूमेनिटीज़) (न्यू बुक)

उर्दू पाठ्यपुस्तकें

दूसरी कक्षा

- आओ हिसाब सीखें किताब-II
- उर्दू की नई किताब

तीसरी कक्षा

- हम और हमारा देश
- गिर्द-ओ-पेश का मुताला किताब-I
- उर्दू की नई किताब

चौथी कक्षा

- हमारा मुल्क हिन्दुस्तान
- गिर्द-ओ-पेश का मुताला किताब-II
- उर्दू की नई किताब

पाँचवीं कक्षा

- हमारा मुल्क और दुनिया
- गिर्द-ओ-पेश का मुताला किताब-III
- आओ हिसाब सीखें किताब-V हिस्सा-1
- उर्दू की नई किताब

छठी कक्षा

- साइंस किताब-I
- हमारी शहरी ज़िंदगी
- उर्दू की नई किताब

सातवीं कक्षा

- मुमालिक और उनके बाशिंदे हिस्सा-II
- उर्दू की नई किताब

आठवीं कक्षा

- उर्दू की नई किताब

नवीं कक्षा

- हमारी माईशत का एक नया तारुफ
- उर्दू की नई किताब

दसवीं कक्षा

- रियाजी (हिसाब) हिस्सा-I
- हिन्दुस्तान का माशी जुगराफ़िया
- उर्दू की नई किताब

ग्यारहवीं कक्षा

- उर्दू की नई किताब

बारहवीं कक्षा

- उर्दू की नई किताब

द्वितीय भाषा के रूप में उर्दू के लिए पाठ्यपुस्तक

कक्षा-VI के लिए

- हमारी उर्दू की किताब हिस्सा-I (एल-2) (नई पुस्तक)

तृतीय भाषा के रूप में उर्दू के लिए पाठ्यपुस्तक

कक्षा-VII के लिए

- आओ उर्दू पढ़ें भाग-I (एल-III) (नई पुस्तक)

अरुणाचल प्रदेश के लिए पाठ्यपुस्तकें

- अरुण भारती भाग-1
- अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-1
- अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-2
- अरुण भारती भाग-3
- अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-3
- अरुण भारती भाग-4
- अरुण भारती भाग-5

- न्यू डॉन रीडर-I फॉर क्लास-I
- वर्क बुक फॉर न्यू डॉन रीडर-II फॉर क्लास-II
- न्यू डॉन रीडर-III फॉर क्लास-III
- वर्क बुक फॉर न्यू डॉन रीडर-III फॉर क्लास-III

नवोदय विद्यालय के लिए पाठ्यपुस्तकें

छठी कक्षा

- माई फैमिली एंड फ्रेंड्स
- वर्कबुक फॉर माई फैमिली एंड फ्रेंड्स
- सप्लीमेंटरी रीडर फॉर माई फैमिली एंड फ्रेंड्स
- अभ्यास पुस्तिका-हमारी हिंदी भाग-1

सातवीं कक्षा

- माई स्माल वर्ल्ड
- वर्कबुक फॉर माई स्माल वर्ल्ड
- सप्लीमेंटरी रीडर फॉर माई स्माल वर्ल्ड
- अभ्यास पुस्तिका-हमारी हिंदी भाग-2

आठवीं कक्षा

- वर्कबुक फॉर दि वर्ल्ड अराउंड मी
- हमारी हिन्दी भाग-3
- अभ्यास पुस्तिका हमारी हिन्दी भाग-3

पश्चिम बंगाल के लिए पाठ्यपुस्तकें

- गद्य भारती — दो संस्करण
- काव्य भारती

शिक्षक संदर्शिकाएँ

- श्रवण विकारयुक्त बच्चों का भाषा विकास-शिक्षक संदर्शिका

पूरक पुस्तकें

- वी आर वन
- एन्शन्ट स्टोरीज़
- कंडक्टिंग यूथ्स पार्लियामेन्ट (रिवाइ़ड एडीशन)
- जीवनोपयोगी सूक्ष्म मात्रिक तत्व
- साहस के धनी
- युवा ससद का संचालन (संशोधित संस्करण)

- आओ मिलकर गाएँ
- हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रमुख कंठ संगीतज्ञ
- सौर ऊर्जा और उसके उपयोग
- हमारा अद्‌भुत वायुमंडल अब मैला क्यों
- मौसम–क्या, क्यों और कैसा

व्यावसायिक पाठ्‌यक्रम की पाठ्‌यपुस्तकें

उद्यान विज्ञान

- फ्रूट प्रोडक्शन (प्रैक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास XI)
- फ्रूट प्रोडक्शन (कक्षा 11 के लिए पाठ्‌यपुस्तक)

डेयरी उद्योग

- डेयरी एनीमल मैनेजमेंट क्लास XI
- फीड एंड फीडिंग ऑफ डेयरी एनीमल्स क्लास XI

कार्यालय प्रबन्धन

- टाइपराइटिंग पार्ट–I क्लास–XI

हस्तकला

- सॉफ्ट टॉयज़ क्लास IX–X

ग्रामीण अभियांत्रिक प्रौद्योगिकी

- बिल्डिंग मेंटिनेंस –
  बिल्डिंग मैटीरियल प्रैक्टिस मैनुअल क्लास–XI पेपर–I
- बिल्डिंग मेंटिनेंस –
  बिल्डिंग मैटीरीयल–I (पाठ्‌यपुस्तक) क्लास–XI पेपर–I

अनुसंधान अध्ययन तथा मोनोग्राफ

- लर्निंग आर्गेनाइज़ेशन कम्युनिटी पार्टिसिपेशन एंड स्कूल एफैक्टिवनेस एट दि प्राइमरी स्टेज
- स्टडीज़ ऑन लर्निंग आर्गेनाइज़ेशन कम्युनिटी पार्टिसिपेशन एंड स्कूल एफैक्टिवनेस एट प्राइमरी स्टेज
- टीचिंग एड्‌स इन मैथेमैटिक्स फॉर मिडल एंड हाई स्कूल स्टूडेन्ट्स
- स्ट्रक्चर एंड वर्किंग ऑफ साइंस मॉड्‌यूल्स
- एनुअल रिपोर्ट 1998–1999–एन.सी.ई.आर.टी
- वार्षिक रिपोर्ट 1998–1999–एन.सी.ई.आर.टी.
- एनुअल एकाउन्ट्स 1997–1998–एन.सी.ई.आर.टी.
- वार्षिक लेखा 1997–1998–एन.सी.ई.आर.टी.

- एक्ज़ामिनेशन रिफोर्म्स-ए बुलेटिन
- इंटरनेशनल रिसर्च सेमिनार ऑन इंडिकेटर्स ऑफ क्वालिटी एजुकेशन एट एलीमेन्टरी स्टेज-फोल्डर
- जवाहर लाल नेहरू नेशनल साइंस एग्ज़ीबिशन 1999–लिस्ट ऑफ एग्ज़ीबिट्स
- जवाहर लाल नेहरू नेशनल साइंस एग्ज़ीबिशन 1999–फोल्डर (इंग्लिश)
- जवाहर लाल नेहरू नेशनल साइंस एग्ज़ीबिशन 1999–फोल्डर (हिन्दी)
- जवाहरलाल नेहरू नेशनल साइंस एग्ज़ीबिशन 1999–फोल्डर (गुजराती)
- नेशनल सेमिनार ऑन इन्फरमेशन टैक्नोलोजी एंड दि स्कूलिंग प्रोसेस–फोल्डर
- स्कूल एजुकेशन इन इंडिया–फोल्डर (30.09.1998 तक)
- शिक्षा के पहले कदम : प्राथमिक शिक्षा की पाठ्यचर्या की ओर
- कॉमन स्कूल सिस्टम रेटरोस्पेक्ट एंड प्रोसपेक्ट
- शिक्षा लहर
- विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–परिचर्चा दस्तावेज़
- नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन–ए डिस्कशन डॉक्युमेंट
- सिक्स्थ ऑल इंडिया एजुकेशनल सर्वे–मेन रिपोर्ट
- ग्रेडिंग इन स्कूल्स
- एजुकेशन ऑफ गर्ल्स इन इंडिया

अनौपचारिक शिक्षा की पुस्तक

- मिलकर सीखें गणित भाग–4 क्लास–4

शैक्षिक पत्रिकाएँ

- दि प्राइमरी टीचर (चार अंक)
- प्राइमरी शिक्षक (पांच अंक)
- स्कूल साइंस (चार अंक)
- जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन (छह अंक)
- भारतीय आधुनिक शिक्षा (पांच अंक)
- इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (तीन अंक)
- इंडियन एजुकेशनल एब्स्ट्रेक्ट्स (जनवरी 1999) (एक अंक)
- ग्लिम्प्सेज़– ए क्वार्टर्ली जर्नल (चार अंक)
- आभास– त्रैमासिक पत्रिका (चार अंक)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के लिए प्रकाशन

- फंडामेंटल ड्यूटीज़ ऑफ सिटिज़न्स वाल्यूम–I
- फंडामेंटल ड्यूटीज़ ऑफ सिटिज़न्स वाल्यूम–II
- नागरिकों के मूल कर्तव्य अंक–1

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के क्षेत्रीय उत्पादन व वितरण केन्द्र

क्रमांक	केन्द्रों के नाम	राज्य/संघ शासित प्रदेश
1.	क्षेत्रीय उत्पादन एवं वितरण केन्द्र प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. मार्फत नवजीवन ट्रस्ट पो.ऑ. नवजीवन अहमदाबाद-380014 दूरभाष : 405446	गुजरात, मध्य प्रदेश महाराष्ट्र और गोवा
2.	क्षेत्रीय उत्पादन एवं वितरण केन्द्र प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. 108, 100 फीट रोड होस्कारेहल्ली एक्सटेंशन बनाशंकरी 3 स्टेज बैंगलूर-560085 दूरभाष : 6692740	तमिलनाडु, पांडिचेरी, केरल, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, लक्षद्वीप, मिनीकाय और अमिन दीवी द्वीप समूह
3.	क्षेत्रीय उत्पादन एवं वितरण केन्द्र प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. 32, बी.टी. रोड सुखचर, 24 परगना कलकत्ता-743179 दूरभाष: 5530454	पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा उत्तर-पूर्वी राज्य, अरुणाचल प्रदेश सिक्किम, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशनों के थोक एजेन्टों के नाम और पते

आंध्र प्रदेश

1. मै. गुप्ता ब्रदर्स बुक्स
मेन रोड, 47-13-10/1 द्वारका नगर
विशाखापटनम-530016
फोन: 554454, 547580

2. मै. हिमालय बुक डिपो
5-7-561, दरगाह यूसुफैन रोड
नामपल्ली बाज़ार
हैदराबाद-500001
फोन: 214879, 4612145

3. मै. सैन्ट्रल बुक शॉप
5-9-186, चैपल रोड
हैदराबाद-500001
फोन (का.) 3202980
(नि.) 4530111

4. मै. श्रीनिवास पेपर एण्ड स्टेशनरी मार्ट
40-5-19/18 श्री वेंकटेश्वर निलयम्
मोंगलराजपुरम, रेवेन्यू कालोनी
विजयवाड़ा-520010 (आ.प्र.)
फोनः (08812) 25826, 21648

5. मै. ज्योति बुक डिपो
30-15-138, दाबागार्डन्स
विशाखापटनम-530020
फोन: 546020, 541201

6. मै. अशोक बुक सेन्टर
मेरिस स्टेली कॉलेज के सामने
विजयवाड़ा-520008
फोन: 476966, 472096

बिहार

7. मै. चिल्ड्रन बुक सेन्टर प्रा. लि.
मछुआ टोली
पटना-800004
फोन : (का.) 650362
(नि.) 220460, 655048

8. मै. गुप्ता पुस्तक एजेंसी
प्लाट नं. सी-1, सैक्टर-9
बोकारो स्टील सिटी-827009
फोन: (का.) 46637

9. मै. गया प्रसाद खंडेलवाल
खंडेलवाल चौक, मेन रोड
हज़ारीबाग
फोन: 2287

10. मै दुर्गा पुंस्तक भण्डार
बांका बाजार, मोती झील
मुज़फ्फरपुर-842001

11. मै. झा न्यूज़ एण्ड बुक केन्द्र
रसूलपुर जिलानी
मझोलिया रोड
मुज़फ्फरपुर-842001
फोन: 242194

12. मै. प्रभात बुक डिपो
दीपक मार्किट, प्रथम तल
मोती झील
मुज़फ्फरपुर-842001

13. मै. प्रोग्रेसिव बुक सेन्टर
जिला स्कूल
पानी टंकी चौक रमना
मुज़फ्फरपुर-842001
फोन: 243852

14. मै. ज्ञान गंगा डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
बोरिंग रोड
पटना-800013
फोन: 263011, 261956

15. मै पॉपुलर बुक स्टोर
पटना कॉलेज के सामने
पटना-800004
फोन (नि.) 54176

16. मै. सिन्हा ब्रदर्स
जहाज़ी कोठी के निकट
कदम कुआँ, मेन रोड
पटना–800003
फोन: (का.) 667342 (नि.) 665025

17. मै. वर्मा प्रेस (पी.एण्ड डी.)
प्रथम तल, गोपाल मार्किट
नया टोला
पटना–800004
फोन : (का.) 663465 (नि.) 673696

18. मै. पुस्तक मंदिर
पुस्तक पथ, अपर बाज़ार
रांची–834001
फोन: (का.) 203273, 313248

19. मै. पुस्तक सदन
रामा पथ, पूर्वी पुल
रांची–834001
फोन: (का.) 307515, 204364

20. मै. आइडियल बुक स्टोर
रतन टॉकीज़ के निकट
मेन रोड
रांची–834001
फोन: (का.) 311523
(नि.) 203629

21. मै श्री किताब घर
पुस्तक पथ, अपर बाज़ार
रांची–834001
फोन: 202714

22. मै. सुबोध ग्रंथमाला कार्यालय
पुस्तक पथ, अपर बाज़ार
रांची–834001

23. मै. भारती पुस्तक भण्डार
राम बाबू चौक
समस्तीपुर–848101

24. मै. ज्ञान भारती
कामधेनु कॉमप्लैक्स
जोरा फाटक रोड
धनबाद–820001
फोन: (का.) 302969, 307933

चंडीगढ़

25. मै. मनचंदा ट्रेडर्स एण्ड सप्लायर्स
एस.सी.एफ. नं. 1, सैक्टर 19–सी
पो. बॉक्स नं. 705
चण्डीगढ़–160019
फोन: (का.) 775216, 775768, 775769
(नि.) 560499

26. मै. मनचंदा डिपार्टमेंटल स्टोर
एस.सी.एफ.नं. 2, सैक्टर 19–सी
चण्डीगढ़–160019
फोन: (का.) 775012

दिल्ली

27. मै. प्रकाश ब्रदर्स
46, भगत सिंह मार्किट
नई दिल्ली–110001
फोन: 3362615, 3362616

28. मै. जनता बुक डिपो प्रा. लि.
23, शहीद भगत सिंह मार्ग
नई दिल्ली–110001
फोन: 3363685, 3362985

29. मै. स्मिथ एण्ड स्पैन पब्लिकेशंस
8/7 ज्वाला हेड़ी मार्किट
पश्चिम विहार
नई दिल्ली–110063
फोन: 5575381, 5583302

30. मै. मलिक बुक सैलर्स एण्ड स्टेशनर्स
2157/टी–2, सत्यम सिनेमा के सामने
पश्चिमी पटेल नगर
नई दिल्ली–110008
फोन: 5706082

31. मै. अशोक पब्लिशिंग हाउस
ए-1/659, सैक्टर-6
मेन रोड, रोहिणी
नई दिल्ली-110085
फोन : 7048160

32. मै. सत्यम स्टेशनर्स
दुकान सं. 7
सी.एस.ई.नं.-6
सेक्टर-7 रोहिणी
नई दिल्ली-110085
फोन: 7053220, 784556

33. मै. मल्होत्रा बुक डिपो
17/39 बी, पुरानी मार्किट
तिलक नगर
नई दिल्ली-110018
फोन: 5439787, 5434956

34. मै. जी.बी.एस. पब्लिशर्स एण्ड
डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
एम.एस. हाउस
994/66 त्रिनगर
दिल्ली-110035
फोन: 7186836, 7195926

35. मै. जनता बुक डिपो
1521/2 वज़ीर नगर
पी.टी. कालेज के सामने
डिफेन्स कालोनी
नई दिल्ली-110003
फोन: (का.) 621791, 692352
(नि.) 6416656

36. मै. रोमिल पब्लिशर्स प्रा. लि.
ए.-18, गली सं. 10
पूर्वी आज़ाद नगर
दिल्ली-110051
फोन: (का.) 2436849, 2211154
(नि.) 2421652

37. मै. राज पुस्तक भण्डार
54, सेन्ट्रल मार्किट, लाजपत नगर
नई दिल्ली-110024
फोन: 6832627, 6849198

38. मै. चावला बुक डिपो
दुकान सं. 16
सैक्टर नं. 3, आर.के. पुरम
नई दिल्ली-110022
फोन 6174783, 6174501, 6184849, 6174900

39. मै. नीड प्रकाशन प्रा. लि.
219, जमरुदपुर
एन ब्लॉक के सामने
ग्रेटर कैलाश-I
नई दिल्ली-110048
फोन: 6443814, 6435460

40. मै. सचदेवा बुक डिपो
IX/6081, मेन रोड
गांधीनगर
दिल्ली-110031
फोन : (का.) 2200299
(नि.) 2415144, 2468756

41. मै. गोपीराम एण्ड सन्स (बुकसैलर)
2619/20, सी-3, न्यू मार्किट, नई सड़क
दिल्ली-110006
फोन: 3253351, 3250632

42. मै. गीता पब्लिशिंग हाउस
टी-565, प्रगति कॉम्पलैक्स
ईदगाह चौक
दिल्ली-110006
फोन: 7775482, 7522668

43. मै. विश्व भारती प्रकाशन
4071, नई सड़क
दिल्ली-110006
फोन: (का.) 2916973
(नि.) 6833079, 6916718

44. मै. दीपक स्टेशनर्स
709/1, जी.टी. रोड
कबूल नगर, शाहदरा
दिल्ली-110032
फोन: 2285327, 2280956

45. मै. संजय ब्रदर्स
2590, नई सड़क
दिल्ली-110006
फोन: 3261916

46. मै. शिवदास एण्ड सन्स
9665, इस्लाम गंज
लाइब्रेरी रोड, आज़ाद मार्किट
दिल्ली-110006
फोन: 7514886, 7777366, 3551616

47. मै. नेशनल बुक हाउस
8/18, कालकाजी एक्सटेंशन
नई दिल्ली-110019
फोन: 6232342, 6212711

48. मै. सुभाष ब्रदर्स
2606, नई सड़क
दिल्ली-110006
फोन: 3261011, 3283733

49. मै. राजेश पुस्तक भण्डार
4 ए/3, ज्वाला हेड़ी
पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063
फोन: 5580992, 5584826

50. मै. लाम्बा बुक डिपो
नं. 9, पुरानी मार्किट
तिलक नगर
नई दिल्ली-110018
फोन: 5190207, 5934577

51. मै. सचदेवा पुस्तक भण्डार
IX/6082-83, मेन रोड
गांधीनगर, थाने के पास
दिल्ली-110031
फोन: 2212172

गुजरात

52. मै. तुसार बुक डिपो
36-37, कैपिटल कमर्शियल सेन्टर
आश्रम रोड
अहमदाबाद-380009
फोन: 6587103, 6578741

53. मै. रॉयल स्टेशनर्स
सागर अपार्टमेंट
शॉप नं. 14
रामधाम के सामने, कालवाड़ रोड
राजकोट-360005
फोन: 582926

54. मै. शालिभद्र स्टेशनर्स
7, शान्ति सोसायटी
बॉम्बे गैराज के पीछे, शाही बाग
अहमदाबाद-380004
फोन: 5621748

हरियाणा

55. मै. फ्रेंड्स बुक सर्विस
दुकान सं. 68, 2 एच पार्क
एन.आई.टी.
फरीदाबाद-121001
फोन: 414292, 413040

56. मै. अरोड़ा ट्रेड लिंकर प्रा. लि.
(अग्रवाल धर्मशाला के सामने)
रेलवे रोड, करनाल-132001
फोन: (का.) 255805, 252205
(नि.) 255305

57. मै. भगवती पेपर मार्ट
पुरानी अनाज मण्डी
रोहतक-124001
फोन: (का.) 52184 (नि.) 56184

58. मै. शर्मा ब्रदर्स
बी.डी. हाई स्कूल के निकट
अम्बाला कैन्ट–133001
फोन: 640525

59. मै. चिल्ड्रन बुक डिपो
4329, बी.डी. वरिष्ठ माध्यमिक
विद्यालय के निकट
अम्बाला कैन्ट–133001
फोन: 642585

60. मै. दीपक बुक डिपो
4269, हॉस्पिटल रोड
अम्बाला कैन्ट–133001
फोन: (का.) 642076
(नि.) 641706, 640706

61. मै. द्वारका प्रसाद एण्ड सन्स
मोती बाज़ार
हिसार–125001
फोन: (का.) 31657 (नि.) 36122

62. मै. नरेश बुक डिपो
प्रताप चौक
रोहतक–124001
फोन (का.) 75889 (नि) 77052

63. मै. स्वामी किताब घर
कच्चा बेरी रोड
रोहतक–124001
फोन: (का.) 45879 (नि.) 46886

जम्मू और कश्मीर

64. मै. हरनाम दास एण्ड ब्रदर्स
पक्का डंगा
जम्मू तवी–180001
फोन: (का.) 542175
(नि.) 574428

65. मै. साहित्य संगम
कच्ची छावनी
जम्मू तवी - 180001
फोन: (का.) 549049 (नि.) 548729

66. मै. गुप्ता बुक सेन्टर
सम्राट होटल बस स्टैंड के निकट
जम्मू तवी–180001
फोन: (का.) 577046
(नि.) 534925

67. मै. जे.के. बुक हाउस
रेज़ीडेन्सी रोड
जम्मू तवी–180001
फोन: 573560

68. मै. अली मोहम्मद एण्ड सन्स
1, बडशाह होटल बिल्डिंग
लाल चौक
श्रीनगर–190001
फोन: (का.) 475973, 474539
(नि.) 474440

69. मै. अशोक बुक डिपो
पुरानी मंडी
जम्मू तवी–180001
फोन: 542261, 573014
(नि.) 547321, 543344

कर्नाटक

70. मै. हेमा स्टोर
नं. 1 तथा 2, बालाजी थिएटर कम्पलैक्स
वन्नरपेट, विवेक नगर
बैंगलूर–560047
फोन: 5575110

71. मै. भगवान कृष्णा ट्रेडर्स
नं. 25, मामुलपेट
बैंगलूर–560053
फोन: 2872774

72. मै. सुभाष पब्लिशिंग हाउस
नं. 116, 5 वां मेन, छठा क्रास
(राम मंदिर बस स्टॉप के निकट)
बैंगलूर–560053
फोन: 6507309

केरल

73. मै. एकेडेमिक बुक हाउस
पुलीमूदू जंक्शन
तिरुअनंतपुरम-695001
फोन (का.): 333349 (नि.) 331878

74. मै. टी.बी.एस. पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
टी.बी.एस. बिल्डिंग, जी.एच. रोड
कालिकट-673001
फोन (का.): 720085, 720086, 721025
(नि.) 721160

75. मै. स्टर्लिंग ट्रेडिंग एण्ड एजेंसीज़
36/1079, जजिज़ एवेन्यू
वैदयार लेन, काल्लोर
कोच्चि-682017
फोन: 402624, 400531

76. मै. प्रोग्रेसिव करिकुलम मैनेजमेंट प्रा. लि.
अम्मनकोविल रोड
अरनाकुलम
कोच्चि-682035
फोन: 354047, 374058, 374258, 361824

77. मै. एकेडेमिक बुक हाउस
39/817, चितोर रोड
साउथ जंक्शन
अरनाकुलम-682016
फोन: 369613

78. मै. वी. पब्लिशर्स बुक स्टॉल
सी.एम.एस. कॉलेज रोड
कोट्टयम-686001
फोन: (का.) 567470, 567471, 568645
561472 (नि.) 301184

79. मै. विद्यार्थी बुक्स एंड लाबेड्स
सी.एम.एस. कालेज जंक्शन
कोट्टयम 686001
फोन : 561203, 567486

80. एच. एण्ड सी. स्टोर्स
पी.बी.नं. 1
कुन्नाकुलेम-680503
(थिरसुर जिला)
फोन (का.): 522243 (नि.) 522383

81. मै. एच. एंड सी. स्टोर्स
हाई रोड
थिरसुर-680001
फोन: (का.) 421462, 421467
(नि.) 336230

82. मै. एच. एण्ड सी. स्टोर्स
डी.एच. रोड
अरनाकुलम साउथ
कोच्चि-682016
फोन: 351563

मध्य प्रदेश

83. मै. पी.के. बुक्स एण्ड स्टेशनर्स
सदर बाज़ार कैन्ट
जबलपुर-482001
फोन: 320840

84. मै. सुशील प्रकाशन
212, खजूरी बाज़ार
इन्दौर-452002
फोन (का.): 535892, 282892
(नि.) 541901

85. मै. एम.पी. टेक्स्टबुक कार्पोरेशन
शिवाजी नगर
भोपाल-462011
फोन: 550727, 553094

86. मै. गुप्ता पब्लिशिंग हाउस
623, खजूरी बाजार, एम.जी.रोड
इन्दौर-452002
फोन: 454921, 454922

महाराष्ट्र

87. मै. ए.एच. व्हीलर एण्ड कं. लि.
25, आर.बी.एस.के. बोले रोड
दादर (पश्चिम)
मुंबई-400028
फोन: 4370612, 4370467

88. मै. एस. चांद एण्ड कं. लि.
3, गांधी सागर पूर्वी
नागपुर-440002
फोन: 723901

89. मै. कपूर स्टेशनरी मार्ट
दुकान सं. 42
आम्रपाली शापिंग आर्केड
वसन्त विहार, पोखरण रोड-2
थाणे (पं.)400601
फोन: 5330711, 5361053

उत्तर-पूर्वी राज्य

90. मै. बानी मंदिर
रानी बाड़ी, पान बाज़ार
गुवाहाटी-781001 (असम)
फोन: (का.) 520241
(नि.) 564488

91. मै. डोन्यी पोलो एन्टरप्राइज़ेज़
सी सैक्टर, ईटानगर-791111
अरुणाचल प्रदेश
फोन: 212769, 212389

92. मै. युनाइटेड पब्लिशर्स
मेन रोड, पान बाज़ार
गुवाहाटी-781001 (असम)
फोन (का.): 517059, (नि.) 546244

93. मै. न्यू कामर्शियल सेन्टर
थांगल बाज़ार
खोयाथोंग रोड
इम्फाल-795001 (मणिपुर)
फोन: (नि.) 225964

94. मै. पेपर एण्ड स्टेशनरी स्टोर्स
पाओन बाज़ार
इम्फाल-795001 (मणिपुर)
फोन: 221109

95. मै. लियानचुंगी बुक स्टोर्स
बड़ा बाजार
आइज़ोल-796001 (मिज़ोरम)
फोन: (का.) 329522
(नि.) 322855

96. मै. क्वालिटी स्टोर
नेशनल हाइवे
गंगटोक-737101 (सिक्किम)
फोन: 22992, 24358

उड़ीसा

97. मै. ज्ञान भारती
स्टेशन स्क्वेयर
50, खारावेलानगर, इकाई-3
भुवनेश्वर-751001
फोन: (का.) 508736
(नि.) 402664

पंजाब

98. मै. नीलम पब्लिशर्स
अद्दा टंडा
जालंधर-144008
फोन: (का.) 56899
(नि.) 57170

99. मै. मल्होत्रा बुक डिपो
रेलवे रोड
जालंधर शहर-144001
फोन: 57160, 58388, 59046

100. मै. हरबंस बुक डिपो
बुक्स मार्किट
लुधियाना
फोन: 726480, 720173

101. मै. सुमीत एजुकेशनल स्टोर्स
कॉलेज रोड
पठानकोट–145001
फोन: (का.) 21609
(नि.) 21809

102. मै. परवीन जनरल स्टोर
धोबी बाज़ार के पीछे
एस.एस.डी. मंदिर के सामने
भटिण्डा–151001
फोन: (का.) 256965 (नि.) 255965

103. मै. मित्तल बुक डिपो
मेन बाज़ार
मोंगा–142001
फोन: (का.) 21228 (नि.) 23151

104. मै. पेप्सू बुक डिपो
बुक्स मार्किट
पटियाला–147001
फोन (का.) 214696, 74578
(नि.) 214331, 74605

105. मै. देश राज एण्ड सन्स
अरना बरना बाज़ार
पटियाला–147001
फोन (का.) 216076, 304179
(नि.) 219172

राजस्थान

106. मै. एवरग्रीन बुक्स डिस्ट्रीब्यूटर्स
बी–7, फतेह सिंह मार्किट
आर.एस. पोस्ट आफिस के निकट
रेलवे स्टेशन
जयपुर–302006
फोन (का.) 362395, 317234

107. मै. रमेश बुक डिपो
पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स
138, त्रिपोलिया बाज़ार
जयपुर–302003
फोन: (का.)606492 (नि.) 43314

108. मै. एस.वी. बुक कंपनी
5, रास्ता थाथेरन, चौड़ा रास्ता
जयपुर–302003
फोन: (का.)321819, 317889
(नि.)606062

109. मै. सैनिक स्टेशनरी स्टोर
शॉप नं. 4, सेन्ट्रल मार्किट
खेतड़ी नगर–333504
(ज़िला–झुनझुनु)
फोन: 20123

110. मै. भण्डारी स्टेशनर्स
गमानपुरा
कोटा–324007
फोन: 327576

111. मै. मनोहर बुक डिपो
रेलवे स्टेशन रोड के पास
सदर बाज़ार
जयपुर–302006
फोन: (का.) 202903, 376486
(नि.) 516056, 510211

तमिलनाडु

112. मै. न्यू सेन्चुरी बुक हाउस प्रा.लि.
136, अन्ना सलाई
चेन्नई–600002
फोन: 8549563, 8550664

113. मै. सेन्ट्रल बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स
6, रामनाथन स्ट्रीट
चेन्नई–600017
फोन: 4343336, 4342568

उत्तर प्रदेश

114. मै. आलोक प्रिंटर्स
14/188, हास्पिटल रोड
आगरा–282003
फोन: 364217, 261420

115. मै. एच.एम. पब्लिकेशन्स
12/62, सुई कटरा
हॉस्पिटल रोड
आगरा-282003
फोन (का.) 263495 (नि.) 312880

116. मै. सरस्वती बुक डिपो
नौलखा बाज़ार, ग्वालियर रोड
आगरा कैन्ट-282001
फोन: 267220

117. मै. साहित्य भंडार
50 चाहचांद
इलाहाबाद-211003
फोन: 400787, 402072

118. मै. शक्ति बुक एजेंसी
राजपुर चुंगी
आगरा-282001
फोन: 331233

119. मै. उत्तम पुस्तक भंडार
1, अखाड़ा बाज़ार
देहरादून-248001
फोन: (का.) 624820
(नि.) 625645

120. मै. कमल प्रकाशन
153, पक्की मोरी
गाज़ियाबाद
फोन: 748051

121. मै. नवयुग बुक डिपो
12, दिल्ली गेट
गाज़ियाबाद
फोन: (का.) 733389
(नि.) 718711

122. मै. युनाइटेड लाइब्रेरी एण्ड बुक स्टॉल
युनाइटेड सिनेमा कंपाउन्ड
सिनेमा रोड, गोलघर
गोरखपुर
फोन: 344841, 341797

123 मै. गौरव पुस्तक भण्डार
208, हरजिन्दर नगर
कानपुर-208010
फोन: 403525, 451333

124. मै. गौतम ब्रदर्स
39/18, मेस्टन रोड
कानपुर-208001
फोन: (का.)364601, 224194
(नि.) 256026

125. मै. आशा एजेन्सीज़
दुकान सं. 3, गनी मार्किट
177/23, गुईन रोड
अमीनाबाद, लखनऊ-226018
फोन: (का.) 221445, (नि.) 227036

126. मै. यूनिवर्सल बुक कंपनी
20, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद-211001
फोन: 623467, 624953

127. मै. सरस्वती सदन
19, सुभाष मार्किट
बरेली
फोन: (का.) 474092
(नि.) 474042, 471142

128. मै. राजहंस पुस्तक भवन
सुभाष बाज़ार
मेरठ (उ.प्र.)
फोन: (का.) 516738, 641791

129. मै. अरुणोदय बुक सेन्टर
गुरु बाग
वाराणसी-221010
फोन: 320724, 361668

130. मै. गुप्ता जनरल ट्रेडिंग कंपनी
करणघंटा, बुलानाला
वाराणसी-221001
फोन: (का.) 353017, 354582
(नि.) 344802

131. मै. बनारस बुक कार्पोरेशन
यूनिवर्सिटी रोड, लंका
वाराणसी–221005
फोन: (का.) 311385 (नि.) 312316

132. मै. विद्यार्थी केन्द्र
डी–45/3, लक्सा रोड
वाराणसी–221010
फोन: (का.) 320730 (नि.) 320709

133. मै. नेशनल बुक हाउस
डिसपेन्सरी रोड
देहरादून–248001
फोन: 659430 (नि.) 621470

134. मै. चाचा बुक स्टोर
121, सदर बाज़ार
लखनऊ–226002
फोन: (0522) 480077, 481177

135. मै. शर्मा स्टेशनरी बुक एण्ड सेन्ट्रल स्टोर
श्रीनगर, आलमबाग
लखनऊ–226005
फोन: (का.) 456851 (नि.) 454229

136. मै. व्यापार सदन
177/25, महावीर मार्किट, गुईन रोड
लखनऊ–226002
फोन: 221771, 281423
(नि.) 373794

137. मै. माही बुक पैलेस
विजय नगर
शंकर आश्रम के सामने, पूर्वी कचहरी रोड
मेरठ
फोन: 641791, 645415

138. मै. नेशनल बुक डिपो
67, सुभाष बाजार
मेरठ
फोन: 27616

139. मै. कैम्ब्रिज बुक डिपो
सिविल लाइन्स
रुड़की–247667
फोन: (का.) 72341
(नि.) 73892

140. मै. सतीश प्रकाशन
गली नं. 1, प्लाट नं. 19
रविन्द्रपुरी
वाराणसी–221005
फोन: (का.) 315164
(नि.) 314193

141. मै. इलाहाबाद बुक सेन्टर
20, एम.जी. मार्ग, सिविल लाइन्स
इलाहाबाद–211001
फोन: 623468, 420936, 603159

पश्चिम बंगाल

142. मै. देव साहित्य कुटीर प्रा. लि.
21, झामपूकर लेन
कलकत्ता–700009
फोन: 3504294, 3504295, 3507887

अंडमान और निकोबार द्वीप

143. मै. अंडमान बुक सेन्टर
गोलघर, पो.बा. सं. 543
पोर्ट ब्लेयर–744103